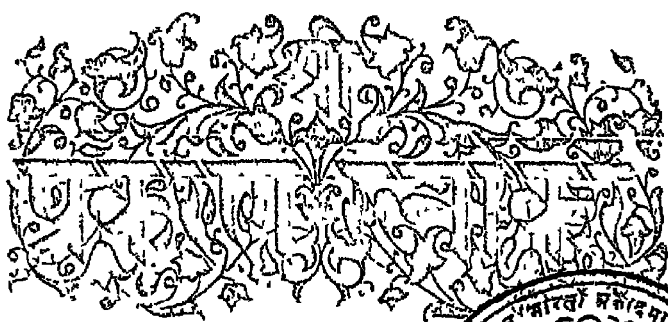


भाग ३ जो

श्री जिनवचनामृतमहोदधिजन्य
धुरंधर सुविहित गीतार्थज्ञ पूर्वाचार्य वचन तरंग बिंदुरूप
त्रिविध विषयक प्रकरणाख्य ग्रंथेभ्यो यत्किंचित्संग्रहं कृत्वा

श्री मुंबापुरीमध्ये

शा० भीमसिंह माणक नामक श्रावके

स्वामित्व विरहित

ज्ञानवृद्ध्यर्थ

आ पुस्तक छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे.

शके १७९९. संवत् १९३४.
पोष शुद्ध ५ भोमवार तारीख ८ मी जानेवारी सने १८७८
"निर्णयसागर" मुद्रायंत्रमां रा० रा० जावजी दादाजीये छाप्युं छे

१ श्रीऋषभदेवजी	२ श्रीअजितनाथजी	३ श्रीसंभवजिन राज	४ श्रीअभिनंदन स्वामि	५ श्रीसुमति नाथ.	६ श्रीपद्मप्रभ देव.
७ श्रीसुपार्श्वनाथजी.	८ श्रीचंद्रप्रभ स्वामि.	९ श्रीसुविधि नाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी	११ श्रीश्रेयांस जिन	१२ श्रीवासुपूज्यजी.
१३ श्रीविमलनाथजी.	१४ श्रीअनंत नाथजी.	१५ श्रीधर्मनाथजी.	१६ श्रीशांतिनाथजी.	१७ श्रीकुंथुनाथजी.	१८ श्रीअरनाथजी.
१९ श्रीमल्लीनाथजी	२० श्रीमुनिसुव्रत स्वामि.	२१ श्रीनमिनाथजी.	२२ श्रीनेमिनाथजी.	२३ श्रीपार्श्वनाथजी	२४ श्रीवर्द्धमान स्वामि

प्रस्तावना.



दृढ स्तंज जेम मेहेलनी दृढताना कारणरूप छे, तेम दरेक शासननी प्रौढताना, ते शासनमां थएला महान पंमितो अने ज्ञानवंत एवा धुरंधर आचार्योनाअसाधा रण बुद्धिवैजवे रचाएला एवा सुविहितग्रंथो, कारणरूप छे; एमाटे कार्य करतां कारणनी यत्न विशेषे करवी के, जेथीकरी कार्य निरंतर निर्विघ्नपणे जगत्नेविषे प्रव र्त्ते. कारणनी यत्नाए करी कार्यनीज अक्षयस्थिति रहे छे एटलुंज नही; पण तेनो उपनोग करनारा घणा जनोने आ संसारनेविषे घणां एक अगत्यनां बाह्यांतरंग सु खोनी सगवडता पण ते कारण करी आपेछे. चिरकालपर्यंत महान् वृक्षनुं अस्तित्व रा खवानी इछा करनारा रक्षपाले, ते वृक्षना मूलने जलसिंचनादिक करवुं; के जेथी क री ते वृक्ष, पोताना बीजा बाह्यना अवयवोने आपो आप पुष्ठता मलतां निरंतर पत्र पुष्प फलादिके करी उपकार करतुं रहे छे.

हालमां आ डुषम कालनेविषे आपणा जिनशासनरूप धर्मवृक्षनां दृढ मूल, अ गाध बुद्धिवाला पंमितो अने आचार्यो-एउए रचेला परंपराए मोक्षसुखदायक एवा सुविहित ग्रंथोज छे. तेउने वर्त्तमान समयानुसारे ज्ञानरक्षणार्थे सद्गुणी सहेलो अने उत्तम तथा जेथी शुद्धधर्म प्रवृत्तिनी परंपरा चाले, ते उपाय ए छे के, ते ग्रंथोने शो धावी छपावीने बाहार पाडवा, तेउनो जगत्नेविषे प्रसार करवो, अल्पमूल्ये नाविकज नोने तेनो लाज आपवो; इत्यादिक धर्मवृक्षमूलनी पोषण क्रिया तन मन अने धनथी करवी, ए आपणा दरेक साधर्मिकन्नाइउनुं सर्व अगत्यनां कामोमांनुं प्रथम कामछे.

अथवा एवा सुविहित ग्रंथोनुं संशोधन करी बीजा अप्रसिद्धग्रंथो महा प्रयासे अने महोटा खरचे पण जो ते ग्रंथो प्राप्त थता होय तो ते प्राप्त करी, तथा वली ते जो संस्कृत नाषामां होय तो तेनां गुर्जरनाषामां नाषांतर करावी छपावीने बाहार पाडवानुं महा डुर्घट अने अति... द्रव्यविनियोगनुं काम, जे माणस, मात्र शास नोन्नतिने माटेज, पोताना बीजां व्यवहारीक कृत्य मूकीने करे, तेने जेटलो पोता थी बने तेटलो तन मन अने धनथी आश्रय आपवो. वर्त्तमानसमयमां आपणा जिनशासननेविषे पंमितोनी न्यूनताने लीधे नवीन ग्रंथो रची शासनी उन्नति कर वी, तेम तो बनतुं नथी; ए दृढता तो बुद्धिनिधान एवा पूर्वाचार्यो संपूर्ण प्रकारे करी गया छे. हवे आपणुं काम मात्र एटलुंज छे के, जगत्जीवोना उपकार माटे पूर्वोक्त पंमितो सूरिउ प्रमुख जे ग्रंथोनी रचना करी गया छे, ते ग्रंथोने केटलाक

महान् सम्यक्दृष्टि पुरुषो लखावीने ज्ञानना भंडार जे करी गयाछे, अने ते ज्ञान भंडारो कालप्रबलताए अने अल्पबुद्धिओनी अज्ञानताए करी आधुनिककालनेविषे बंधनपणुं पामी गोप्य रह्या छे; एटलुंज नही पण ते ग्रंथोना भंडारोने घणो काल व्यतित थवाने लीधे तथा प्रमादनेयोगे पुनः ते ग्रंथोनो उद्धार न थवाने लीधे तेमांना घणा ग्रंथो तो विछेद गया छे, अने थोडाज ग्रंथो जे हालमां विद्यमान छे; तेओनो कोइपण रीते जगत्नेविषे प्रसार करी ते ग्रंथोना कर्त्ताओना परोपकार कृत्यनो लाभ सर्व साधर्मिकभाइओने सुखे लेवा देवो जोइए. बीजां वधां दानो करतां ज्ञानदान ए सर्वोत्कृष्ट छे. आ शिवसुखकारक शासन छे, अने आ मिथ्यात्वि शासन छे, एवो विवेकमय जे अनुभव ते ज्ञानना योगेज थाय छे. अने एवो शुद्धविवेक प्रगट थये भविकजनो, शुद्धशासननो आश्रय करी परभवनेविषे कल्याणकारक देव संपदा अथवा मोक्षसंपदा प्राप्त करे छे. अर्थात् भविकजनोनी परलोकसुख संबंधी संपूर्ण सामग्री कहीए तो ते मात्र एक उत्तम ज्ञानज छे. एवुं जे उत्तम ज्ञान, ते पूर्वाचार्योए ग्रंथरूपे साक्षात् मूर्तिमंत स्थापन कर्युंछे; तेनी आधुनिककालने अनुसरता संस्कारे प्रतिष्ठा करी अर्थात् तेने शोधावी छपावीने भविकजनोना उपकार माटे अने फरी विछेद नजाय तेमाटे जगत्नेविषे विस्तार करवो; के जे थकी हालना समयमां थएली पंडितोनी अत्यंत न्यूनता पूराय. ए विस्तार करनारने, तेमज एवा शुभ काममां तन मन धनथी आश्रय आपनाराओने अप्रमेय अने अखंड यशछे; ए वगर विवादे स्वतःसिद्ध छे.

वली जेम सैन्य, किल्ला, अने कोषादिक ए राज्यनां अंगो छे; ते अंगो जेटला प्रमाणमां सबल होय, तेटला प्रमाणमां ते राज्यनी प्रबलता अने दृढता लेखाय छे. परचक्रीओना मनमां भय प्रवेश कराववा माटे अने स्वचक्रीओ, बलवो करी स्वतंत्र थवा माटे अथवा परराज्यमां जवामाटे उद्योग न करे, तेमाटे तेओने आक्रोशमां राखवा ए राज्यांगोनी प्रबलता तेओना मनमां उतरे एवीरीते निरंतर प्रसिद्धपणे बताववी, ए अतिशय जरुरनुं कामछे; तेम इहां सुविहित ग्रंथो, ए धर्मरूपी राज्यनुं एक मुख्यमां मुख्य अंगछे; ते अंगनी प्रबलताथी अन्य तीर्थिओना मनमां जिनधर्मनेविषे हमेश उत्तम विचार, अने साधर्मिकभाइओने शुद्धदेव, शुद्धगुरु, अने शुद्धधर्म उपर निरंतर श्रद्धा रहे, अने कुदेव कुगुरु तथा कुधर्मना आग्रहथी तेओ दूर रहे, ए कारणमाटे ते अंगने मजबुत राखवुं, ए खरोखर महा आवश्यकतानुं कामछे. एक देशमां सर्वोत्तम रत्नोनी खाण छे, ते संबंधी त्यांना सर्व लोकोने माहिती पण छे; तथापि प्रमाद, अज्ञान अने आलस प्रमुख अवगुणोएकरी ते लोको ते रत्नोनी आवश्यकता छतां ते रत्नोने खाणमांज रहेवा देवामां कोण जाणे शुं मोटुं पोतानुं महापण समजता होय!! परंतु

…श्रावकव्रतादि आचरण करी अंते उत्तम गतिने पाम्या. त्यार पछी केट
…ाळे वस्तुपाळ तथा तेजपाळ ए बे प्रख्यात श्रावको सर्व संपत्तियुक्त थ
… पण नानाप्रकार जिनचैत्यो तथा ज्ञानभंमारादि करावीने स्वधर्मनी प्र
… वृद्धि करी. त्यार पछी अणहिल्लपुरपाटणमां कुमारपाळ राजा जिनप्र
रूपि धर्मश्रद्धानवान थया. तेणे पण जे विचित्र स्वधर्मकृत्यो कर्यांछे, ते सर्वजग
प्रसिद्ध छे. अत्युत्तम अर्हद्देवाळयो तथा अत्युत्कृष्ट ज्ञानभंमार कराव्या छे, ते
कोईने अज्ञात नथी. एना राज्यना समयमां विद्वत्शिरोमणीभूत श्रीहेमाचार्य थई
गया छे; तेमणे साडात्रण क्रोड श्लोक संख्यांक विविधविषयक ग्रंथो गुंथन क
र्या छे. तेमांना घणा ग्रंथो वर्त्तमान काळमां विद्यमान छे. ए कुमारपाळ राजाना प
रम गुरु हता. ए कुमारपाळ राजाए पोताना आखा राजमां हिंसानो लेश पण
रहेवा दीधो न होतो. तेथी जैननी कीर्त्ति ज्यां त्यां प्रसरी रही हती. अन्य
दर्शनीउं गमे तेटलो द्वेष करता, तो पण तेउनुं कांई चालतुं नही. सर्वत्र जिनधर्म
नो जय जयकार थई रह्यो हतो.

ए उपरथी जुवो के प्रभाविकपुरुषने लीधे धर्मनुं केवुं दीपन थाय छे! धर्मनुं
दीपवुं धर्मनां कृत्योउपर आधार राखे छे. नवीन जिनचैत्यो कराववां; पुरातन जर्ज
रीभूत … थएलां देवालयोना जीर्णोद्धार कराववां; स्वधर्मीउने यथायोग्य आश्रयो
देवा; इत्यादिक अनेक धर्मकृत्योछे, ते बधां धर्मकृत्यो करतां ज्ञाननी वृद्धि करवा
जेवुं एके उत्तम … नथी. ते कृत्य तो आ ग्रंथो छापीप्रसिद्ध करवानुंछे. ते उद्यमने
मुख्य पेहेला नंबरना मदद करनार पूर्वोक्त संपति राजा प्रमुख महापुरुषोनी पंक्तिमां
गणवा लायक हालमां श्रीमुंबइनगरना रेहेवासी श्रावकमंमळना आगेवान जगत्
प्रसिद्ध, जेनी कीर्त्ति दशे दिशाउनेविषे प्रसार पामेली छे, अने जे एवा शुभ कृत्यो
निमित्ते कोटी गमे द्रव्यनो व्यय करी कृत्यकृत्य थयला छे; एवा शेठ केशवजी ना
…नामस्मरणार्थे आ पुस्तकनेविषे अंकित करुंछु.

आ पुस्तकने … स्वभावि, दयावंत, कृपणतारहित, निर्लोभि, सदा शांतमुद्रा
… परमोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, चतुर, विवेकी, जे हरहमेश
…रताथी आशरो आपताज आव्याछे, अने जे धैर्य
… मुख्य …
…रतां प्रथम आ पुस्तकना वांचनार सद्विद्वोय
…ानी सूचना करुंछु. ॥ ॥ ७ ७ ण॥
… जातिना पुजलो रह्या छे, के तेथी तेनी … द्रव्यादि
…ली होय छे: … काकपक्षीनी

रियामनेविषे एवाज कोइ जातना पुद्गलो रह्या छे, के तेथी तेमनी बुद्धि ते ते ज्ञान
दुष्कृत्यो करवानेविषेज प्रवर्त्तमान थकी रहे छे.

ए वातनो प्रत्यक्ष अनुभव आ ग्रंथ छापवाना पहेलां ए ग्रंथ छापवाना कालनेवि
आरंभ कर्यो, ते दिवसथी मांमीने आ त्रीजो भाग समाप्त थतां सुधीमां म घणो का-
दिवस स्पष्ट थतो जाय छे. एटले मह्‌रा आ ग्रंथो छापवाना अति दुस्तर, जीने स्व
कृष्ट पुण्यहेतु कृत्यनो आरंभ चालु रेहेवाथी तेनो आश्रय लेतां लेतां जे राजहंस
तुल्य मोक्षनिकट भव्यजनो सद्बुद्धि वाला छे; तेमां जोपण कोइ अल्प द्रव्यवान छे, तो
पण आ मारा प्रारंभित शुभकृत्यने आजपर्यंत दरेक रीते जेम पोताथी बने तेवी
रीते आश्रय आपताज जाय छे; अने पोताना सज्जनपणानो गुण पोतानी उदारता
युक्त बतावताज जाय छे. अने जे काकपक्षीतुल्य अभव्य दूर्भव्य दुष्ट दुर्गुणीजनो छे,
तेउनुं द्रव्य जो के दुष्टकृत्योमां व्यय थतां ते दुष्टो पोताने कृत्यकृत्य मानता जाय छे,
तथापि आ शुभकृत्यने तेउनाथी आश्रय मलतो नथी, ए कर्मनी विचित्रताज छे.

आ ग्रंथने शेठ केशवजी नायके आपेली मददविषे.

दरेक देश, राज्य, ज्ञाति तथा संघनेविषे सर्वोत्कृष्ट शुभकर्मफलभोक्तापुरुष दीपक
नी पठे प्रकाशक होय छे; तेमां वली अद्भुत उद्युक्तमतिमान, आतपनामकर्मादिस
हायकसाधनयुक्तशरीराकृतिवान, स्वनिवासस्थानजनादिकउत्तरोत्तरसुखपदादिआरोहण
करणोत्सुकपुमान, ते ते स्थानीय महादीपक कहेवामां पण कांइ दोष नथी. केम
के, अंधकारे करी आवरित पदार्थोने जेम दीपशिखा प्रकाश करे छे, तेम पूर्वोक्त ल
क्षण पुरुष स्वाश्रित स्थानने अद्भुत प्रख्यातिरूप दीप्तिमान करे छे. जे संस्थाननेवि
पे एक प्रख्यात पुरुष होय, तेना योगे तत्संबंधी इतर जनोनी पण ज्यनुं एक मु
छे. एवा प्रभाविक पुरुषो क्वचितज होय छे. केम के, पूर्वजन्मनेवि जिनधर्मनेविषे
मोनुं बंधन कर्या विना एवी उत्कृष्टतानी प्राप्ति थती नथी. त्यारे धर्म उपर नि
छे, ते पुरुष धन्य छे.
[illegible] तउ दूर रहे, ए कारणमाटे
[illegible] राखवुं, ए [illegible] नस्वाधीन वश्यर्थकतानुं कामछे. एक देशमां सर्वो त्तम
रत्नोनी खाण छे, ते संबंधी त्यांना सर्व लोकोने माहिती पण छे; तथापि प्रमाद, अज्ञान
आलस प्रमुख अवगुणोएकरी ते लोको ते रत्नोनी आवश्यकता छतां ते रत्नोने
रहेवा देवामां कोण जाणे शुं मोटुं पोतानुं रुडापण समजता होय!! परंतु

ज्ञ कोइ जातना पुंजलो रह्या छे, के तेथी तेमनी बुद्धि ते ज्ञान
रिणाम वर्तमान थकी रहे छे.
दु आ ग्रंथ छापवाना पहेलां ए ग्रंथ छापवाना कालनेवि
ने आ त्रीजो भाग समाप्त थतां सुधीमां म णो का-
महारा आ ग्रंथो छापवाना अति दुस्तर, जे स
तेनाथी तेनो आश्रय लेतां लेतां जे राजहंस
कालांतरे तेओनी अप्रमादी, ज्ञानी अने उद्योगी तेमां जोपण कोइ अल्प द्रव्यवान छे, तो
खाण आवी; ते समये तेओ ते रत्नोने खाणमांथी ब हरेक रीते जेम पोताथी बने तेवी
रंवार पोताना वडीलोनी बुद्धिनो उपहास करशे के, पण पोतानी उदारता
आपणा वडिलोए कांइ गणना करी नही ? ए तेओनी बुद्धिने शुं कहेवुं! दुर्गुणीजनो छे,
ग्रंथोने जगत्‌नेविषे न प्रसिद्ध करवामां जे लोको महापण समजता हीनता जाय छे,
ना महापणने शुं कहेवुं? कालांतरे अमूल्य ग्रंथोतो कोइ परीक्षा अने विचित्रताज छे.
द्धिवालाना हाथमां जशे, ते समये तेओनी आवश्यकताविषे
सिद्धि थवानीज, तेनीसाथे अज्ञानीओनी अज्ञानबुद्धिनी ते
ण कांइ जेवी तेवी नही थाय—सारांश सारी वस्तुनी गणना
जगत्‌नेविषे थवानीज, तो ते आपणे पोतेज कां न करीए
ए पूर्वोक्त कारणो शीवाय बीजां पण ए पुस्तको छपाव
रणो ज्ञानवृद्धिनांछे, ते यद्यपि अहीं प्रस्तावनामां गौरवता
शीव्यां नथी, तथापि विवेकीजनोना मननेविषे ग्रंथो प्रसि
हमेश थइ रहेली छे, ए वात प्रसिद्धज छे. इत्यादिक हेतुओने
त्नाकर नामनुं पुस्तक छापी प्रसिद्ध करवानुं काम चालुं कर्युं छे
तथा बीजो भाग प्रथम छपाइ प्रसिद्ध थएलो छे; अने आ त्री
नी कृपाथी समाप्त थयो छे, तेथी मारा अंतःकरणनेविषे आनंद

मां कांइ
छ कुइ
रथी हवि
ण महा
तरजागन महापुरुष दीपव
श एवा
दोषोने
अने मने
महारा उप
. जे
पण ज्यनुं एक मु
वि जिनधर्मनेविषे
रे धर्म उपर नि
रहे, ए कारणमाटे
कर एक देशमां सर्वोत्तम

विज्ञापना.

धर्मश्रद्धावंत, अत्यंत विनयवंत लोको परम ज्ञानानिल तथापि प्रमाद, अज्ञान
नाइओनी तथा साधुजनोनी सेवामां ते लोको ते रत्न आवश्यकता छतां ते रत्नोने
शं मने परम हर्ष थयछे. अने एवे जाणे शुं मोटुं पोतानुं महापण समजता होय ! ! परंतु
नम्रतापूर्वक रहेवं रुंलंके
काम

अवतरणः- निग्गंथत्तं जीवस्स पंचवाराउ नववासेत्ति एटले संसारमां वसतां थकां निर्ग्रंथपणुं जीवने पांचवार आवे तेनुं एकशो बीजुं द्वार कहेछे. मूलः- उवसमसेणिचउक्कं, जायइ जीवस्स आजवं नूणं ॥ ता पुण दोएगजवे, खवगसेणी पुणो एगा ॥ ७७६ ॥ अर्थः- उपशमश्रेणीनो चतुष्क एटले जीवने उपशमश्रेणी चारवखत, आजवंके० जव जे संसार तेमां नानाजव आश्रयी उत्कृष्टथी उपशमश्रेणी चारवखत आवे. आ शब्द मर्यादापणे करी जाणवो, एनो ए अर्थ जे संसारमांहे वसतांथकां नूनंइति निश्चय थकी जीवने उपशमश्रेणी चारवखत प्राप्तथाय, अने उत्कृष्टथी एकज जवमां बेवार थाय, अने क्षपकश्रेणी वली एकज थाय, इहां ए जाव जेउपशांतमोह क्षीणमोह गुणठाणे निर्ग्रंथपणुंहोय त्यां चार उपशमश्रेणी ने एक क्षपकश्रेणी थाय. तेथी पांचवार थाय इति॥७७६॥द्वार समाप्तः

अवतरणः- साहुविहारसरूवंति एटलें साधुना विहारनुं जे स्वरूप तेनुं एकशो ने त्रीजुं द्वार कहेछे. मूलः- गीयन्नोय विहारो, बीउ गीयन्नमीसिउ जणिउ ॥ इत्तो तइय विहारो, नाणुंन्नाउ जिणवरेहिं ॥ ७७७ ॥ अर्थः- गीत शब्दे जाणवोछे जेणे कृत अकृत लक्षण अर्थ, तेने गीतार्थ बहुश्रुत कहियें. तेमां एक गीतार्थनो विहार ते एकला गीतार्थनोज विहार अने बीजो गीतार्थ मिश्रित विहार ते केटलाक गीतार्थ ने केटलाक अगीतार्थनो विहार जाणवो. इत्तोके० एथकी तइय वियारोके० त्रीजो जे विहार ते नाणुन्नाउके० श्रीतीर्थंकर देवे अनुज्ञातपणे कीधो नथी.

ए विहार द्रव्यादिकना जेद थकी चार प्रकारे छे ते कहेछे मूलः- दव्वउ चक्खुसापेहे, जुगमेत्तं तु खेत्तउ ॥ कालउ जावरीएज्जा, उवउत्तोय जावउ ॥७७८॥ अर्थः- चक्षुयेंकरी जूमिका सारी रीते जोवी ते द्रव्यथकी विहार जाणवो. पछी ते जोइ करीने जुगमात्र जूमि आगे जोईने पगजरतो चाले ते क्षेत्रथकी विहार जाणवो. अने घडी पहोर प्रमुख ज्यांलगे जइ आववुं ते कालथकी विहार जाणवो. अने जे उपयुक्तपणु समस्त द्रव्यादिकने विषे सावधानपणु ते जावथकी विहार जाणवो. द्रव्यथकी विहार न करे पण जावथकी विहार करतो थको आराधक कहेवाय. उक्तंच वाससयंपि वसंता, मुणिणो आराहगा जणिया ॥ इति गाथा द्वयार्थः द्वार समाप्त.

अवतरणः- अपडिबद्धविहारोत्ति एटले अप्रतिबद्ध ते जे रागादिके रहित एवो विहार तेना स्वरूपनुं एकशो चारमुं द्वार कहेछे. मूलः- अपडिबद्धोय सया, गुरूवएसेण सव्वजावेसु ॥ मासाइ विहारेणं, विहरेज्जाहोचियं नियमा ॥७७९॥ अर्थः- अप्रतिबंधविहार ते गुरुना उपदेशथकी सदागुरुनी अनुज्ञा लेइने द्रव्यादि

कनो प्रतिबन्ध वर्जिने मासकल्प करे ते सफल जाणवो. पण अन्यथा एवो विचार करे के अमुक स्थानके अमुक नगरे जाउं, त्यां जला महर्द्धिक श्रावको छे ते उपा र्जिने आपणा करुं जेम ते श्रावको मने त्यागी ने बीजाना जक्त नथाय. एरीते प्र थम द्रव्यने प्रतिबन्धे विहार कस्योथको कार्य साधक थाय नही. तेमज क्षेत्र आश्री कोइ उपाश्रयमां रहेतांथकां अहीया वायरो सारो आवतो नथी तेथी अहीया रहे तां थकां रति थती नथी. पण अमुक क्षेत्रे जली वस्तिछे माटे त्यां जइये. एम जाणीने विहार करेतो बीजो क्षेत्र प्रतिबन्ध थाय. ए पण फोकट जटकवा जेवुं समजवुं पण चारितार्थे न समजवुं. तथा घणा सालीप्रमुख नीपजवाथी हालमां मार्ग सारा थयाछे अने शरद ऋतुछे तेपण विहार करवाने घणी सारीछे एम वि चारी विहार करे तो त्रीजोकाल प्रतिबन्ध थाय. एथी पण अर्थ साधक नथाय. तथा अमुकक्षेत्रे गयाथी मने स्निग्ध मधुरादिक आहारना लाभे करी महारा श रीरने पुष्ट्यादिक सुख थशे आ क्षेत्रमां तो लोकोनो प्रेम सारो नथी अथवा उ द्यत विहारे विहार करतां ए उद्यत विहारी छे एवुं मने लोक कहेशे. अने बी जा अनेरा साधुउने शिथल विहारी कहेशे इत्यादिक जावनायें विहार करता थकां चो थुं जावप्रतिबन्ध पणुं थाय. ए विहारपण निरर्थक छे ए द्रव्यादिक चारे प्रतिबन्ध रहि त जे होय तेनो सफल विहार छे. एरीते यथोचित्तपणे संघयणादिक ने अनुमाने निय माके० निश्चयेथी. मासाइके० मासकल्पादिक विहारें करी यति विहार करे ॥ ७७ए ॥

हवे परनो अभिप्राय आशंकी तेनो आ गाथायें करी उत्तर कहे छे मूलः— मोत्तूण मासकप्पं, अन्नो सुत्तंमि नित्र्उ विहारो ॥ ताकहमाइ ग्गहणं, कज्जं क णाइ जावेणं॥ ७८०॥ अर्थः—ए मास कल्प मूकीने अन्नोके० अनेरो बीजो जे सूत्र मां कह्यो नथी एवो विहार करे ताके० तो मासाइ एटले इहां आदिशब्दनुं ग्रहण कहके० केम आएयुं. कज्जं के० कार्यकरवो इहां ए जाव जे साधु चारित्रवंतें मुख्यपणे मासकल्पे विहार करवो. अने कारण योगे कदाचित् मासकल्पथी उंछे दिवसे पण विहार करवो. तेमज क्यारेक मास थकी उपरांत पण रहेवुं जाव थकी एवुं जणाववाने अर्थे आदिशब्दनुं ग्रहण कर्युंछे. ॥ ७८० ॥

वली एज वात प्रगट करतो कहे छे. मूलः— कालाइ दोस उक्काइ, न दव्वउं एस कीरए नियमा ॥ जावेण तहवि कीरइ, संथारग वच्चया ईहिं ॥ ७८१ ॥ अर्थः— कालादि दोष थकी एटले कालदोष ते दुर्भिक्षादिक थकी तथा क्षेत्रदोष ते संयम योग क्षेत्रना अजावे. वली द्रव्यदोषते जक्तादिक शरीरने योग्य न होय. अने जा

मूलः–सन्नी डुग हीण बत्तीस संगयं तंसयं ढयत्तालं ॥ तंजवा जवगदूर जव आसन्न जवंच ॥ १६०॥ अर्थः–प्रथम सुहुम्मियर गाथाए करी बत्रीश नेद जे पूर्वे कह्या हता तेमांथी संज्ञी ने असंज्ञी ए बे हीन करिए तेवारे त्रीश नेद थाय. ते एक शो ने शोल वैक्रियनी साथे मेलवतां एकशो ने ढेतालीश नेद थायढे. एमां वली कोइ नव्य, कोइ अनव्य, अने कोइ दूरजव्य ते गोशालादिक जाणवा, अने जे कोइ तेज नवे अथवा बीजे त्रीजे नवे मोक्ष जवानाढे ते आसन्नजव्य जाणवा. ॥१६०॥

मूलः–संसारनिवासीणं, जीवाण सयं इमं ढएतालं ॥ अप्पंच पालियवं, सिव सुहकंखीहि जीवेहिं ॥ १६१ ॥ अर्थः–संसारनिवासी जीवोना ए एकशो ने ढेतालीश नेद जाणवा. ते अप्पंचके० पोताना आत्मानीपरे जहममपिअं डुरकं इत्यादिक जाणीने ए एकशो ने ढेतालीश प्रकारना जीवोने जे कोइ शिव सुखनी वांढना करनार जीवोढे तेणे पोतानी आत्मानीपरे पालवा. ॥ १६१ ॥

हवे ए कुलक एज शास्त्रकारनो करेलो एवो जणाववाने अर्थे गुरुना नाम सहित पोतानुं नाम जणावेढे. ते प्रयोजन पूर्वक गाथा कहेढे. मूलः–सिरिअम्म एव मुणिवइ, विणेय सिरिनेमि चंदसूरीहिं ॥ सपरहियडं रइयं, कुलयमिणं जीव संखाए ॥ १६२ ॥ अर्थः–श्रीआम्रदेव नामे मुनिपति जे आचार्य तेना विनेयके० शिष्य श्रीनेमिचंद्रसूरि तेणे पोताने तथा परने अर्थे ए जीव संख्याना कुलकनी रचना करीढे, एटले सत्तर गाथाए करी कुलक वखाण्यो. ॥ १६२ ॥

अवतरणः–कम्माइं अठति एटले आठकर्मनुं वर्णोने पन्नरमुं द्वार कहेढे. मूलः–पढमं नाणावरणं, बीयं पुण दंसणस्स आवरणं ॥ तइ यंच वेयणीयं, तहा चउढं च मोहणिअं ॥१६३॥ पंचममाउं गोयं, ढठं सत्तमगमंतरायमिह ॥ बहुत म पयडित्तेणं, नणामि अठम पए नामं ॥ १६४ ॥ अर्थः–पहेलुं ज्ञान जे मत्यादिक तेने जे आवरे ते ज्ञानावरण कहिए. बीजुं दर्शन जे लोचन तेने आवरे ते दर्शनावरण कहिए. त्रीजुं जेणे करी सुख अने डुःख वेदिये तेने वेदनीय कहिए, तेमज चोथुं जेणेकरी आत्मा मोह पामे तेने मोहनीय कहिए. पांचमुं आयु बांध्युं ढतुं अवश्य उदय आवे तेथी तेने आयुकर्म कहीए. ढठुं गूय ते नाना महोटा शब्देकरीने कहिये ते गोत्र कर्म जाणवुं, सातमुं जे विघ्न करे ते अंतराय कर्म जाणवुं. इहां जिनशासननेविषे, हवे जेनी घणी प्रकृतिढे तेणे करीने नणामिके० कहीशुं, आठमा स्थानकनेविषे जे नमयंतिके० नमाडे तेनाम कर्म. इति गाथा द्वयार्थ.॥१६३॥१६४॥

अवतरणः–तेसिउत्तर पयडीणं अडवन्न सयति एटले आठकर्मनी उत्तर प्रक

तिनुं बशें ने सोलमुं द्वार कहेछे. मूलः—पंचविह नाण वरणं, नवज्ञेया दंसण स्स दोवेण॥अ ठावीसं मोहे, चत्तारिय आउए हुंति ॥ २६५ ॥ गोयम्मि डुन्निपंचं तराय तिगहियं सयं नामे ॥ उत्तर पयडीएवं, अ ठावन्नं सयं होइ ॥२६६॥अर्थः— मतिज्ञानादिक पांच ज्ञानने आवरे तेथी पांच प्रकारे ज्ञानावरणीय जाणवुं. बीजुं चार प्रकारना दर्शनने जे आवरे तथा पांच प्रकारनी निद्रा जेनाथकी उदय आवे ते नवप्रकारे दर्शनावरणीय कर्म जाणवुं. त्रीजुं साता अने असाताना नेद थकी बे प्रकारे वेदनीय कर्म जाणवुं. चोथुं सोल कषाय अने नव नोकषाय तथा त्रण दर्शन मोहनीय मली अठावीस प्रकारे मोहनीय कर्म जाणवुं. नरकादिक गतिना नेद थकी आयुकर्म चारनेदे जाणवुं. उंच नीचना नेद थकी गोत्र कर्म बे नेदे जाणवुं. दानांतरायादिकना नेद थकी अंतराकर्म पांचप्रकारे जाणवुं. अने नाम कर्म एकशोने त्रण प्रकारे जाणवुं. ॥ २६५ ॥ २६६ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिना प्रत्येक नाम कहेछे. मूलः—मइसुय उहीमण केवलाणि जीवस्स आविरिज्जंति ॥ जस्स प्पनावउत्तं, नाणावरणं नवेकम्मं ॥२६७॥ अर्थः— चारप्रकारनो व्यंजनावग्रह अने अर्थावग्रह, ते पांचइंद्रिय अने छठुं मन ते अवग्रह, इहा, अपाय ने धारण ए एकेकना चार चार नेद करतां छ चोक चोवीश नेद थायछे, तेनी साथे चार व्यंजनावग्रह नेला करिये तो मति ज्ञानना अठावीश नेद थायछे. अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, संज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, असम्यक्श्रुत, सादिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यवसितश्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगमिकश्रुत, अंगप्रविष्टश्रुत, अनंगप्रविष्टश्रुत, एरीते चउदप्रकारनां श्रुतछे. अथवा पर्यायश्रुतादिक वीशप्रकारनां श्रुत ते आवीरीतेछे. पर्यायश्रुत, पर्यायसमासश्रुत, अक्षरश्रुत, अक्षरसमासश्रुत, पदश्रुत, पदसमासश्रुत, संघातश्रुत, संघातसमासश्रुत, प्रतिपत्तिश्रुत, प्रतिपत्तिसमासश्रुत, अनुयोगश्रुत, अनुयोगसमासश्रुत, प्राभृतश्रुत, प्राभृतसमासश्रुत, प्राभृतप्राभृतश्रुत, प्राभृतप्राभृतसमासश्रुत, वस्तुश्रुत, वस्तुसमासश्रुत, पूर्वश्रुत, पूर्वसमासश्रुत, एरीते वीशनेद श्रुतज्ञानना जाणवा, तथा अनुगामि, अननुगामि, वर्द्धमान, हीयमान, प्रतिपाति ने अप्रतिपाति ए छ नेद अवधिज्ञानना जाणवा. तथा रूजुमति अने विपुलमतिना नेद थकी बे प्रकार मनपर्यवज्ञानना जाणवा, अने केवल ज्ञाननो एकज नेद छे. अन्य ज्ञानोनेविषे जेटलुं क्षयोपशम होय तेटलुं ज्ञान थायछे, अने सर्वथा ज्ञानावरणीयना क्षयथकीज जेनुं उपजवुं थाय ते केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानना नेद सामान्ये कह्या. हवे गाथार्थ कहेछे. जीवस्सके०

जीवने ए ज्ञानने आवरिये रुंधिये जेना प्रजावथकी ते ज्ञानावरणीय कर्म कहिये.

मूलः—नयणे यरोहि केवल, दंसण आवरण यं नवे चउहा ॥ निद्दापयला हि छहा, निद्दाय डुरुत्त थीणद्धी ॥ २६८ ॥ अर्थः—नयन शब्दे चक्षु तेनुं आवरण जे लोचन तेने आवरे ते चक्षुदर्शनावरणीय; अने इतर जे बीजी अन्य इंद्रियनुं ज्ञान हणे ते अचक्षुदर्शनावरणीय. अवधिदर्शनने आवरे ते अवधिदर्शनावरण कहे वाय. एम केवलदर्शनने आवरे ते केवल दर्शनावरण. एरीते दर्शनावरणीय चार नेदे थाय. हवे पांच निद्रा कहेछे. त्यां प्रथम सुखे चीपटीना वजाडवा थकी जागी उठे ते निद्रा, बीजी घणा धका थकी जागृत थाय ते निद्रानिद्रा; त्रीजी डुरुक्त ते एक निद्रा बीजी निद्रानिद्रा एम इहांपण द्विरुक्त प्रचला ते बेठा अने उजाथका निद्रा आवे ते प्रचला समजवी; तथा चोथी चालतां हालतां निद्रा आवे ते प्रच ला प्रचला जाणवी. पांचमी स्त्यानर्द्धि ते जे दिवसे वात चिंतवी होय ते रात्रिए करे, राजाना हस्तिना दंतुसल काढनार शिष्यनीपरे जाणवुं. ए निद्रामां वासुदेवना बलथकी अर्द्ध बल होय छे. ए नव प्रकार थया ॥ २६८ ॥

मूलः—एयमिह दरिसणा वरण मेयमा वरइ दरिसणं जीवे ॥ सायमसायंच छहा, वेयणियं सुह डुहनिमित्तं ॥ २६९ ॥ अर्थः—ए नव प्रकारनुं दर्शनावरण ते जीवनो पूर्वोक्त दर्शनगुणछे तेने आवरे ढांकी मूके. वली शाता अने अशाताना जे दे करी बे प्रकारे वेदनीय कर्म ते सुख तथा डुःखनुं निमित्त कारण छे. ॥ २६९॥

हवे मोहनीयकर्म कहेछे. मूलः—कोहो माणो माया, लोजोणंताणुबंधिणो च उरो ॥ एवमप्पच्चरकाणा, पच्चरकाणाय संजलणा ॥ २७० ॥ अर्थः—क्रोध, मान, माया अने लोज ए चार जे अनंता संसारनुं अनुबंध करे ते जेने उत्पन्न थया छतां ज्यांसुधी ते प्राणी जीवतुं रहे त्यांसुधी तेनीसाथे रहे, अने नरकगतिना कारण थाय. स म्यक्त्वनुं रुंधन करे एटले सम्यक्त्व आववा न आपे. तेमां अनंतानुबंधी क्रोध ते प र्वतनी स्फुट समान जाणवो अने अनंतानुबंधी मान ते पाखाणना थांजला स मान जाणवुं. तथा अनंतानुबंधी माया ते महानिवड वांशना मूल समान जाण वी, तथा अनंतानुबंधि लोज ते क्रमिना रंग समान जाणवो. ॥ २७० ॥

एवंके० एरीते वली अप्रत्याख्यानीयानावरण जे अणुव्रतरूप पच्चखाणने आ वरे एना उदयथी जीव कोइ पच्चखाण करी शके नही ए उपना थका एकवर्ष सु धी रहेछे, तिर्यंचनी गतिना कारण थाय तेमां अप्रत्याख्यानी क्रोध ते पृथ्वीना स्फुट समान जाणवो, अने अप्रत्याख्यानी मान ते अस्थि समान जाणवुं, वली

अप्रत्याख्यानी माया ते मेंढाना शिंगडा समान जाणवी. तथा अप्रत्याख्यानी लोभ ते कादव समान जाणवो.

हवे जे जीवना सर्व विरतिरूप गुणने आवरे ते प्रत्याख्यानावरण जाणवुं, ए उपन्या छतां चार मास सुधी रहेछे, ए मनुष्यनी गतिनुं कारण थाय छे. तेमां प्रत्याख्यानी क्रोध ते वेलुनी रेखा समान जाणवो, अने प्रत्याख्यानी मान ते काष्ठ समान जाणवुं. तथा प्रत्याख्यानी माया ते गोमूत्रिका समान जाणवी. वली प्रत्याख्यानी लोभ ते खंजन समान जाणवो.

हवे संज्वलन ते किंचितमात्र दीपे, उपरांत उपशमि जाय. ते उपन्या छतां घणामां घणो रहे तो पन्नर दिवससुधी रहे छे. देवनी गतिनुं कारण थाय, यथाख्यात चारित्रनुं रुंधन करे. तेमां संज्वलनो क्रोध ते पाणीनी रेखासमान जाणवो. अने संज्वलन मान ते नेत्रनी लाकडी समान जाणवुं; अने संज्वलननी माया ते वृक्षनी अवलेहिका समान जाणवी अने संज्वलननो लोभ ते हलदना रंग समान जाणवो.

मूलः—सोलस इमे कसाया, एसो नव नोकसायसंदोहो ॥ इत्थी पुरिस नपुंसग, रूवं वेयत्तयं तंमि ॥२७१॥ अर्थः—ए सोल कषाय कह्या. हवे वली नव नोकषायनो संदोहके० समूह देखाडेछे. इत्थी शब्दे स्त्री, तेनो जे वेद ते स्त्रीवेद जाणवो. जेना उदयथकी पुरुषप्रत्ये अभिलाष थाय छे. बीजो पुरुषवेद ते, जेना उदयथकी स्त्रीप्रत्ये अभिलाष थाय ते जाणवो: त्रीजो नपुंसकवेद, जेना उदयथकी पुरुष तथा स्त्री बंने प्रत्ये अभिलाष थाय. कारिस, तृण, ने नगर दाह समान अनुक्रमे एवे स्वरूपे ए त्रणे वेद जाणवा. ॥२७१॥

मूलः—हासरइ अरइ भय सोयं दुगंछ त्तिहास छक्कमिमं ॥ दंसणि तिगंतु मिछ,त्त मीस संमत्त जोएण ॥ २७२ ॥ अर्थः—कारण उपन्ये अथवा कारण उपन्या विना नयन विकार उपजे, हास्य आवे, ते हास्यमोहनीय जाणवी. तेमज कोइक सुखनुं कारण उपन्ये अथवा कारण उपन्याविना स्वभावे सुखनुं वेदवुं ते बीजुं रतिमोहनीय कर्म जाणवुं. त्रीजुं ए थकी विपरीत ते अरतिमोहनीयकर्म जाणवुं. चोथुं इह लोकादिक सकारण अथवा कारण विना मनमां भय उत्पन्न थाय ते भयमोहनीयकर्म जाणवुं. पांचमुं इष्टवियोगादिक जनित अश्रुपात शोक उपजे ते शोकमोहनीयकर्म जाणवुं. छठुं बीभत्सगंधने योगे प्राणीने जुगुप्सा उपजे ते जुगुप्सामोहनीयकर्म जाणवुं. ए हास्य षट्क जाणवुं. हवे दर्शन त्रिक ते, मिथ्यात्व मिश्र ने सम्यक्त्वरूप अविशुद्ध अर्द्धविशुद्ध ने शुद्ध पुंजत्रिक रूप जा

णवा. अनुक्रमे मिथ्यात्व ते श्रीवीतराग प्रणीत तत्वने सर्दहे नही, अने मिश्रने प्रन्नावे श्री जिनोक्त तत्व उपर राग पण न होय अने द्वेष पण न होय. सम्यक्त्व ते जीवादिक तत्वनेविषे रुचिनुं करवुं. ए समकितने योगे मल्या त्रण थाय. ॥२७२॥

मूलः—इयमोह अठवीसा, नारय तिरि नर सुराउय चउक्कं ॥ गोयं नीयं उच्चं,च अंतरायंतु पंचविहं ॥ २७३ ॥ अर्थः—एरीते मोहनीयकर्मनी अठावीश उत्तर प्रकृति कही अने नारकी, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवताना आयुष्यना नेद संबंधी आयुकर्मनी उत्तरप्रकृति चार कहीले. उंच अने नीचना नेदथकी गोत्र कर्मनी उत्तर प्रकृति बे प्रकारेज जाणवी. अने अंतराय पांच प्रकारेले तेज सूत्रकार कहेले.॥२७३॥

मूलः—दाउं नलहे लाहो, न होइ पावइ न नोग परि नोगो ॥ निरउविय सत्ता होइ अंतराय प्पन्नावेण ॥ २७४ ॥ अर्थः—बति सामग्रीए तथा बता पात्रने संयोगे दान आपी शके नही ते दानांतराय जाणवुं. बति वस्तुए आपनार आपतो होय पण जेना उदयथी प्राणीने ते वस्तुनी प्राप्ति न थाय ते लाजांतराय जाणवुं. नोगनी बति सामग्रीये पण नोगवी शके नही ते नोगांतराय जाणवुं. तेमज नली गृहणी प्रमुख उपन्नोगनी सामग्री बतिए पण उपन्नोगवी न शके ते उपन्नोगांतराय जाणवुं. शरीरे गाढो निरोगी पुष्ट बतो पण अशक्त, तृण मात्र नांजी न शके ते वीर्यांतरायनो प्रन्नाव जाणवो. ॥२७४॥

हवे नामकर्मनी प्रकृति जेटले प्रकारे थाय ते अनुक्रमे देखाडेले. मूलः—नामे बायालीसा, नेयाणं अहव होइ सत्तठी ॥ अहवा विह्नु तेणउई, तिग अहिय सयं हवइ अहवा ॥ २७५ ॥ अर्थः—नामकर्मनेविषे बेतालीश उत्तरप्रकृतिना नेद अथवा सडसठ होयले, अथवा वली त्र्याणु पण थायले, अथवा एकशोने त्रण पण थायले, तेमां प्रथम बेतालीश प्रकृति कहेले. ॥ २७५ ॥

मूलः—पढमा बायालीसा, गइ जाइ सरीर अंगुवंगेय ॥ बंधण संघायण संघयणय संगण नामंच॥२७६॥अर्थः—प्रथम बेतालीश प्रकृति ते आवीरीते गति,जाति, तनु ते, औदारिकादिक, अंगोपांग, बंधन, संघातन, संघयण, संस्थान, नाम

मूलः—तह वन्न गंध रस फास नाम अगुरु लहुअंच बोधवं ॥ उवघाय पराघाया, णुपुव्विकसास नामंच ॥ २७७ ॥ आयावुज्जोयविहाय गई तसथावराजिहाणं च ॥ बायर सुहुमं पज्जत्ता पज्जत्तंच नायवं ॥२७८॥ पत्तेयं साहारण, थिर मथिर सुन्नासुन्नंच नायवं ॥ सून्नगदून्नगनामं, सूसर तह दूसरंचेव ॥ २७९ ॥ आएज्जमणाइज्जं, जसकित्ती नाम अजस कित्तीय ॥ निम्माणं तिबयरं, नेयाणवि हुंतिमेन्ने

या ॥ १७० ॥ अर्थः—तेमज वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, आनुपूर्वी, श्वासोश्वासनाम, आतप, उद्योत, विहायोगति, त्रस, थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, जाणवा. प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, जाणवुं. सुभग, दुर्भगनाम, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्त्तिनाम, अयशःकीर्त्तिनाम, निर्माण अने तीर्थंकरनामकर्म, ए बेतालीश भेदनां नाम कह्यां.॥१७०॥

हवे ए बेतालीश भेदना वली प्रतिभेद थाय ते कहेछेः—मूलः—गइ होइ चउपयारो, जाईविय पंचहा मुणेयव्वा ॥ पंचय हुंति सरीरा, अंगोवंगाइ तिन्नेव ॥१७१॥ अर्थः—गम्यते एटले जवुं प्राणी ए जे एनेविषे एटला माटे एने गति कहिये. ते देवादिकना भेदथकी चार प्रकारे छे. जाति ते एकेंद्रियादिकना भेद थकी पांच प्रकारे जाणवी. शरीर ते औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस ने कार्मण एपांच जाणवां. अंगोपांग ते तेजस तथा कार्मण ए बे शरीरने होतां नथी, माटे औदारिकादिक त्रण शरीरनांज होय छे तेथी त्रणज जाणवां. ॥१७१॥

मूलः—छस्संघयणा जाणसु, संठाणा विय हवंति छच्चेव ॥ वन्नाईण चउक्कं, अगुरुलहु वघाय परघायं ॥ १७२ ॥ अर्थः—संहनन ते वज्रऋषभ नाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका, अने सेवार्त्तरूप ए अस्थि रचना विशेष जाणवां. संस्थान ते समचतुरस्र, न्यग्रोध, सादि, वामन, कुब्ज अने हुंडक एवे नामे छ होयछे. वर्णादिक चार ते आवीरीते. वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श. अगुरुलघु ते जेना उदयथकी प्राणीनुं शरीर भारी अने हलवुं पण न थाय तेअगुरु लघु. अने उपघात नाम कर्म तेने कहिए; जेना उदयथी जीव उपघात एटले विनाश पामे ते विनाश पण पोतानाज शरीरे करी थाय. जेम पडजीभप्रमुख निकले, ते जाणवुं. पराघात नाम कर्म ते जेना उदयथी पोताथकी बलवंत जे होय तेने पण दुर्निरीक्ष्य होय; कोइ सन्मुख जोइ शके नही, कोइ सांमो बोली शके नही.॥१७२॥

मूलः—अणुपुव्वी चउभेया, उस्सासं आयवंच उज्जोयं ॥ सुहअसुहा विहगगई, तसाय वीसंच निम्माणं ॥ १७३ ॥ अर्थः—आनुपूर्वीपण गतिनीपरे चार प्रकारे जाणवी. पण एटलुं विशेषछे के जीवे जे गतिनुं आयुष्य बांध्युं होय ते गतिनेविषे दोरिए बांधि वृषभादिकने जेम खेंची लइ जइए तेम खेंचीने लइ जाय ते चारगति आश्री चार अनुपूर्वी जाणवी. जेना उदयथकी जीव श्वासोश्वास लेवानी समर्थाइए करी सहित थाय ते उश्वास नाम कर्म जाणवुं. जेना उदयथकी पोते अतापवंत थको पण अनेरा जीवोने ताप उपजावे. जेम सूर्यनुं मांडलुं

पृथ्वी कायिक जीव ते पोते शीतलथका परने ताप उपजावे छे, तेनी परे ताप उपजावे ते आतप नाम कर्म जाणवुं, जेना उदयथकी जीवना अंग उद्योतवंत थाय; जेम देवता यतिने उत्तरवैक्रिये ज्योतिषि तथा खजूआ प्रमुखना शरीर दीपे ते उद्योत नाम कर्म जाणवुं. शुजने अशुज विहायो गति-तेमां शुज विहायो गतिना उदय थकी गज वृषजादिकनी परे जली गति थायछे. अने अशुज विहा योगतिना उदयथकी खर शूकरादिकनी परे माठी गति थायछे.

त्रसादिक वीश ते त्रस दशक तथा स्थावर दशक. तेमां त्रसनाम कर्मना उद यथकी प्राणी बे इंद्रियादिक जाव पामे; बादरना उदयथकी जीव बादरपणुं ल हे. जे पोतपोतानी पर्याप्ति पूरण करे ते पर्याप्तनाम कर्म, प्रत्येक जाव प्राणी पामे ते प्रत्येकनामकर्म, जेना उदयथकी दांत प्रमुखने स्थिरपणुं थाय ते स्थिर नाम कर्म, जेना उदयथी नाजीनी उपरना अंगने शुजपणुं होय ते शुजनामकर्म, जेना उदयथकी समस्त प्राणीने इष्टथाय ते सौजाग्यनाम कर्म, जेना उदयथकी मनोहर स्वर थाय ते सुस्वरनाम कर्म, जेना उदयथकी तेनुं वचन समस्त लोकने ग्राह्य थाय ते आदेयनाम कर्म अने जेना उदयथकी यशःकीर्त्तिए करीसहित थाय ते यशःनाम कर्म. ए त्रस दशको कह्यो. ए थकी विपरीत स्थावर दशक छे. जेना उदयथकी जीव पृथ्व्यादिकपणु पामे ते स्थावर नामकर्म, एम सर्व दशेबोल विपरीतपणे जाणवा. एटले सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुज ते ना जीथकी नीचे पादादिक, अवयव, अशुज होय, दौर्जाग्य ते डुर्जाग्यना उदयथकी जीव डुर्जाग्य थाय, डुस्वर, अनादेय, अयश ते कोइलुं घणुज जलुं कस्या थका पण यश मले नही. ए थावर दशक कह्यो. निर्माण ते सूत्रधारनी परे आप आ पणा अंग जे ठामो ठाम रहे ते जाणवुं. ॥ २८३ ॥

मूलः-तिछयरेणं सहिया, सत्तठीए हवंति पयडीउ ॥ सम्मामीसेहिविणा, तेव न्ना सेस कम्माणं॥ २८४ ॥ अर्थः-ए पूर्वोक्त प्रकृतिने तीर्थंकरनाम कर्मे करी सहित करिए तेवारे नामकर्मनी अडसठ प्रकृति थायछे. तथा शेष सात कर्मनी जे पंचावन प्र कृति छे तेमांथी सम्यक्त्व अने मिश्र विना शेष कर्मनी त्रेपन प्रकृति थायछे. ॥ २८४ ॥

मूलः-एवं वीसुत्तरसय, बंधेपयडीण होइ नायवं ॥ बंधण संघायाविय, सरी रगहणेण इह गहिया ॥ २८५॥ अर्थः-एम अडसठ तथा त्रेपन मेलव्याथकी आठे कर्मनी एकशो ने वीश प्रकृति बंधनेविषे थायछे ते जाणवी. इहां कोइ कहेशेके प्रथ म जेवारे बेतालीश प्रकृति कही तेवारे तेमां बंधन अने संघातन प्रकृति कही; अ

ने इमणां सडसठमांहे ते केम गणता नथी? तेने कहेछे के बंधन ने संघातन ते शरीरने ग्रहणे इहां लीधाछे. माटे ए पृथक् ग्रहण कर्याछे ॥ २७५ ॥

हवे त्याणु भेद देखाडेछे. मूलः—बंधण भेया पंचव, संघाया विय हवंति पंचेव ॥ पणवन्ना दोगंधा, पंचरसा अठ फासाय ॥२७६॥ अर्थः—बंधनना पांच भेद. त्यां जे औदारिकादिक पुद्गल बांध्याछे, अने बांधिए छइए तेने तेजस अने कार्मण साथे जेम लाख संश्लेष द्रव्य तेनी परे मेलववुं ते औदारिक बंधन. एमज वैक्रिय, आहारक, तेजस अने कार्मणना भेदे करी पांच प्रकारे जाणवुं. तेम संघात ते पण पांच प्रकारे थायछे. त्यां जेम दंताली तृणना समूहने एकठा करेछे तेम जे औदारिकादिक पुद्गलने एकठा करेछे ते संघात कहिए. ते औदारिकादिक पांच जाणवा; अने वन्नाके० वर्ण पांच. कृष्ण, नील, रक्त, पीत, अने श्वेतना भेदे जाणवा. सुरभी अने दुरभी ए बे गंध जाणवी. तिक्त, कटु, कसायल, आम्ल ने मधुर ए पांच रस जाणवा. गुरु, लघु, मृदु, खर, शीत, उष्ण, स्निग्ध ने रुक्ष, ए आठ स्पर्श जाणवा.

मूलः—दस सोलस छवीसा, एया मेलेवि सत्त सहीए ॥ तेणउई होइ तउ, बंधण भेयाउ पन्नरस ॥ २७७ ॥ अर्थः—बंधन पांच अने संघात पांच ए दश यथा तथा सोलसके० सोल ते आवीरीते के वर्णादिक वीश प्रकृतिथकी सामान्यपणे प्रथमनी सडसठमां वर्ण चतुष्क आवी गयुंछे ते, वीशमांथी वर्ण चतुष्क काढी नाखिये तेवारे सोल प्रकृति रहेछे; ते पूर्वोक्त पांच बंधन ने पांच संघात साथे मेलवतां छवीश थाय. ते वली सडसठ साथे मेलवी थकी त्राणुं थाय छे.॥२७७॥

हवे एकशोने त्रण भेद देखाडेछे. बंधनना पन्नर भेद ते आवीरीते थाय छे. मूलः—वेउव्वाहारो रालियाण संगतेय कम्मजुत्ताण ॥ नवबंधणाणिइयर, दुसहियाणं तिन्नि तेसिंच॥२७८॥ अर्थः—वैक्रिय, आहारक ने औदारिक एना संगके० पोत पोताना त्रण. ते आवीरीते, वैक्रिय वैक्रिय बंधन, आहारक आहारक बंधन, औदारिक औदारिक बंधन, ए त्रण यथा तथा तेजस ने कार्मणे युक्त ते आवीरीते. वैक्रिय तेजस बंधन, वैक्रिय कार्मण बंधन, आहारक तेजस बंधन. आहारक कार्मण बंधन, औदारिक तेजस बंधन, ने औदारिक कार्मण बंधन ए सर्व मली नव बंधन थयां. अने इतर ते तेजस कार्मणरूप, ए बे सहित त्रण थाय, ते आवीरीते, वैक्रिय तेजस कार्मण बंधनरूप, आहारक तेजस कार्मण बंधन, औदारिक तेजस कार्मण बंधन ए बार थया. तिन्नितेसिंके० वली तेजस ने कार्मणना त्रण ते आवी रीते ; तेजस तेजस बंधन, तेजस कार्मणबंधन, कार्मण कार्मण बंधन ए पन्नर थया.

मूलः—सव्वेहिं वि छवेहिं, तिगअहिय सयंतु होइ नामस्स ॥ इय उत्तरपयडीणं, कम्मठग अठवन्नसयं ॥ १७७ ॥ अर्थः—एम सर्वे ए पन्नर बंधन ते पूर्वोक्त पंचक रहित करी मेलविये तेवारे एकशोने त्रण नाम कर्मनी उत्तर प्रकृति थायछे, एम उत्तर प्रकृति सर्वे अष्टकेण आठेकर्मनी मली एकशोने अठावन्न थायछे. इति पंचविंशति गाथार्थ.

अवतरणः—बंध उदय उदीरणा सत्ताणंकिंपिसरूवंति एटले कर्मना बंध उदय उदीरणा अने सत्तानुं किंचित् स्वरूप कहेवानुं बशेने सत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः—सत्तठछेग बंधा, सत्तुदया अठसत्तचत्तारि ॥ सत्तठछ पंच दुगं, उदीरणा ठाण संखेयं ॥ १७० ॥ अर्थः—पेहेलो सात, आठ, छ अने एक ए चार स्थानक बंधनेविषे होय, सत्ता अने उदयनेविषे, आठ, सात अने चार ए त्रण स्थानक होय. तथा सात, आठ, छ, पांच अने बे उदीरणानेविषे होय. ए स्थानकनी संख्या कही. ॥ १७० ॥

मूलः— बंधेठ सत्तणाउग, छविह मोहाउ इगविहसायं ॥ संतोदएसु अठउ, सत्त अमोहा चउ अघाई ॥ १७१ ॥ अर्थः—बंध ते जीव आठकर्मनुं करे, अने जेवारे सात कर्मनुं बंध करे, तेवारे आयु वरजीने करे, जेवारे छ कर्मनुं बंध करे तेवारे मोहनीय तथा आयु ए बे वरजीने शेष छनुं बंध करे. जेवारे एकनुं बंध करे तेवारे एक सातावेदनीयनुंज बंध करे. एवं बंधस्थाननी संख्या कही. हवे संतोदएसुकेण सत्ता अने उदयनेविषे कहिए छैए. त्यां सत्ताये अने उदये आठ कर्म होय. अने मोहनीयरहित सात होय. अने चार घनघातिकर्मे रहित होय तेवारे शेष चार सत्ता अने उदये थाय. ॥ १७१ ॥

हवे उदीरणाना स्थानकनुं स्वरूप कहेछे. मूलः—अठउदीरइसत्तउ, अणाउछविह मवेयणियआउ ॥ पण अवियण मोहाउग अकसाइ नाम गोत्तदुगं ॥ १७२ ॥ अर्थः—मिथ्यात्व गुणठाणाथी मांडीने प्रमत्तगुणठाणासुधी जीव निरंतरपणे आठकर्मनी उदीरणा करे, अने केवल जे नवसंबंधी आयुष्य अनुनवेछे ते जेवारे आवलिकाविशेष थाय तेवारे आयुष्यने आवलिका प्रविष्टपणाये करीने उदीरणानो अनाव. तेथी सात कर्मनुं उदीरक होय. वली सम्यक् मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके प्रवर्त्तमान थको सदा आठ कर्मनुं उदीरक होय; जे कारण माटे आवलिका विशेष आयुष्यछते मिश्रगुण ठाणानो असंनव छे, ते आवीरीते अंतरमुहूर्त अवशेष आयुष्ये मिश्र गुणठाणाथकी पड्यो थको जीव सम्यक्त्वे अथवा मिथ्यात्वे जाय माटे; तथा अप्रमत्त अपूर्वकरण अने अनिवृत्ति बादर ए गुणठाणानेविषे वेदनीय अने आयुष्य वरजी शेष छ कर्मनुं उदीरक थाय. वेदनीय ने आयुषनेविषे

अति विशुद्ध अध्यवसायपणे करी उदीरणायोग्य अध्यवसाय स्थानकनो अभाव छे, पण सूक्ष्म संपरायगुणठाणे ज्यांलगे मोहनीय आवलिकाविशेष नथाय त्यां लगे आवलिकाविशेषे मोहनीयने उदीरणाना अभावथकी छ कर्मनुं उदीरक थाय.

अने उपशांत मोहे वेदनीय, मोहनीय तथा आयु वर्जी पांचनुं उदीरक, त्यां वेदनीयने आयुषानुं कारण प्रथम कह्युं; अने मोहनीयना उदयना अभावथकी उदिरे नही, तथा अकषाइ क्षीणमोह बारमे गुणठाणे ज्यांसुधी ज्ञानावरण दर्शनावरण अंतराय आवलिका प्रविष्ट न होय, त्यांलगी पांचनुं उदीरक; अने ते जेवारे त्रणे आवलिका प्रविष्ट थाय तेवारे तेनी उदीरणाना अभावथकी नाम अने गोत्र ल क्षण बे कर्मनुंज उदीरणाहार होय. त्यां कारण ए छे के घातीयां चारकर्ममूलथी क्षीण थयां, तेहनी उदीरणा रही नथी; अने वेदनीयने आयुषानी पण उदीरणा न थाय; त्यां कारण पूर्वोक्तज जाणवुं. अने अयोगीगुणठाणे योगना अभावथकी उदीरणा न करे. अजोगि अणुदीरगोजयवं इति वचनात्. ॥ २९२ ॥

हवे सामान्यपणे बंधादिकनेविषे प्रकृतिनी संख्या कहेछे. मूलः—बंधेवि सुत्त रसयं, सयबावीसंतु होइ उदयंमि॥ उदीरणाए एवं, अडयाल सयंतु संतंमि॥ २९३॥ अर्थः—नवा कर्मनुं ग्रहण ते बंध, तेने सामान्यपणे एकशोने वीश प्रकृतिनो बंधछे. विपाकेकरी कर्मना पुद्गलनुं वेदवुंछे ज्यां, तेने उदय कहिए. त्यां एकशोवीश कर्म प्रकृति उदयावलिकाये थाय. अणपाम्या कर्मने उदयावलिकानेविषे आणवो ते उदीरणा. त्यांपण एमज एकशो ने बावीश कर्मप्रकृतिनी उदीरणा थाय. सत्ता तेने कहिए जे छतानो भाव ते सत्ता कर्मनी स्थिति पोतेज जाणवी. ते एकशो ने अठावन, तेमां पंदर बंधनछे तेमांथी दशबंधन जूदां काढीए, शेष पांच बंधन राखिए तेवारे एक शो ने अडतालीश प्रकृति सत्ताए जाणवी. एनो यंत्र देखाडेछे. इतिगाथा चतुष्टयार्थ ॥

ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ९	वेदनी २	मोहनी २६	आयु ४	नाम ६७	गोत्र २	अंतराय ५	बंधनेविषे १२०
ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ९	वेदनी २	मोहनी २८	आयु ४	नाम ६७	गोत्र २	अंतराय ५	उदय अने उदीरणाए १२२
ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ९	वेदनी २	मोहनी २८	आयु ४	नाम ९३	गोत्र २	अंतराय ५	सत्तानेविषे १४८

अवतरणः—कम्मठिई साबाहत्ति एटले कर्मनो अबाधाकाल तेणेकरी सहित कर्मनी स्थितिनुं वर्णने अढारमुं द्वार कहेछे. मूलः—मोहे कोडाकोडी, सत्तरी वीसं नामगोयाणं ॥ तीसयराण चउण्हं, तेत्तीस यराइं आउस्स ॥ १९४ ॥ अर्थः—मोहनीयकर्मनी स्थिति सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी तथा नाम अने गोत्रनी वीश कोडाकोडी; अने इतरके० बीजा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय अने अंतराय ए चार कर्मनी प्रत्येके त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. अने आयुकर्मनी तेत्रीश सागरोपमस्थिति जाणवी. ॥ १९४ ॥

मूलः—एसा उक्कोस ठिई, इयरा वेयणिय बारसमुहुत्ता ॥ अठनाम गोत्ते सुसेस ए सुंमुहुत्तंतो ॥ १९५ ॥ अर्थः—ए आठकर्मनी उत्कृष्ट स्थिति कही. अने इयराके० इतर ते जघन्य स्थिति तो वेदनीय कर्मनी बार मुहूर्त्त, अने नाम तथा गोत्रकर्मनी आठ आठ मुहूर्त्त. शेष ज्ञानावरणीय, दर्शनावरनीय, मोहनी, आयु ने अंतराय ए पांचकर्मनी जघन्यस्थिति एक एक अंतरमुंहूर्त्तनी जाणवी. ॥ १९५ ॥

मूलः—जस्स जइ कोडिकोडीउ तस्स तत्तिय सयाणि वरसाणि ॥ होइ अबाहाकालो, आउंमि पुणो नवति भागो ॥१९६॥ अर्थः—जे कर्मनी जेटली कोडाकोडी स्थिति तेने तेटला वर्षना शैकडा अबाधाकाल होय, अने आयुकर्मनो अबाधाकाल भवनो त्रीजो भाग होय. केमके आयुष्यनो वंध वर्तमान आयुषाने त्रीजे भागे थाय. यडुक्तं ॥ सोवक्कमाउ आपुण, सेसति भागे हवा नवमभागे ॥ सत्तावीसे मेवा, अंत मुहुत्तंति मेवावि ॥ १९६ ॥ इति गाथा त्रयार्थ.

अवतरणः—बायालीसाउ पुन्नपयडीउत्ति एटले बेंतालीश पुंण्यप्रकृतिनुं बशो ने ओगणीशमुं द्वार वखाणेछे. मूलः—सायं उच्चागोयं, नरतिरि देवाउ नाम एयाउ॥ मणुअदुगं देवदुगं, पंचिंदिअ जाइ तणुपणगं ॥ १९७ ॥ सातावेदनीय, उच्चैर्गोत्र, मनुष्यायु, तिर्यंचायु, अने देवायु, हवे एमां नाम कर्मनी जेटली प्रकृति छे ते कहेछे. मनुष्यगति, मनुष्यानुरूपूर्वी, देवगति, देवानुपूर्वी; पंचेंद्रियजाति, औदारिक वैक्रिय, आहारक, तेजस ने कार्मण ए पांच शरीर जाणवां. ॥ १९७ ॥

मूलः—अंगोवंगतिगंपिय, संघयणं वज्जरिसहनारायं ॥ पढमंचिय संठाणं, वन्नाइ चउक्क सुपसडं ॥१९८॥ अर्थः—आद्यना त्रण शरीरना अंगोपांग, वज्र ऋषभनाराच संघयण, समचतुरस्र संस्थान, सुप्रशस्त के० भलो वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श.॥१९८॥

मूलः—अगुरुलहु पराघायं, उस्सासं आयवंच उज्जोयं ॥ सुपसडा विहगगई, तस्साइ दसगंच निम्माणं ॥ १९९ ॥ अर्थः—अगुरुलघु, पराघात, श्वासोश्वास,

आतप, उद्योत, सुप्रशस्त, शुभविहायोगति, त्रसदशक, ते आवीरीते. त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, शुभग, सुस्वर, आदेय, ने यश ए त्रसदशक अने निर्माण.

मूलः–तिथ्थयरेणं सहिया, पुन्नप्पयडीउ हुंति बायाला ॥ सिवसिरि कडरिकयाणं, सयावि सत्ताण मेयाउ ॥ ३०० ॥ अर्थः–तीर्थंकरनाम कर्म सहित बेतालीश पुण्य प्रकृति होयछे ते मोक्ष लक्ष्मीए जेनेसन्मुख जोयुंछे. एवा प्राणी तेने ए सदा थायछे.

अवतरणः–बासीई पाव पयडिउत्ति एटले ब्यासी पाप प्रकृतिनुं बशोने वीशमुं द्वार कहेछे. मूलः–नाणंतराय दसगं, दंसण नवमोह पयइ छवीसा ॥ अस्सायंनिर याउ, नीयागोएण अडयाला ॥ ३०१ ॥ अर्थः–मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनपर्यवज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, तथा चार दर्शन ने पांच निद्रामली नवप्रकारे दर्शनावरण कर्म. तथा सम्यक्त्वने मिश्रटाली शेष छवीश प्रकृति, मोह नीयनी असातावेदनीय, नरकायु, ने नीचैर्गोत्रेकरी सहित अडतालीश भेद थया.

मूलः–नरयदुगं तिरियदुगं, जाइ चउक्कंच पंच संघयणा ॥ संठाणा विय पंचउ वन्नाइ चउक्क मपसत्थं ॥ ३०२ ॥ अर्थः–नरकगति, नरकानुपूर्वी, तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेंद्रियजाति, बेइंद्रियजाति, त्रेंद्रियजाति, चउरेंद्रियजाति, ऋषभ नाराचादिक पांच संघयण, न्यग्रोधादिक पांच संस्थान, अप्रशस्त वर्णादिक चार.

मूलः–उवघाय कुविहयगई, थावर दसगेण हुंति चउतीसा ॥ सवाउ मिलियाउ, बासीई पावपयमीउ ॥ ३०३ ॥ उपघातनाम, अशुभविहायोगति, थावर दशक कहे छे, थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अथिर, अशुभ, दौर्भाग्य, दुःस्वर, अनादेय अने अयश ए दश मेलविए तेवारे नरकद्विकादिथकी मांमी इहां सुधी चोत्रीश थायछे. अनेअडतालीश प्रथमनी सर्व मेलवतां ब्यासी पाप प्रकृति थायछे. इतिगाथात्रयार्थः

अवतरणः–भाव छक्कंच पडिभेयं एटले प्रतिभेदे करी सहित छ भावनुं बशेंने एकवीशमुं द्वार कहेछे. मूलः–भावाछ खोवसमिय, खइय खउवसम उदय परिणा मा ॥ डुनवट्ठारिगवीसा, तिगभेया सन्निवाउय ॥ ३०४ ॥ अर्थः–विशिष्टहेतुथकी स्वभावथकी अथवा प्राणीने ते ते स्वरूपे होय ते भाव परिणामनुं विशेष जाणवुं. अथवा ए उपशमादिक पर्याये जे होय ते भाव जाणवो. इहां च शब्द अवधारणने अर्थे छे, त्यां पहेलो भस्म छन्न अग्निनीपरे जे अवस्था प्रदेशे होय पण उदयनो अभाव एवो उपशम ते मोहनीयनोज थाय पण शेष कर्मने उपशम न थाय. ते का रणे मोहनीयने उपशमे थयो ते उपशमिकभाव जाणवो. बीजो मोहनीयना क्ष

द्धार कहेछे. मूलः— सेज्जायरो पहूवा, पहुसंदिठ्ठाय होइ कायव्वो ॥ एगअणेगेयपहूप हुसंदिठ्ठोवि एमेव ॥७०७॥ अर्थः—सज्जा शब्दे साधुने आप्युं जे उपाश्रय तेणेकरीने तरे तेने सज्जातर कहिये. ते घरनो धणी अथवा घरधणीये बीजा कोइने प्रमाण करी आप्युं होय तेणे त्यां सज्जातर कीधुं होय, ते एकने आप्युं होय अथवा घणाने आप्युं होय तो तेना प्रजुपणे एक होय, अथवा अनेक पण होय. संदिष्ट पणे एक अनेक होय. एज अर्थ विशेषे कहेछे. ॥ ७०७ ॥

मूलः— सागारियसंदिठ्ठो, एगमणेगे चउक्कनयणाउ ॥ एगमणेगावज्जा, णेगेसुय ठावए एगं ॥ ७०८ ॥ अर्थः— सागारिक शब्दे उपाश्रयनो स्वामि तथा बीजो तेध णीये संदिष्ट. ए बेहु एकने अनेक थाय. इहांचतुर्नेगनी नजनाछे ते आवी रीते. १ एकप्रजु एकप्रजुसंदिष्ट २ एक प्रजु अनेक प्रजुये संदिष्ट ३ अनेकप्रजु एकप्रजुए सं दिष्ट ४ अनेकप्रजु अनेकप्रजुसंदिष्ट. इहां एक पण अने अनेक पण वर्जवोज इहां अपवाद कहेछे. जो णेगेसुयके० अनेक सय्यातर थाय एटले संघ समुदाय मलि उपाश्रय कराव्यो होय, ते इहां अपवादपदे एगेके० कोइ एक ते मांहेला वडे राने सद्यातर स्थापेछे. अने अनेराथाकताने घरेनिक्षा लियेछे ए जावना प्रसिद्धछे.

हवे सिद्यातरक देखाडे ते कहेछे मूलः— अन्नछवसेऊणं, आवस्सगचरिममस्स हिंतुकरे ॥ दोसुवितराजवंती, सद्याइसु अन्नहा जयणा ॥ ७०९ ॥ अर्थः— अनेरे गामे अथवा साथमांहे वसेऊणंके० सुइने आवस्सगके० पाछली रात्रनुं पडिक मणुं अनेरेस्थाने करे तो बे सद्यातर थाय. एटले एकतो जे स्थानके रात्रेसूता ते अने बीजो जिहां पाछली रात्रनुं पडिकमणुं कर्युं ए बेज सद्यातर थाय. आ दि शब्दथकी चोर धाडना जयनो परिग्रह थायछे. अन्नहाके० अन्यथा प्रकारे न जना सद्यातरनी जाणवी. सद्यातरनी विकल्पना ते जे घरमां रह्यो ते अथवा अनेरो सद्यातर थाय तेहज नजना आगली गाथाये कहेशे. ॥ ७०९ ॥

मूलः—जइजग्गंति सुविहिया, करंति आवस्सयंतु अन्नछ ॥ सेज्जायरोनहोई, सुत्तेवक एव सोहोई ॥७१०॥ अर्थः— सुष्टुके० नलुंछे जेनुं विहितके० अनुष्ठान तेने सुवि हित कहिये. ते रात्रीना चार पहोर जागरण करे अने जागीने अन्यस्थानके प्रजा तनुं पडिकमणुंकरे तो जिहां जाग्यो ते सद्यातर न होय. अने जिहां सुतो होय अथवा प्रजातनुं पडिकमणुं करे ते सद्यातर थाय. अने जो उपाश्रय न्हानो होय अने साधुउ बे त्रण स्थानके रहेला होय तो तेमां जे स्थले आचार्या दिक वडेरो रहे तेज सद्यातर होय पण बीजा सद्यातर न होय. ॥ ७१० ॥

परदेशे गयेलो उपाश्रयनो स्वामि सबातर थाय किंवा नथाय ते कहेछे. मूलः- दाऊण गेहंतु सपुत्तदारो, वाणिज्जमाईहिउ कारणेहिं ॥ तंचेव अन्नंच वइज्जदेसं सेज्जायरो तब्ब सएव होइ॥८११॥अर्थः-दाऊण गेहंके०साधुने पोतानुं घर देइने पछी ते गृहस्थ पुत्र कलत्र ने पोतानी साथे लेइ तेज देशमां अथवा अन्य देशांतरे जतो रहे, तोपण तेज सबातर थाय, परंतु दूरदेश नणी सबातर पणुं नज थाय एम न जाणवुं.

हवे कयोकयो सबातर वर्जवो ते दृष्टांते करी कहेछे. मूलः- लिंगछस्स विव ज्जासेतं, परिहरउवभुंजउंवावि ॥ जुत्तस्स अजुत्तस्स, विरसावणो तब्ब दिठ्ठंतो ॥८१२॥ अर्थः-लिंगमात्रने विषे जे रह्योछे केवल वेष मात्रनो धरनार पण ते साधुने गुणेकरी रहितछे तो तेनो पण सय्यातर वर्जवो. तो लिंगधारीना सय्यातरनो पिंम परहरेवो ज. वाके० अथवा भुंजउके०जागववो जोजन करवो ते साधुजनने अवश्य वर्जवोज.

इहां शिष्य पुछेछे के जो ते साधुने गुणे रहितछे तो तेनो सबातर शावास्ते परिहरिये? तेनो उत्तर दृष्टांते करी कहेछे. मद्येकरीने सहित होय किंवा रहित हो य परंतु मदिरानुं हाटलो खरुं. तेनुं दृष्टांत ते आमछेः-जे माहाराष्ट्र देशने विषे समस्त मदिराने हाटे ध्वजा बंधायछे, मदिरा हो अथवा न हो पण ते ध्वजा देखी निक्षाचर पोतानी मेलेज ते वर्जेछे. तेम इहां पण वेषदेखी वर्जवुं ॥ ८१२ ॥

सज्जातर पिंमना बार जेद कहेछे. असणाईया चउरो, पाउंछणवब्ब पत्तकंबलयं सूइछुरकन्नरोहण, नहरणिय सागारिय पिंमो ॥ १ ॥तृण मगलादिक अपिंमछे. यडुक्तं. तणमगलछारमल्लग, सेज्जासंथार पेढलेवाइ ॥ सज्जायर पिंमोसो, नहोइ से होय सोवहिउ ॥ २ ॥ ए बे गाथा परकृत छे ते सुगमपणाने लीधे वखाणी नथी.

हवे सय्यातर पिंमने ग्रहणेदूषण देखाडेछे. मूलः- तित्थयर पमिकुठो, अन्नायं उग्ग गोवियन सुझे ॥ अविमुत्तिअलाघवया, दूलह सेज्जाउ वोछेउ ॥ ८१३ ॥ अर्थः- तिछयरके० समस्त तीर्थंकरे सय्यातर पिंमने पडिकुठोके० निषेध्योछे. ए सय्यात रपिंम लेवाथकी जगवंतनी आज्ञानो जंग थायछे. माटे अन्नायंके० जे यतिहोय तेणे अज्ञात पिंम लेवो. जिहां कोइ जाणे नही उलखे नही एवो पिंम लेवो, अ ने सबातर पिंम लेतां तो ते पिंमनो आपनार उलखे जे ए साधु अमारा घरमां रहेछे. वली सज्जातर पिंम लेतां थकां उद्गम दोष पण लागे. केमके पिंमनो आप नार जे सज्जातर ते रागवंत छतो दही दुध प्रमुख संनिग्ध अहार आपे, ते लेतां अविमुक्ति एटले मूकी न शके. केमके रसगृद्धि मूकतां दुर्जनछे. तेथी तेनो अजाव नहोय. वली अलागवयाके०उपधी तथा शरीरनो बहुलपणो थाय सज्जातर पिं

ड लेता छता ते सय्यातर रागी छतो वस्त्रादिक माग्यांथकां तरतज आपे. तेथी उप धिनी वृद्धिथाय. वली ते पिंड लेतां थकां गाममां फरवा थकी छुटे. तेथी शरीर जाडुंथाय. वली डुर्लन सबाते आवीरीते के जे गृहस्थ साधुने उपाश्रय आपे ते णे उपधि आहारादिक पण आपवां जोइये, एवा विचार थकी सद्या जे उपाश्रय तेपण कोइ विरलोज आपे. तेथी सद्या मलवी पण डुर्लन थाय वली वुछेउके० विनाश थाय. एटले दानना नयथकी सद्यातरे सद्यानो विछेद थाय ते उपाश्रय ना अनावथकी नक्त पान शिष्यादिकनो पण विछेद थाय.॥ ८१३ ॥

एवा ए सद्यातरना दोष देखाडी हवे तीर्थंकरना उद्देसे एनुं अग्रहण देखाडे छे. मूलः— पुरपछिमवज्जेहिं, अविकम्मं जिणवरेहिं लेसेणं॥ जुत्तं विदेह एहिय, नय सागारियस्स पिंडोउ ॥८१४॥ अर्थः—पहेला अने छहेला तीर्थंकर वर्जी वचमांना बावीश तीर्थंकरना वाराना साधु तेणे अविकम्मं एटले अपि एवो शब्द संनावना ये लेवो, श्री जिनवरेंड जुंक्तंके०नोगव्यो लेसेणंके०लेशमात्र एकदेशे ते आवीरीते के, जेने अर्थे आहारादिक कीधा होय ते तो मात्र तेनेज न कल्पे पण शेष यतिने तो कल्पे. एवी रीते महाविदेह वासी साधुउनी पण एज मर्यादाछे, परंतु नयके० सागारी उपाश्रयदाता सद्यातर तेनो पिंड तो लेवोज नही. ए संनावनाछे.॥८१४

हवे अपवादे ग्लानादिक कारण उपने थके सद्यातर पिंड लेवो कल्पे एम जे कारणे कह्युंछे ते देखाडेछे. उक्तंच. डुविहे गेलन्नंमी, निमंतणे दवडुल्लहे असिवे ॥ उमोयरीयपउसे, नयए गहणं अणुन्नायं ॥ १ ॥ अर्थः— एक आगाढ ने बीजा अ नागाढ ए बे प्रकारना ग्लानपणाने विषे, तेमां अनागाढ ग्लानने अर्थे त्रणवार नि क्षाने अर्थे जावुं. त्यां ग्लान योग्य निक्षा न मले तो सय्यातरनो पिंड लिये. अने अगाढ ग्लानने अर्थे तो तत्काल सय्यातरनो पिंड लेवो. अथवा निमंतणे एटले वली जो घणो आग्रह करीने तेडे तोपण एकवारज लेवो. पछी प्रसंगे निवारवो. एमज ड्व्यने डुर्लनपणे आचार्यादिकने योग्य खीरादिक जो अन्य स्थानकथी न मले तो सद्यातरने घेर जइ वोहोरी आवे तथा अशिव एटले डुष्ट व्यंतरादिके जो उपड्रव कर्यो होय तोपण लेवो. वली अवमौदर्ये एटले डुर्निक्षने योगे क्यांये निक्षा न मले तोपण सद्यातर लेवो तथा राजाये प्रद्वेषेकरी सर्वत्र निक्षानुं नि वारण कर्युं होय तो प्रछन्नपणे सद्यातरनी निक्षा लेवी. वली नयए एटले चोर प्रमुखना नयथकी पण ए लेवानी अनुज्ञाछे. इत्यादिक कारणे सद्यातरनो पिंड लेवो. ए गाथा ग्रंथकारनी नथी पण अन्य शास्त्रनी वखाणीछे.

हवे उद्गमादिक दोष केवीरीते लागे ते कहेछे. मूलः—बाहुल्लागछस्सउ, पढमालियपाणगाइ कज्जेसु ॥ सज्झायकरण आउट्टिआ करे उग्गमेगयरं ॥ ७१५ ॥ अर्थः गछना बाहुल्यपणाथकी प्रथमालिका शिष्यने सिरामणी अथवा ग्लानने अर्थे पाणगाइके० जलपाणी प्रमुख कार्ये वली वली जातां सघातर आवर्ज्यो होय, सज्झाय करतां देखी अने घणे परिचये सघातरीपणे आवर्जित चित्तपणाथकी उद्गमादिक मांहेलो अन्यतर दोष करे ॥ ७१५ ॥ इतिगाथा दशकार्थे द्वारसमाप्त.

अवतरणः— जत्तिअसुत्ते सम्मंति एटले जेटला सूत्रे सम्यकत्व होय एवुं एकशोने तेरमुं द्वार कहेछे. मूलः— चउदस दसयअभिन्ने, नियमासम्मंतु सेसए नयणा ॥ मइओहिविवज्जासे, होइ हुमिछं न सेसेसु ॥७१६॥ अर्थः— चउदपूर्वे अने दशपूर्वे जेने विषे श्रुत होय तेने निश्चेथकी सम्यक्त्व होय, अने शेष श्रुत जेने विषे होय तेने विषे सम्यक्त्वनी नजना जाणवी. एटले सम्यक्त्व होय किंवा न पण होय. एवो विकल्पछे. अने मतिज्ञान अवधिज्ञान तेना विपर्यासे विपरीत पणे थये थके मतिअज्ञान ने विभंगज्ञान ए बे छतां मिथ्यात्व पण निश्चे थकी थाय. ॥ ७१६ ॥

अवतरणः— जहनिग्गंथावि चउगइयत्ति. एटले जेम निर्ग्रंथपण चतुर्गतिक थाय तेनुं एकशो ने चउदमुं द्वार कहेछे. मूलः— चउदस उही आहारगावि मणनाणि वीयरागावि ॥ हुंति पमायपरवसा तयणंतरमेव चउगइया ॥७१७॥ अर्थः— चउदपूर्वधर, अवधिज्ञानी, आहारक लब्धिवंत, इहां चउद पूर्वधर ते आहारकलब्धिवंत होय किंवा न पण होय. तेथी बेहुनुं जूउंजूउं ग्रहण कीधुं छे. तथा त्रीजो मनपर्यवज्ञानी, उपशांत वीतरागादिक, एवा पण प्रमाद विषय कषायादिकेकरी कलुषित चित्तथका तदनंतर तत्काल चतुर्गतिना नोगीथाय. ॥ ७१७ ॥

अवतरणः— खेत्रातीत, मार्गातीत, कालातीत, अने प्रमाणातीत एवा चार वानाना एकशो पन्नर, एकशो सोल, एकशो सतर, अने एकशोने अढार, एवा चार द्वार साथे वखाणेछे. मूलः— जमणुग्ग एरविम्मि अतावखेत्तंमि गहिय मसणाइ ॥ कप्पइ न तमव नोत्तुं खेताईयंति समउत्ती ॥ ७१८ ॥ अर्थः— जे सूर्य उदय थयाविना अतापखेत्रेके० रात्रे लीधुं जे अशनादिक चार ते मांहेलुं कोइपण अशनादिक साधुने नोगववुं कल्पे नही. अने जो नोगवे तो खेत्रातीत कहेवाय. एवी सिद्धांतनी युक्तिये आगमनुं नाषितछे. ए एकशो पन्नरमुं द्वार थयुं. ॥ ७१८ ॥

मूलः— असणाईयं कप्पइ, कोसदुगप्नंतराउ आणेउं ॥ परउ आणिज्जंतं, मग्गाइयंतीतमकप्पं ॥ ७१९ ॥ अर्थः— बे कोशथकी आणेलुं अशनादिक

मांहेलुं कोइपण अशनादिक यतिने कल्पनीयछे. पण बे कोशथी उपरांतनुं आणेलुं अशनादिक ते मार्गातीत अकल्पनीयछे माटे लेवुं नही. ए एकशो शोलमुं द्वार.

मूलः—पढमप्पहराणीयं, असणाइ जईणकप्पए जोत्तुं॥जावतिजामेवट्टं, तमकप्पं कालइक्कंतं ॥ ८१० ॥ अर्थः— पहेला पहोरनुं लावेलुं अशनादिक यतिने जमवुं कल्पे, ते जिहांसुधी त्रीजो पहोर तिहांसुधी जाणवुं. उपरांत चोथा पहोरमां ते अकल्पनीय थाय. पडिलेहण कस्या पछी ते कालातिक्रांत थयाने लीधे जमवुं नहीं. ए एकशो सत्तरमुं द्वार समाप्त थयुं. ॥ ८१० ॥

मूलः—कुक्कुडिअंमयमाणा, कवला बत्तीस साहुआहारो॥अहवा नियआहारो, कीरइ बत्तीस जाएहिं॥८११॥अर्थः—कूकुडी ते पक्षी विशेष, तेना इंमाने प्रमाणे बत्रीश कवल प्रमाण साधुनो आहार जाणवो. अथवा निजके० पोतानो आहार एटले जेटला आहारथी जेनुं पेट जराय, तेनो बत्रीशमो जाग करिये ए पण कवल प्रमाणछे.

मूलः—होइ पमाणाईयं, तदहियकवलाण जोयणे जइणो॥एगकवलाइऊणे, ऊणोयरिया तवोतंमि ॥ ८१२ ॥ अर्थः—ते बत्रीश कवल थकी अधिक कवलनुं जोजन कस्याथी यतिने प्रमाणातीत थाय. अने बत्रीश थकी एकादिक कवल उंगो लीधा थकी उणोदरता नामे तप ते साधुनेविषे थाय. ॥८१२॥ इति गाथा पंचकार्थः

अवतरणः— सुख सद्यानुं एकशो उंगणीसमुं द्वार तथा दुःख सद्यानुं एकशो वीसमुं द्वार ए बे द्वार साथे कहेछे. मूलः— पवयण असद्दहाणं, परलाजेहा य कामआसंसा ॥ एहाहाइ पत्थणं इय, चत्तारिवि दुःख सेज्जाउ ॥ ८१३॥ अर्थः जेनेविषे शयन करिये तेने सद्या कहिये. तेमां दुःखनी देवावाली सद्या ते दुःख सद्या. ते द्रव्य अने जावना जेद थकी बे प्रकारनीछे. तेमां द्रव्यदुःख सद्या ते अमनोहर खट्वादिरूपजाणवी. जावे दुस्थित चित्तपणे करी दुश्रमणपणु करे. ते इहां जाव थकी ते चार प्रकारे छे. तेमां प्रथम प्रवचन जिनशासननो असद्दहवो. बीजी अनेरा के० बीजाने वस्त्रादिकना अलाजनी प्रार्थनानुं करवुं. इहां चकार समुच्चय ने अर्थे छे. त्रीजी तेमज काम मनोहर शब्दादिकनी आशंसा अजिलाषानुं करवुं. चोथी स्नानादिके करी शरीर प्रमुखनुं मर्दन करवुं. धोवा विछलवानी प्रार्थना करवी. ए रीते चत्तारिविके० ए चारे जावदुःखसद्या जाणवी. एने विषे वर्त्तमान छतो ते प्राणी कोइरीते पण सुख पामे नही. ॥ ८१३ ॥

ए जेम दुःखसद्याये दुःख. तेम इहां सुख सद्याते पण द्रव्य जावना जेदे करी पूर्वोक्त रीते कहेवी. मूलः— सुहसेज्जाइ वि चउरो, जइणो धम्माणु राय रत्तस्स ॥

विवरीयायरणाउ, सुहसेज्जा ढन्निसुंति ॥ ८२४ ॥ अर्थः—जेम पूर्वोक्त डुःखसद्या चार कही तेमज जइणो के० यतिने सुखसद्या पण चार थाय. ते पूर्वोक्तथीविपरीत जाणवी. इहां यतिने गाढतर धर्मनो अनुराग जे अनिलाष रूप तिहां रत्तके० आसक्तछे चित्त जेनुं, एवाने प्रथम जे प्रवचन असदहणा प्रमुख बोल कह्या ते थी विपरीत प्रवचननी सद्दहणा जाणवी. तेमज बीजी परलाजनी वांछानुं करवुं. त्रीजी मनोज्ञ शब्दादिकनी आशंसानो अनाव. चोथी स्नानादिकनुं अप्रार्थवुं. एम विपरीत आचरण करवाथी सुखसद्या थाय. एमां वर्त्ततो थको साधु सदा काल सुखी थाय. ए बे द्वार साथे वखाण्या. ॥ ८२४ ॥

अवतरणः— तेरसकिरियाठाणोइंति एटले तेर क्रियाना स्थानकनुं एकशोने एकवीसमुं द्वार वखाणेछे. मूलः— अट्ठाणट्ठा हिंसा, कम्माद्दिठीय मोसदिन्नेय; अज्झत्थमाणमित्ते, मायालोन्नेरियावहिया ॥ ८२५ ॥ अर्थः— जे करिये ते क्रिया. कर्मबंधनुं कारण चेष्टारूप तेना स्थानक जे नेद ते तेर छे. एक अर्थक्रिया, बीजी अनर्थक्रिया, एम क्रिया शब्द सर्वत्र जोडवो. त्रीजी हिंसा, चोथी अकस्मात्, पांच मि दृष्टिविपर्यास, छठी मोसमृषाप्रत्यय, सातमी अदत्तवृत्ति, आठमी अध्यात्म की, नवमी मानवृत्ति, दशमी मित्त, अग्यारमी माया, बारमी लोन, तेरमो ईर्या पथिकी, ए तेरक्रियानां नाममात्र कह्यां. ॥ ८२५ ॥

हवे सूत्रकार गाथाये करी वखाणेछे. मूलः— तसथावर नूएहिं, जोदंमंनिसरई ढ कज्जेण ॥ आयपरस्सवअट्ठा, तमट्ठदंमं तयंबिंति ॥ ८२६ ॥ अर्थः—त्रस, थाव र रूप नूतके० प्राणी तेहने जो दंम निसरईढके० दंमकरवो. पोताना आत्माना धर्मरूप धनने अपहारे ते दंम कहिये. दंम शब्द हिंसा जे कोइकरे ते कज्जेणके० कोइ कार्यने करवे करीने, ते पोताना शरीरने कार्ये अथवा पर जे बांधवादिक ते ने कार्ये जे करे तेने अर्थ दंम एटले अर्थक्रिया श्री तीर्थंकर देव कहेछे. ॥ ८२६ ॥

मूलः— जोपुण सरडाईयं, थावरकायं चवणलयाईयं ॥ मारेछिंदिकणं, छड्डे ईसो अणट्ठाए ॥८२७॥ अर्थः— जे शरड शब्दे काकीडो, आदिशब्दथकी उंदर प्र मुख त्रसकाय, अने स्थावर काय जे वनस्पति ते वेली. सूरादिकने जे मारे एमज त्रस जीवो मारे तथा वन लता छेदी छांमीने नाखे. अर्थात् ते छेदीने नाखी दिये तेने अणट्ठाएके० बीजी अनर्थ क्रिया कहिये. ॥ ८२७ ॥

मूलः— अहिमाइ वइरियस्स वहिंसी सेहीसईवहिंसेही ॥ जोदंमं आरनई, हिं सादंमो हवइएसो ॥८२८ ॥ अर्थः— सर्प प्रमुख अथवा एवयरीए अमारूं अमु

क कांइकहएयुंछे, ए अमने पूर्वे मारतो हतो अथवा सांप्रतके० हमणा मारशे, अ थवा आवती काळेमारशे. एमजाणीतेने दंमपीडाकरे तो हिंसादंमक्रियालागे.॥ ८२८

मूलः– अन्नठाए निसिरइ, कंमाई अंन माहणे जोउ ॥ जोवनियंतो सस्सं, छंदिज्जा सालिमाईयं ॥ ८२९ ॥ अर्थः– एकने मारतां बीजाने मारे. अनेरा मृग, पक्षी, काकीमाने अर्थे निसिरई के० नाखे कंम शब्दे बाण नाखे आदियकी पछर प्रमुखथकी. अनेरा गमे ते प्राणीप्रत्ये जे कोइ मारे अथवा जे कोइ शाळी मांहे अनेरा तृण प्रमुख छेदतो थको ते शाळी प्रमुखने छेदे. ॥ ८२९ ॥

मूलः– एसअकम्हादंमो, दिठिविज्जासउ इमो होइ ॥ जोमित्तममित्तंतिय ॥ काउंघाएज्ज अहवावि ॥ ८३० ॥ अर्थः–ए चोथी अकस्मात्दंम क्रिया जाणवी. हवे पांचमी दृष्टि विपर्यास क्रिया एवीरीते थाय के जे कोइ मित्रने अमित्र काउंके० करीने घाएज्ज के० विनाश करे अहवावि के० अथवा. ॥ ८३० ॥

मूलः– गामाईघाएज्जव, अतेणतेण तिवावि घाइज्जा ॥ दिठिविवज्जा सेसे, कि रिया ठाणं तुपंचमयं ॥ ८३१ ॥ अर्थः– गाममां रहेनारा कोइएक पुरुषे कांइ एक अपराध कर्यो छतां तेनायोगे जे संपूर्ण गामने मारे छे, आ वागदृष्टि विप र्यास दंम. अथवा वळी चोर न होय तेने चोर कही मार आपे ए पांचमुं दृष्टि विपर्यास नामे क्रियानुं स्थान कहिये. ॥ ८३१ ॥

मूलः– अत्तछनायमाईण वावि अठाइ जो मुसं वयइ॥ सो मोसप्पच्चइउ दंमो छ ठो हवइ एसो ॥ ८३२ ॥ अर्थः–अत्तछके० पोताने अर्थे अथवा ज्ञाति वडेरा प्रमु खने अर्थे जे कोइ असत्य बोले ते मृषा प्रत्ययिक नामे दंम छठो थाय. ॥८३२॥

मूलः– एमेव आयनायग, अठा जो गिण्हई अदिन्नंतु ॥ एसोअदिन्नवित्ती, अन्नत्तीउ इमो होइ ॥ ८३३ ॥ अर्थः– ए पूर्वोक्त मृषावादनी पेरेज जे पोतानो नायक एटले स्वामि तेना अर्थे जे गिण्हइ के० ग्रहण करे तथा स्वजन प्रमुख ए पाठ थकी एवो अर्थ थायछे के स्वजन ने अर्थे जे कोइ अदत्तादान लिये ते अद त्तादानवत्तिकी नामे सातमी क्रिया जाणवी. अने आठमी अध्यात्मकी क्रिया आ वीरीते थाय ते आगळि गाथाये देखाडे छे. ॥ ८३३ ॥

मूलः–नवि कोइकिंचिन्नणई, तह वि हु हियएण डुम्मणो किंचि ॥ तस्स अछी सी सइ, चउरोठाणा इमे तस्स ॥ ८३४ ॥ अर्थः– जेने कोइये कांइपण न कह्युं छतां पण पोताना हृदयमां डुर्मन आमणो दुमणो थाय तेने आठमी अध्यात्मकी क्रि या सीसइके० कहिये. एना चार ठाण छे ते आगळी गाथाये देखाडे छे. ॥ ८३४ ॥

मूलः—कोहो माणो माया, लोहो अप्पज्झकिरियए चेसा ॥ जोपुण जाइमयाई, अठ विहेणंतु माणेणं॥७३५॥अर्थः—क्रोध, मान, माया, ने लोभ ए अध्यात्मकी क्रियानां कारण छे. पुणके० वली जात्यादिक आठ प्रकारना मानके० अभिमाने करीने.

मूलः— मत्तो हीलेइ परं, खिंसइ परिभवइ माणवत्तेसा ॥ माई पियनायगाइण जो पुणअप्पेवि अवराहे ७३६ ॥ अर्थ.— मत्तोके० मदोन्मत्तथको परंके० बीजाने हीलेइके० हीलना करे. परने ठगे, परनी निंदा करे, खिंशाकरे, कदर्थनादिके करी पराभव करे ते नवमी मानप्रत्ययकी क्रिया जाणवी. माईके० माता पिता ज्ञाती, नाति स्वजन, सगां प्रमुख तेमने थोडे अवराहेके० अपराधे पण जे पुरुष ते मातादिकने शुं करे? ते आगली गाथाये कहेछे. ॥ ७३६ ॥

मूलः— तिव्वं दंमं कुणई, दहणंकणबंध ताडणाईयं ॥ तम्मित्तदोसवित्ती, किरियाठाणं भवेदसमं ॥ ७३७ ॥ अर्थः— तीव्र एटले महोटी दंम पीडा करे. दहन एटले मांम देइ चिन्ह करे. बंध एटले दोरडेकरी बांधे. ताडना प्रमुख करे. ते मित्र द्वेष वृत्तिनामे दशमुं क्रिया स्थान जाणवुं. ॥ ७३७ ॥

मूलः—एगारसमं माया, अन्नं हियर्यम्मि अन्नवायाए ॥ अन्नं आयरईवा, सकम्मणा गूढसामत्थो ॥ ७३८ ॥ अर्थः— अग्यारमी माया क्रिया तेपोताना मनमां एक चिंतवणा करीहोयअने मुखथी बीजुं बोले. वली आचरण त्रीजुंज करे.एम सयाके०सदाकाल दुष्टचित्तवंत थकोआपणे कर्मेकरीशक्ति गुप्त राखे परने नजणावे. ७३८

मूलः— मायावत्ती एसा, इत्तोपुण लोहवत्तिया इणमो ॥ सावज्जारंभ परिग्गहे सुसत्तो महंतेसु ॥ ७३९ ॥ अर्थः— ए अग्यारमी मायावृत्ति क्रिया जाणवी. इहां थकी आगल हवे वली लोभ प्रत्ययकी क्रिया बारमी कहेछे, ते आवीरीते छे. सावज्ज जे सपाप आरंभ करे तो तेमां घणा जीवोनुं उपमर्दन थाय ते महंतके० परिग्रह धन धान्य रूप तेने विषे आसक्त थयो थको घणो सपाप आरंभ करे. ॥७३९

मूलः— तह इत्थी कामेसुं, गिद्धो अप्पाणयं च रक्खंतो ॥ अन्नेसिं सत्ताणं वह बंधं मारणे कुणइ ॥ ७४० ॥ अर्थः— तह के० तेमज स्त्रीना कामुक मनोहर शब्दादिकने विषे पोतानुं चित्त गृद्ध आसक्तवंत राखतो थको ते कारणने लीधे अन्य प्राणीउने पण वध, बंधन, मरणांत उपसर्ग करे. ॥ ७४० ॥

मूलः— एसेह लोहवत्ती, इरियावहियं अउ पचक्खामि ॥ इहखलु अणगारस्सा, समिई गुत्तीसु गुत्तस्स ॥ ७४१ ॥ अर्थः— एसा के० ए इहां जिनशासनने विषे लोभवृत्ति नामे बारमी क्रिया जाणवी. तेरमी इरियाविहिनामे क्रिया ते अउ

के० इहां एनी व्युत्पत्ति एवीछे के ईरण के० गमन तेणेकरी जे सहित विशेष जे मार्ग ते इरिया पथ. तिहां थइ जे क्रिया ते इरियापथिकी कहिये. ए शब्दनो अर्थ कह्यो. हवे गाथानो अर्थ कहेछे. इहां खलु इति निश्चे अणगार जे साधु ते इरिया समिति प्रमुख पांच समिति अने मनोगुप्त्यादिकत्रण गुप्ति तेणे करी सहितहोय एवा.

मूलः– सययं तु अप्पमत्तस्स नगवर्ड जाव चक्कु पम्हंमि ॥ निवयइ ता सुहु माहू, इरिया वहिआ किरियएस्सा ॥ ८४१ ॥ अर्थः– सततं के० निरंतरपणे अ प्रमत्त साधुने विषे तथा वली उपशांत मोह क्षीणमोह, अने सयोगी लक्षण ए त्रण गुणठाणाने विषे वर्त्तता एवा साधु नगवंत ते शरीर संबंधी बीजी समस्त क्रियानुं ज्यां लगी रुंधन करे. चक्कु के० नेत्र तेनो पक्ष्ममात्र मेषोन्मेष करे, एक सामायिक सात बंधलक्षण अतिअल्प क्रिया थाय छे. एवाने प्रगटपणे इरि या पथिकी क्रिया तेरमी होय ॥ ८४१ ॥ इति गाथा अष्टादशकार्थ.

अवतरणः– आगरिसा सामइए चउविहेविवि एगनवेत्ति जे आकर्षिये ते आ कर्ष प्रथम लेवुं, अथवा प्रथम लेइने मूक्युं होय तेनुंज फरीथी जे ग्रहण कर वुं ते आकर्ष कहिये. ते चारप्रकारना सामायक तेनेविषे एक नवमां केटला आ कर्ष थाय? तेनुं एकशोने बावीसमुं द्वार कहे छे. मूलः–सामाईयं चउद्धा, सुयदं सण देस सवनेएहिं ॥ ताणइमे आगरिसा, एगनवं पप्प नणियव्वा ॥८४२॥ अर्थः– एक श्रुतसामायक, बीजो, सम्यक्त्वसामायक त्रीजो देशविरति सामायक, चोथो सर्वविरति सामायक, ए चार प्रकारना सामायक छे. ए चारे सामायकना आकर्ष पूर्वोक्त शब्दार्थ एक नव पामीने एकनव आश्रीने आकर्ष नणियव्वा के० कहेवा तेज देखाडेछे. मूलः–तिएहं सहस्सपुहत्तं, सयं पुहत्तंच होइ विरईए॥ एगनवे आग रिसा, एवइया हांति नायव्वा ॥ ८४३ ॥ अर्थः–प्रथमना त्रण सामायक तेने सहस्र पृथक्त्व एटले बेहजारथी मांमीने नवहजार सुधी एकनवमां आकर्ष थाय. इहां पहेलोज सामायक पडिवजे, अथवा प्रथम लीधोछे ते मूक्यो अने फरी लेवो ते आकर्ष कहिये. अने विरईएके० सर्व विरतिनो आकर्ष तो शतपृथक्त्व एटले ब सेंथी मांमीने नव सें सुधि एक नवमां थाय. ॥ ८४३ ॥

हवे नाना नव आश्री कहेछे. मूलः– तिएहमसंखसहस्सा, सहसपुहुत्तंच हो इ विरईए ॥ नाणानव आगरिसा, एवइया हुंति नायव्वा ॥ ८४५ ॥ अर्थः– प्रथम ना त्रण सामायकना आकर्ष असंख्याता सहस्र जाणवा. केमके ए त्रणे सामा यकना आकर्ष एक नवमां सहस्र पृथक्त्व होय ते गुणाकार कर्याथी असंख्या

त सहस्र थाय. इहां ए क्षेत्र पल्योपमने असंख्यातमें नागे जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला नव जाणवा. सर्व विरतिना एक नवे शत पृथक्त्व अने उत्कृष्ट आठ नवे साधिक गुणाकार कीधे सहस्र पृथक्त्व होय. एरीते नानानवने विषे आकर्ष जीवना अध्यवसाय रूप एटलाज होय ते जाणवा. हवे ए चार सामायक नुं स्वरूप कहेढे. तेमां प्रथम सम्यक्त्व सामायक ते सद्दहणारूप, बीजुं श्रुतसामायक ते समस्त सिद्धांतनुं पठनकरवुं तत्व ज्ञान लक्षण जाणवुं. त्रीजुं देशविरति सामायक ते श्रावकना बारव्रतरूप जाणवुं. चोथुं सर्वविरति सामायक ते सावद्य योग विरमण यतिधर्म रूप जाणवुं इति गाथा त्रयार्थ ॥ ८४५ ॥ ए एकशो बावीसमुं द्वार समाप्त.

अवतरणः– सीलंगाणष्ठारस सहस्सत्ति एटले सीलांग ना अढार सहस्रनुं ए कशो ने त्रेवीसमुं द्वार कहेढेः– मूलः– सीलंगाण सहस्सा, अष्ठारस एञ्च हुंति निञ्चमेणं ॥ नावेणं समणाणं, अखंम चारित्त जुत्ताणं ॥ ८४६ ॥ अर्थः– शील एटले चारित्रना अंश अथवा चारित्रना कारण तेना अढार हजार नेद ते एञ्चके० इहां यतिधर्मे अथवा जिनशासनने विषे नियमके० निश्चे संघाते नावेणंके० विशुद्ध परिणामे थाय. बाह्य वृत्ते वली प्रतिसेवाये करी कांइक न्यून पण थाय, एवा अढार सहस्र ते श्रमणने थाय पण श्रावक ने न थाय, केमके सर्व विरतिने विषेज एनो संनव ढे. अथवा जे नावथी श्रमण ढे तेनेज ए होय. पण इव्य श्रमणने न होय. किंतु जे अखंम चारित्र युक्त संपूर्ण चारित्रे सहितढे तेने होय.॥८४६॥

इहां शिष्य चालना करेढे के जे अखंम चारित्रना धरनार तेनेज सर्वविरति कहिये. पण जे किंचित मात्र खंमाय ते तो असर्वविरति केवाय. पडिवक्क अइक्कमेपंच एवा आगमना वचन थकी ते पांचे महाव्रत पमिवजे, पण तेमां एक व्रतने अतिक्रमे तो पांचनो अतिक्रम कस्यो. माटे सर्वविरतिने देशथी खंमना नथाय इति.

हवे गुरु उत्तर कहेढे. हे शिष्य तें नलो प्रश्न पुढ्यो, परंतु जेवारे पडिवजे तेवारे सर्वविरतिपणु पालवा आश्री अन्यथा पण होय केमके संज्वलनना उदयथकी अतिचारनो संनव थाय. यडुक्तं. सव्वेविय अइयारा, संजलणाणं तु उदयउ हुंति. इति अतिचार ते चारित्रनी देशथी खंमना जाणवी. तेम एक व्रतने अतिक्रमे सर्व व्रतने अतिक्रमाय. तेमां पण विवक्षाढे ते आवीरीते.

ढेयस्स जावदाणं, ताव अइक्कमइ नेव एगंपि ॥ एगं अइक्कमंतो, अइक्कमइ पंच मूलेण ॥ १ ॥ एनो ए नावार्थ ढे के ढेदनो ज्यांसुधी दान ढेदे तेवारे

सर्वनो अतिक्रम थाय. मूलगुण आश्री एक अतिक्रमे तो पांचेनो अतिक्रम थाय. ए कारणथी दश प्रायश्चित्त सफल थाय. व्यवहार नय मत आश्री चारित्रियाने अतिचारनो संजव ले, अने निश्चे नयमतो जंगेज. यडुक्तं. एबइमंविन्नेयं, अइदं पज्जंतु बुद्धिमंतेहिं॥ एक्कंपि सुपरिसुद्धं, सीलगं सेससप्नावे ॥ एनो अर्थ करे ले ईहां शीलांगना अधिकारने विषे अइदंपर्य के० ए रहस्य बुद्धिमंते जाणवुं. जे कारण माटे एक सुपरिसुद्ध शीलांग समस्तने सद्भावे होय, पण श्रावकनी परे हायावे. तेथी जंगे वर्त्ततो श्रावक कहिये, तेम ए न समजवुं. जो समस्त जंगे सहित होय तो सर्व विरति कहिये, पण एकादि जंगे वर्त्ततो सर्वविरति न कहेवाय. तेमाटे शीलांगना जांगा श्रावकने न थाय. मननी स्थिरता राखवाने अर्थे श्रावक गुणे तो जले गुणो.

मूलः— जोए करणे सन्ना, इंदिय जोमाइ समणधम्माय ॥ सीलंगसहस्साणं, अढारसगस्स निप्पत्ती ॥ ७४७ ॥ अर्थः—योगत्रण, करणत्रण, संज्ञाचार, इंद्रियपांच, जोमाइके० पृथ्वीकायादिकदश, श्रमणधर्मदश, एरीते शीलांगना जे अढार हजार जेद तेनुं निःपत्तीके० निपजवुं थाय. तेज कहेले. ॥७४७॥

हवे विशेषे एनी संख्या देखाडेले. मूलः— करणाइ तिन्निजोगा, मणमाईणी हवंति करणाइं ॥ आहाराईसन्ना, चउ सोयाइंदिया पंच ॥ ७४८ ॥ अर्थः—इहां प्रथम योग पढी सूत्रना बंध सारु बीजा वखाणियेले. योग त्रण, ते मनोयोगादिक जाणवा. इहां गाथाने धुरे करणाइ एटले करवुं जेनी आदिमांले एवा त्रण करण तथा आहारादिक चार संज्ञा जाणवी. अने सोयाके० श्रोत्रादिक पांचइंद्रिउ जाणवी.

मूलः— जोमाई नव जीवा, अजीवकाउय समण धम्मोय ॥ खंताइ दस पयारो, एवं ठिई जावणा एसा ॥ ७४९ ॥ अर्थः—जोमाइके० पृथवीकायादिक नव जीव अने अजीव साथे दश थाय. श्रमण धर्म ते खांत्यादिक दश प्रकारे एवंके० ए रीते ठिइके० यंत्र पटादिक उपर लखवो. जावनाते एसाके० आगल कहेशे. ॥७४९॥

तेहिज देखाडेले. मूलः—न करइ मणेण आहार सन्नविप्पजढगोउनिअमेण ॥सोइंदिअ संवरणे, पुढविजिए खंति संजुत्तो॥७५०॥इअ मद्दवा इजोगा, पुढवीकाए हवंति दसजेआ ॥ आउकायाईसुवि, इअ एए पिंमिअं तु सयं ॥७५१॥ सोइंदिएण एवं, सेसेहिवि जइमं तउ पंच ॥ आहारसन्नजोगा, इअ सेसाहिं सहस्सडुगं ॥७५२॥ एवंमणेण वयसाइएसु एवं तुठ सहस्साइं ॥ नकरे सेसेहिं पिअ, एए सव्वेवि अढारा ॥ ७५३ ॥ अर्थः— इहां नकरइके० करण लक्षण प्रथमयोग स्विकार्यो ले, ते मनसा ए प्रथम करणले. आहारसन्न विप्पजढ गोउत्तिके० आहारसंज्ञा विरहित थतांज प्रथम

संज्ञाः तथा आवश्यताए करी निरोधन कस्योछे रागादिक गुण जेनो, एवी श्रोत्रेंद्रि यनी प्रवृत्ति तेथी प्रथमेंद्रिय कहेली छे. एवीरीतीए शुं न करे? ते कहेछे. पृथ्वी काय जीवारंभ करे नही एवुं तात्पर्यछे. एणे प्रथम जीवस्थान क्षमायुक्तके० क्षां तिसंपन्न एणेकरी प्रथम श्रमण धर्मभेद जाणवो. ए प्रकारे करी एक शीलांग आविर्भा वित छे. एटले मने करी आहार संज्ञा रहित थको श्रोत्रेंद्रियनो संवर करी क्षमायु क्त पृथ्वीकाय जीवारंभ करे नही. ए शीलनुं प्रथम अंग आविर्भावित एटले प्रग टछे. हवे शेष छे ते पण अतिदेशे करी देखाडेछे. ॥ ८५० ॥

एज प्रकारना पूर्वोक्त अभिलाषे करी मार्दवादियोगात्के० मार्दव आर्जवादि दश पद संयोगेकरी, एटले जेम पूर्वे क्षमायुक्त एक भेद थयो तेम मार्दवने संयो ग बीजो भेद, तेमज आर्यवने संयोगे त्रीजो भेद, एरीते पृथ्वी कायनो आश्रयक री एटले पृथ्वी कायारंभ एवा अभिलाषे करी, दश यतिधर्मेकरी, दश भेद ते "दश शी लविकल्प थायछे. ते वली अप्पकायादि नव स्थाननेविषे पण अपि शब्दे करी दश मा स्थाननीपेरे आक्रमण करीए, तेवारे सर्व भेद प्राकृतपणेकरी एकत्र कस्याथी ए कशो संख्या थायछे ॥८५१॥ ते मात्र श्रोत्रेंद्रियने सो भेद थाय छे. तेमज बाकीनी चक्षुरादिक इंद्रियना पण ए पूर्वोक्त रीतिये शो शो भेद थायछे. ए एम सर्व संख्या एकठी करिये तेवारे पांचशें थायछे. केमके इंद्रियोना पांच प्रकार छे. माटे पांचशें थाय. ते मात्र एक आहार संज्ञा योगेकरी आ भेद थयाछे. हवे शेष भय संज्ञादिक त्र णेना पण पांचशें पांचशें भेद ए पूर्वोक्त रीतेज थाय. एम सर्वना मलीने बे हजार भेद थायछे.॥८५२॥ एबे हजार तेमात्र मनोयोगने प्राप्त थएला छे. तेमज वचन अने काय एना पण ब बे हजार भेद थाय छे. एम एकंदर संख्या छ हजार थायछे. ए छ हजार मात्र न करोति ए मर्यादाये प्राप्त थया. तेमज शेष न करावे तेनापण छ हजार. अने अनुमति न आपे एना पण छ हजार भेद छे. ए सर्व मेलविये त्यारे शीलना भेद एकत्रकर्यां छतां अढार हजार थायछे ॥ ८५३ ॥ एक योगेकरी अ ढार हजारज थायछे एम कांइ नथी; पण बे इत्यादिक संयोगजन्य भंग जो आ स्थले लीधा होय तो एना घणाज भेद थायछे. एटले एक बे इत्यादिक संयोगे करी संयोगनेविषे सातविकल्प थायछे. एवाज करणने विषे, संज्ञाने विषे; इंद्रि योने विषे, पृथ्वीकायादि विगेरेनेविषे एक हजार तेवीस भंग थाय. ए प्रमाणे क्ष मादिकने विषे पण आ राशीनो परस्पर गुणाकार कस्यो होयतो त्रेवीश अबज चोराशी करोड एकावन लाख त्रेसठ हजार बेशेने पांसठ २३ ८४ ५१ ६३ २६५

नेद थाय छे. तो पछी अढार हजारज केम कह्या? एवुं कोइ पुछे तेने उत्तर कहे छे के जो श्रावक धर्मनी पेठे बीजा नंग करी सर्व विरतिनी प्रतिपत्ति थाय तो ते गणना योग्यछे. एक पण सीलांगना नंगना शेष सद्भाव छे एटले नेद थता नथी एवुं नजाणवुं. कारण अन्यथा सर्व विरतीज थनारनही.एना यंत्रनीस्थापना करियेछे

जेनोकरंति ६०००	जेनोकरावंति ६०००	जेनाणुभयंत्ति ६०००							
मणसा २०००	वयसा २०००	तणुणा २०००							
निज्जिअआ हारसन्ना ५००	निज्जिअभय सन्ना ५००	निज्जिअपरि ग्रह सन्ना ५००	निज्जिअमेहु नसन्ना ५००						
श्रोत्रेंद्री १००	चक्षुरिंद्री १००	घ्राणेंद्री १००	जीव्हाइंद्री १००	स्पर्शेंद्री १००					
पुढवीका यारंभ १०	आपकाया रंभ १०	तेउकाया रंभ १०	वायुका यारंभ १०	वनस्पति कायारंभ १०	वेंद्रिया रंभ १०	तेंद्रिया रंभ १०	चौरेंद्रि यारंभ १०	पंचेंद्रि यारंभ १०	अजीवा रंभ १०
खंतिजुआ तेमुणी वंदे. १	समद्दवाते मुणीवंदे. २	सज्जअवा तेमुणीवंदे ३	मुत्तिजुआ तेमुणीवंदे ४	तवजुआते मुणीवंदे. ५	ससंमाते मुणीवंदे. ६	सच्चजुआ तेमुणीवंदे ७	सोयजुआ तेमुणीवंदे. ८	आकंचणा तेमुणीवंदे. ९	बंभजुआते मुणीवंदे १०

अवतरणः— नयसत्तगंति एटले सात नयनुं एकशो ने चोवीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— नेगम संगह ववहार उज्जुसू चेव होइ बोधवे ॥ सद्देय समभिरूढे, एवंनूए यमूलनया ॥ ७५४ ॥ अर्थः— त्यां प्रथम नय शब्दनो अर्थ आवीरीते छे के अनंत धर्मात्मक वस्तु अवधारण पूर्वक एकादि कोइक नित्यत्वादिक धर्मे कहीने पोतानी बुद्धि प्रत्ये पमाडे तेने नय अभिप्रायनो विशेष कहिये. इहां जे नय नयांतरने सापेक्षपणे आपणपाने अभिप्रेत धर्मे स्याद्वादपूर्वक वस्तु पडिवजे ते परमार्थ वृत्ते संपूर्ण वस्तुपामे अने प्रमाण मांहे अंतरनवे.

एमज जे नयने निरपेक्षपणे आपणपाने अभिप्रेत धर्मे अवधारण पूर्वक वस्तुनुं जाणपणुं वांछे; तेज वस्तुना एकदेश ग्राहकपणा थकी नय कहिये. परंतु ते मिथ्यादृष्टी अयथावस्थितार्थ वस्तुना ग्राहकपणा थकी जाणवो. एज कारणे कह्योछे के सवेनयामिछावाइणोइति जे कारणे नयवाद ते मिथ्यावाद छे,

ते कारणे जिनप्रवचनना जे जाण ते मिथ्यावाद परिहारनी वांछाये सर्व स्याद्वा द पूर्वकज बोले. अने यद्यपि लोक व्यवहारे साक्षात् स्याद्वाद प्रयुंजे तथापि त्यां पण तेनुं ग्रहण करवुंज जोइये. उक्तंच अप्रयुक्तोपि सर्वत्र स्यात्कारोर्थात्प्रमीयते॥ विधौनिषेधेन्यत्रापि, कुशलश्चेत्प्रयोजकः ॥ १ ॥

अनुवाद वचन अने अतिदेशवचनने विषे पण ते नैगमादिक सात नयछे. तिहां नेकके० घणा प्रमाणे एटले महासामान्य अवांतर सामान्य विशेषादि वि षयिक ए प्रमाणे करी वस्तुनुं विशेषपणुं ते मिणोतेके० मिणिये एटले जाणिये तेने नैगम कहिये. अथवा निश्चितछे ज्यां गम एटले मांहोमांहे जूदीजूदी सामा न्यादिक वस्तुनुं ग्रहण ते नैगम कहिये. अथवा गमके० मार्ग ते जेनेविषे एक नथी तेने गम जाणवो. एटले घणाप्रकारे करी वस्तुनुं ग्रहणके० अंगीकार करे. ते आवीरीतेः— सत्तालक्षण महासामान्य, अवांतर सामान्य, द्रव्य गुण कर्मत्वादिक अंत्यविशेष सकल असाधारण स्वरूप अवांतर विशेष रूप थकी निवर्त्तन क्षम, ए सर्व मांहो मांहे विशंकलित स्वरूप माने. तेमाटे नैगम कहिये.

इहां शिष्य चालना करेछे के जो ए सामान्य विशेषनो अंगीकारक कह्यो, परंतु जे सामान्य ते द्रव्य अने विशेष ते पर्यायने कहिये तो ए द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक नय मतना अवलंबनपणा थकी तेने सम्यक्दृष्टि प्रतिपन्न जिनमतनी परे कहियें तोज रूडुं पण मिथ्या दृष्टी केम कहिये?

हवे एनो उत्तर कहेछे. ए मिथ्या दृष्टि ते सामान्य विशेषने मांहोमांहे जूदा जू दा मानेछे. जेमगुण अने गुणी,अवयव ने अवयवी क्रिया ने कारक. जेम एना भेदतेम त्यां पण भेद मानें. तेमाटे कणादनीपरे एने मिथ्यादृष्टिज कहिये. ए नैगम नय कह्यो.

बीजो संगृह्णाति अशेष विशेषने परिहारे करी जगत्रयने सामान्यरूप पणे लिये ते संग्रह नय कहिये.

त्रीजो व्यवहरिये ते व्यवहार अथवा विशेषे करी अवहरिये निरा करिये एट ले व्यवहारे करी सामान्य पणे निरा करिये. तेथी एने व्यवहार नय कहिये. जेम भ्रमरने विषे छता पांचेवर्ण छे,तथापि लोक व्यवहारे करी तेने कालो वर्णज कहिये.तेम ए नय जे छे ते अनेरावर्ण छतां पण तेने न माने, मात्र एकनीज मुख्यता करे.

चोथो ऋजु शब्दे सरल. ते अतीत अनागत वक्र ने परिहारे वर्त्तमान क्षण व र्त्ति सूत्रे निष्टंकितपणे वस्तु देखाडे, ते ऋजु सूत्र अथवा ऋजुसूत्र एटले ऋजुश ब्दे पूर्वोक्त वक्रना परित्याग थकी सन्मुख थयुं छे जे श्रुतज्ञान तेणे ऋजुसूत्रे ते

श्रुत ज्ञान ग्रहण एटले अंगीकार करी शेषनुं अग्रहण कर्युं ए नय अतीतनो विनष्ट अने अनागतना अनुत्पन्नपणाथकी अलब्धात्म लाजपणा ने लीधे अर्थ क्रियाने विषे असमर्थपणाना सद्भाव थकी वर्त्तमानज माने. वली जे पारकी वस्तु ते पण परमार्थ वृत्तिये अछता समान निःप्रयोजनपणाने लीधे जेम परनुं धन काम न आवे तेनीपेरे माने. वली लिंग, वचन, जिन्न पणे छतां एकज माने अने निक्षेपाचारे माने. ते ऋजुसूत्रनय जाणवो.

पांचमो शब्दते के० पडिवजिये शब्द वाच्येज जेनो अर्थ ते शब्द जाणवो. ते सांप्रत वस्तुना आश्रवा थकी सांप्रतपणे एनुं नाम छे. ए नय पण ऋजुसूत्रनी पेरे अतीत अनागतने परिहारे सांप्रत वस्तु माने. अने ए पारकी वस्तु पण न माने तथा चार निक्षेपामांहे एक जाव निक्षेपोज माने. पण नाम, स्थापना, ने ड्रव्य ए त्रण निक्षेपा पटादिकनी पेरे घटादि कार्यना करनार न थाय. माटे माने नही. वली ए नय ते लिंग तथा वचनना जेद थकी वस्तुनो पण जेद माने. जेम तटी ते जूदो अर्थ कहे अने तट ते जूदो अर्थ बोले. एमज वली एकवचन तथा बहुवचनादिक शब्दे जेद जाणवो. अने जे शक्र पुरंदरादिक शब्द ते पण सुरपतिप्रमुख शब्दने अजिन्न लिंग वचनपणाथकी तेनो अर्थ पण अजिन्न ज कहे. तेथी ए एकार्थ जाणवो. ए पांचमो शब्दनय कह्यो.

छठो सं एटले एकीजावे शब्दनी प्रवृत्तिने विषे जे आरूढ थयोछे, प्रवर्त्योंछे ते समजिरूढ कहिये. ए नय पर्याय शब्दना जूदा जूदा अर्थ मानेछे ते आवीरीतेः–घटनात् घटः स्त्रीना मस्तकने विषे अरोह लक्षण चेष्टा करे तेवारे घट तेमज कुट एटले कौटिल वाच करुछे. इहां नीचे पहोलो, उपर सांकडो एवा आकारनो धरनार ते कुट. एमज उज्ज अने उंज्ज धातु पूरणार्थ छे. तेवारे कुके० पृथ्वी तेने विषे रह्यो थकोउंजके० पूरिये ते कुंज कहिये. जेवारे जूमिकानेविषे रह्यो छतो पाणी प्रमुख साथे पूरिये तेवारे कुंज कहिये. एम समस्त पर्याय शब्दनी साथे नानाप्रकारे पडिवजे. अने वली एवुं कहे पण शब्दांतरे जे अजिधेय ते ड्रव्यने पर्यायपणे अन्य शब्द वाच्य वस्तुरूपपणुं न पडिवजे. अने एकपणाने पडिवजे. तेथी सकल लोक प्रसिद्ध व्यवहारनो उच्छेद थाय. जेम शब्दनय लिंग वचनादिकने जेदे जेद कह्यो तेम एने पण पर्याय शब्दनो जेद अंगीकार कर्यो. ए छठो संमजिरूढनय कह्यो.

सातमो एवं शब्द प्रकारनुं वचन छे ते जेहवो व्युत्पत्तिनो प्रकार तद्रूप पणे जूत के० पहोचे ते एवंजूत नय कहिये. एवंजूत शब्द कहिये. ते साधवाने जे नय सम

थीवान थाय तेने पण एवंजूत कहिये. ए नय शब्दने अर्थ साथे विशेषित करेछे. अर्थना वशथकी शब्दनुं निश्चितपणुं थाय. घट शब्दे तत्वथकी तेज के जे चेष्टावंत शब्दना वशथकी ते शब्द वाच्य निश्चितपणुं थाय. शेष ते आपणे अनिधेये शून्यपणा थकी न कहिये. एमज पांचेंद्रिय, विविध बलादिक दशविध प्राणने जे धारण करे ते प्राणीनेज संसारी जीव कहिये. पण शेष प्राण धारण व्युत्पत्तिये रहित सूत्रोक्त सिद्धनेविषे आत्मा कहिये. जे कारणे अतीतके० ज्ञान दर्शन सुखादिक पर्याय प्रते जाय. तेथी आत्मा कहिये.एवी शब्दनी व्युत्पत्ति त्यांज छे.ए सात मूल नय कह्या.

हवे ए नयोना जेदोनी संख्या कहेछे. मूलः—एक्केक्कोय सयविहो, सत्तनय सया हवंति एवंतु ॥ बीउविय आएसो, पंचेव सया नयाणंतु ॥७५५॥ अर्थः—नैगमादिक जेनुं प्रथम स्वरूप कह्युं ते सात नय मूल जाणवा. तेवारपछी नैगमनयना शोजेद एमज संग्रहना पण शो जेद एरीते एकेका नयना शो शो जेद करतां सात नयना सात शो जेद थायछे. अने बीजोपण आएसो एटले आदेश शब्दे मतछे. त्यां पंचेव के० पांचज नयना शो शो जेद थायछे. ते आवीरीते के समन्निरूढ ने एवंजूत ए बे नय शब्दपणाथकी शब्द नयमां अवतरे. तेवारे त्रण नय मली एकनी विवक्षा करिये तो पांच मूल नय थायः तेना प्रत्येके शो शो जेद करतां पांच शो जेद थाय. अने अपिशब्दथकी छ शो तथा चार शो अने ब शो जेद पण थायछे. ते आवी रीते. जो सामान्य ग्राहि नैगम नय संग्रह ने विषे प्रक्षेपिये अने शेष विशेष ग्राही नैगम जे छे ते व्यवहारमां प्रक्षेपिये तेवारे सातमांथी नैगमनो लोप कस्यो तेथी छ नयना छ शो जेद थाय. एमज नैगमनो लोप तथा समन्निरूढ ने एवंजूत ए बे नय पूर्वे शब्द नयमां समवतास्या छे तेथी बाकीना संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र ने शब्द. ए चारमूल नयना शो शो जेद करतां चारशो जेद थाय. तेमज द्रव्यार्थिक ने पर्यायार्थिक ए मूल बे नयज छे. तेनी अपेक्षाये बशो जेदज थाय. तेमां नैगम, संग्रह ने व्यवहार ए त्रण नय द्रव्यार्थिकमां अंतरजवेछे. अने शेष ऋजुसूत्र, शब्द, समन्निरूढ ने एवंजूत ए चार नय पर्यायार्थिक नयमां अंतरजवेछे. अथवा सात नयना असंख्याता जेदपण थायछे. जावइया वयण पहा, तावइयाहुंति नयवाया इत्यादिवचनात्.

वस्तु अनंत धर्मात्मक छे, तेमां एक धर्म माने बीजा धर्म न माने; जेम दीवो एकांते अनित्यज माने तेने दुर्नय जाणवो. अने सर्वनय स्याद्वाद दीवो ते नित्यानित्यज माने ए प्रमाण छे. इति गाथा द्यार्थः॥७५५॥सात नयनुं द्वार समाप्त थयुं.

अवतरणः— वत्थग्गहण विहाणंति एटले वस्त्र लेवानी विधिनुं एकशो ने पची शमुं द्वार कहेछे. मूलः— जन्न तयट्ठाकीयं, नेयचुयं नेयगहिय मन्नेसिं ॥ आहड पामिच्चंचिय कप्पए साहुणोवत्थं ॥ ७५६ ॥ अर्थः— प्रथम वस्त्र त्रण प्रकार नांछे. एकतो एकेंद्रियना अवयवथी उत्पन्न थयां, जेम खुमो कपाश थकी थयो. ते जाणवो. बीजां विकलेंद्रियना अवयव थकी थयां एवां कौशेयादिक एटले कृमी जे जीवमा तेओथी उत्पन्न थनारां, जेवां के रेशमादिक जाणवां. त्रीजां पंचेंद्रियना अवयव थकी निष्पन्न थयां जे कंबल लोवडि प्रमुख. वली एक यथाकृति, एटले जेमांहे सीववानुं काम पडे नही. जेवुंमल्युं तेवुंज उपयोगमां आवे, बीजुं अल्प प रिकर्म ते जेमां एकज सीवणी थाय. त्रीजुं बहुल परिकर्म ते जेमां सीवणी घणी थाय अने ते घणा कटका करीने सीवेलुं होय. इत्यादिक भेद जाणवा. ॥७५६॥

तेमां पहेलुं यथाकृत मले तो अल्प परिकर्म न लेवुं. अने अल्प परिकर्म मल तुं होय तो बहुल परिकर्म न लेवुं. एम बेउने अभावे बहुल परिकर्म लेवुं. जेम जेम संयमनो व्याघात न थतो होय तेम तेम लेवुं. ए गत्थवासि लिये त्यां जे न तयट्ठा के० ते वस्त्र साधुने अर्थे क्रीत एटले वेचातुं मूल आपी लीधुं न होय. वली यतिने अर्थे वण्युं पण न होय. तथा नयगहिय के० जे वस्त्र आपणा पुत्र कलत्र कर्मकरादिक पासेथी छीनवी लीधेलुं न होय. वली अहढ शब्दे अभ्याहृत ते स्व ग्राम ने परग्रामना भेदे करी बे प्रकारनुं छे.

त्यां जे हाटे वस्त्र थाय. पछी मनमां जाणे के यति वस्त्र वोहोरवा आवशे एम जाणी घेरे लावी राखे ते स्वग्राम अभ्याहृत जाणवुं. अने परग्राम अभ्याहृ त ते बीजा गामथकी लावी आपे ते परग्राम अभ्याहृत थाय.

प्रामित्य ते जे बीजा पासेथी उछीनुं लेइ साधुने आपे. इहां पिंड विशोधिना दोष समस्त. वली विशोधि कोटी अविशोधि कोटी जाणवी. त्यां जे साधुने अर्थेज वस्त्र वणाव्युं होय ते अविशोधि कोटी. अने जे धोवरावतुं प्रमुख साधुने अर्थे करावे ते विशोधिकोटी. इत्यादिक दोष रहित जे वस्त्र होय ते साधुने लेवुं कल्पे.

हवे कल्पनीय वस्त्रमां पण जे वस्त्र लेतां सारु नतारुं थाय ते देखाडेछे. मूलः— अंजण खंजण कद्दम, लित्ते मूस भक्खिय अग्गिविदड्ढे ॥ तुन्निय कुट्टिय पज्जवलीढे होइ विवागु सुह असुहोवा ॥ ७५७ ॥ अर्थः—अंजन ते सुरमो, खं जन ते दीपमल, अने कर्दम एटले कादव अथवा गाडाप्रमुखनी मली ते प्रसि द्ध छे. तेणे करी लिप्त एटले खरडायलुं वस्त्र होय, अथवा उंदरे करडेलुं होय,

तथा उद्देइए करमेलुं होय, तथा आगमां बल्युं होय, तुंणेलु होय अथवा धोबीये कूटतां थका कांकरी साथे कूटाणु होय, छिद्र पड्युं होय, वली पज्जव के० पुराणादिक पर्याये करी एटले जीर्णपणाए जे युक्तछे. एवा वस्त्रना ग्रहण थकी विपाक जे परिणाम ते नलो अथवा नूंडो जेवो होय ते विधि विशेषे देखाडे छे.

पहेलो. जेवारे वस्त्रनो आपनार वस्त्र वहोराववा आवे तेवारे ते वस्त्र त्यांज उखेडी जोइये. जो तेने छेडे कांइ सुवर्णादिक बांध्युं होय तो गृहस्थने कहे के आ गांठ उखेडी जुउ. तेवारे ते गृहस्थ पोतेज जोइने ते गांठमां बांधेली चीज लइ लीये. अने पोते साधु देखे तो पोतेज तेने आपे. यद्यपि गृहस्थने कहेतां थकां अधिकरण दोष थाय ते थोडुं समजवुं, पण जो नज कहे तो सबल उड्डाहादिक दोष प्राप्त थाय. अने सुवर्णादिक न होय तो अंजनादिक जोइ गुण दोष विचारणा करे.

मूलः—नवनाग कए वत्थे, चउरो कोणाय दोन्नि अंताय ॥ दोकन्ना वट्टीउ, मज्झेवत्थस्स एक्कंतु ॥ ७५७ ॥ अर्थः— नवनाग वस्त्रना करिये तेमां चार खूणा, अने दोन्निके० वे छेहेडा, तेमज वे नीचे तथा उपरनी किनारीना नाग. अने एक मझे के० वस्त्रनो मांहेलो नाग. एरीते नवनाग करिये. ॥७५७॥

मूलः— चत्तारि देवयानागा, डुवेनागाय माणुसा ॥ आसुराय डुवेनागा, एगोपुण जाण रक्कसो ॥७५७॥ अर्थः—चारकुणाना चारनाग ते देवताना नाग जाणवा, वे छेडाना नाग ते मनुष्यना जाणवा, बे कीनारीना नाग ते असुर देवोना जाणवा. अने वचमांनो एक नाग ते राक्षसनो जाणवो. ॥७५७॥

हवे एनुं फल देखाडेछे. मूलः—देवेसु उत्तमो लानो, माणुस्सेसु य मज्झिमो ॥ आसुरेसु य गेलन्नं, मरणं पुण जाण रक्कसे ॥७६०॥ अर्थः—चार देवताना नागने विषे जो कदाचित् पूर्वोक्त अंजनादिक लाग्यांहोय तो त्यां उत्तम लान जाणवो. अने मनुष्यना नागमां जो पूर्वोक्त अंजनादिक लाग्यां होय तो सारूंपण नही ने मातुं पण नही. मध्यम फल जाणवुं. अने असुरना नागमां अंजनादिक लाग्यां होय तो ते वस्त्र वोहोरवा थकी ग्लानत्व रोगनी उत्पत्ति थाय. अने राक्षसना नागमां अंजनादिक आवे तो मरण प्राप्ति जाणवी.॥इति गाथा पंचकार्थः॥७६०॥

अवतरणः— ववहारा पंचति एटले पांच व्यवहारनुं एकशो ने छवीसमुं द्वार कहेछे. मूलः—आगमसुय आणा धारणाय जीयंच पंच ववहारा ॥ केवल मणोहि चउदस, दस नव पुवाइं पढमोउ ॥ ७६१ ॥ अर्थः— ववहरिये जीवादिक जेणेकरीने तेने व्यवहार कहिये. अथवा साधुने प्रवृत्ति निवृत्ति रूप ते व्यवहार. तेनां

कारण पण जे ज्ञान विशेष तेपण व्यवहार कहिये. ते व्यवहार पांच प्रकारेछे. ते मां प्रथम आगम व्यवहार ते आगम्यतेके० जाणिये जेणेकरीने पदार्थोने तेने आगम कहिये. बीजो जे सांजलीये ते श्रुतव्यवहार जाणवो. त्रीजो जेणेकरी आज्ञा, आदेश आपिये ते आज्ञाव्यवहार जाणवो. चोथो धारिये ते धारणाव्यवहार जाणवो. पांचमो जीत शब्दे आचार ते जीत व्यवहार जाणवो.

तेमां प्रथम जे आगम व्यवहार ते केवलज्ञानी मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चउदपूर्वधर, दशपूर्वधर, अने नवपूर्वधर एनो व्यवहार ते एज छ प्रकारनो छे. तेमां प्रथम इहां केवलीना ग्रहण थकी आलोचना केवली पासेथी लेवी. केवलीने अनावे मनःपर्यवज्ञानी पासेथी आलोचना लेवी. एम पाछला पाछलाने अनावे आगला आगला पासेथी आलोचना लेवी. त्यां केवली प्रमुख जे छे ते आगम व्यवहारी समस्त अतिचार पोतेज जाणे, तेनी पासे गयां छतां ते पोतेज अतिचार प्रगट करी आलोचना आपे. किंवा अन्यथा प्रकारे एवी आशंका चित्तमांहे आणे ते कहेछे.

मूलः—कहेहिं सवं जो वुत्तो, जाणमाणो विगूहई ॥ नतस्सदिंति पछित्तं, बिंतिअ सुछसोहय ॥ ७६१॥ अर्थः—किंवा अन्यथा प्रकारे एवी आशंका चित्तमांहे लावीने ते आगम व्यवहारी पुरुष जे आलोचनानो आपनार ते आलोचना लेनारने कहे के तुं तारा सर्व अतिचार कहे पण ते जाणमाणोके० पोताना दोष सर्व जाणतो थको पण जो मायाये करी विगूहईके० गोपवी राखे तो तेने प्रायश्चित्त आपे नही. अने बिंतिके० एवुं कहेके अन्यत्र स्थानके जइ प्रायश्चित्तनी शुद्धि करो. ॥७६१॥

मूलः—न संजरेइ जे दोसे, सप्नावा नय मायउ ॥ पञ्चरकी साहए तेउ, मायणोउन साहए ॥ ७६२ ॥ अर्थः— वली जेने दोसके० अतिचार ते नसंजरइके० सांजरे नही, चित्तमां आवे नही. सप्नावाके० स्वनावेज न संनारे, परंतु नयमायउके० माया एटले कपटे करीज नथी केतो; एम नथी. तो तेवाने पञ्चरकीके० केवल ज्ञानना धरनार ते लागेलां दूषण सर्वे वर्णन करीने साहाएके० कहे, अने मायावंतने कहे नही. केमके ते एवुं जाणे जे एने कहीश तो पण पछी व्यर्थ थशे. तेमाटे मायावंतने कहे नही. अने स्वनावे जेने विसर्जन थया होय पण निष्कपटी होय तेने कहे. इहां चउद पूर्वधरने यद्यपि परोक्ष ज्ञान छे तोपण उपयोग दीधाथी जेटलुं केवली कहे तेटलुं ए पण कहे. इहां कोइ एवुं कहेशे के आगम व्यवहारी जाणे तो तेने एटलुंज कहिये जे मने आलोयणा आपो. पछी आपणां प्रायश्चित्त ते पोता

नी मेले आपणने कह्रीने ते माफक आलोयणा पण आपशे, माटे आगम व्यव हारीने लागेला दोष विस्तारीने कहेवानी जरूर नथी. ॥ ८६३ ॥

एने उत्तर कहेछे के, ते रुडुं कह्युं परंतु आलोयणाथी घणा गुणछे. एथकी सम्यक् आराधना थाय अने आलोयणहारने उत्साहने अर्थे गुरु एम कहे के, हे वत्स, तुं धन्य भाग्यवंत छे के, एम मानने हणीने पोताना आत्माना हितने अ र्थे पोतेज रहस्य प्रगट करेछे. ए वात महाछुर्लनछे एम कहे तेथी ते समस्त प्रकारे निःशल्य थइने जे गुरु प्रायश्चित्त आपे ते हर्षवंत छतो करे. एम करतो थको अ ल्प कालमां निर्वाणपद पण पामे. ए प्रथम आगम व्यवहार कह्यो.

हवे बीजो श्रुत व्यवहार कहेछे. मूलः—आयारपकप्पाई, सेसं सवं सुयं विणिद्दिठं॥ देसंतरछियाणं, गूढपयालोयणाआणा ॥ ८६४ ॥ अर्थः— आचारप्रकल्प ते नि सीथ सूत्रछे आदे जेने, एवा व्यवहारसूत्र, वृहत्कल्प, दशश्रुतस्कंध, अग्यार अंग, अने नवपूर्वथकी शेष पूर्व पण श्रुतव्यवहारमांहेज छे. ए सर्व विनिर्दिष्टके० कह्याछे.

हवे श्रूतव्यवहारी जे थाय ते प्रगटपणे आगलाना अभिप्राय जाणवाने अर्थे तेना मुख थकी त्रणवार दूषण कहेवरावे; पण एकवार न कहेवरावे. केम के श्रुतव्यवहारी जे होय ते एवुं पण न जाणे के आ जुग मनथी आलोचेछे. किंवा साचा मनथी ए आलोचेछे, एवो तेनो अभिप्राय जाणी शके नही तेथी ए कज वार न कहेवरावे. पेहेली वारे कहे छते एम कहेके मने निड़ा हती माटे सांभ ल्युंनही. तेथी बीजीवार कहेवरावे तेवारे फरी कहेके मे बराबर हैयामां धार्युं नही. माटे फरी त्रीजीवार कहेवरावे ते समये बरोबर कहेतो पछी ए निर्मायछे; अने जो विपरीत कहेतो समजवुं के आ परिणामे करी कुटिलछे. त्यारे तेनो पांच दिवस सह वास कर्यो छतां आ मायावीछे के नथी? तेनी खातरी करी, जो मायावी छे एम जणाय तो अथवा जो जुतुं कहेतो प्रथम तेने जुगनुं प्रायश्चित्त आपी पछी आलोयणा आपे.

हवे त्रीजुं आज्ञाव्यवहार कहेछे. देसंतरके०जे बेहु आचार्य अने सूत्र अर्थना आसे वना थकी महागीतार्थ होय, पण जंघाबलना क्षीणपणाथकी विहारक्रम करी शकता नथी, अने दूर देशांतरे रह्या छे पण मांहोमांहे मली शकता नथी. अने ते बेमां एक प्रायश्चित्त लेवा वांछे छे, अने तेवा गीतार्थ शिष्यने अभावे धारणा कुशल अगीतार्थ शिष्यने सिद्धांतनी भाषाये गूढार्थ अतिचार आसेवनाना पद कही बीजा आचार्य पासे मोकले. पछी ते आचार्य तेना अपराध श्रवण करी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव तथा संघयण धृति बलादिक विचारी पोते त्यां जाय.

अथवा तथाविध गीतार्थ शिष्य तेनी साथे कहेवरावी मोकले,अथवा तेना अनावे जे आव्योछे तेनेज फरी अतिचार विशोधि कहीने मोकले, ए आज्ञाव्यवहार जाणवो.

हवे चोथो धारणाव्यवहार कहेछे. मूलः– गीयछेणं दिन्नं, सुद्धिं अवराहिकण तह चेव॥दिंतस्स धारणा तह, उद्धियपयधरण रूवावा॥७६५॥ अर्थः–कोइक गीतार्थ संविज्ञ आचार्ये कोइएक शिष्यादिकने कोइक अपराधने विषे द्रव्यादिक चारे जोइने जे विशुद्धि दीधि होय, पछी ते शिष्य गुरुनी आपेली शुद्धि मनमांहे धारीने बीजा कोइकने तेवाज अपराधे तेज शुद्धि आपे. एम देतां थकां धारणा व्यवहार कहेवाय. तहके० तेमज उद्धतपद धरणरूप अथवा धारणा ते आवी रीते. कोइएक वेयावच्चनो करनार शिष्य छे, पण ते समस्त छेद श्रुत योग्य नथी; ते वारे तेने आचार्य प्रसाद करीने केटला एक प्रायश्चित्तना पदनो उद्धार करीने कहे, पछी ते पदने ते शिष्य धारी राखीने अन्यने तेज पद मांहेली आलोयणा आपे. ते धारणाव्यवहार कहिये. ॥ ७६५ ॥

हवे पांचमो जीत व्यवहार कहेछे. मूलः–दवाइ चिंतिकणं,संघयणाईणि हाणिमासज्ज ॥ पायछित्तं जीयं.रूढंवा जं जहिंगछे॥७६६॥अर्थः–जे अपराध उपन्याथी पूर्वे साधुओ घणुं तप करीने तेनी शुद्धि करता हता तेज अपराध उपन्या छतां सांप्रत एटले हमणांने काले द्रव्यादिक चारने चिंतवी संघयण धृति तथा बलनी हाणी जाणी जे योग्य तपनुं प्रकार प्रायश्चित्त आपे, तेने समय नाषाये जीत एवो गीतार्थ महंत पुरुषो कहे छे. अथवा जे प्रायश्चित्त जे आचार्यना गछमां सूत्रथकी अधिक न्यून प्रवर्त्त्युं होय अने ते बीजा अन्य घणा गीतार्थोने मान्य होय तेने रूढ जीत व्यवहार कहिये. ए पांच व्यवहार मांहेला कोइ पण व्यवहारे सहित गीतार्थ थाय. तेनी पासेथी प्रायश्चित्त लहिये, परंतु अगीतार्थ पासेथी प्रायश्चित्त लेवा थकी दोषनी उत्पत्ति थायछे, उक्तंच, अगीउ नवियाणाइ, सोहिं चरणस्स देइऊणहियं ॥ तो अप्पाणं आलोयगंच पाडेइ संसारे ॥ १ ॥ इतिषट्गाथार्थः ॥७६६॥

अवतरणः– अहाजायंति एटले पांच प्रकारना यथाजात कहिये. तेनुं एकशो ने सत्तावीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– पंच अहाजायाई, चोलगपट्टो तहेव रयहरणं ॥ उन्निय खोमिय निस्सेज्ज, जुअलयं तहय मुहपत्ती ॥७६७॥ अर्थः–यथाजात पणु जन्म श्रमण पणा आश्रयीने जाणवुं. त्यां जेवारे चारित्रनुं ग्रहण करे तेवारे ए पांच वानां थाय ते कहेछे. पहेलो चोलपटो,ते प्रसिद्धछे तेमज बीजो रजोहरण,त्रीजो उर्णिक, एटले उनसंबंधी,चोथो क्षौमीक एटले रुतसंबंधी अने नसीजनो युगल तेमां एक

नसीज तो उनिमांहे थाय. दांमी उपर त्रण विटलीजेनीवले ते पहेली नसीज. अने बीजी हाथने त्रीजे नागे आयाम दसीये करी सहित ते रजोहरण कहिये आगल दांमीये दसी न हती. ते उपरे वली बीजी सूत्र नसीज ते एक हाथ जाजेरुं प्रमाण आयामे थाय. ते त्रीजी जाणवी. अने ते उपर एक हाथ अने चार अंगुल प्रमाणे घणी वीटली वले ते बेसवाने काम आवे तेने चोथुं पादप्रोंछन रूढीथी कहिये. तेमज पांचमी मुहपति ते मुखने ढांके. जे पोतके० वस्त्र ते मुखपोत्तिका ए एक वेंत ने चार आंगल प्रमाणनी जाणवी. ए पांच यथाजातकह्या. ॥ ७६७ ॥

अवतरणः- निसिजागरणविहित्ति एटले रात्री जागरण करवानी विधिनुं एक शोने अठावीसमुं द्वार वरवाणेछे. मूलः-सवेवि पढमजामे, दोन्निवि वसहाणआयमा जामा ॥ तइउ होइ गुरूणं, चउञ्च सवे गुरुसुयइ ॥७६८॥अर्थः-सर्व साधुउ पेहेला पहोरने विषे सझायादिक करतां जागे, अने पेहेली रातनो बीजो एक पहोर अने पाछली रातनो पहेलो पहोर,एबे पहोर ते वृषजना जाणवा. त्यां जे वृषजनी परे वृष न एवा साधु गीतार्थ तेमां जे सूत्रना धरनार होय ते शयन करे, अने अर्थना जा णनार ते जागे. पन्नवणादि सूत्रार्थ परावर्त्तन करे. त्यां त्रीजे पहोरे वृषन शयन करे, तेवारे गुरुनुं जागवुं थाय. ते वखत गुरु उठी सूत्रार्थ गुणे, चिंतवे. अने चोथा पहोरे तो वली सवेविके० सर्वे उठीने वैरात्रिक एटले परोढीयानो काल ग्रहण करी कालिक श्रुत परावर्त्ते, तेवारे वली गुरु शयन करे. इहां ए कारणछे के प्रजाते निद्राघूर्णित नेत्रथका गुरु नव्यजीवोने उपदेश प्रमुख आपी शके नही, माटें ते गुरु चोथे पहोरे शयनकरे. ॥ ७६८ ॥

अवतरणः- अलोअणदायगन्नेसत्ति एटले आलोयणाना देनार जे गुरु तेने जोवानुं एकसो ने उंगणत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः-सल्लुद्धरणनिमित्तं, गीयस्सन्नेस णाउ उक्कोसो॥जोयण सयाइ सत्तउ, बारसवासाइं कायवो॥७६९॥अर्थः-सल्लुधर णनिमित्तके० सल्य उद्धरवासारु आलोयणा लेवाने अर्थेगीतार्थ गुरुनी गवेषणा करवा सारु जोवा निकलवुं. ते उत्कृष्ट खेत्र सातसें योजन सीम फरवुं, अने वरस आ श्री बारवर्ष सीम शोध करवी. एम आलोचना लेवाने अर्थे गुरु शोधवा सारु भ्र मण करतो कदापि मरण पामे तोपण ते आराधकज कहेवाय. उक्तंच. आलोय णा परिणउं, सम्मं संपढिउ गुरूसगासे ॥ जइ अंतरावि कालं करेज्ज आराहउ तहवि ॥ १ ॥ हवे जो समस्त गुण सहित गुरु न पामे तो संविज्ञ गीतार्थ मा त्रने पण आलोयण कहेवी. जे कारण पणा माटे कह्युंछे के अपवाद पदे गीता

थी संविज्ञ पाक्षिक सिद्ध पुत्र प्रवचन देवताने अनावे सिद्धने पण आलोचना आपवी. परंतु सशल्य मरणते संसारनुं कारण छे. उक्तंच. संविग्गोगीयछे, असई पासछमाइ सारूवी ॥ इतिगाथार्थ. ॥ ७६९ ॥

अवतरणः— गुरुपमुद्दाणं कीरइ असुद्धसुद्धेहिजेत्तियं कालंति एटले गुरुजे आचार्यादिक तेनी अशुद्ध ते आधाकर्मादिक दोषे दूषित अने शुद्ध ते सप्ततालीस दोषे रहित एवा अशनादिके जेटला काल सुधी प्रति जागरणा करीये तेना अ र्थनुं एकशो ने त्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः— जावज्जीवंगुरुणो, सुद्धमसुद्धेहिवाविका यव्वं ॥ वसहे बारसवासा, अट्ठारस निरकणो मासा ॥ ७७० ॥ अर्थः— जावजीव सुधी चारे अशनादिक औषध प्रमुख सुजतां लेवां अथवा ते न मले तो असुज ता अहारादिक पंचक परिहाणे लेइने पण समस्त गछने आधारभूत सूत्रार्थना निर्णयना करनार एवा श्रीआचार्यनी प्रति जागरण जाव जीव सुधी श्रावके करवी.

एमज वृषभके० उपाध्यायनी बारवर्ष लगी प्रति जागरणा करवी. केमके एट ला काल पछी बीजो वृषभ गछनार धारक थाय. तेमज सामान्य साधुनी अढार मास प्रति जागरणा करवी. पछी ते अनशननुं ग्रहण करे. ए रोगादिक कारणे प्रति जागरणा कही. अन्यथा आरोग्य शरीर छतां न करवी, ॥७७०॥ए व्यवस्था व्यवहार भाष्यने विषे सामान्य ग्लाननी क्रियाने अधिकारे कहीछे, तेज कहेछे.

उक्तंच छम्मासे आयरिउ, कुलंच संवछराइं तिन्नि भवे ॥ संवछरंगणोखलु, जा वज्जीवं भवे संघो अर्थः— इहां ए भावछे के छ महीनासुधी आचार्य चिकित्सा करा ववा वांछे. पछी अनशन लइ शके तो ले अने एटलामां साजो न थाय तो ते कु लने आपे. पछी ते कुल तेनी त्रण वर्ष परिचर्याकरे. तेम छतां पण निरोगी न था य तो वली संवछर सीम तेनी गण परिचर्या करे. तेथी पण निरोगता न थाय तो ते गण संघने आपे. पछी ते संघ तेनी जाव जीव पर्यंत परिचर्या करे. इतिगाथार्थ.

अवतरणः— उवहिधोयण कालोत्ति एटले उपधि धोवाना काल माननुं एक शो ने एकत्रीसमु द्वार कहेछे मूलः—अप्पत्तेवि अवासे, सव्वं उवहिं धुवंति जयणाए असईएउदगस्सउ जहन्नउ पायनिज्जोगो ॥ ७७१ ॥ अर्थः—अप्पत्तेके० वर्षाकाल आव्याविना जो पाणीनो योग मलेतो सव्वके०सर्व उपधि जेटलुं उपकरण थाय. ते ज यणाये करीने धोवुं अने उदकने अभावे जघन्यथी पात्रानां वस्त्र ते तो जरूर धोवांज.

इहां विशेष देखाडेछे. मूलः— आयरिय गिलाणाणं, मइलामइला पुणोवि धो इज्जा ॥ माहुगुरूण मवन्ना, लोगंमि अजीरणं इयरे ॥ ७७२ ॥ अर्थः— आचार्य,

सिद्धांत अने अर्थना वखाणनार अनेक गुण सहित होय, जेमनी पासे देशनादिक सांजलवा सारुं घणा लोक आवे, एनां उपलक्षण थकी उपाध्यायादिक पण लइये. एवाने जो मलीन वस्त्र होय तो तेथी लोकमां अश्लाघा थाय. तेमज ग्लानने मलीन वस्त्रना योग थकी टाढ वायराने योगे शीत उपजे, तेथी आहार पाचक थाय नही. घणी रोग वृद्धि थाय. ए कारणथकी वस्त्र मलीन होय तो अवर्णवाद दोष टालवाने अर्थे वस्त्र धोवां जोइये. शेष यतिना वस्त्र शेष काले धोवा थकीप्राणीनो विनाश तथा बकुश पणानो संजव थाय. इत्यादिक दूषण जाणी धोवां नही एमकोइ कहेशे तो वर्षाकाल आव्या थका पण ए दोष छेज. एटले मूलथी धोवांज नही.

तेनो उत्तर कहेछे के त्यां जो न धोइये तो वर्षा काले मलने योगे फूलणी था य. तेथी घणा दूषण लागे. अने श्रीजिनेश्वरनी आज्ञा पण एमजछे. यद्यपि प्रा णीउंनुं उपमर्द थाय तोपण जे सूत्रना वचन मान्य करी सूत्रोक्तमार्गे प्रवर्त्ते तो तेवा जयणाये प्रवर्त्तनारने दूषण नथी. जाजयमाणस्सनवे इत्यादि जगवंत जाषे छे. इति गाथा द्वयार्थ ॥ ७७२ ॥

अवतरणः– जोयणजायत्ति एटले जोजनना जागनुं एकशो ने बत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः–बत्तीसं किर कवला, आहारो कुच्छिपूरउ जणिउ ॥ पुरिसस्स म हिलियाए, अठ्ठावीसं जवे कवला ॥ ७७३ ॥ अर्थः– बत्रीश कवल ते किल श ब्दे ए मध्यम निरतोछे, एटले कोइ दरिद्री घणुं खाय अने कोइ अल्प आहारनो धणी थोडा कवल करे, तेथी इहां ए कूखनो पूरनार प्रमाण कह्यो. ते पुरुषने ब त्रीश कवल अने महिलियाके० स्त्रीने अठ्ठावीस कवल प्रमाण थाय. ॥ ७७३ ॥

हवे एना जाग आवी रीते थाय कहेछे. मूलः– अद्धमसणस्स सवंजणस्स कुज्जा दवस्स दो जाए ॥ वायपवियारणठ्ठा छब्जायं कणयं कुज्जा ॥७७४॥ अर्थः– छ जाग उदरना करी तेमांहे अर्द्ध एटले त्रण जाग तो अशन मग कूर प्रमुखना तथा सवंजनस्सके० सालणो अने छाशे करी सहितना कुज्जाके० करवा. अने इव्य के० पाणीना बे जाग करवा, वली वायुनो प्रतिचार एटले संचारवो तेने अर्थे छ ठो जाग ते उणो करवो ॥ ७७४ ॥

हवे ए वात कालविशेषे देखाडेछे. मूलः–सीउ उसिणो साहारणोय कालो ति हा मुणेयव्वो ॥ साहारणंमि काले, तब्जाहारे इमा मित्ता॥७७५॥अर्थः– शीत उष्ण अने साधारणना जेदेकरी काल त्रण प्रकारे छे. त्यां साधारण कालने विषे आ हारनी ए मात्रा कहीछे ॥ ७७५ ॥

मूलः—सीए दवस्स एगो, नत्ते चत्तारि अहव दो पाणे॥उसिणे दवस्स डुन्नी, तिन्नि विसेसाउ नत्तस्स ॥ ७७६ ॥ अर्थः— अति शीतकालनेविषे दवस्सके० पाणीनो एक नाग, अने नत्तेके० नक्तना चार नाग, मध्यम शीतकालनेविषे पाणीना बेनाग अने नक्तना त्रण नाग, तेमज मध्यम उष्णकालनेविषे पाणीना बे नाग अने नक्तना त्रण नाग, अति उष्णकालनेविषे पाणीना त्रण नाग अने नक्तना बे नाग मलीने पांच नाग नक्त अने पाणी, एणे पूर्णकरी उठो नाग वायुसंचारने अर्थे मुकवो ॥ ७७६ ॥

हवे अवस्थित नाग कहेछे. मूलः—एगो दवस्स नागो, अवछिओ नोयणस्स दो नागा, वड्ढंति वहायंतिव दोदो नागाउ एक्केक्के ॥ ७७७ ॥ अर्थः— एक ड्रव्य एटले पाणीनो नाग, तथा अवस्थित निश्चित नोजनना बे नाग, अने बीजा बे नागछे ते वधे, अने हायंतिके० घटे एटले पानकमां वधे तो नोजनमां घटे अने नोजनमां वधे तो पानकमां घटे. इति गाथा पंचकार्थ. ॥ ७७७ ॥

अवतरणः— वसहिसुद्धित्ति एटले वसतिजे उपाश्रय तेनी सुद्धिनुं एकशो ने तेत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः— पठीवंसो दो धारणाउ चत्तारि मूलवेलीउ ॥ मूलगुणेहि विसुद्धा, एसा हु अहागडावसही. ॥७७८॥ अर्थः— पृष्टीवंस शब्दे आमसर कहिये, अने दोधारणा शब्दे थुणी जेना उपर आमसर धरायछे. तेवी बेथूणी जाणवी. अने वली चत्तारिके० चारे खूणे मूलवेलिउके० न्हानी थूणीओ चार होय. ए सात वानां गृहस्थे पोताने अर्थे कर्यां होय तो मूलगुणविशुद्धि कहिये. अने जे गृहस्थ साधु आश्रि यतिने उद्देसे करे ते वसति निश्चयकी आधाकर्म कृत थाय.

हवे उत्तर गुणविशुद्धि कहेछे. मूलः— वंसग कडणो कंवण, ढायण लेवण डुवारनूमीय ॥ परिकम्म विप्पमुक्का, एसामूलुत्तरगुणेसु॥ ७७९॥ अर्थः—उत्तरगुण बे नेदे छे. एक मूलोत्तरगुण अने बीजा उत्तरोत्तरगुण. त्यां प्रथम मूलुत्तरगुण ते जे न्हानी थुणी उपर आडी आपिये ते वंसग कहिये. अने आमा वरा आपिये ते कडग कहिये. वली उपर बांधवाने अर्थे कांब आपिये ते कंवण, तथा ढायण ते उपर आछादन करवासारु जे मानादिक शिण आपिये; ए सर्वने ढादन कहिये. अने उपर गारा प्रमुख साथे लेपन एटले लीपण करवुं, तथा द्वार पछवाडे ढांकवा सारुं नानुं मोटुं बारणानुं करवुं. पछी नूमीके० उंची नीची नूमी नांगीने आंगणुं समुं करवुं. ए सात मूलोत्तरगुणनी परिक्रमणाये रहित जे उपाश्रय ते मूलोत्तर गुणनेविषे विशुद्धि कहिये. ॥ ७७९ ॥

हवे उत्तरोत्तरगुण विशुद्ध कहेछे. मूलः—दूमिय धूमिय वासिय, उज्जोइय बलिकडा अवत्ताय ॥ सित्ता संसट्ठाविय, विसोहि कोडिंगया वसही ॥ ७७० ॥ अर्थः— दूमिय तेने कहिये जे सकोमल लेपन करी कोमल जीतो करवी, अने धवलवुं एटले उज्वल करवुं. वली धूमियते सुंगधपणाने अर्थे अगर धूपादिके धूप करवो, तथा वासिय ते फूल प्रमुखे करी वासित करवो अने उज्जोइयके० रत्न दीवादिके करी ज्यां उद्योत कस्यो होय, बलिकडाके० बाकला लापसी प्रमुख बलि ज्यां करी होय अवत्तायके० छाण माटीये करी जूमिकाये तथा आंगणे ज्यां लेप कस्यो होय, सित्ताके० केवल पाणीये करी सिंचीहोय संसट्ठाके० बुहारिये करी पूंजीने कचरो प्रमुख दूर कस्यो होय. एटलां ए आठ वानां साधु उद्देसीने कस्यां होय.तो विशोधिकोटिगत वस्ति कहिये.

अने प्रथम सात मूलगुण अने सात मूलोत्तरगुण ए चउद ज्यां यति आश्रयि कस्या होय तो ते अविशोधि कोटिगत वस्ति जाणवी. तेमज चउशालादिकनेविषे पण मूलोत्तर गुण विजाग जाणवा. पण ते इहां सूत्रमां जे कह्या नथी तेनुं कारण एछे के जे बहुल पणे साधु विहार करतां गामडानेविषे जाय त्यां जेवी सूत्रमांहे कही तेवी थाय. तेथी तेनुंज ग्रहण कीधुं. ॥ ७७० ॥

इहां वली विशेष देखाडेछे. मूलः— मूलुत्तरगुणसुद्धं, थी पसु पंमग विवज्जिअं वसहिं ॥ सेविज्ज सव्वकालं, विवज्जए होंति दोसाउ ॥७७१॥ अर्थः— प्रथम कह्यां जे मूलगुण ने उत्तरगुण तेणेकरीने विशुद्ध अने स्त्री, पशु, पंमग तेणेकरी विवर्जित एटले रहित एवीजे वस्ति तेने सेविज्जके० साधु सर्वकाल सेवे, जोगवे, पण एथी विपरीत जेमां मूलुत्तर गुण विशुद्धि न होय अने स्त्री पशु पंमगे सहित होय एवी वस्तिनुं सेवन कस्याथी साधुने दूषण प्राप्त थायछे. इतिगाथा चतुष्टयार्थ.

अवतरणः— संलेहणा डुवालस वरिसेत्ति एटले संलेषणा बार वर्ष सुधी करवी तेनुं एकशोने चोत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—चत्तारि विचित्ताइं, विगई निज्जूहियाइं चत्तारि ॥ संवछरे य दोन्निउ, एगंतरियंच आयामं ॥ ७७२ ॥ अर्थः— आगमोक्त विधियेकरी शरीरादिकनुं अपकर्ष एटले कृशपणु करे तेने संलेषणा कहिये. ते जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्टना जेदे करी त्रण प्रकारे छे. तेमां जघन्य तो एक मास सीम, अने मध्यम एक वरस सीम. उत्कृष्ट बार वर्ष सीम जाणवी.

इहां प्रथम उत्कृष्टनी विवक्षा करेछे. चत्तारि के० प्रथमना चार वर्ष सीमतो विचित्र एटले चतुर्थ, अष्ठम दशम, द्वादशादिक विचित्र प्रकारनां तप करे. अने

पारणे सर्व काम गुणित आहार लिये. ते वार पछी बीजा चार वर्ष सीम. वली पूर्वोक्त विचित्र तप करे परंतु पारणे विगइ रहित निवी करे, उत्कृष्ट रस वर्जे. पछी वली बे वर्ष लगी चतुर्थ करे. पारणे आंबिल करे. एवी रीते दश वर्ष पुरां कर्या पछी बे वर्षमां जे करे ते कहेछे. ॥ ८८२ ॥

मूलः— नाइविगिच्छोय तवो, छम्मासे परिमियंच आयामं ॥ अवरेविय छम्मासे, होइ विगिट्ठं तवो कम्मं ॥ ८८३ ॥ अर्थः—हवे अग्यारमा वर्षना छ मास सुधी चतुर्थ षष्ठ तप करे, अने पारणे आंबिल करे. परंतु कांइक ऊणो आहार लिये. वली आगला छ मासमां अष्टम, दशम अने द्वादशादिक तप करे अने पारणे आंबिल संपूर्ण करे. एटले अग्यार वर्ष पूरण थाय. ॥ ८८३ ॥

हवे बारमा वर्षनी करणी कहे छे. मूलः— वासंकोडी सहियं, आयामं कट्टु आणुपुवीए ॥ गिरिकंदरंच गंतुं, पाउवगमं पवज्जेइ ॥ ८८४ ॥ अर्थः— वासंके० बारमा वर्ष सीम कोटीसहित निरंतर आंबिल करे. जे कारणे निसीथनी चूर्णिमां कह्युं छे. डुवालसमंवरिसं निरंतरहायमाणं, उसिणोदएणं आयंबिलं करेइ तं कोमीसहियं जवति जेणं आयंबिलस्स कोडी कोडीएमिलइत्ति. एक आचार्य वली एम कहेछे के बारमे वर्षे चतुर्थ करीने पारणे आंबिल करे, इहां बारमा वर्ष संबंधी घणा मत छे; परंतु ग्रंथगौरवना जय थकी इहां लखता नथी. ॥ ८८४ ॥

हवे बारमे वर्षे आंबिल करे तेवारे जोजननो कवल न्यून करतो ज्यां सीम छेहलो एक कवल थाय त्यां सीम करीने पछी ते कवलमां पण कवलना कणिया उछा करतो जाय. ते ज्यां सीम एक सीथे एटले एक कणीये आवे त्यां सीम जाणवी. एनुं उदाहरण कहेछे. जेम दीपकमां समकाले तेल ने वाटनो क्षय थाय तेम इहांपण शरीर अने आयुष्यनो क्षय समकाले थाय.

फरी बारमा वर्षना जेवारे छेहला चार महिना रहे तेवारे एकांतरे तेलनो कोगलो जरी घणो वखत मुखमांहे राखी राखमांहे नाखि दिये. पछी उन्हा पाणी साथे कोगलो करे. जो एम न करे तो छेहडे मोढुं लुखुं थाय मिलीजाय अने तेथी नवकार मात्रनो उच्चार न थाय. एरीते बार वर्ष संलेषणा करी पछी गिरिशब्दे पर्वत तेनी गुफामां जइने अथवा षट्काय जीव रहित एवा एकांत स्थानके जइ त्यां पादोपगमने जक्त परिज्ञाइ अथवा गिनी मरणादिक पडिवजे. इहां मध्यम थकी जे एक वर्ष कह्यो ते एकवर्षना बार महिना थाय; त्यां पण बारवर्षनी क्रिया ते महिनाउने अनुक्रमे बार महिनामांज पूरण करे. छ मासे बार पक्ष जाणवा.

अवतरणः— वसहेण वसहिगहणंति एटले ग्रामादिकने विषे उपाश्रय लेवुं ते वृषभ ने आकारे लेवुं तेनुं एकशोने पांत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— नयराइएसु घिप्पइ, वसही पुव्वामुहं ठविय वसहं ॥ वामकडीइ निविठ्ठं, दीहीकय अग्गि मिक्कपयं ॥७७५॥ अर्थः—नगरादिकने विषे जे वस्ति एटले उपाश्रय लेवुं ते पूर्वाभिमुखे वेठेलो वृषभ अने मावे पासे कुक्षिना जोरे निविष्टके० रह्योछे. वली दीर्घपणे लंबाइमां जेनो आगलनो एक पग करेलो होय. एवी भूमिनी कल्पना करी उपाश्रय लेवुं.

एवी वस्ति लेवा थकी जे फल थाय ते देखाडेछे. मूलः— सिंगरकोडे कलहो, ठाणं पुण नेव होइ चलणेसु ॥ अहिठाणे पुटरोगो, पुछंमिय फेडणं जाणं ॥७७६॥ मुह मूलंमिय चारी, सिरेयकउहेय पूयसक्कारो ॥ खंधे पिठीयभरो, पुट्टंमिय धायउ वसहो ॥ ७७७ ॥ अर्थः— सींगडाने स्थानके वेसतां थकां साधुने मांहोमांहे क्लेष थाय अने ते स्थाने यतिने वसवुं पण न थाय. एमज चरणने विषे तथा अधिष्ठान एटले पश्चिम गुरु प्रदेशने विषे वसतां यतिने पेट रोग थाय. अने पूछडानेविषे वसतां फेडणंके० उपाश्रयनुं पडवुं थाय एटले उपाश्रय तूटी पडे. एम तुं जाणंके० जाण ॥७७६॥ मुहमूलंमिके० मुखस्थाने वस्ता थकाचारेआहारादिकनो घणो लाभथाय. सिरेके० बन्ने सिंगडानी वचाले अने ककुद थूंभी त्यां जो वसे तो पूजा वस्त्रादिकनो सत्कार, अभ्युत्थानादिक थाय. तथा कांधे अने पुंठने स्थानके वसतांथकां भर एटले आवता जता यतिओनी वस्तिए व्याप्त थाय. अने पेट स्थानके वसतां थकां जेम वृषभ धरायो होय एटले खुब खाइने पेट भर्खुं होय तेम यतिपण आहारादिके तृप्त थको रहे. एरीते कल्पना करीने उपाश्रयमां रहेवुं. इतिगाथा त्रयार्थ.

अवतरणः— उसिणस्स फासुयस्स, जलस्स सच्चित्तया कालोत्ति एटले उष्ण अने प्रासुक जल ने सचित्तपणाना कालनुं एकशो ने छत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— उसिणोदगं तिदंडु, कलियं फासुयजलंति जइकप्पं ॥ नवरि गिलाणाइ कए, पहरतिगोवरि वि धरियव्वं ॥ ७७८ ॥ अर्थः— उष्ण एटले ज्यां त्रण उकाला वाल्या होय, तेमां पहेले उकाले थोडाक जीव प्रासुक थाय, पण घणा रही जाय. अने वीजे उकाले घणा प्रासुक थाय अने थोडाज सचित्त रही जाय; तथा त्रीजे उकाले तो सर्व जीव अचित्त थाय.परंतु एवा त्रण उकाला वाल्या विना यतिने पान अग्राह्यछे. अने प्रासुक ते जे स्वकाय परकायादिक शस्त्र परिणाम थयो. एवो यतिने कल्पनीय होय, ते त्रण पहोर सुधी राखवुं पण उपरांत कालातिक्रांत दोषनो सं

नव थाय माटे न राखवुं. कदाचित अपवादे राखे तो नवरके० एटलुं विशेषछे के ग्लानादिकने अर्थे त्रण पहोर उपरांत पण राखवुं. ॥ ८८८ ॥

मूलः— जायइ सचित्तया से, गिम्हंमि पहरपंचग स्सुवरिं ॥ चउपहरुवरिं सिसिरे, वासासु पुणोति पुहरुवरिं ॥ ८८९ ॥ अर्थः— गिम्हम्मिके० ग्रीष्मकाल उनालाने विषे अतिरुक्ष पणाने लीधे पांच पहोर उपरांत ते पाणी सचित्त थाय. अने सिसिरेके० सीतकालने विषे कालना सस्निग्धपणा थकी चार पहोर उपरांत सचित्त थाय. अने ए कहेला काल पछी राखवुं पडे तो तेमां खार नाखीने राखवुं के जे थकी ते सचित्त न थाय. इति गाथा द्वयार्थ ॥ ८९ ॥

अवतरणः— तेरिछीउ माणवीउ देवीउय तिरिय मणुयदेवाणं जगुणातय मत्ताहियाउत्ति एटले तिर्यंच, मनुष्य, अने देवतानी स्त्रीउ ते जेना थकी जेटला गुणी अधिकछे तेनुं एकशो ने साडत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— तिगुणा तिरूवअहिया, तिरियाणं इछिया मुणेयव्वा ॥ सत्तावीस गुणा पुण, मणुयाणं तदहिआ चेव ॥ ८९० ॥ बत्तीसगुणा बत्तीसरूव, अहिआय तहय देवाणं ॥ देवीउ पन्नत्ता, जिणेहिं जिअरागदोसेहिं ॥ ८९१ ॥ अर्थः— त्रिगुंणा एटले त्रणरुपे अधिक तिर्यंच थकी तिर्यंचनी स्त्री जाणवी. सत्तावीश गुणी सत्तावीशे अधिक मनुष्य थकी मनुष्यनी स्त्री जाणवी. ॥ ८९० ॥ बत्रीश गुणी बत्रीशे अधिक देवताथकी देवतानी स्त्री जाणवी, एरीते राग द्वेषना जीतनार श्री जिनवरे कह्युंछे. इतिगाथा द्वयार्थ. ८९१

अवतरणः— अछेरयाण दसगंति एटले दश आश्चर्यनुं एकशोने आडत्तरीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—उवसग्ग गब्भहरणं, इछीतिछं अन्नाविया परिसा ॥ कण्हस्स अवरकंका, अवयरणं चंदसूराणं ॥ ८९२ ॥ अर्थः— उपसृज्यतेके० धर्म थकी प्राणीने चलायमान करीये. इएके० एटला माटे उपसर्ग कहिये. देवमनुष्यादिकना करेला उपद्रव ते ज्यां श्रीतीर्थंकर भगवान विहार करे त्यां सवाशो योजनमांहे रोग मारी भय प्रमुख उपशमावे. समस्त सुर नर नागेंद्रने वंद्य एवा श्री महावीर परमेश्वर. तेना छद्मस्थ कालने विषे अने केवली कालने विषे. जे प्राकृत गोवालिया प्रमुख तेणे पण महोटा मरणांत उपसर्ग कस्या. ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं.

बीजुं. एज श्री महावीर भगवानने देवानंदाना उदरमांथी ब्यासी दिवस व्यतिक्रमे थके इंद्रना आदेशथकी हरणीगमेषी; देवे गर्भ हरण करी त्रिसला राणीनी कुखे संक्रमाव्यो. ए पण बीजुं आश्चर्य जाणवुं.

त्रीजुं. इछी तिछंके० स्त्रीने तिर्थंकरपणुं उपन्युं एटले इहां ए भावछे के ती

र्थ शब्दे द्वादशांगी अथवा चतुर्विध संघ ते त्रिभुवनने अतिशायी निरुपम म
हिमाना धणी एवा पुरुष थकीज प्रवर्त्तवुं जोइये. ते आ वर्त्तमान चौवीसीमां कुं
नराजानी प्रनावती राणीनी पुत्री श्रीमल्ली एवेनामे कुमरी थई तेणेज उंगणीसमो
तीर्थंकर थइने तीर्थ प्रवर्त्ताव्युं. ए पण त्रीजुं आश्चर्य जाणवुं.

चोथुं. श्रीमहावीर नगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं; तेवारे देवकृत समव
सरणे बेसीने पोताना कल्प नणी देशना दीधी. पण ते देशना निष्फल थइ. केम
के त्यां कोइये सम्यक्त्वादिकनो अंगीकार कस्यो नही, तेथी ए अनावित पर्षदा
लक्षण चोथुं आश्चर्य जाणवुं.

पांचमुं. द्रौपदीने व्यतिकरे श्रीकृष्णने घातकी खंममां अमरकंका नामनी न
गरीनेविषे गमन थयुं, समुद्र उलंघी द्रौपदीने लइ आव्या. ए पाचमुं आश्चर्य.

ठठुं. श्रीमहावीर देव कौसंबी नगरीये समवसस्या. त्यां चंद्रमा अने सूर्य
जेनां शाश्वत विमान ज्योतिष चक्रमांठे. ते तेज विमानमां बेसीने वांदवा आव्या.
इहां कोइक एवुं कहेठे के उत्तर वैक्रिय विमानमां बेसी वांदवा आव्या; परंतु तेम
न जाणवुं. ए मूलगे विमाने बेसीनेज वांदवा आव्याठे. माटे ए ठठुंआश्चर्य जाणवुं.

मूलः—हरिवंसकुलप्पत्ती, चमरुप्पाउ अ ठसय सिद्धा॥अस्संजयाणपूया, दसविय
णं तेण कालेण ॥ ७५३ ॥ अर्थः— सातमुं हरि शब्दे हरिवर्ष क्षेत्र तेनो जुगलिउ
तेनो वंश पुत्र पुत्रादिकनी परंपरा लक्षण जे कुल तेनी उप्पत्तीके० उपजवो ते
हरिवंश कुलोत्पत्ति कहिये. तेनी कथा आमठे. के, आ जंबुद्वीपमांना नरतक्षेत्र
नेविषे कौशांबी नगरीनो सुमुख नामे राजा हतो. एकदा प्रस्तावे वसंत ऋतुंये ते
राजा हाथी उपर आरूढ थइ ते नगरनी नजीकना वनमां रमवाने अर्थे जतो
हतो. मार्गे जतां वीरकनामे कुविंदनी नार्या अत्यंत स्वरूपवान देखीने मांहो
मांहे सराग दृष्टिये जोतां प्रीति नाव उत्पन्न थयो. तेथी राजा त्यां थकी आगल
जाय नही. ते वारे सुमतिनामा प्रधान कहेवालाग्यो के हे स्वामि, समस्त लोक
आव्या ठतां तमे आगल केम चालता नथी? ते सांनली राजा पोताना प्रधाननी
लाज आणी आगल वनमां गयो. पण शून्य चित्त थको मनमांहे केवल ते स्त्री
नुं चिंतवन ठे तेथी कहींए पण चेन पामतो नथी. ते जोइने प्रधाने पुठ्युं के हे महा
राज, तमे आज आवा शून्य चित्त केम देखाउठो? एम फरीथी फरी घणो आग्रह
करी पुठया थकी पोताना मननी सर्व वात राजाये प्रधानने कही. ते सांनली प्र
धान बोल्यो के, तमे कांइ चिंता करशो नही; हुं तमने ए स्त्री मेलवी आपीश.

पछी घेर आवी प्रधाने आत्रेयिकानामे परिव्राजिकाने बोलावी सर्व वात समजावी वनमालानी पासे मोकली. तेपण त्यां जइ जुएछे तो वनमाला पण विरहविव्हल थकी मुखे निश्वास नाखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे एरीते महा विरहणी देखी तेने ते परिव्राजिका केहेवा लागी के हे वत्से, तुं आज एम दुःखितके म देखायछे? तारुं दुःख मने कहे तो हुं ते दुःखथी तने पार उतारुं. ते सांजली वनमालाये गुह्यनी वात कही. तेवारे परिव्राजिका बोली के हुं तने राजानी साथे काले मेलवीश, तुं कांइ चिंता करीश नही, पछी ते परिव्राजिकाये हर्षवंत थकी त्यांथी जई सर्व वात प्रधानने कही. प्रधाने जई राजाने सर्व वृत्तांत संजलाव्यो.

तेवार पछी प्रजाते परिव्राजिका वनमालाने राजा पासे तेडी आवी. राजाये हर्षवंत थइ अंतःपुरमां तेने राखी अने तेनी साथे ते पंच विध विषय सुख जोगववा लाग्यो. हवे वीरककुविंद घेर आव्यो ते वारे तेणे स्त्रीने दीठी नही. पछी पडोसी प्रमुखने पूछतो थको नार्यांना विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममां फरतो फरतो एक दिवसे राजाना प्रासाद नीचे आवी उजो रह्यो. तेवामां राजा अने वनमाला ए बन्ने जणां पण गोखमां आवी बेठां. राजाये वीरककुविंदने देखीने मनमां विचार्युंजे में अत्यंत लोकविरुद्ध अनार्यकार्य कीधुं. माटे मने धिक्कारछे. एम मनमां घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो. तेवामां अकस्मात् उपरथी वीजली पडी तेथी बेउ जणां शुज ध्याने मरण पामि हरिवर्ष क्षेत्रे युगलिया पणे उपन्यां. त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूरण करेछे तेणी सुखे रहेछे.

पछी वीरककुविंद ते बेहुनुं मरण जाणी अज्ञान तपस्या करी सौधर्म देवलोके किल्बिषया देवमां उपन्यो. अवधिज्ञाने ते युगलने देखी मनमां चिंतववा लाग्यो के ए युगलिया इहां तो मरशे नही अने ज्यारे मरण पामशे तेवारे पण देवलोके जाशे. माटे एने इहांथी उपाडीने अन्य स्थानके लइ जाउं. एम चिंतवी त्यां थकी अपहरण करी चंपानगरिये ते युगलने लाव्यो. त्यां राजा अपुत्रीउ मरण पाम्यो हतो तेथी ते देव, त्यानां लोकोने कहेवा लाग्योके हुं तमारा वास्ते राजाने लाव्योछुं. एने मांस मद्यनो आहार करावजो. एम कही तेने राजपणे स्थापन करी ते देव पोतानी शक्तिये करी तेमनुं आयुष्य तथा देह मान घटाडीने पोताने स्थानके गयो. पछी ते युगल थकी हरिवंश कुलोत्पत्ति थइ. ए आश्चर्य जाणवुं.

आठमुं पातालवासी चमरेंद्रनो उत्पात एटले उंच जवुं थयुं. ते आवीरीते. जरतक्षेत्रे विजेलनामा ग्रामने विषे पूरणनामे महा धनाढ्य रहेतो हतो. ते ए

क दिवसे रात्रे चिंतववा लाग्यो के, में पूर्वंनवे पुण्य कर्यांछे; तेथी हमणां अत्यं त रूद्धिनो धणी महासुखी थयोछुं. हवे गृहवास छांमी तपस्या करुं तो वली न वांतरे विशेष फल पामुं. एवुं चिंतवी प्रनात समये स्वजन संबंधीने पूछी पोता नो पुत्र पाटे स्थापी प्राणायाम नामा तापसी दीक्षा लेइ ते दिवसथकी जावजी व लगी छठ तपस्या करवानी प्रतिज्ञाकरी. अने पारणुं करवाने दिवसे एक लाक डानो चारपुडो गामडो राख्यो. ते गामडामां मध्यान्हसमये फरी निक्षा लेइ ते मांथी पहेला पुडमां पडेली निक्षा पंथीउने आपे, बीजा पुडमां पडेली निक्षा काग प्रमुख पक्षिउने आपे, तथा त्रीजा पुडमां पडेली निक्षा जलचर मछ प्रमुख जी वोने आपे अने चोथा पुडमां पमेली निक्षा पोते रागद्वेषरहित थको आरोगे. एरीते बार वर्ष पर्यंत तपस्या करी अंते मासनी संलेषणाये काल करी चमरचंचा राजधानीने विषे नुवनपति देवोनो इंद्र चमरेंद्र पणे उपन्यो. ते पोताना उपर सोधर्म इंद्रने देखी आमर्ष थकी देवोप्रत्ये बोल्यो के कोण डुरात्मा मारा मस्तकउ पर रहीने शोनेछे? ते समये देव बोल्या के, पूर्व जन्मने विषे संपादन करेला पुण्ये क री सर्वना करतां अतिशय छे समृद्धि अने पराक्रम जेनुं एवो आ सौधर्माधिप छे. ते सांनली अतिशय क्रोधयुक्त थई बोल्यो के मारा परिवारे मारुं जो पण निवारण कर्युं तो पण युद्ध करवाने माटे इछा करनारो हुं अपराध करनारा आ इंद्रने शिक्षा करीश. एवुं बोली हाथमां परिघ धारण करी विचार करवा लाग्यो के को इ पण प्रकारे ते इंद्रे मारो परानव कर्यो छतां हुं कोने शरणे जाउं? एवो विचा र करी सुसुमारनगरने विषे प्रतिमास्थित श्री महावीरनी समीप जई वंदनपूर्वक बो ल्यो के हे नगवन्, तमारा प्रसादथी हुं इंद्रने पण जीतीश. ए प्रमाणे प्रार्थना करीलाख योजन प्रमाण विस्तीर्ण शरीर करी परिघायुध फेरवतो गर्जना करी देवोने त्रासउत्पन्न करतो गर्वे करी अंध थइ सौधर्मेंद्र सन्मुख धायो. पछी पोतानो एक पग सौधर्मा वतंसक विमाननी वेदिकाने विषे अने बीजो पग सुधर्म सनानी उपर राखी परि घेकरी इंद्रकीलउपर ताडन करी अनेक प्रकारे इंद्रने आक्रोश करवा लाग्यो. सौधर्मेंद्रेपण अवधिज्ञाने तेने जाणीने कोपे करी देदीप्यमान एवुं वज्र छो डयुं. चमरपण पोतानी पाछल आवनारा वज्रने जोइ असमर्थ थइ विस्तार करेला पोताना शरीरनो उपसंहार करी शरणं शरणं एवुं बोली सूक्ष्म थइ श्रीमहावीर स्वामिना चरणनी वचमां प्रवेश करतो हवो. सोधर्मेंद्रपण अरहत चरणने विषे प्रवेश करतो जाणी त्वराथी आवी ज्यांसुधि त्यां वज्र प्राप्त थयुं नथी

एटलामां वज्रनो उपसंहार करी श्रीमहावीर स्वामिनी पासे क्षमा मागी चम रेंद्रप्रत्ये बोल्योके, में तारा उपर वज्र मूक्युं हतां पण तुं श्रीमहावीर स्वामिने शरण आव्यो तेमाटे में वज्रनो उपसंहार कर्यो. श्रीमहावीर स्वामिनी कृपाये त ने हवे जय नथी. एवीरीते ते चमरेंद्रनुं आश्वासन करीने पछी महावीरस्वामिने वंदन करी आज्ञा लेइ पोताना स्थानप्रत्ये गयो. पछी चमरेंद्र पण नाना प्रका रे करी श्रीमहावीरस्वामिनी स्तुति करी अने आज्ञा लेइ पोतानी चमरचंचाराजधा नीप्रत्ये गयो. ए आठमुं चमरोत्पात नामा आश्चर्य जाणवुं.

नवमुं. उत्कृष्टी अवगाहना वाला नवाणु दीकरा अने आठ पौत्रा तथा एक पोते श्रीआदीश्वर जगवान. एरीते बधा मली एकशो ने आठ. ते एक समये अ भिजित् नक्षत्रमां सिद्ध थया. ते एकज समये उत्कृष्टी अवगाहनावाला एकशो आठ त्यां सिद्धि पाम्या. ते नवमुं आश्चर्य जाणवुं.

दशमुं. असंयति आरंजी परिग्रहवंत अब्रह्मचारी गृहस्थना वेषे रहेला, तेनो पूजा सत्कार. ते असंयति पूजा नामे दशमुं आश्चर्य. ते आवीरीते छे. श्री सुविधि नाथना निर्वाण पछी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानंतर हुंमावसर्प्पणीना दोषने ली धे साधुउनो विछेद थयो. तेवार पछी जे स्थविर श्रावको हता; तेमनी पासे जई बीजा लोको धर्म पूछवा लाग्या. तेपण जेवुं जाणता हता तेवुं तेउने कहेवा लाग्या. तेथी लोकपण तेमने धनवस्त्रादिक देवा लाग्या. तेथी तेउ गर्वित थया थका पोता ना मनकल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के, जे कोइ पृथ्वी, सद्मा, मंदिर, सुवर्ण, रूपुं, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अने गज अमने आपे, ते आ लोके तथा पर लोके महा फल पामे. अने अमेज सुपात्र छइये. एवो उपदेश सांजली लोके तेमने गुरु करी मान्या. एवी असंयतिनी पूजा चाली. प्रथम सदासर्वदा संयतिनी पूजा थती हती. तेथी विपरीतपणाये करीने श्रीशीतलनाथजिनना तीर्थसुधि आश्चर्य थयुं. एरीते ए दश आश्चर्य आ चोवीसीमां थयां वली अनंते काले थशे.॥८८३॥

हवे जे तीर्थंकरना वखतमां जे आश्चर्य थयुं ते कहेछेः— मूलः— सिरिरि सहसीयलेसुं, एक्कक्कं मल्लिनेमिनाहेय ॥ वीरजिणिंदे पंचउ, एगं सव्वेसु पाएणं ॥८८४॥ अर्थः—श्रीरुषजदेव अने श्रीशीतलनाथनी वारे एकेक आश्चर्य थयुं. तथा श्रीमल्लीजिनेश्वरने वारे एक थयुं अने एक श्रीनेमिनाथने वारे एक थयुं. अने श्री वी रजिनेंद्रने वारे पांच थयां. वली असंयतिनीपूजा लक्षण तो श्रीआदिनाथना वखत मां मरीचि कपिलादिकनी सांजलीये छैए. एम घणुंकरीने बीजा तीर्थंकरोना वा

रामां पण प्रवाहे थाय छे. तेनो स्पष्ट रीतें करी आगली गाथामां खुलासो कहेछे.

विशेषे नाम पूर्वक एज वात कहेछे. मूलः– रिसहे अठहिअसयं, सिद्धि सीय लजिणंमि हरिवंसो नेमि जिणे अवरकंका, गमणं कन्हस्स संपत्तं ॥ ८९५ ॥ इ छी तिछं मल्ली, पूआ अस्संजयाण नवम जिणे ॥ अवसेसा अछेरा, वीरजिणिंद स्स तिछंमि ॥ ॥ ८९६ ॥ अर्थ. श्रीरुषभदेवना वखतमां एकशोने आठ सिद्ध थया. श्रीशीतलजिनना वखतमां हरिवंशकुलनी उत्पत्ति थई. श्रीनेमिनाथना वख तमां अपरकंकानगरिये श्रीकृष्णनुं गमन थयुं. ॥ ८९५ ॥ अने स्त्रीनुं तीर्थ मल्ली नाथना वखतमां थयुं. नवमा जिनना वारामां असंयतिनी पूजा थई; अने अव शेष थाकतां आश्चर्य श्रीवीरपरमेश्वरना वारामां थयां. इति गाथा पंचकार्थ ८९६

अवतरणः– चउरोजासाउत्ति एटले चार जाषानुं एकशोने ओगणचालीस मुं द्वार कहेछे. मूलः– पढमाजासासच्चा, बीयाउ मुसा तयछिया तासिं ॥ सच्चामु सा असच्चा, मुसापुणो तह चउछित्ति ॥ ८९७ ॥ अर्थः– त्यां प्रथम जाषा ते सत्या कहिये. त्यां संतके० मूलुत्तरगुणयतिने सर्व विश्वने मुक्तिपद प्रापकपणा थ की अथवा संतविद्यमान जे जीवादिकपदार्थ तेना हेतुये जे बोलवी ते सत्या जा षा जाणवी. बीजी ए थकी जे विपरीत जाषा ते मृषा जाषा जाणवी. त्रीजी ए मां हेला सत्यने पण मले अने मृषाने पण मले; ते उजय स्वजाव सत्यामृषा जाषा जा णवी. चोथी असत्याअमृषा ते जे पूर्वोक्त त्रणे जाषाने न मले ते चोथी जाषा जाणवी.

हवे सत्यादिक चार जाषाना जेद कहेणहार उतो तेमां प्रथम सत्याना जेद कहेछे. मूलः– जणवय संमय ठवणा, नामेरूवे पडुच्चसच्चेय ॥ ववहार जाव जोगे, दसमे उवम्मसच्चेय ॥ ८९८ अर्थः– जे देशमां जे वस्तुनुं जेवुं नाम रूढी थी कहेवातुं होय अने तेज नाम परदेशमां जइने पण कोइ कहे तो तेने ज नपदसत्य कहिये. जेम कोंकणदेशमां पाणीने पिच्च नीर इत्यादिक कहेछे.

बीजुं संमयके० ते जे समस्त लोकने सम्मत. ते आवीरीते के कुमुद, कुवलय उत्पल अने तामरस इत्यादिकने विषे सरखे पंकज शब्दने संजवे. पण गोवा लादिक अरविंदनेज पंकज केहेछे. परंतु अन्यशब्दने सम्मत नही. तेनी परे बी जाने न कहिये. ए बीजुं सम्मतसत्य जाणवुं.

त्रीजुं ठवणाके० स्थापनासत्य. ते आवीरीते के जेम एकडो मांमीने तेना आगल एक मींडुं मांमीये तेवारे दश थाय, तेमज बे मींमां मांमिये तेवारे एक शो थाय, त्रण मींमा मांमिये तो हजार थाय. ए पण स्थापना जाणवी. तेमज मु

डा, मासो, तोल प्रमुख स्थापिये जे, आ अमुक पांचशेर किंवा दश शेरछे. ते पण स्थापना छे, अथवा आचार्यनी स्थापना करिये ते सर्वे स्थापना सत्य जाणवुं.

चोथुं नामसत्य, ते नाम तथा कुलनी वृद्धि न करतो होय तोपण कोइकनुं कुलवर्द्धन एवुं नाम होयछे. एमज धननी वृद्धि न करतां छतां पण धनवर्द्धन नाम होयछे. इत्यादिक सर्वे नामसत्य जाणवुं.

पांचमुं रूवेके० रूपसत्य, ते कपटे करी साधुनो वेष लीधो होय तोपण तेने साधु कहिये. एरीते जवाइया प्रमुख जेनो वेष धारण करे तेवारे ते वेषनुं रूप देखीने तेने ते नाम कहेछे ते रूपसत्य जाणवुं.

छठुं पाडुच्चके० प्रतीत आश्रीने सत्य कहेवायछे. जेम पांच अंगुली मांहेली अनामिकाने देखी मध्यमा अंगुलीने तेनी अपेक्षाये महोटी कहियेछैए. तेमज कनिष्ठिका आश्री अनामिकाने मोटीकहियेछैए. एम जेने जे आश्री कहिये ते प्रतीतसत्य जाणवुं.

सातमुं व्यवहारसत्य. ते पर्वत उपर तृणादिक बलतां देखीने एवुं कहेवामां आवे छे के पर्वत बलेछे. तेमज पाणीना वासणमांथी पाणी श्रवतुं देखीनें कहेके पाणीनुं वासण श्रवेछे. इत्यादिक व्यवहारसत्य कहेवायछे.

आठमुं भावसत्य. ते ज्यां पांचे वर्णनो संभव छतां जे वर्णनी अधिकता होय ते वर्ण कहेवो. जेम भ्रमरमां पांचेवर्ण छतां श्याम कहेवायछे. तेमज बलाहिकाने उज्वल कहेवाय छे. ए भाव सत्य जाणवो.

नवमुं योगसत्य. ते जेम दंडना योगथकी दंडी कहेवाय. छत्रना योगथकी छत्री कहेवाय. लिंगना योगथकी लिंगी कहेवाय. तेना अभावे तथा अछते पण एज कहेवाय. ते योगसत्य जाणवुं.

दशमुं उपमासत्य. ते जेम महोटुं तलाव देखीने कहिए के ए समुद्र जेवुं महोटुं तलाव छे. ते उपमासत्य कहेवायछे. ए दश प्रकारनी भाषा सत्य कही.॥ ८९८॥

हवे मुसत्ति एटले मृषाभाषाना दश प्रकार कहेछे. मूलः—कोहे माणे माया, लोहे पेज्जे तहेव दोसेय ॥ हास भये अरकाइय, उवघाए निस्सिया दसहा॥ ८९९ ॥

अर्थः— मृषाभाषा दश प्रकारे ते आवी रीते छे. एक क्रोधनिसृत, एमज मानादिक शब्दोनी साथे निसृत शब्द सर्वत्र जोडवो. ते आवीरीते क्रोधेकरी अदासने दास कही बोलावे. क्रोधनिःश्रृत आश्रयो थको जो बीजो कोइ सत्य भाषण करे तोपण ए जुतुंज माने. तेमज बीजुं माने करी पोते अधन थको धनवंत कहे ते मान निःसृत जाणवुं. त्रीजुं बीजाने वंचवाने अर्थे इंद्रजालियानी पेरे कहे ते

मायानिःसृत जाणवुं. चोथुं लोनेकरी वाणीयानी पेरे वस्तु क्रय विक्रय कर तां असत्य बोले, ते लोननिःसृत. पांचमुं पिज्जकेο अति प्रेमथकी बीजाने क हे के, हुं ताहरो दासछुं, इत्यादिक बोलवुं ते प्रेमनिःसृत जाणवुं. छठुं दोसेय केο द्वेषेकरी गुणवंत पुरुषने निर्गुणी कहे ते द्वेषनिःसृत. सातमुं छती वस्तुने क हेके, अमे नथी दीठी ते हास्यनिःसृत. आठमुं चोरप्रमुखने मुखथकी अति असंबंध वचन बोले ते नयनिःसृत जाणवुं. नवमुं अरकाइयकेο आख्याननने विषे एटले वखाणने विषे रसपोषण,करवाने अर्थे कांइक कल्पित वचनो बोल वा थकी आख्यायिकानिःसृत थाय. दशमी उवघाएकेο अचोरने चोर कहेवो, एम कहेवा थकी तेने उपघात थाय तेथी ए उपघातनिःसृत जाणवुं. ए दशे प्रकारे मृषानाषा जाणवी. ॥ ८९९ ॥

हवे सच्चामुसत्ति कहेछे. मूलः— उप्पन्न विगय मीसग, जीव अजीवेय जीव अज्ञीवे ॥ तह मीसगा अणंता, परित्त अद्धाय अद्धा. ॥ ९०० ॥ अर्थः— इहां मिश्र शब्द सर्वत्र जोडवो. तेवारे अणउपन्यानी साथे संख्या पूरण करवाने अर्थे मिश्रपणे कहिये, तेमां प्रथम उत्पन्नमिश्रा ते आवीरीते. जेम नगरादिकनेवि षे अधिक न्यून पुत्रोनो जन्म थयो छतां एम कहेवामां आवेछे के, आज दशदीक रानो जन्म थयो. इत्यादि जाणवी. बीजी. एज रीते विगत एटले मृतक साथे मि श्रपणे कहेतां थकां विगतमिश्रनाषा थाय, जेम आजे अमुक गाममां दशनो विनाश थयो,एमज त्रीजी जन्म अने मृतक बंनेनो परिमाण अधिक न्यून कहे ते त्रीजी मिश्रतानाषा जाणवी. चोथी घणी जीवती अने थोडी मृतक थयेली एवी कृमी नी राशी देखी घणा जीवो कहे, अने एवुं कहेके, अहो आ केवडी मोटी जीवरा शी छे!!! एम जीवमिश्र चोथी नाषा जाणवी. पांचमी घणी कृमी मरण पामे ली छे अने थोडी जीवती छे ते देखी कहेके, ए अजीवराशी छे, एम कहेतां थकां अजीवमिश्र कहेवाय. छठी जीव अजीव एटले तेमज वली तेज रा शी देखी अधिक न्यून छते एम कहेके, एमांहे एटली कृमी मरण पामी ने एटली जीवेछे. ते जीवाजीवमिश्रता जाणवी. सातमी तहमीसगा एटले अनंत काय नो ढगलो पडयो थको ते तेना पत्रादिक साथे मिश्रछतां पण एवुं कहेके, आ अनंत कायनो ढगलो पडयोछे. तो ते अनंतमिश्रता नाषा जाणवी. आठमी तेमज प्रत्येक वनस्पति घणी होय, अने ते थोडी अनंत काय साथे मिश्र थये ली होय, तेम छतां एवुं कहेके, ए प्रत्येक वनस्पतिकायनो ढगलो पडयोछे. ते

प्रत्येकमिश्र नाषा जाणवी. नवमी अद्धा ते काळविशेष रात्र दिवस प्रमुख जाणवी. त्यां कोइएक बीजा कोइने उतावळथी दिवसछते एवुं कहेके, उठ उठ रात्र पडी. अमुक काम करवानुं छे, अथवा रात्रि छतां कहेके, उठ उठ जलदी दिवसोदय थई चूक्यो. ए अद्धामिश्र नामे नवमी नाषा जाणवी. दशमी ते मज दिवस अथवा रात्री तेनो एक देश ते अद्धद्धामिश्रित नाषा जाणवी. जेम प्रथम पहोर वर्त्तमान छते कहेके, मध्यान्ह थयो. इत्यादिक जाणवी. ॥ ए०० ॥

हवे असच्चा मोसत्ति ए चोथी नाषा बार प्रकारे कहेछे. मूळः—आमंतणि आणवणी, जायणि तह पुछणीय पन्नवणी ॥ पच्चरकाणी नासा, नासा इछाणु लोमाय ॥ ए०१ ॥ अर्थः— आमंत्रण करिये के, हे देवदत्त इहां आव. इत्यादिक जे आमंत्रण ते त्रण प्रकारे छे. प्रथम, जे कोइने न मळे; पण केवळ व्यवहार मात्र प्रवृत्तिने माटेज छे. ते साची पण नही; ने जुठी पण नही, ते असत्य अमृषा जाणवी. बीजी आज्ञा आपिये ते आज्ञापनी. त्रीजी जायणीके०कोइ एक कोइ पासेथी मागे. चोथी आगळाने पूछीये ते पूछणी. पांचमी नव्यजीवोने उपदेश देतांथकां एम कहेवाय के, जे प्राणी प्राणवध थकी निवृत्ते, ते नवांतरे सुखपामे. एनुं नाम प्रज्ञापनी. छठी निषेध वचन बोले ते प्रत्याख्यानी नाषा जाणवी. सातमी कोइएक कोइ कार्य करवाने प्रवृत्ते अने कोइ एकने पूछे तेवारे ते कहेके, मारे पण ते मान्य छे माटे तारी इछा आवे तेम तुं कर. ए इछा अनुलोमनाषा जाणवी. ॥ ए०१ ॥

मूळः— अणनिग्गहियानासा, नासाय अनिग्गहंमि बोधवा ॥ संसयकरणी नासा, वोयड अवोयडा चेव ॥ ए०२ ॥ अर्थः— आठमी, घणां कामो करवानां होय अने कोइ पूछे के कयुं काम करुं? तेवारे कहेके तारे गमे ते काम कर. एम ज्यां कांइ कदाग्रह न होय ते अनन्निग्रहितनाषा जाणवी. नवमी, जे निश्चे थकी वचन बोलिये तेज करिए ए नाषा अनिग्रहिने विषे जाणवी. दशमी, संशयिक एटले कोइये कोइने कह्युं के सैंधव लई आव अने सैंधव शब्दे लवण, वस्त्र, पुरुष, अश्व, प्रमुख कहेवायछे. एम विचारी सामाने संशय उत्पन्नथाय. ते संशयकरणीनाषा जाणवी. अग्यारमी, ज्यां बोलवा थकी वर्ण एटले अक्षर अने तेनो अर्थ तेपण प्रगट होय ते व्याकृत जाणवी. बारमी, तेमज जे अप्रगटपणे बोलिये ते अव्याकृत नाषा जाणवी. इति गाथा षट्कार्थ. ॥ ए०२ ॥

अवतरणः— वयण सोळसगंति एटले वचन सोळप्रकारनां तेनुं एकशोने चाळीसमुं द्वार कहेछे. मूळः—काळतियं वयणतियं, लिंगतियं तह परोरक पच्चरकं ॥

उवणय वणय चउक्कं, अज्झत्थं चेव सोलसमं ॥ ए०३ ॥ अर्थः–प्रथम कालत्रिक ते एक वर्त्तमाने करेछे ते. बीजो भूत ते जे पूर्वे कर्युं ते. अने त्रीजो भविष्य ते आगल करशे ते. वचन त्रिक. ते एक वचन, द्विवचन, ने बहुवचन. लिंगत्रिक ते पुरुष, स्त्री, ने नपुंसक लक्षण जाणवां. तेम परोक्षवचन, पच्चक्खं के० प्रत्यक्ष वचन, उपनयअपनय वचन चार प्रकारे छे ते आवीरीतेः– उपनयगुण अने अपनय दोष. ते ज्यां बोलिये. जेम स्त्री स्वरूपवान छे परंतु कुशीलछे ते उपनय अपनयवचन जाणवुं. तथा कुरूपवान स्त्री छे परंतु सुशीलछे ते अपनयोपनय वचन जाणवुं. त्रीजुं, स्वरूपवान अने सुशील स्त्री ते उपनयोपनय वचन जाणवुं. चोथुं, कुरूपने कुशील स्त्रीछे ते अपनयोपनय वचन जाणवुं. ए पन्नर थया अने सोलमु अज्झत्थंके० अध्यात्मवचन ते मनमां एक होय अने बीजाने फसाववाने अर्थे बीजुं कहे ते सोलमुं अध्यात्मवचन जाणवुं. इतिगाथार्थ. ॥ए०३॥

अवतरणः– मासाण पंचभेयत्ति एटले मासना पांच भेदोनुं एकशोने एकतालीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– मासाय पंचसुत्ते, नरकत्ते चंदिउंय रिउमासो ॥ आइच्चोविय अवरो, निवड्ढिउ तह्य पंचमउ ॥ ए०४ ॥ अर्थः– सूत्र जे श्री अरिहंत परमात्मानुं प्रवचन तेने विषे मास पांच कह्याछे. तेमां प्रथम जे नक्षत्रनी गणनाये थाय तेनी रीत कहेछेः– चंद्रमा चारके० संचरतो जेटले काले अभिजीतादिकथी विचरतो उत्तराषाढा नक्षत्र सुधी जाय तेने प्रथम नक्षत्रमास कहिये. बीजो चंदिउंयके० चंद्रथकी थाय ते अंधारा पडवा थकी आरंभीने अजवाली पूर्णिमा सुधी चंद्रमास केहेवाय. त्रीजो रिउके० ऋतु ते लोक रूढिये साठ अहोरात्रीये ऋतु कहिये. तेनो अर्द्धमास एटले त्रीस अहोरात्री प्रमाणनो ते ऋतुमास जाणवो. चोथो, आदित्य जे सूर्य तेहनुं अयन एकशो ने त्र्यासी दिवसनुं होय. तेनो छठो भाग ते आदित्यमास कहिये. पांचमो, अभिवर्द्धित ते तेर चंद्रमासे थाय. बार चंद्रमासे संवत्सर जाणवो; परंतु जेवारेएक वधे तेवारे तेने अभिवर्द्धित मास कहिए.

एनुंज प्रमाण विशेष देखाडे छे. मूलः– अहरत्त सित्तवीसं, तिसत्त सत्तट्ठि भागनरकत्तो, ॥ चंदोअ उगुणतीसं, बसट्ठिभागाय बत्तीसं ॥ ए०५ ॥ अर्थः– सत्तावीस अहोरात्री अने एक अहोरात्रीना शमसठ भाग करिये तेवा एकवीस भागे अधिक एक नक्षत्र मासथाय. अने मासना उंगणत्रीस अहोरात्री तेना उपर एक अहोरात्रीना बासठ भाग करिये, एवा बत्रीस भागे अधिक एक चंद्रमास थाय.

मूलः– उउमासो तीसदिणो, आइच्चोवि तीस होइ अद्धंच ॥ अभिवड्ढि उअमा

सो, चउवीस सएण ठेएण ॥ ए०६ ॥ अर्थः— ऋतुमास ते संपूर्ण त्रीसदिवस प्रमाणनो जाणवो. तथा आदित्यमास ते त्रीस दिवस अने उपर एक दिवसना साठिया त्रीस जाग करिये तेटला प्रमाणनो जाणवो. अने अनिवर्द्धित मास ते चउवीसे अधिक एकशत ठेद एटले जाग. तेज देखाडेठे. ॥ ए०६ ॥

मूलः— जागाणिग वीससयं, तीसाएगाहिया दिणाणंच ॥ एए जह निप्पत्तिं, लहंति समयाउ तह नेयं ॥ ए०७ ॥ अर्थः— ते पूर्वोक्त एकशोने चोवीस जाग एक अहोरात्रना करिये तेवा एकशो एकवीस जाग अने एक दिवसे अधिक त्रीस ए टले एकत्रीस दिवस. अर्थात् एकत्रीस दिवस ने एक अहोरात्रीना एकशो चोवीस जागमांहेला एकशोने एकवीस जाग उपर, एटलुं अनिवर्द्धित मासनुं प्रमाण जाणवुं. एरीते ए पांचमासनी जेम निःष्पत्ति एटले प्राप्ति थायठे ते समय के० सिद्धांत थकी जाणवी. इतिगाथा चतुष्टयार्थ. ॥ ए०७ ॥

अवतरणः— वरिसाण पंचजेयत्ति एटले वर्षना पांच जेदनुं एकशोने बेतालीसमुं द्वार कहेठे. मूलः— संवछराउ पंचउ, चंदेचंदेनिवढ्ढिए चेव ॥ चंदेनिवढ्ढिए तह, बिसठिमासेहिं जुगमाणं ॥ ए०८ ॥ अर्थः— चंद्रादिक संवत्सर पांच कह्याठे. तेमां पूर्वोक्त चंद्रमासे जे नीपन्यो ते चंद्र संवत्सर जाणवो. तेनुं प्रमाण त्रणशें चोपन दिवस अने एक दिवसना बासठ जाग करिये तेवा बार जाग उपर जाणवा. तेमज बीजा चंद्रसंवत्सरनुं पण मान जाणवुं. हवे चंद्रसंवत्सरथी एक अधिक मास थाय एटले तेने अनिवर्द्धित संवत्सर जाणवो. तेनुं प्रमाण त्रणसे त्र्यासी दिवस अने एक दिवसना बासठ जाग करी तेमांना चुमालीश जाग एवो एक अनिवर्द्धितसंवत्सर जाणवो. एकत्रीश अहोरात्र अने एक दिवसना एकशो चोवीस जाग करिये ते मांहेला एकशो एकवीस जाग उपर, ए अनिवर्द्धित मासनुं मान जाणवुं. हवे पूर्वोक्त माने अनिवर्द्धित संवत्सर बे अने चंद्रसंवत्सर त्रण एवा पांच संवत्सरे एक युगमान थायठे. ते बासठ चंद्रमास प्रमाणक ठे. सारांश. एक युगमां त्रण चांद्र संवत्सर. ते चांद्रसंवत्सरना प्रत्येक बारमास मली ठत्रीश चांद्रमास अने बे अनिवर्द्धित संवत्सर. तेमां एक अनिवर्द्धित संवत्सरना तेर चांद्रमास. ए प्रमाणे बीजा वरसना पण तेर मली एकंदर ठवीस मास अने पूर्वोक्त चांद्रमास ठत्रीश मलीने बासठचांद्रमासे एक युगनुं मान थाय. ॥ए०८॥

अवतरणः— लोगसरूवंति एटले लोकना स्वरूपनुं एकशो ने तेतालीशमुं द्वार प्रगट करतो कहेठे. मूलः— माघवईइतलाइ, ईसीपप्नारउवरिमतलंजा ॥

चउदसरज्जूलोगो, तस्साहोविच्छरे सत्त ॥ ए०ए ॥ अर्थः— माघवति जे अलोकने फरसेछे. सर्व अधस्तन जाग तेथकी मांमीने सिद्धसिलानो उपरलो जाग त्यांसुधी चउद राज मान लोकछे. तेने अधस्तन जागे विस्तारपणे जोइये. तेवारे सातराज कांइक उणाछे. परंतु सूत्रकारे अल्पपणाने लीधे तेनी विवक्षा करी नथी॥.ए०ए॥

मूलः— उवरिं पएसहाणी, ता नेया जीवजूतले एगा ॥ तयणुप्पएसवुड्ढी, पंचमकप्पंमि जा पंच ॥ ए१० ॥ अर्थः—त्यांथकी एटले ते अधस्तन प्रदेशथकी आरंजीने जेम जेम अंगुलनो असंख्यातमो जाग उंचा जइये, तेम तेम प्रदेश प्रदेशनी हाणी जाणवी. ते ज्यांसुधी संजूतला पृथ्वी एकराजनीछे त्यांसुधी जाणवी. तयणुके० तेवारपछी वली अंगुलने असंख्यातमे जागे वृद्धि जाणवी. ते ज्यांसुधी पांचमो देवलोक पांचराजनोछे, त्यांसुधी जाणवी. ॥ ए१० ॥

मूलः— पुणरवि पएसहाणी, सिद्धिसिलाएएक्कगा रज्जू ॥ घम्माए लोगमज्झे जोयण असंखकोमीहिं ॥ ए११ ॥ अर्थः— पुनरपिके० वली ते पांचमा ब्रह्म देवलोक थकी प्रदेशनी हाणी थायछे. पहेलानी परे अंगुलने असंख्यातमे जागे प्रदेश घटे ते ज्यां सीम सिद्धसिला एकराजनी आवे त्यां सीम जाणवी. घम्मा के० रत्नप्रजा पहेली पृथ्वी तेहने समजूतले अधोजागे असंख्यात योजननी कोडी उलंघी जाइये त्यां लोकनो मध्यजाग आवे. ॥ ए११ ॥

मूलः— हिट्ठा होसुहमल्लग, तुह्लो उवरिंतु संपुम विआणं॥ अणुसरय मल्लगाणं, लोगो पंचत्थिकायमउ ॥ ए१२ ॥ अर्थः— लोकने अधोजागे अधोमुख सरावलाने आकारे ते उपर वली संपुटने आकारे एटले एक सरावलुं तेना उपर बीजुं उंधुं सरावलुं दइये ते संपुट आकार स्थित के० रह्या जे सरावला तेने अनुसारें आकार थाय. एम मल्लकने आकारे ए लोक जे पंचास्तिकाय मय ते होयछे.॥ए१२॥

मूलः—तिरियं सत्तावन्ना, उड्ढंपंचेव होंति रेहाउ ॥ पाएसु चउसुरज्जू, चउदसरज्जू य तसनाडी ॥ ए१३ ॥ अर्थः— तिरछी सत्तावन रेखा अने उन्नी पांच रेखा थाय. एम करतां प्रवाहे चार खांमूए एकराज अने चउदराज प्रमाण त्रसनाडी थायछे.

मूलः— तिरियं चउरो दोसुं, छद्दो सुंअट्ठ दसयएक्केक्के॥बारस दोसुं सोलस, दोसुं वीसाय चउसुंपि ॥ ए१४ अर्थः—रुचक समजूतलाना जाग थकी उंचो हेठु पंक्तिये उगणत्रीस रेखा थकी उपरे तिरछा चार चार खांडूआ. तेमां चार त्रसनाडी मध्यगत होय. त्यां त्रसनाडी बाहिरे खांमवा नथी. तेवारपछी उपरनी बे पंक्तीनेविषे छ छ खांमूआ थाय. तेमां चार त्रसनामी मध्यगत जाणवा, अने त्रसनाडीनी बाहेर एक एक

एटले बे पमखामां एक एक. पछी एक एक पंक्तिमां वली आठ खांडूआ, त्यां बन्ने पासे बे बे खांडुआ वध्या. तेथी पछी वली दसयके० दश खांडुआ थ या. त्यां बेहुपासे त्रण त्रण वध्या, ए एकेक पंक्तिये वध्या. पछी वली बार थ या. बेउ पंक्तिने विषे चार चार खांडुआ बेउ पासे वध्या. पछी बेउ पंक्तिने विषे शोल शोल, त्यां छ छ वध्या. पछी चार पंक्तिने विषे वीस वीस खांडुआ त्यां चारे पंक्तिने विषे आठ आठ बाहेर वध्या. एम ऊर्ध्वलोकने विषे चउद पंक्तिये यथा संभवे वधता खांडुआ कह्या. ॥ ए१४ ॥

मूलः— पुणरवि सोलस दोसुं, बारस दोसुं पि होइ नायवा ॥ तिसु दस तिसु अट्ठ छाय दोसुं दोसुंपि चत्तारि ॥ ए१५ ॥ अर्थः— वली उपरली बे पंक्तिउने विषे सोल सोल. वली बेउ पंक्तिने विषे बार बार होय ते जाणवा. पछी त्रण पंक्तिने विषे दश दश, वली त्रण पंक्तिने विषे आठ आठ तथा छछदोसुं के० बे पंक्तिनेविषे छ छ. वली बे पंक्तिनेविषे नाडीमां रहेला चार चार खांडुआ जाणवा. एटले ऊर्ध्व लोकनी वात कही. ॥ ए१५ ॥

हवे अधोलोके सात नरक पृथ्वीने विषे ऊर्ध्व अने अधोभागे जे खांडुआ छे ते कहेछे. मूलः— उयरिय लोय मझ, चउरो चउरोय सवहिं नेया ॥ तिग तिग डुग डुग एक्केक्क गोय जा सत्तमी पुढवी ॥ ए१६ ॥ अर्थः— उयरिट के० नीचे रुचकना मध्यभागथकी आरंभी चार चार खांडुआ सर्व साते पृथ्वी त्रसनाडीनी मांहे ऊर्ध्व अधोभागे जाणवा. त्रसनाडीनी बाहेर द्वितीयादिक पृथ्वीने विषे अनुक्रमे त्रण त्रण बे बे अने एक एक खांडुआ जाणवा. ते ज्यां सुधी सातमी पृथ्वी प्राप्त थाय, त्यांसुधी जाणवा. रत्नप्रभाये त्रसनाडीनी बाहेर खांडूआनो अभाव छे. त्यारपछी बीजी शर्कराप्रभाये उपरना तलनो आरंभ करी दक्षिण वाम भागनेविषे प्रति पंक्ति तीर्थक एवा त्रण त्रण खांडुआ ऊर्ध्व अधोभागे करी जाणवा. ते सातमी पृथ्वीना अधोभागसुधी जाणवा.

त्रीजी वालुकाप्रभाना ऊर्ध्वभागनो आरंभ करी बंने बाजुने विषे खांडुआ त्रण त्रणनी आगल वली त्रण त्रण खांडुआ जाणवा. ते सातमी पृथ्वी पर्यंत. पछी पंकप्रभाना ऊर्ध्वभागनो आरंभ करी बंने बाजुने विषे पूर्व खांडुआनी आगल बे बे खांडुआ जाणवा. ते सातमी पृथ्वी पर्यंत. पछी धूम प्रभाना ऊर्ध्वभागनो आरंभ करी बंने बाजुने विषे बबे खांडुआ जाणवा ते सातमी पृथ्वी पर्यंत. पछी तमःप्रभानो आरंभ करी बंने बाजुने विषे एक एक खांडुओ जाणवो ते सा

तमी पृथ्वी पर्यंत. पढी सप्तम पृथ्वीने विषे पूर्वे कहेला खांडुआनी आगल दरेक पंक्तिने विषे एक एक खांडुउ थाय ढे. एम उपर थकी नीचे आवतां जे खांडुआ थया ते कह्या. ए प्रमाणे अधोलोकने विषे ऊर्ध्व अने अधोजागे खांडुआ कह्या.

हवे नीचे थकी उपर जातां जेम वृद्धि थाय तेम देखाडेढे. मूलः— अडवीसा ढवीसा, चउवीसा, वीस सोल दस चउरो ॥ सत्तासुं पुढवीसुं, तिरियं खंडुयगपरिमाणं ॥ ए१७ ॥ अर्थः— अठावीस, ढवीस, चोवीस, वीस, सोल, दश, ने चार ए सात पृथवीने विषे अनुक्रमे तिरढो खांडुआनो परिमाण कह्यो.॥ए१७॥

हवे अर्द्ध ऊर्ध्व ए बन्ने लोकना खांडुआनो मान कहेढे. मूलः— पंचसयबारसुत्तर, हेठा तिसयाउ चउर अब्भहिया ॥ अह उड्ढं अठ्ठसया, सोलहिया खंडुआ सव्वे ॥ ए१८ ॥ अर्थः— पांचशेंने बार खांडुआ हेठाके० नीचे अधोलोकनेविषे जाणवा. अने त्रणशें ने चार खांडुआ उंचा ऊर्ध्व लोकने विषे जाणवा. ए अर्द्ध ने ऊर्ध्व बेना मली आठशें सोल खांडुआ थाय. ॥ ए१८ ॥

हवे चउदराज जेम थाय तेम देखाडेढे. मूलः— सत्तेवय रज्जूउ, एगा पंचेव लोगविढारो ॥ अहलोय तिरियमज्झा, एगा रज्जू अलोगंते ॥ ए१ए ॥ अर्थः— सातराज, एकराज अने पांचराज लोकनो विस्तार जाणवो. तेमां अनुक्रमे अधोलोके सातराज, तिरढे लोके एकराज, मध्यलोके पांचराज अने तेवारपढी एकराज अलोकना अंतसुधी होय. ॥ ए१ए ॥

हवे त्रणप्रकारनो राज देखाडवाने अर्थे कहेढे. मूलः— बत्तीसं रज्जूउ, हिठा रुयगस्स होंति नायव्वा ॥ एगोणवीस मुवरिं, इगुवन्ना सव्वपिंमेणं ॥ए२०॥ अर्थः— इहां त्रण प्रकारना रज्जुढे. पेहेला सुचीरज्जु. बीजा प्रतररज्जु अने त्रीजा घनरज्जु. तेमां जे आयामे चार खांडुआ अने बाहुले एक खांडुउ एम सुचीने आकारे थाय. ते सुचीरज्जु जाणवा. हवे सुचीरज्जूने सुचीरज्जुगुणो करिये तेवारे सोल खांडुआ प्रमाण प्रतररज्जु थाय. एज प्रतररज्जूने चार गुणो करीए तेवारे सोलखांडु आ, तेने चारे गुणतां चोसठ थाय. ते घनरज्जु जाणवो. जे उपरा उपर चार प्रतर थाय ते घनरज्जु जाणवो.

हवे पांचशें बार खांडुआ मान अधोलोके खांडुआनी राशीढे तेने प्रतररज्जु आणवाने अर्थे सोलेकरी जाग आपिये तेवारे बत्रीश प्रतररज्जुथाय. ते रुचक प्रदेश थकी नीचे जाणवा. तेमज ऊर्ध्वलोकना त्रणशें ने चार खांडुआ तेने शोले जाग आपिये तेवारे उर्ध्वलोके उगणीश प्रतररज्जु थाय. ते रुचक प्रदेश थकी उंचा जाणवा. अध उर्द्ध बे लोकने विषे सर्वे मली एकावन्न थाय. ॥ ए२० ॥

हवे त्रण प्रकारना रज्जूनी संख्या देखाडेछे.मू
इगवन्ना॥सुइरज्जु पणसहस्सा,चत्ता रिसया य
स घनरज्जु थाय,एकावन प्रतररज्जु थाय. पांच ह

मूलः— सुइरज्जू चउहिं खंमगेहिं सोलस
एरज्जू होइ विन्नेउ ॥ ए२२ ॥ अर्थः— सुचिरज्
ररज्जु थाय. अने चोसठ खांडुएकरी घनरज्जु थ

घनरज्जु कहेवाने अर्थे प्रकार देखाडेछे मूळ
ज्जु विहिअ विवरीयं ॥ नाडीजुआ ति रज्जू, उ
त्रसनाडीनी दक्षिण पासे बे खंमछे. ब्रह्मलोक
ए बेउ लेई विपरीतपणे नीचेनो नाग उपरकर ... ... वामक०
माबे पासे संधिज्जके० सांधिये पछी ते बंने खंम राजने विस्तारे त्रसनाडी सहित करिये. तेवारे सर्व त्रणराज विस्तारे थाय; अने उंचपणे तथा नीचपणे एकठा कर्या थका सातराज थाय. ॥ ए२३ ॥

मूलः— हेठाउ वामखंमं, दाहिणपासंमि ठवसु विवरीयं ॥ उवरिमतिरज्जुखंमं, वामे पासंमि संधेज्जा ॥ ए२४ ॥ अर्थः— अधोलोके त्रसनाडी थकी माबी बाजुये जे खंमछे ते लेइने विपरीतपणे जमणी बाजु जोडीये, अने उपरलो त्रण राजनो जे खंम ते माबीपासे जोडीये. इहां ए नावनाजे लोक ऊर्ध्व अध मली चउद राज प्रमाणछे. तेमां नीचे विस्तारे देशे उणा सातराज प्रमाणछे. अने तिरछा लोकने मध्य एक राज प्रमाण छे. ब्रह्मलोकने मध्य पांच राज प्रमाणछे, वली उपर लोकांते एकराज प्रमाणछे. अने बीजे ठेकाणे विस्तारनो नियम नथी. एवा लोकनो घन करवाने अर्थे प्रथम अर्द्ध संवर्त्ते. ते आवीरीते के, सर्व एकराज विस्तीर्ण त्रसनाडीछे, तेनी जमणी बाजु ब्रह्मलोकना मध्यथकी उपरनो अने नीचेनो खंम लेइ त्रसनाडीनी माबी पासे विपरीतपणे जोडिये. एम करतां ऊर्ध्वलोक त्रणराज विस्तारेथाय अने उंचपणे सातराज माठेरा थाय.

हवे अधोलोके त्रसनाडीनी माबी बाजुए जे खंम छे ते लेइ विपरीतपणे जमणी बाजुए जोडिये. एम करवाथी अधस्तन लोकनुं अर्द्ध देशोन चारराज माठेरा विस्तारे थाय. अने उंचाइमां सातराज जाजेरो थाय, पछी उपरनो अर्द्ध, बुद्धिये लेइ नीचे माबी बाजुए जोडिये. एम करवाथी विस्तारे कांइक सातराज माठेरा थाय छे. अने उंचपणे क्यांएक सातराज जाजेरा थाय तथा. क्यांएक सातराज

तमी पृथ्वी पर्यंत. ज्यां काफेरा सातराज छे त्यां सातराज उपरना लेइ ज्यां छेडा पंक्तिने विषे ए. एम करतां सातराज घन थयो. ए व्यवहारनयना मते स्थूल ह थया ते थकी जो लगारेक क्यांक उणाछे तोपण सातराज कहिये. ॥९१४॥

हवे ए घनपणे करेला लोकनी रज्जु संख्या कहेछे. मूलः— तिन्निसया तेयाला, रज्जूणं होंति सव्वलोगम्मि ॥ चउरंसो होइ जयं, सत्तगहघणेणिमासंखा ॥ ९१५ ॥ अर्थः— सर्व चउदराज लोकनो घन करिये तेवारे त्रणसे तेतालीस राज थायछे. ते आवीरीते के, घन कर्याथी समस्त समचतुरस्र थयो. संवर्त्तित लोकने आयामे विष्कंभे बाहुल्य सर्व सात राज थाय. ते सातने सातवार गुणाकार करिये ते आ वीरीते. सातने साते गुणतां उंगणपचाश थाय तेवा. सात उंगणपचाश आंक डा मांमीने एकंदर सरवालो करतां त्रणशे ने तेतालीस पूर्वोक्त रज्जु थायछे. ए सर्व व्यवहार नय आश्री कह्यो छे. अने निश्चय नयथकी तो बशेंने उंगणचालीस घनरज्जू संभवेछे. तेज कहेछे. ॥ ९१५ ॥

मूलः— उवरिछ अहछ छप्पन्न पयर पत्तरकदिछिखंमाणं ॥ वग्गं कुणहि पिहुपिहु, संजोगे तिजयगणियपयं ॥ ९१६ ॥ अर्थः— उंचपणे नीचेथकी गणिये अथवा नीचे थकी उंचपणा सुधी छप्पन्न पंक्तिनी संख्याछे अने तिरियं चउरो इत्यादि गा थाने विषे तिरछा खांकुआ कह्या ते प्रत्यक्षे दीठा एवा खंभनो वर्ग करिये. वली तद्गुणो वर्ग करिये. चार चार गुणा इत्यादिक सर्व पंक्तिनो वर्ग जूदोजूदो करी पछी एकठा करिये तेवारे त्रणे लोकनो गणित पद (१५२९६) एटला खांकुआ थाय. एने चोसठने भागे दइये तेवारे बशेने उंगणचालीस घनरज्जु थाय.॥९१६॥

एहिज अर्थ गाथाये करी देखाडेछे. मूलः— सहसेगारसडुसया, बत्तीसहिया अहंमि खंमाणं ॥ समदीहपिहुवेहाण घणरज्जू चउरंसमाणेणं ॥ ९१७ ॥ अर्थ अग्यार हजार बशे ने बत्रीस एटला अधिका खांकुआ अधोलोके छे. पण ते एहेवा छे के सरखुं जेमनुं लांबपणुं पहोलपणुं ने जाडपणुं छे. घनरज्जू एथकी थाय. चतुरस्र मान होय. ॥९१७ ॥

मूलः— चत्तारि सहस्साइं, चउसट्ठि जुआइं उढलोगंमि ॥ पनरहसहस्स डुसयं, छन्नउय जावमुन्नणंसि ॥ ९१८ ॥ अर्थः— चार हजार ने चोसठ सहित एटला खांकुआ ऊर्ध्वलोकने विषे छे. बेउमली पन्नर हजार बशे ने छन्नु थाय. ॥९१८॥

मूलः— चउसहिए विहत्तं, इगुवाला दोसया हविज्जेवं ॥ लोएघणरज्जूणं, तिरियं चउरोत्ति गाहछो ॥ ९१९ ॥ अर्थः— पूर्वोक्त संख्याने चोसठना आंक साथे वि

हस्तके० वेंचिये एटले नाग आपिये तेवारे बशे ने उंगणचालीस थाय एम. लो कनेविषे एटला घनरज्जु थाय. एटले तिरियचउरो ए गाथामां जे खांडुआ कह्या छे. तेहनो वर्ग करिये. तेवारे ए गाथार्थ जाणवो. ॥ ए२ए ॥

रुचकप्रदेश थकी जे देवलोक जेटलो दूरछे ते देखाडेछे. मूलः—छसु खंमगेसु पढ्ढ गं, चउसु डुगं दस सुहुंति चत्तारि॥चउसु चउक्कं गेविज्ज णुत्तराइं चउक्कंमि ॥ए३०॥ अर्थः— रुचकथकी उंचे मुखे छ खांमूए दोढराज थाय; त्यां सौधर्म ने ईशान ए बे देवलोकछे. ते थकी उपर चार खांमूए एकराज प्रमाणे खेत्र, तेमां वली सनतकु मार ने माहेंद्र ए बे देवलोकछे. आगल दश खांडुये अढीराजमां ब्रह्म. लांतक, शुक्र, ने सहस्रार लक्षण चार देवलोक छे. तेवार पछी वली चारखांडुए आनत, प्राणत, आरण ने अच्युत ए चार देव लोकछे, ते पछी वली नवग्रैव्यक पंचानुत्तर विमान सिद्ध सिद्धा ए सर्व चार खांडुए छे. ए सातराजमां सौधर्मादिक देवलोक कह्या. ॥ए३०॥

तिरछो राजमान देखाडतो लोक प्रमाण कहेछे. मूलः— सयंभुपुरिमंताउ, अ परंतो जाव रज्जुमाईउ ॥ एएण रज्जुमाणेण लोगो चउदसरज्जूउ॥ए३१॥ अर्थः—स्व यंभुरमण समुद्रनी पूर्वदिशिथकी मांमीने अवरांतके० ज्यां सुधी पश्चिम दिशिनो प्रांत छे त्यांसुधी एक राजनो मान जाणवो. ए राजने प्रमाणे लोक चउदराज प्रमाणछे. इतिगाथा त्रयोविंशतिकार्थ. ॥ ए३१ ॥

अवतरणः— सन्नाउतिन्निति एटले त्रण संज्ञानुं एकशोने चुमालीसमुं द्वार कहेछे. मूलः—सन्नाउतिन्नि पढमे छ दीहकालोवएसियानाम ॥ तह हेउवाय दिठी, वाउ वएसा तदियराउ ॥ए३२॥ अर्थः— संज्ञा त्रण कहिछे. त्यां जे सम्यक्प्रका रे ज्ञानपणु ते संज्ञा कहिये. तेमां पढमाके० पहेली ते इहां दीर्घके० अतीत अ नागत वस्तु विषयिक उपदेश कहेवोछे जेने विषे, ते दीर्घकालोपदेशिका एवे नामे संज्ञा जाणवी. तहके० तेमज वली बीजी हेतुके० कारण निमित्त तेहनो वदन के० कहेवो ते विषयिक उपदेशनी प्ररूपणा करवीछे जेने विषे ते हेतुवादोपदेशि का नामे संज्ञा जाणवी. त्रीजी ज्यां दृष्टी शब्दे सम्यक्त्वादिकनो वाद कहेवो ते विषयिक ज्यां उपदेशछे ते दृष्टिवादोपदेशिकी नामे संज्ञा जाणवी. ते तदियराके० तेथकी इतर जाणवी. एनुं स्वरूप केहेनार छतो सूत्रकार गाथा कहेछे. ॥ए३२॥

मूलः—एयं करेमि एयं, कयंमए इम महं करिस्सामि॥ सोदीहकालसन्नि, जो इय तिकालसन्निधरो ॥ ए३३ ॥ अर्थः— आ अमुक काम हुं करुंछुं, आ अमुक काम मे कर्युं अने ए अमुक हुं करीश. एरीते जे वर्त्तमान, भूत अने भविष्य एवा त्रण

कालनेविषे रेहेनारी वस्तुविषयक संज्ञाने धारण करनारो ते दीर्घकालिकी संज्ञाये करी संज्ञी. ए संज्ञाना धरनार ते गर्भज तिर्यंच अथवा मनुष्य, देव, नारकी ते मनःप र्याप्तियुक्त जाणवा. तेनेज त्रिकाल विषयिक विचारादिकनो संभव छे. एमध्ये घणुं करीने सर्व अर्थ स्पष्टरूप प्राप्त थायछे. तेज कहेछे. जेम चक्षुवालो पुरुष दीपकना प्रकाशेकरी स्पष्ट अर्थप्राप्ति पामेछे तेम आ पण मनोपलब्धिसंपन्न थइने मनोरूप द्रव्यने आधारे उत्पन्न थएला विचारे करी एटले पूर्वपरानुसंधाने करी यथास्थित स्पष्ट अर्थने पामेछे. अने जेने तेवीरीतीना त्रिकाल विषयिक वि चार नथी ते असंज्ञी. एवुं सहज सिद्ध थायछे. ते असंज्ञी समूर्छिम, पंचेंद्रिय अने विकलेंद्रियादिक जाणवा. ते अति स्वल्पमांस्वल्प मनोपलब्धी संपन्नत्वेकरी अ स्पष्ट अर्थ जाणेछे. तेज कहेछे. संज्ञी पंचेंद्रिय करतां समूर्छिम पंचेंद्रिय अस्पष्ट अर्थ जाणेछे, तेना करतां चतुरिंद्रिय अस्पष्ट जाणेछे, तेना करतां तेंद्रिय अस्पष्ट जा णेछे, तेना करतां बेंद्रिय अस्पष्ट जाणेछे अने तेना करतां एकेंद्रिय अस्पष्ट जाणे छे. तेने घणुकरी मनोद्रव्यनो असंभवछे. माटे केवल अव्यक्तज कोइ अत्यंत सूक्ष्म मन जाणवुं. जेनायोगे करी आहारादि संज्ञा अव्यक्तरूप उत्पन्न थायछे. ॥ ए३३ ॥

मूलः-जेडण संचिंतेडं, इठाणिठेसु विसयवत्थूसु ॥ वट्टंतिनियत्तंतिय, सदेहपरि पालणाहेडं ॥ ए३४ ॥ अर्थः- जे कोइ वली चिंतवीने इष्टानिष्ट जे कांई छाया आतप आहारादिक विषय वस्तु तेनेविषे प्रवर्त्ते अने अनिष्टवस्तु थकी निवर्त्ते. ते सदेहके० स्वदेह एटले पोताना शरीरनुं पालण पोषण करवाने हेतुके० कारणे इष्टानिष्टने विषे प्रवर्त्तन निवर्त्तन करे. ॥ ए३४ ॥

मूलः- पाएण संपइच्चिअ, कालंमि नयाइ दीहकालंमि ॥ ते हेउवायसन्नी, निच्चेठा हुंतिहु असन्नी ॥ ए३५ ॥ अर्थः- प्राये सांप्रतके० वर्त्तमान काल विषयि क ज्ञानछे. इहां प्रायना ग्रहणथकी कोइक अतीत अनागतना जाण पण होय. परंतु दीर्घकाल विषयिक जाणे नही; ते बेंद्रियादिक हेतुवादोपदेशिकी संज्ञाये सं ज्ञी होय अने निचेष्टाके० जेकोइ उष्ण आतपादिकने विषे तेनो नाश थवा सारुं छायादिकनी प्रवृत्ति निवृत्ति रहित एवा पृथ्व्यादिक जीवोछे ते असंज्ञी जाणवा.

इहां ए भावजे बुद्धिपूर्वक पोताना शरीरनुं पालण करवाने अर्थे जे इष्ट अ निष्टथकी प्रवृत्ति निवृत्ति जाणे ते हेतुवादोपदेशिकीसंज्ञाये संज्ञी. ते बे इंद्रिया दिकज जाणवा. तेमज ए इष्टानिष्ट प्रवृत्ति निवृत्तिनुं चिंतवबुं ते मनना व्या पार विना संभवतु नथी. मने करी पर्यालोचन ते संज्ञाछे. ते बेइंद्रियादिकने प

ण होय तेने पण प्रतिनियत इष्टानिष्ट विषय प्रवृत्ति निवृत्ति एनुं दर्शन छे ते कारण माटे बेइंद्रियादिक जीवोने हेतुवादोपदेशिकी संज्ञाये संज्ञीपणु प्राप्त थायछे. वली आहारादिक दश संज्ञा पृथिव्यादिकने पण आगल कहेशे. ते श्रीपन्नवणामां कहिछे. पण ते अत्यंत अव्यक्तरूप मोहोदयथकी होयछे; अने वली अशोन्नन छे, तेनी अपेक्षाये त्यां पृथिव्यादिकने संज्ञीपणुं कहेवुं नही. लोकमां पण कोइक पासे थोडुं एक कार्षापण एटले सुवर्ण मात्रना अस्तित्वे करी ते धनवंत कहेवाय नही.

हवे दृष्टिवादोपदेशसंज्ञाये संज्ञी अने असंज्ञी ते कहेछे मूलः– सम्मदिट्ठी सन्नी संमे नाणे खउवसमिएय ॥ असंन्निमिछत्तम्मि, दिठीवाउवएसेण ॥ ए३६ ॥ अर्थः– जे क्षायोपशमिकज्ञानेकरी वर्त्तमान सम्यक्ज्ञानपणाथकी सम्यक्दृष्टि जाणवो. अने सम्यकज्ञानसंज्ञारहितपणा थकी मिथ्यादृष्टिअसंज्ञी जाणवो. यद्यपि मिथ्यादृष्टि पण घटादिक वस्तुने घटादिकपणेज जाणे छे अने केहेवामांपण घटने घटज कहेछे; तथापि तेने निश्चे नय अज्ञानी कहिये. केमके ते जगवंत नाषित यथावस्थित वस्तुनो अंगीकार करता नथी, इहां शिष्यपूछेछे के जो विशिष्टसंज्ञाये सहित सम्यक्दृष्टिने संज्ञी कहिये तो क्षायोपशमिक ज्ञान सहित केम कह्यो? क्षायिकज्ञाने तो विशिष्टतर संज्ञा होय छे तो ते केम न लीधो?

इहां उत्तर कहेछे के जे अतीत अर्थनुं स्मरण करवुं अने अनागतनी चिंतवना करवी तेने संज्ञा कहिये. अने श्रीकेवलीजगवानतो सदासर्वदा सर्वनाव जाणे ज छे. तो ते केवलीने कांइ अतीत अर्थनुं स्मरण अने अनागतनुं चिंतन नथी. अने एनेतो स्मरण चिंतनछे. तेमाटे क्षायोपशमिकज्ञानी तेज सम्यक्दृष्टिसंज्ञी कह्यो.

वली शिष्य पुछेछे के प्रथम हेतुवादोपदेशे करी संज्ञी कहेवाने योग्यछे. कारण हेतुवादोपदेशे करी अल्पमनोपलब्धिसंपन्न एवा जे द्वींद्रियादिक तेने अविशुद्धतरपणुं छे माटे संज्ञीपणाए करी अंगीकार छे. पछी दीर्घकालोपदेशे करी हेतुवादोपदेशसंज्ञानी अपेक्षाए दीर्घकालोपदेशसंज्ञाना मनपर्याप्तियुक्तपणाथकी अतिशुद्धपणु छे. माटे पछी कहेवी. तो शावास्ते उत्क्रम उपन्यास करेछे?

तेनो उत्तर कहेछे. अहीयां समस्त सूत्रोनेविषे कोइ ठेकाणे पण संज्ञी अथवा असंज्ञी ग्रहण करेछे त्यां प्राये सर्व ठेकाणे दीर्घकालोपदेशे करी ग्रहण करेछे; पण हेतुवादोपदेशे करी अने दृष्टिवादोपदेशे करीने ग्रहण करता नथी. तेनी खातरी थवा सारुं प्रथम दीर्घकालोपदेशेकरी संज्ञीनुं ग्रहण कर्युं. उक्तंच सन्निति असंनित्तिय सव्वे सुयकालिउव एसेण; पायंसं ववहारो कीरइतेणाइउ सकउ. पछी

तेना अनंतरे अप्रधानत्वे करी हेतूपदेशे करी असंज्ञीनुं ग्रहण कर्युं ते पछी सर्व प्रधानत्वथी छेवट दृष्टिवादोपदेशसंज्ञानुं ग्रहण छे. इति गाथापंचकार्थ ॥९३६॥

अवतरणः– सन्नाउ चउरोत्ति एटले चार प्रकारनी संज्ञानुं एकशो ने पिस्तालीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– आहार भय परिग्गह, मेहुण रूवाउ होंति चत्तारि ॥ सत्ताणं सण्हाउ, आसंसारं समग्गाणं ॥ ९३७ ॥ अर्थः– एक क्षायोपशमिकी अने बीजी उदयिकीना भेदे करी बे प्रकारे संज्ञा जाणवी. तेमां क्षायोपशमिकी अनंतर कही आव्या. अने बीजी उदयिकी, सामान्यपणे चार प्रकारे छे, ते आहारादिक जाणवी. तेमां प्रथम क्षुधा वेदनीयना उदयथकी तथाविध आहारादिकनुं लेवुं ते प्रथम आहारसंज्ञा जाणवी. ए आहारसंज्ञा उपजवाना श्रीठाणांगमां चार कारण कह्यांछे. यदुक्तं चउहिंठाणेहिं आहार संन्ना समुपज्जइ तं जहा उमकोठयाए खुहा वेयणीयस्सकम्मस्सउदएणं मइए तदठोवउगेणं. प्रथम उमके० खाली कोठे आहारादिकनी कथा सांभलीने आहार उपर इच्छा थाय, बीजी क्षुधावेदनीय कर्मने उदये थाय, त्रीजी वली आहारनी वातो सांभलवानी मति उपजे, ते मतिना योगेकरी निरंतर पणे आहारनी चिंता थाय, अने चोथी भय मोहनीयना उदय थकी दृष्टि वदन रोमांचादिकनो विकार ते भय संज्ञा. तेनां उपजवानां चार स्थानक छे. हीणसत्तयाए, भयवेयणीयस्सकम्मस्स उदएणं, मईए तवठोवउगेणं, अर्थः– एक हीनसत्वे करी एटले बलना अभावे, बीजुं भयसूचक कर्मना उदये करी, त्रीजुं भयनी वात सांभलवी अने भयंकर दर्शनादिकथी उत्पन्न थएली बुद्धिए करी अने चोथुं आ लोकनेविषे भय लक्षणजे अर्थ तेना पर्यालोचने करी. चउहिंठाणेहिं परिग्गहणा समुप्पज्जइ, अविमुत्तयाए लोभवेयणी० मइए० तदिठो.

लोभना उदयथकी संसारनेविषे आसक्त प्राणी सचित्त अचित्तादिक वस्तुनुं ग्रहण करे इत्यादिक लोभसंज्ञा जाणवी. आलावानो अर्थ सुगम छे. बीजी मैथुनसंज्ञा ते पुरुषवेदना उदयथकी मैथुनने अर्थे स्त्रीने देखवाने प्रसन्नवदन वेपथु प्रमुख सात्विक भावगुणोनुं करवुं. तेनां चार कारण छे. चियमंससोणियाए १ मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं २ मइए ३ तदिठो० ४ अर्थः– उपचित एटले पुष्टपणे थयांछे एक मांस अने बीजो शोणितके० लोही ते जेना शरीरने विषे; तेना योगे सुरत कथादिक सांभली मैथुननुं चिंतन करे शेष पूर्ववत् जाणवां. एहवुं छे स्वरूप जेनुं ते चार संज्ञा समस्त एकेंद्रियादिक प्राणीने आ संसारमां ज्यां सुधी रहे त्यांसुधी थाय. एकेंद्रियादिकने ए प्रत्यक्ष देखायछे. उदाहरण, जेम वनस्प

ति प्रमुख प्रत्यक्ष प्राणी आहारने योगे नवपल्लव थायछे, नही तो सुकाइ जायछे; ते आहारसंज्ञा. वली वेलो प्रमुख हस्तादिकने स्पर्शे पोताना अवयव संकोचेछे ते नयसंज्ञा. अने बील पलाशादिक ज्यां धन होय त्यां जड मूके ते परिग्रह संज्ञा. वली कुरुबक, अशोक, अने तिलकादिकना वृक्षो ते स्त्रीना आलिंगने, पगना प्रहारे, कटाक्षे अने विक्षेपादिके फूलेछे. ए मैथुनसंज्ञा जाणवी. ॥ ए३७ ॥

अवतरण.– सन्नाउदसत्ति एटले दशसंज्ञानुं एकशो ने छेतालीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– आहार नय परिग्गह, मेहुण तह कोहमाण मायाय ॥ लोनोह लोग सन्ना, दसन्नेया सव्व जीवाणं ॥ ए३८ ॥ अर्थः– जेणेकरी जाणिये ओल खियें के आ जीवछे ते संज्ञा कहिये. ते वेदनीय तथा मोहनीय आश्रित, ज्ञानावरण दर्शनावरण क्षायोपशम आश्रित विचित्र आहारादिकनी प्राप्तिनी क्रिया ते दश प्रकारे छे. तेमां चार तो आहारादिक पूर्वेंजे कहि आव्या तेज जाणवी. पांचमी क्रोधेकरी मुख नयन होवनुं स्फुरवुं इत्यादिक चेष्टाकरे ते क्रोधसंज्ञा जाणवी. छठी माने करी जे अहंकारनुं उछकपणुं ते मानसंज्ञा जाणवी. सातमी मायाये करी जुठुं बोलवुं ते मायासंज्ञा जाणवी. आठमी लोनेकरी सचित्तादिक द्रव्यनी प्रार्थना करवी ते लोनसंज्ञा जाणवी. नवमी मतिज्ञानना आवरणरूप कर्म तेना क्षयोपशमथकी शब्दार्थगोचर सामान्यावबोधक्रिया ते उघसंज्ञा जाणवी अने दशमी एमज विशेषावबोध क्रिया ते लोकसंज्ञा जाणवी.

ए अनिप्राय गणांगनी टीकानो छे. अने आचारांगनी टीकामांहे एम कह्युं छे के जे, अव्यक्त उपयोगे वेलिनी परे विस्तरवुं, उंचे चडवुं, ते उघसंज्ञा जाणवी. अने लोकसंज्ञा ते जे पोतानी मतिये योग्य विकल्पनारूप लौकिकाचरित. जेम अनपत्यने गति न होय. श्वान ते यक्ष. ब्राह्मण ते देवता. काग ते पितामह, मोरने पंखवाहे गर्नसंनवे इत्यादिक. ए दशसंज्ञा सर्व संसारी जीवोने थाय. बीजा एम कहे छे. ज्ञानोपयोग ते उघसंज्ञा अने दर्शनोपयोग ते लोकसंज्ञा. आ दश संज्ञा जे छे ते आ अमुकजीव छे एवा ज्ञाननुं कारणरूप छे. एवी आ दश संज्ञा सर्व संसारीजीवोने जाणवी. अने सुख प्रतिपत्तिने अर्थे आ दश संज्ञा स्पष्टरूप जाणवी. पंचेंद्रियोने अनधिकृत्ये करी व्याख्यान करेलीछे अने आ दश संज्ञा एकेंद्रियादिकने तो अव्यक्तरूप जाणवी. इति गाथार्थ ॥ ए३८ ॥

अवतरणः– सन्नाउपन्नरसत्ति एटले पन्नर संज्ञानुं एकशोने सडतालीशमुं द्वार कहेछे. मूलः– आहारनय परिग्गह, मेहुणसुह डुक्क मोहवितिगंछा ॥ तह

कोहमाणमाया, लोहे लोगेय धम्मोघे ॥ ए३ए ॥ अर्थः— ए पन्नर संज्ञामां दश संज्ञा तो पूर्वे कहीछे तेज जाणवी. अने अग्यारमी शातानुं जे अनुनववुं ते सुखसंज्ञा. बारमी अशातानुं जे वेदवुं ते डुःखसंज्ञा, तेरमी मोहसंज्ञा ते मिथ्यादर्शन रूप जाणवी. चउदमी विचिकित्सासंज्ञा ते चित्त अविप्लुत लक्षण जाणवी. पन्नरमी धर्मसंज्ञा ते क्षमादिकनुं सेवन करवुं. ए संज्ञाउ पण संसारी जीवोने. जाणवी, तथा श्री आचारांगने विषे वली विप्रलाप वैमनस्यरूप शोकसंज्ञा सोलमी पण कहिछे. इतिगाथार्थ. ॥ ए३ए ॥

अवतरणः— सत्तसठिलरकण नेय विसुद्ध सम्मत्तं एटले सडसठ लक्षण नेदेकरी विशुद्ध सम्यक्त्वनुं एकशो ने अडतालीसमुं द्वार कहे छे. मूलः— चउ सद्दहणतिलिंगं, दसविणय तिसुद्धि पंचगयदोसु ॥ अठपनावण नूसण, लरकण पंचविह संजुत्तं ॥ ए४० ॥ ठविह जयणा गारं, ठनावणा नावियं च ठठाणं ॥ इय सत्तसठिलरकण, नेयविशुद्धंच सम्मत्तं ॥ए४१॥ अर्थः— चार संदहणा, त्रण लिंग, दश प्रकारनो विनय, त्रणशुद्धि, पांचदूषण, आठ प्रनावक, पांचनूषण अने पांच लक्षण तेणेकरी संयुक्त करिये, ॥ए४०॥ वली ठ प्रकारनी जयणा, ठ आगार, ठ नावनाउ अने ठ स्थानक ए सडसठ लक्षण नेदे करी विशुद्ध सम्यक्त्व जाणवुं.

हवे अनुक्रमे ए समस्त द्वार वखाणनार ठतो प्रथम चार सद्दहणानुं द्वार वखाणे छे. मूलः— परमठ संथवोवा, सुदिठ परमठ सेवणावावि ॥ वावन्न कुदंसणव, ज्जणाय सम्मत्त सद्दहणा ॥ ए४२ ॥ अर्थः— परमके० तात्विक जे जीवादिक अर्थ नेदने विषे संसव के० जाणवुं. एटले त्यां अन्यास करे, ए प्रथम श्रद्धान जाणवुं. तेमज बीजुं सुदृष्ठ के० रुडीरीते जेणे जीवादिक परमार्थ दीठाछे एवा जे आचार्यादिक गुरु तेनुं सेववुं पर्युपासनानुं करवुं, ए बीजुं श्रद्धान जाणवुं. त्रीजुं व्यापन्न के० विनिष्ट थयुं छे सम्यक्त्व दर्शन जेनुं एवा नन्हव अने शाक्यादिक कुदर्शनी तेनुं वर्जवुं. ए त्रीजुं श्रद्धान जाणवुं. चोथुं सम्यक् शब्दे प्रशंसाने अर्थे अने अविरोधने अर्थे सम्यक् शब्द जीव तेनो नाव ते सम्यक्त्व जाणवुं. अथवा प्रशस्त मोक्षने अविरोधि एवो जीवनो जे स्वनावविशेष छे एवा सम्यक्त्वनुं सद्दहवुं अस्तिपणे पडिवजवुं ते चोथुं श्रद्धान जाणवुं. ए तत्वबुद्धिए सर्दहे तेने सम्यक्त्व होय. अन्यथा अंगारमर्दकाचार्यने पण बाह्याकारे तो हतुं पण ए चार श्रद्धान हता नही; तेथी ते अर्थसाधक न थयो. ॥ ए४२ ॥

हवे त्रण लिंग वखाणेछे. मूलः— सुस्सूसधम्मराउ, गुरुदेवाणंजहासमाहीए ॥

वेयावच्चेनियमे. सम्मदिट्ठिस्सलिंगाइं ॥ ए४३॥ अर्थः– जेथकी ज्ञलो बोध उत्पन्न थाय, एवां सफलतानां कारणभूत धर्म शास्त्र सांजलवानी वांछा थाय. ते जेम कोइ चातुर्यादिक गुणोत्तर तरुणनरने, किन्नर गायनना श्रवणनी जेवी प्रीति होय छे तेथकी पण सांजलवानी अधिक प्रीति होय. तरुणो सुहीवियट्टो इत्यादिक गाथोक्तथी अधिक शुश्रुषा करे ते प्रथम लिंग जाणवो. तथा बीजो कर्मादिक दोष थकी जो चारित्र धर्म करी शकतो नथी, तोपण अटवीथकी आवेलो महा दरिद्री अत्यंत जूख्यो एवो जे ब्राह्मण, तेने घेवर जमवा उपर जेवो अजिलाष थाय तेथकी पण अधिक धर्म उपर तेने राग थाय; ते बीजो धर्मराग नामा लिंग जाणवो. हवे त्रीजो लिंग, ते गुरु धर्मोपदेशना देवावाला जे आचार्यादिक अने देव आराध्यतम श्रीअरिहंत देव तेने जेवीरीते समाधिथाय तेवीरीते विश्रामणादिक पूजाप्रमुख करवानो जे नियम; एनो अजिग्रह ग्रहण करे. ए त्रीजो लिंग जाणवो.

इहां सूत्रमांहे "गुरुदेवाणं" एवा पाठथी प्रथम गुरुनुं ग्रहण कर्युं छे. ते गुरुनुं पूज्यपणुं जणाववाने अर्थे छे. कारण के श्रीअरिहंतदेव पण गुरुना उपदेश थकीज जणायछे. पण ते विना जणाय नही. माटे गाथामां प्रथम गुरु कह्या. ए त्रण सम्यक्तधारीनां लिंगछे. एणेकरी सम्यक्दृष्टि ओलखायछे. ॥ ए४३ ॥

हवे दश प्रकारनो विनय वखाणेछे. मूलः–अरिहंतसिद्धचेइय, सुएय धम्मेयसाहुवग्गेय ॥ आयरियउवझाए, सुयपवयणदंसणेवावि ॥ ए४४ ॥ अर्थः– प्रथम अरिहंत ते समवसरण मध्य मध्यासीन चोत्रीस अतिशय पांत्रीस वचनातिशये बिराजमान विहरता जगवंत तेने अरिहंत कहिये. बीजो आठकर्मनी, एकसो ने अठावन उत्तर प्रकृतिनो क्षय करी मोक्ष पाम्या ते सिद्ध कहिये. त्रीजो चैत्य, जे जिनेंद्रतुल्य जे प्रतिमालक्षण ते चैत्य कहिये. चोथो श्रुत, ते सामायिकादिक अथवा आचारांगादिक. पांचमो धर्म, ते क्षांति प्रमुख. छट्ठो, ते क्षांत्यादिक धर्मनो आधार ते साधुनो वर्ग, समुदाय रूप. सातमो आचार्य. आठमो उपाध्याय. नवमो, प्रतित प्रवचन शब्दे संघ कहियेः दशमो, दर्शन शब्दे सम्यक्त्व कहिये. अने सम्यक्त्ववंत जे पुरुष तेने पण दर्शन शब्दे करी बोलेछे. ॥ ए४४ ॥

ए पूर्वोक्त दशपदोने विषे जे कर्त्तव्य छे ते कहेछे. मूलः– जत्तीपूआवन्नजणणं नासणमवन्नवायस्स ॥ आसायण परिहारो, दंसणविणउ समासेण ॥ए४५॥ अर्थः–एक बाह्य प्रतिपत्ति, ते आवता देखीने सन्मुख जावुं, तथा आसननुं देवुं, सेवा ते अंजलीबंधनुं करवुं. जाताने पछवाडे जावुं. इत्यादिक जक्ति करवी. बीजुं

पूजा, ते गंध, माल्य, वस्त्र, पात्र, अन्न पानादिकनुं आपवुं. त्रीजुं वर्णके० श्लाघा तेनुं जनन एटले ज्ञानादिक गुणना गणनुं बोलवुं. चोथुं अवर्णवाद, ते अश्लाघा तेनुं नासणके० गमाववुं परिहरवुं. पांचमुं आशातना, ते मन वचन काया संबंधीनी, तेनोपरिहार एटले वर्जवुं. ए दशे प्रकारे दर्शन कहेतां सम्यक्त्वनो विनय ते समासेणके० संक्षेपे कह्यो. ॥ ए४५ ॥

हवे त्रण शुद्धि कहेछे. मूलः—मुत्तूणजिणंमुत्तूण, जिणमयंजिणमयछिएमोत्तुं॥संसारकंत्तवारे, चिंतज्जंतं जगं सेसं ॥ ए४६ ॥ अर्थः— एक श्री वीतराग तथा बीजा जिनमत स्याद्वादरूप तीर्थंकर प्ररुपित जीवाजीवादिक तत्वरूप प्रवचन, तथा त्रीजा तेज परमेश्वरनां प्रवचन जेणे अंगीकार कस्यांछे एवा सुसाधु. ए त्रणने मूकीने बाकी जगतना सर्व पदार्थोने संसारना कवच तुल्य असार समान चिंतवे. एवुं जाण थाय.

पांच दूषण रहितपणु कहेछे. मूलः— संकाकंखविगंछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इयारा, परिहरियवा पयत्तेण ॥ ए४७ ॥ अर्थः— प्रथम शंका, ते वीतरागना वचन उपर संशयनुं करवुं. बीजो कांक्षा, ते अन्य दर्शननो अभिलाष करवो. त्रीजो विगंछा, ते साधुनी निंदाकरवी. चोथो अन्य दर्शननी प्रसंशा, ते श्लाघानुं करवुं. पांचमो, बौध शाक्यादिक परदर्शनीउं साथे संस्तव परिचय करवो. ए सम्यक्त्वना पांच अतिचार ते मलिनताना कारण जाणी प्रयत्ने परहरवा.

हवे आठ प्रभाविक कहेछे. मूलः— पावयणी धम्मकही, वाईनेमित्तिउ तवस्सी य, विद्या सिद्धोयकवी, अठेवपभावगा भणिया ॥ ए४८ ॥ अर्थः— प्रथम प्रवचन जे द्वादशांगीरूप ते जेने छे, तेने प्रावचनिक कहिये. ते युगप्रधान जाणवो.

बीजो आगमधर्म कथी चार प्रकारे कथन करे, एक आक्षेपणी, बीजी विक्षेपणी, त्रीजी संवेगणी, अने चोथी निर्वेदनी. तेमां जे सांभलनारने तत्वप्रत्ये आक्षेप्यते एटले आकर्षिये तेने आक्षेपणी कहिये. तेना चारभेद छे. एक, आचार लोच अस्नानादिक, तेना प्रकाशवा थकी आचाराक्षेपणी. बीजी, प्रमादने लीधे जे दूषण लाग्यां होय तेना विनाशने अर्थे प्रायश्चित्त लेवुं ते व्यवहार. तेने कहेवे. आक्षेपे ते व्यवहाराक्षेपणी. त्रीजी, सांभलनारने संशय उत्पन्न थयाथी तेनो मधुर वचने करी संशय नाश पमाडवो तेने आक्षेपे ते प्रज्ञप्त्याक्षेपणी कहिये. अने चोथी, सांभलनारने गमती नयने अनुसारे पदार्थोनी प्ररुपणा करवी ते दृष्टिवादाक्षेपणी. ए आक्षेपणीना चार भेद कह्या.

हवे विक्षेपणीना चार भेद कहेछे. विक्ष ते भलामार्ग थकी माठे मार्गे प्रव

र्त्ताविये; अथवा मागा मार्गे थकी ऊलामार्गे प्रवर्त्ताविये ते विक्षेपणी. तेना चार नेद छे. तेमां प्रथम, स्वसमय कहेतो परसमय कहे. बीजी, परसमय कहेतो स्व समयंगावइत्ताजवति. त्रीजी, समवायंकहेतो मिछावायं कहे. अने चोथी, मिछा वायं कहेतो समवायंगविता नवति कहे.

हवे संवेगणीना चार नेद कहेछे. जेना सांनलवाथकी सांनलनारने संवेग उत्प न्न थाय ते संवेगणी. तेना चार नेदछे. एक इहलोक संवेगणी, बीजी परलोक सं वेगणी, त्रीजी परशरीर संवेगणी अने चोथी आत्मसंवेगणी.

जे सांनलवाथकी सांनलनारने संसारथकी निर्वेद उपजावे ते निर्वेद. तेना चार नेद छे. प्रथम, इहलोगडुच्चिसाकम्मा इहलोग डुहफल विवागसंजुत्ताजवंति. बीजी, इहलोग डुच्चिसाकम्मा परलोग डुहफल विवागसंजुत्ताजवंति. त्रीजी, परलोग डुच्चिसाकम्मा इह लोग डुहफल विवाग संजुत्ता नवंति अने चोथी, परलोक डुच्चिसाकम्मा परलोग डु हफल विवाग संजुत्ता नवंति. जेम ए चतुर्नंगी थइ तेमज सुख संबंधीनी चतुर्नंगी थाय, ते आवीरीते. प्रथम, इहलोग सुच्चिन्नाकम्मा इहलोग सुहफल विवाग संजुता नवंति, बीजी, इहलोग सुच्चिन्नाकम्मा परलोग सुहफल विवाग संजुत्ता नवंति. त्री जी, परलोग सुच्चिन्नाकम्मा इहलोग सुहफल विवाग संजुत्ता नवंति अने चोथी, पर लोग सुच्चिन्नाकम्मा परलोग सुहफल विवाग संजुता नवंति. हवे एनो अर्थ करेछे. इह लोकने विषे डुश्चीर्ण कर्यां जे चोरी प्रमुख कर्म ते इह लोकने विषेज डुःकर्म रूप वृक्षथकी उत्पन्न थयां, माटे आ नवेज डुःखनां आपनार थाय. ते चोर प्रमु खने थाय. एमज बीजो, परलोके नारकी जीवोने डुःख थाय; ते बीजो नंग.

त्रीजो, परलोकनां करेलां कर्म इहां नोगवे, जेम कोइ एक जन्मथी मां न्दी व्याधि दारिद्र प्रमुखे पीडित होय तेने जाणवो. चोथे नंगे नरक योग्य आयु षना बांधनार काक गृध्रादिकनी परे नावना करवी.

एमज सुच्चिन्न ते प्रथम तीर्थंकरने दानना देनार, बीजा सुसाधु, त्रीजा तीर्थंकर, अने चोथा देवना नावने विषे रह्या तीर्थंकरादिकनी पेरे नावना करवी. एवी क्षीराश्र व मध्वाश्रवादि लब्धे सहित सजल जलधरनी पेठे निर्ये करी समस्त लोकने प्रमोद नी करनार कथा करे, ते धर्मकथा जाणवी. ते धर्मकथिक बीजो प्रनावक जाणवो.

त्रीजो. वादी, प्रतिवादी, सजा, अने सनापति प्रमुख चार प्रकारनी पर्षदाने विषे जे प्रतिपक्षीनुं वचन उछापीने पोताना पक्षनुं वचन स्थापन करे; तेने निरू पवाद लब्धे संपन्न एवो वादी त्रीजो प्रनावक जाणवो.

चोथो. त्रिकाल विषयिक, लाभालाभ, सुख, दुःख, जीवितव्य मरणनो केहेवा वालो; ते निमित्ति प्रभावक चोथो जाणवो.

पांचमो. विकृष्ट अष्टमादिकथी मांडी वर्ष पर्यंत तपनो करनार; ते तपस्वी प्रभावक.

छठो. विद्या प्रज्ञप्ति प्रमुख शासनदेवता, ते जेने सहाय छे; ते विद्यावंत प्रभावक.

सातमो. अंजन, पादलेप, तिलिक, गुटिका, सर्वभूताकर्षण इत्यादिक सिद्धि छे जेने; ते सिद्ध प्रभावक जाणवो.

आठमो. संस्कृत प्राकृतादिक छए भाषाये करी गद्य पद्यादिकनो नवो बंध करे; ते कवि प्रभावक जाणवो. ए आठ प्रभावक श्री जिनशासननी प्रभावनाना करनार छे.

अथवा एज आठ प्रभावक प्रकारांतरे शास्त्रांतरथी कहिये छेए. उक्तंच. अइ से स इढि धम्म कहि, वाइ आयरिय खवगनेमित्ति ॥ विद्यारायगण सम्मउय तित्थं पभाविंति ॥ १ ॥ अर्थः– अतिशय प्राप्तपणे थइछे जेने जंघा चारण विद्याचारणनी रूद्धि तथा आशीविषजलौषधि, ते रूद्धि अने अवधि मन पर्यवज्ञानादिक, ते अतिशेषर्द्धि इत्यादिक रूद्धिये सहित, बीजो राजा जेने माननिक ते राजासम्मत्त अने महाजनने माननिक ते गणसम्मत्त जाणवो. शेष सुगम. ॥ ए४८ ॥

हवे सम्यक्त्वनां पांच भूषण कहेछे. मूलः– जिणसासणे कुसलया, पभावणा ययणसेवणाथिरया ॥ भत्तीयगुणासम्मत्त दीवया उत्तमापंच ॥ ए४ए ॥ अर्थः– जिनशासनने विषे कुशलता महापणपणुं, ते अनेक प्रकारे करी आगलाने प्रतिबोधिने श्रीजिनशासनने विषे दृढकरे. बीजुं, प्रथम कह्युं ते रीते श्रीजिशासननी प्रभावना करे. त्रीजुं, आयतन ते द्रव्य अने भावना भेदे करी बे प्रकारेछे. तेमां द्रव्यथी तो जिनभवनादिक अने भावथी ज्ञानादिकना धरनार साधुप्रमुख तेनी सेवना पर्युपासनानुं करवुं. चोथुं, थिरयते श्री अरिहंतना शासननेविषे चलचित्त थय लाने स्थिर करे अने पोते पण परतीर्थिनी समृद्धि देखी स्थिरपणे रहे; पण चलायमान न थाय. पांचमुं, भत्तिके० प्रवचननो विनय व्यावृत्तरूप प्रतिपत्ति, ए सम्यक्तिना पांच गुण ते प्रभासकके० उत्तम प्रधान गुण आभरण लक्षण पांच प्रकारनां छे. तेणे करी सम्यक्त्व दीपेछे, शोभेछे. ॥ ए४ए ॥

हवे सम्यक्त्वनां पांच लक्षण कहेछे. मूलः– उवसम संवेगोव्विय, निव्वेउ तहय होइ अणुकंपा॥अत्थिक्किचियएए, सम्मत्ते लस्कणा पंच ॥ए५०॥ अर्थः– जेनेविषे रह्युंथकुं सम्यक्त्वपणुं इये एटले लखिये; ते कारणे तेने लक्षण कहियें. तेमां प्रथम उपशम लक्षण छे. ते कोइये घणोज अपराध कर्यो होय तोपण तेना उप

र क्रोध करे नही ते उपशम, ते बे रीते छे. कोइकतो कषायना परिणामने विचारी कटुफल जाणी उपशम पामेछे अने कोइकने तो सहज स्वनावे उपशम थायछे. बीजो, मनुष्य तथा देवताना सुखने दुःखरूप जाणीने मोक्षसुखनो अनिलाष धरे. ते संवेग नामा गुण. त्रीजो, नारकी अने तिर्यंचादिक दुःखित प्राणी देखी संसार छांमवानी इछा करे; ते निर्वेद सम्यग्दर्शी. एटले दुःखादिके करी गहन एवा संसार कारागृहमां मोटा कर्मदंमपाशे करी नाना प्रकारे पीडित थकां तेनो परिहार करवा विषे समर्थ थई ममत्वरहित पणाना योगे करी निर्वेद युक्त थाय छे; ते निर्वेद. केटलाक ग्रंथकार संवेग के० वैराग अने निर्वेद के० मोक्षानिलाष एवो विपरीतपणे अर्थ कहेछे. चोथो अनुकंपा, ते दुःखित प्राणिउने विषे पक्षपात रहितपणे करी तेनां दुःख निवारण करवानी जे इछा ते अनुकंपा. तेमां पक्षपाते करी पुत्रादिकने विषे अनुकंपा, अथवा आत्मारक्षणार्थे व्याघ्रादिकनुंनसेवन करवुं; तेपण पक्षपात अनुकंपा. ते, द्रव्य अने नावथीबे प्रकारनी छे. तेमां, शक्ति छतां पारकाना दुःखना प्रतिकारने अर्थे जे अनुकंपा ते द्रव्यानुकंपा. अने धर्मथी हीण थयेलाने दुःखी जोइने हृदयमां दया आणवी ते नावानुकंपा जाणवी. पांचमो आस्तिक्यके० पोताने सद्गति छे एवी मति जेने छे ते आस्तिक, तेनो जे धर्म ते आस्तिक्य. ते अन्यतत्वनुं श्रवण थयुं छतां पण जिनेश्वरनाषित तत्वमां निराकांक्ष प्रतिपत्ति जाणवी. आ उपशमादिक पांच सम्यक्त्व विषय लक्षणो जाणवां. एणे करी परोक्ष सम्यक्त्व उत्तम प्रकारेकरी उपलक्षित थायछे

हवे यत्ना छ प्रकारनी कहेछे, मूलः— नो अन्नतिछिए अन्नतिछि, देवेय तह सदेवेवि ॥ गहिए कुतिछिएहिं, वंदामि नवा नमंसामि ॥९५१ ॥अर्थः—अन्य तीर्थिं ते परदर्शनी परिव्राजकनिक्षु नौतिकादिक तथा तेना देव जे रुद्र, विष्णु, अने सौगतादिक. तेम जे स्वदेव ते श्री अरिहंत देवनी प्रतिमा, ते कुतीर्थिउ जे सौगतादिक दिगम्बर अथवा बीजा कोइ पण दर्शन वाले ग्रहण करी होय तेने जे एम केहेके हुं वांडु नही, तथा मस्तके करी प्रणाम मात्र पण करूं नही. बीजो, नमस्कार ते प्रणामपूर्वक गुणनुं बोलवुं ते पण करुं नही. ॥ ९५१ ॥

मूलः— नेवअणालित्तो, आलवेमि नोसंलवेमि तह तेसिं ॥ देमि न असणाईयं पेसेमि न गंधपुप्फाइ ॥९५२॥ अर्थः—त्रीजुं, तेमज अन्य तीर्थिउना बोलाव्या विना बोलवुं नही. तेमां जे अल्पमात्र एक वखत बोलवुं तेने आलाप कहिये. तथा चोथो. वारंवार बोलावबुं तेने संलाप कहिये. ते पण करुं नही. अने पहेलो मिथ्यात्वी बोलावे तो तेनीसाथे अल्प बोलवुं पण घणो परिचय करवो नही. केमके

घणो परिचय कखाथी मिथ्यात्वनो उदय थाय. पांचमो, अन्य तीर्थिउने अशनादिक ते अन्न पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्रादिकनुं दान जे आपवुं ते अनुकंपाए आपुं पण अनुकंपा टालीने धर्मबुद्धिये आपु नही. उक्तंच. यतः सवेहिंपि जिणेहिं, डुज्जयजिय रागदोस मोहेहिं ॥ सत्ताणुकंपणठा, दाणंन कहिंच पडिसिद्धं ॥ १ ॥ छठो, ते अन्य तीर्थिउना देवोने तथा अन्य तीर्थिउए ग्रहण करेली जिन प्रतिमाने पण पूजाने अर्थे गंध पुष्प यात्रा स्नात्रादिक करुं नही. ए छ यत्नाये यत्नवंत थको ते जीव सम्यक्त्वने उलंघे नही. ॥ ए५२ ॥

हवे छ आगार वखाणेछे. मूलः— रायाभिउगोय गणाभिउगो बलाभिउगोय सुराभिउगो॥कंतारवित्ती गुरुनिग्ग होय छछिंडिआउ जिणसासणंमि ॥ ए५३ ॥ अर्थः— प्रथम राजा, देशनो धणी तेनो अभिउग एटले बलात्कार तेणे करी कांइ अकार्य करवुं पडे, बीजो गण, ते स्वजनादिकनो समुदाय तेनो अभियोग, त्रीजो, पोता थकी बलवंत होय तेनो अभियोग, चोथो देव, कोइक शरीर अधिष्ठी कांइक दूषण लगाडे ते सुराभिउग कहिये, पांचमो, कांतार शब्दे अरण्य अटवी, तेमां निर्वाह करवाने अर्थे अथवा कांतार शब्दे बाधा जाणवी. ते बाधा उपन्या थकी प्राणनो वर्त्तन एटले निर्वाह करवो ते कांतारवृत्ति जाणवी. छठो गुरु, ते माता पिता प्रमुख वडेरा जाणवा. यडुक्तं. माता पिता कलाचार्या एतेषां ज्ञातयस्तथा ॥ वृद्धा धर्मोपदेष्टारो गुरुवर्गः सतांमतः ॥ १ ॥ तेना निग्रह आग्रह थकी कांइ अकार्य करवुं पडे. ए छ छिंमी जिनशासनने विषे अपवादे कहिछे. ॥ ए५३ ॥

हवे छ भावना कहेछे मूलः— मूलं दारं पइठाणं, आहारो भायणंनिही ॥ डुछक्कस्साविं धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं ॥ ए५४ ॥ अर्थः— प्रथम, जेम मूलरहित वृक्ष होय ते प्रचंम वायुये कंपाव्युं थकुं पृथ्वीने विषे पडी जाय; तेम धर्मरूप वृक्ष जे छे ते जो सम्यक्त्वरूप मूल थडथी रहित होय तो कुतीर्थिकरूप वायुये करी प्रेर्युंथकुं स्थिर रहे नही; एवी भावना भाववी. बीजी, जेम नगरने पोल प्रमुख द्वार थाय तेम धर्म रूप नगरने सम्यक्त्व ते द्वार समानछे. ए सम्यक्त्वरूप द्वार विना धर्मरूप नगरमां प्रवेश थाय नही. त्रीजी पइठाणं एटले धर्मरूप प्रासादने प्रतिष्ठान ते पिठिका समान सम्यक्त्व छे. जेम घर बांधतां नीचे सबल पिठिका होय ने उपर घर बांध्युं होय तो ते घर निश्चल थाय; तेम धर्मरूप घर ते सम्यक्त्वरूप पिठिकाये करी निश्चल थाय, एम भावना भाववी. चोथी आहारो, एटले आधारनी पेरे आधार. जेम समस्त जगतने पृथ्वी आधार भूतछे; तेम धर्म

रूप जगतने सम्यक्त्वरूप पृथ्वीनो आधारछे, एम भाववुं. पांचमी, भाजननीपरे भाजन, जेम भाजन जे ठामडो तेमां क्षीरादिक वस्तु रही शकेछे; तेम सम्यक्त्व रूप भाजनमां धर्मरूप वस्तु रही शकेछे. छठी जेम निहीके० निधानजे भंमार ते थकी मणि मोक्तिक कनकादिक सर्व पामिये; तेम सम्यक्त्वरूप निधानथकी ज्ञा नादिक रत्नत्रय स्वर्गापवर्गादिक सुख सामग्री पामिये, बारव्रतरूप श्रावकनो धर्म, तेहनुं सम्यकत्व ते श्रीतीर्थंकरे एवुं कह्युंछे. हवे ए भाविये सम्यक्त्व मूलसमा न, द्वार समान इत्यादिक तेथी ए भावना कहिये. ॥ ए५४ ॥

हवे छ स्थानक कहेछे. मूलः—अछि अनिच्चो कुणई, कयंच वेएइ अछिनिवाणं॥ अछिअमोस्को वाउ, छसम्मत्तस्सठाणाई ॥ ए५५ ॥ अर्थः— चेतना लक्षण ते जीवछे. एवुं कहेवा थकी नास्तिकना मतनुं निराकरण कर्युं. ते प्रथम स्थानक. वली ते जीव नित्य उत्पत्ति विनाश रहित छे; ते बीजुं स्थानक. कुणईके० ते जीव मिथ्यात्व अविरति कषाय योगेकरी ज्ञानावरणीयादिक कर्मनो कर्त्ताछे; ते त्रीजुं स्थानक. ते जीव पोताना कयंके० करेलां शुभाशुभ कर्मने वेदेछे, अनुभ वेछे; ते चोथुं स्थानक. ते जीवने निरवाण ते सर्व राग दोष मद मोह जन्म जरा रोगादिक डुःख क्षयरूप जे अवस्था विशेष मोक्ष लक्षण पण छे; ए पाचमुं स्था नक जाणवुं. ते जीवने मोक्ष पामवानो उपाय सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्ररूप सा धन, ते पण छे; ते छठुं स्थानक. ए छ सम्यक्त्वनां स्थानक जाणवां. एरीते चा र सद्दहणादिक बार द्वारे करी सडसठ भेदे विशुद्ध सम्यक्त्व वखाण्युं. इतिगाथार्थ

अवतरणः— एगविहाइ दसविहंसम्मं एटले एकविध आदेदेइने दशप्रकारना सम्यक्त्वनुं एकशोने उगणपचासमुं द्वार कहेछे. मूलः— एगविह डुविह तिविहं, चउहा पंचविह दसविहं धम्मं ॥ दवाइ कारगाइ, उवसमभेएहि वासम्मं ॥ए५६॥ अर्थः— एकविध ते तत्वार्थश्रद्धान लक्षण सम्यक्त्व सामान्ये जाणवुं. द्विविध ते इव्य अने भावना भेदेकरी जाणवुं. तेमां जे विशोधिने विशेषे करी मिथ्यात्वना पुजल निर्मलकरे ते इव्यथी जाणवुं. अने श्री जिनोक्त तत्व सद्देहे तेने विषे रुचि करे ते भावथी जाणवुं, तथा आदिशब्दथकी प्रकारांतर जाणवो, ते निश्चय अने व्यवहारना भेद थकी पण बे प्रकारे सम्यक्त्व थायछे. तेमां देश काल अने संघ यणने अनुमाने यथाशक्तिए साधुना अनुष्ठानरूप ते निश्चयिक जाणवो. अने जे जि नशासनने विषे प्रीतिनुं करवुं एवोजे आत्मानो शुभ परिणाम; ते व्यवहार सम्य क्त्व कहिये. तेथकी पण परंपराये मोक्ष पामिये. उक्तंच; जं मोणं तं सम्मं, जं स

म्मं तमिह होइ मोणंतु ॥ निबयई ईरसउ, सम्मं सम्मत्त हेउत्ति ॥ १ ॥ ए व्य वहार नय ते पण प्रमाणछे. एना बलथकी तीर्थ प्रवर्त्ते; अन्यथा तीर्थनो विछेद थाय. यडुक्तं; जइ जिणमयं पवज्जह, तामाववहार निछए मुयह ॥ ववहारनयछेउ, तिछ्छेउजउ अवस्समिति ॥ १ ॥ तथा पुज्गलिक अने अपौज्गलिकना नेदे करी पण बे प्रकारनुं सम्यक्त्व छे. तेमां शुद्धपुंजना वेदवा थकी क्षायोपशमिक सम्य क्त्वनुं वेदवुं ते अपौज्गलिक सम्यक्त्व जाणवुं. अथवा निसर्ग अने अधिगमना नेदे करी बे प्रकारेछे. ते बेहु आगल वखाणशे. अने त्रिविध ते कारगाइके० कार क, रोचक, अने दीपक अथवा उपशमिक, क्षायिक, अने क्षायोपशमिकना नेद थकी पण त्रण प्रकारे जाणवो. अने चउहा इत्यादिक पदोनो अर्थ सुगमछे माटे लख्यो नथी. सम्मंके० आगममां जे प्रकार कह्योछे तेने मूकीने अविपरीत पणे पण स्वमति कल्पितनेदेकरी जाणवुं नही. ॥ ८५६ ॥

एज गाथा हवे विशेषे देखाडेछे. मूलः– एगविहं सम्मरुई; निसग्गनिगमेहिंतं नवे डुविहं ॥ तिविहं तं खइयाई, अहवा विहु कारगाईयं ॥ ८५७ ॥ अर्थः– सम्यक् ज्ञान संशयविपर्ययज्ञानने अनावे तेनुंज तत्वनिश्चय पूर्वक श्रीवीतरागनुं कहे लुं तत्वरूप सर्द्दहे; ते एकविध सम्यक्त्व कहिये. गुरुना उपदेशविना जेम नारकी प्रमुखने सम्यक्त्व छे; तेम सम्यक्त्व प्राप्त थाय ते निसर्ग जाणवुं. अने गुरुना उ पदेश थकी अथवा प्रतिमादिकना दर्शन थकी जे थाय ते अधिगम सम्यक्त्व जाणवुं. अने तिविहंके० त्रण प्रकारनुं जे क्षायकादिक अथवा कारकादिक तेनुं स्वरूप गाथाये कहेछे. ॥ ८५७ ॥

मूलः– सम्मत्तमीसमिछत्त कम्मरकयउ नणंति तं खइयं ॥ मिछत्तखउवसमा खा उवसमं ववइसंति ॥ ८५८ ॥ अर्थः– अनंतानुबंधी चार कषायनो क्षयकरी पछी मिथ्यात्व, मिश्र, अने सम्यक्त्व पुंज लक्षण त्रण प्रकारनां दर्शन मोहनीयकर्म नो सर्वथा क्षय थयाथी क्षायिक सम्यक्त्व तीर्थंकरादिक कहेछे. तेमज मिथ्यात्व मोहनीय कर्म उदय आव्यो ते विपाकोदय वेदि खपाव्यो; अने जे उदय नथी आव्यो, हजी सत्तामांछे तेने उपशमाव्यो. मिथ्यात्व मिश्र आश्रयी विष्कंनोदय. शुद्ध पुंज आश्रयी अपनीत मिथ्यात्व स्वनाव ते बीजुं क्षयोपशम सम्यक्त्व करि ये. एरीते ववइसंतिके० गीतार्थ कहेछे. ॥ ८५८ ॥

हवे उपशमिक सम्यक्त्व कहेछे. मूलः–मिछत्तस्सउवसमा, उवसमं तं नणंति समयन्नू ॥ तं उवसमसेढीए, आइमसम्मत्तलानेवा ॥ ८५९ ॥ अर्थः– मिथ्यात्व

मोहनीयकर्मनुं, विपाके तथा प्रदेशे ज्यां उपशम थयुंछे तेने उपशमिक सम्यक्त्व समयज्ञके० सिद्धांतना जाण पुरुष कहेछे. ते उपशमश्रेणी पडिवजे तेवारे सप्तक ने उपशमे थायछे. अथवा आइमके० प्रथम जीव जेवारे सम्यक्त्व लाभेवाके० पामे, ते पामवानो प्रकार लखियेछैये.

अनादि मिथ्यादृष्टि, कोइक जीव एक आयुकर्म वर्जिने शेष सातकर्मनी प्रकृति यथाप्रवृत्ति करणेकरी खपावे, ते ज्यां सुधी जेवारे पल्योपमने असंख्यातमे भागे ऊणी सागरोपम एक कोडाकोडी प्रमाण कर्मस्थिति थाय; तेवारे अपूर्वकरणे करी घन राग द्वेष परिणाम रूप वज्रनीपरे भेदन करवाने अतिदुर्लभ, एवी कर्मग्रंथी भेदे. पछी अनिवृत्तिकरणे प्रवेश करे. त्यां समय समय अतिविशुद्ध परिणामे करी कर्म खपावतो उदय आव्युंछे जे मिथ्यात्व; तेने वेदे, अने अनुदीर्ण जे छे ते उपशम लक्षण अंतर मुहूर्त्त कालमान अंतर करण करे ते आवीरीते.

अंतर करण स्थितिथकी ते कर्म दलिक लेइने पहेली अने बीजी स्थितिनेविषे प्रक्षेपे, ते त्यांसुधी; ज्यांसुधी समय समय अंतर करणना दलिक अंतर मुहूर्त्तकाले समस्त क्षपावी अनिवृत्तिकरणने विषे वासित अने उदीरणने मिथ्यात्व अनुभव थकी खपाव्यो, अने अनुदीरण ते विशुद्ध परिणामना विशेषथकी विष्कंभतोदय ऊखर देश समान मिथ्यात्व विवर पामी उपशम सम्यक्त्व लहे. एम इहां थोडुंज लख्युंछे. विशेष विस्तार, वृत्तिथकी जाणवो. ॥ ९५९ ॥

हवे कारकादिक त्रण सम्यक्त्व कहेछे. मूलः– विहियाणुठाणंपुण, कारगमिहरोयगंतु सद्दहणं ॥ मिछद्दिठीदीवइ, जं तत्तेदीवगंतंतु ॥ ९६० ॥ अर्थः–जेवी रीते आगममांहे अनुष्ठान कह्युंछे; तेवीरीतेज शक्तिने अणगोपवतो थको जे अनुष्ठान करे तो, ते कारक सम्यक्त्व साधुने थाय. अने बीजुं जे सर्दहणारूप ते रोचक सम्यक्त्व श्रेणीकादिकनीपरे जाणवुं. तथा मिछद्दिठीके० पोते मिथ्यादृष्टिवंत अभव्य अथवा दुर्भव्य छतो पण अंगारमर्दकादिकाचार्यनीपरे धर्मोपदेशे करी बीजाने जिनोक्त तत्व दीपावे, तेथी ते सम्यक्त्व पमाडवानुं कारण थाय, तेथी कारणे कार्यनो उपचार करिये. आयुर्घृतं एवा न्यायथकी मिथ्यादृष्टिवंत छतां पण तेने दीपक सम्यक्त्व कहिये. ॥ ९६० ॥

हवे चार प्रकारनुं सम्यक्त्व कहेछे. मूलः– खइआईसासायण, सहियं तं चउविहंतु विन्नेयं॥तं सम्मत्त भंसे, मिछत्तापत्तिरूवंतु ॥ ९६१ ॥ अर्थः– चार प्रकारना सम्यक्त्वमां तो पूर्वोक्त क्षायिकादिक त्रण सम्यक्त्व जाणवां. तेने चोथो सास्वाद

ने सहित करिये तेवारे चार थाय; परंतु ते सम्यक्त्व जेवारे अंतरकरणे उपशमिक सम्यक्त्वथकी पडेछे; अने हजी मिथ्यात्व पाम्योनथी, त्यांसुधीमां जघन्यथी तो एक समय अने उत्कृष्टो छ आवलि प्रमाण सास्वादन सम्यक्त्व कहिये. पछी ते जीव मिथ्यात्वे जाय. तेमाटे ज्यांसुधी मिथ्यात्व पाम्यो नथी, त्यांसुधी जघन्ये मिथ्यात्वनी आपत्तिके० पामवुं तद्रूप ए थायछे. ॥ ८६१ ॥

हवे पांचविध सम्यक्त्व कहेछे. मूलः— वेयगसंमत्तं पुण, एयंचिय पंचहा विणिद्दिठं ॥ सम्मत्तचरमपोग्गल, वेयणकाले तयं होइ ॥ ८६२ अर्थः— पूर्वोक्त चार सम्यक्त्व, तेमां वेदक सम्यक्त्वनुं उमेरण कस्वाथकी पांच प्रकारनुं सम्यक्त्व थायछे; ते वेदक सम्यक्त्व. ते सम्यक्त्वनुं पुंज तेनुं चरमके० छेहलुं पुद्गल वेदे, तेवारे थाय. ते आवीरीते छे; जे क्षपकश्रेणी पडिवज्याने अनंतानुबंधीनी चोकडी तथा मिथ्यात्व ने मिश्र पुंज खपावीने सम्यक्त्वना पुंजना पुद्गल उदीरी उदीरीने अनुभवे तेनिर्ज्जरावतो छेहले जे सम्यक्त्वना पुद्गल वेदे, तेवारे वेदक सम्यक्त्व कहिये.

इहां कोइ केहेशे के क्षायोपशमे अने वेदके पण सम्यक्त्वना पुद्गल वेदे तो एमां शुं विशेषछे? तेनो उत्तर आमछे के, क्षायोपशमे समस्त काल सम्यक्त्व पुद्गल वेदे अने वेदक सम्यक्त्वतो चरमके० छेला सम्यक्त्व पुद्गल वेदे; पण परमार्थे तो क्षायोपशमिकेज छे. चरम पुद्गलनो ग्रास छे, ने शेष पुद्गलनो क्षयछे. चरमग्रास वर्त्तिने तो मिथ्यात्वभावनुं अपगम एवा उपशमनो सद्भावछे. ॥ ८६२ ॥

हवे दश प्रकारनुं सम्यक्त्व कहेछेः—मूलः—एयं चिय पंचविहं, निस्सग्गा भिगमभेयउ दसहा ॥ अहवा निसग्गरुई, इच्चाइजमागमेभणियं ॥ ८६३ ॥ अर्थः— एज पूर्वोक्त पांच भेद जे कह्या, तेने एकेकना एक निसर्ग, अने बीजो अभिगम एवा बे बे भेदे करतां दश प्रकार थायछे. अथवा निसर्ग रुचि, उपदेश रुचि, इत्यादिक दश प्रकारनुं सम्यक्त्व जे आगम पन्नवणा प्रमुखनेविषे कह्युंछे तेज देखाडेछे.

मूलः— निसग्गुवएसरुई, आणारुइ सुत्त बीय रुइमेव॥अभिगम विछाररुई, किरिया संखेव धम्मरुई.॥ ८६४ ॥ अर्थः— इहां रुचि शब्द सर्वत्र जोडवो. तेमां प्रथम निसर्ग, ते स्वभावे रुचि एटले श्रीजिनोक्त तत्वनेविषे जे अभिलाष ते निसर्ग रुचि जाणवी. बीजी, गुरुप्रमुखनो जे उपदेश, तेनाथी जेने रुचि होय ते उपदेश रुचि जाणवी. त्रीजी, आज्ञा ते सर्वज्ञना वचन उपर रुचि ते आज्ञारुचि. चोथी सूत्र ते आचारांगादिक अंग प्रविष्ट अने अंगबाह्य ते आवश्यक दशवैकालिकादिक तेना उपर रुचि ते सूत्ररुचि. पांचमी, बीजनी परे जे होय ते बीज, एटले एकवचन ते

अनेक अर्थनो उपजावणहार थाय ते बीजरुचि. बठी अभिगम- विशिष्ट परिज्ञान, त्यां जे रुचि ते अभिगमरुचि. सातमी, समस्त द्वादशांगीने नयेकरी विचारी; तेथ की उपनी जे रुचि ते विस्ताररुचि. आठमी, संयमनुं जे अनुष्ठान, त्यां जे रुचि ते क्रियारुचि. नवमी, संक्षेपनेविषे रुचि, पण विस्तारार्थ न जाणे ते संक्षेपरुचि जाणवी. दशमी, श्रुतधर्म उपर रुचि ते धर्मरुची. ए दश रुचि, संक्षेपथी शब्दार्थ मात्रे कही.

हवे ए दश रुचिने विस्तारेकरी सूत्रकार कहेबे. मूलः—जो जिणदिठ्ठे नावे, चउ व्विहे सद्दहाइ सयमेव ॥ एमेवनन्नहत्तिय, निस्सग्गरुइत्ति नायव्वो ॥ ए६५ ॥ अर्थः— जे कोइ जिनेश्वरना दीठेला नाव जे जीवादिक पदार्थ तेने द्रव्य, क्षेत्र, काल अने नावना नेदथकी चारप्रकारे अथवा नाम, स्थापना, द्रव्य, अने नाव ए चार प्रकारे ते कोइना उपदेशविना सयमेवके० पोतानी मेलेज जातिस्मरणेकरी अथवा पोतानी बुद्धियेकरी श्रीनगवंते दीठा जे नाव; ते तेमज बे, पण अन्यथा नथी. एवी रीते सर्द्दहे. ते प्रथम निसर्गरुचि जाणवी. ॥ ए६५ ॥

मूलः—एए चेवउ नावे, उवइठ्ठे जो परेण सद्दहइ ॥ बउमडेण जिणेणव, उवएसरुइत्ति नायव्वो ॥ ए६६ ॥ अर्थः— एज पूर्वोक्त चउद जीवादिक पदार्थ तेने बद्मस्थ अथवा केवलीनगवानना कहेला उपदेश थकी सर्द्दहे, ते बीजी उपदेशरुचि जाणवी. इहां सूत्रमां प्रथम बद्मस्थ कह्युं. तेनुं कारण के केवलीपण प्रथम बद्मस्थ होय, पठी केवली थाय. तेथी प्रथम बद्मस्थ कह्युं. अथवा उपदेशना आपनार बद्मस्थ घणा होय, तेथी प्रथम तेनो उपदेश सांनलीने सर्द्दहे. ॥ ए६६ ॥

मूलः—रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ॥आणाएरोयंतो, सो खलु आणारुईनाम ॥ ए६७ ॥ अर्थः—राग, द्वेष, मोह, शेष मोहनीयनी प्रकृति अज्ञान मिथ्यात्वरूप ते जेने देशथकी अपगतके० गया होय पण सर्वथा गया न होय; एवो जे होय ते श्रीजिनेश्वरनी आज्ञाये कुग्रहना अनावथकी जिनोक्त वचन सत्यकरी माने. ते त्रीजी आज्ञारुचि जाणवी. ॥ ए६७ ॥

मूलः—जो सुत्तमहिज्जंतो सुएणमोगाहईउ सम्मत्तं॥अंगेण बाहिरेणय, सोसुत्तरुइत्ति नायव्वो ॥ए६८॥अर्थः-जेप्राणी आचारांगादिक अंगप्रविष्टश्रुत अने अवश्यकादिक अंगबाह्यश्रुतने जाणता थका ते श्रुतेकरी सम्यक्त्व पामे. ते चोथी सूत्ररुचि जाणवी.

मूलः— एगपएणेगाई, पयाइ जो पसरईउ सम्मत्ते ॥ उदइव्व तिल्लबिंदू, सो बीयरुइत्ति नायव्वो ॥ ए६ए ॥ अर्थः— जे जीवादिक एक पद जाणीने तेज जाणेला प्रदेकरी अनेकपद जेने सम्यक्त्वने विषे पसरे. जेम उदकने विषे तेलनुं बिंड पस

रे तेनीपरें प्रसारने पामे, ते पांचमी बीजरुचि सम्यक्त्वनेविषे जाणवी. ॥ए६ए॥

मूलः– सो होइ अभिगमरुई सुअनाणं जस्स अडउ दिठं ॥ एक्कारस अंगाइं ॥ पयन्नगा दिट्ठि वाउय ॥ ए७० ॥ अर्थः– जेणे श्रुतज्ञानने अर्थ थकी दृष्टके० जाणुंछे, एटले अग्यार अंगरूप तथा पयन्ना उतराध्ययनादिक दृष्टिवाद. इहां प्रकरण ते सूत्रथकी जुदां कह्यां ते प्रधानपणु जणाववाने अर्थे कह्यां. वली च शब्दथकी उववाइ प्रमुख उपांग, तेनो पण अर्थ जाण्योछे. ते छठी अभिगमरुचि थाय.

मूलः– दवाण सवनावा, सवपमाणेहिं जस्स उवलद्धा ॥ सवाहि नयविहीहिं, विछाररुई मुणेयवो॥ए७१॥अर्थः– द्रव्य जे धर्मास्तिकायादिक छ, तेना समस्त पर्यायादिक जे नाव, तेनो प्रत्यक्षादिक समस्त प्रमाणे करीने जेने उपलब्ध के० जाणपणुं थयुंछे, तथा सर्व नयोनुं विधिये करीने जाणपणुं थयुंछे, ते विस्तारुचि जाणवी.

मूलः–नाणे दंसणचरणे, तवविणए सवसमिइगुत्तीसु ॥ जो किरियानावरुई, सो खलु किरियारुईनाम ॥ ए७२ ॥ अर्थः– ज्ञान, दर्शन, चारित्रनेविषे. अने तप, ते बार नेदनुं, विनय ते आचार्यादिक संबंधी, समिति ते इर्यादिक पांच, गुप्ति ते मनोगुप्त्यादिक त्रण, तेने विषे जे किरिया, त्यां जेनी नावथी रुचिछे; ते खलु के० निश्चये क्रियारुचि नाम जाणवुं. गाथामां चारित्र थकी तप प्रमुख जुदा आण्या. ते विशेषे ए मोक्षांगछे एवुं जणाववाने अर्थे आण्याछे. ॥ ए७२ ॥

मूलः– अणनिग्गहियकुदिठी, संखेवरुइत्ति होइ नायवो ॥ अविसारउपवयणे, अणनिग्गहिउय सेसेसु ॥ ए७३ ॥ अर्थः– जेणे कुदृष्टि के० सौगतादिकनी दृष्टि ते अनभिगृहीत एटले अंगीकार करी नथी, तथापि श्रीवीतरागना प्रवचनने विषे अविशारद एटले अजाणछे, किंतु माह्यो नथी. तेमज शेष कपिलादिकप्रणीत जे प्रवचन, तेनेविषे पण अनभिगृहीत छे. शेष ए बोलथकी सर्व दर्शनांतरनुं ज्ञान निषेध्युं. अभिके० अभिमुखपणे उपादेयपणे जे ग्रहणके० ज्ञान, तेज्यां नथी, तेने अनभिगृहीत कहिये. एम कुदृष्टिरूप समस्त दर्शनांतरना अंगीकारने जे चिलाती पुत्रनी पेरे निषेध्यो ए संक्षेपरुचि जाणवी. ॥ ए७३ ॥

मूलः–जो अछिकाय धम्मं सुअधम्मं खलु चरित्त धम्मं च ॥ सद्दहइ जिणाभिहियं, सोधम्मरुइत्ति नायवो ॥ए७४॥ अर्थः–जे जीव अस्तिकायादिकनो धर्म जे गति उपष्टंनादिक, अने श्रुतधर्म जे अंगप्रविष्टादिक आगमनुं स्वरूप, तेमज चारित्रधर्म जे सामायिकादिक जे जिणके० श्रीतीर्थंकरदेवनो अभिहित के० कहेलो तेने सर्दहे, सत्यकरी माने, ते दशमी धर्मरुचि जाणवी. ए दशबोल जे कह्या ते शिष्यना परि

ज्ञानने अर्थे नेदेकरी देखाडया. अन्यथा निसर्गरुचि, उपदेशरुचि, अने अधिगम रुचिने विषे ए सर्वबोलनो समावेश थायछे ॥ ९७४ ॥

हवे पूर्वोक्त क्षायिकादिक त्रण सम्यक्त्व, ते इहां प्रसंगथकी नरकादिक जीवोने विषे कहेछे. मूलः—आइपुढवीसु तीसं, खयउवसमवेयगं च सम्मत्तं ॥ वेमाणिय देवाणं पणिंदितिरियाण एमेव ॥ ९७५ ॥ सेसाण नारयाणं, तिरयछीणंच तिविह देवाणं ॥ नहिहु खइयं सम्मं, अन्नेसिं चेव जीवाणं ॥ ९७६ ॥ अर्थः— आदिके० पहेली रत्नप्रनादिक त्रण पृथ्वीमां क्षायिक, उपशमिक, अने वेदक ए त्रण सम्यक्त्व थाय. जे शुद्धसम्यक्त्व पुंजना पुजलने वेदे ते वेदक सम्यक्त्व जाणवो. अने तेनेज क्षायोपशमिक कहिये, अने उपशमिक क्षायिके उपशमिकत्वने विषे पुजल वेदवानो सर्वथा अनावछे. तेमाटे वली त्रण पृथ्वीने विषे क्षायिक, उपशमिक अने क्षायोपशमिक ए त्रणज संनवे. एनो संनव जेरीते होय तेरीते कहेछे.

जे नारकी अनादि मिथ्यादृष्टि प्रथम सम्यक्त्व पामे तेने अंतकरण काले अंतरमुहूर्त्तसुधी उपशमिक सम्यक्त्व होय. पछी सम्यक्त्वना शुद्धपुंज संबंधी पुजल वेदतो छतो क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पामे. अथवा मनुष्य तिर्यंच क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि नारकीमां उपजे तेने पारिनाविक क्षायोपशमिकना लानथकी विराधित सम्यक्दृष्टि, छठी नरक पृथ्वीये ग्रहण करेला सम्यक्त्वे जाय. ए सिद्धांतिकनो मतछे.

अने कर्मग्रंथिकनो तो आवीरीते मत छे के, वैमानिक देव थकी अनेरा मनुष्य तिर्यंच तेज क्षायोपशमिक सम्यक्त्वे उपजे. परंतु ग्रहण करेला सम्यक्त्वे न उपजे. वली कोइक मनुष्य, नरक योग्य आयुष्य बांधी पछी क्षपकश्रेणी मांमे, ते बद्धायुष्कपणा माटे पुरी करे नही; मात्र दर्शन सप्तक खपावी क्षायिक सम्यक्त्व पामे; ते हवे मनुष्यना आयुष्य त्रूटवाथी मरण पामीने नरकमां उपजे. तेवारे प्रथमनी त्रण नरक पृथ्वीये क्षायिक सम्यक्त्व लाने, ते ताद्भविक मनुष्यनेज होय. मनुष्यना नवमां तेनो प्रारंन होय. जेम नारकीने तेम वैमानिक देवताने अने असंख्यात वर्षना आयुष्य वाला तिर्यंचने पूर्वोक्त त्रण सम्यक्त्व जाणवां.

त्यां वैमानिक देवोने उपशमिक अने क्षायिक ते नारकीनीपरे क्षायोपशमिक अने उपशमिक सम्यक्त्व पछी थाय. अथवा तिर्यंच मनुष्य क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि थकां जो वैमानिकमां उपजे तो तेने पारनविक होय. मनुष्य बे प्रकारनां, एक संख्यातावर्षनां आयुष्यवालां अने बीजां असंख्यातावर्षनां आयुष्यवा

लो, तेमां संख्यातावर्षने आयुष्ये मनुष्यने उपशमिक नामा प्रथम सम्यक्त्वने लाने होय. अथवा उपशम श्रेणीये होय. पछी क्षयोपशमिक ताद्भविक होय.

क्षायोपशमिक सम्यकदृष्टि देवता मनुष्यमां उपजे; तेवारे पारनविक क्षायोपशम होय. क्षपकश्रेणिये ताद्भविक क्षायिक होय. अने देवता तथा नारकी क्षायिकसम्यकदृष्टि मनुष्यमां उपजे, तेवारे पारनविक क्षायक होय, अने असंख्याता वर्ष आयुष्क मनुष्यने उपशमिक क्षायक, ते देव तथा नारकीनी परे जाणवुं. अने क्षायोपशमिक तेवार पछी होय. ते ताद्भविक जाणवो. अने तिर्यंच तथा मनुष्य क्षायोपशमिक सम्यक् सहित वैमानिकमां जाय पण अन्य स्थानके न जाय. अने जेणे मिथ्यादृष्टि थकी आयुष्य बांध्युंछे; पछी क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पाम्यो ते एमांज उपजे, तेवारे अवश्य मरण समये मिथ्यात्वे जइने उपजे. पारनाविक क्षायोपशमिक एमां न उपजे. अने क्षायोपशमे सहित देवतामां उपजे. ए कार्मग्रंथिकनुं मत कह्युं.

सिद्धांतिक मते क्षायोपशम सहित पूर्वबद्धायुष्क थकाज क्षायोपशमिक लीधे एमां उपजे; तेवारे पारनविक पण लाने. असंख्यातावर्षायुष्क तिर्यंचने त्रणे सम्यक्त्व होय. असंख्याता वर्षायुष्क मनुष्यनीपरे जाणवो. सेसाणंके० शेष त्रण पृथ्वी विना बाकीना नारकीनो असंख्यातावर्षायुष्क संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंचने तेनी स्त्रीने, तथा तिविहके० त्रण प्रकारना देव जे नवनपति व्यंतर तथा ज्योतषी तेने नछिके० नहोय, क्षायिक सम्यक्त्व एने ताद्भविक नहोय. केमके संख्येय वर्षायुष्क मनुष्यनेज तेनो प्रारंन होय; अने पारनविकपणे नहोय. क्षायक सम्यक्दृष्टि एमां नउपजे. पण उपशमिक क्षायोपशमिक उपजे. अन्य जीवोने सम्यक्त्व नहोय.

एकेंद्रियादिक चार तथा असंज्ञी पंचेंद्री एमने ताद्भविक अने पारनविक ए बे मांहेलो कोइ न होय; अने सास्वादन सम्यक्त्व वली बादर पृथ्वी, आप, वनस्पति, बेंद्रि, तेंद्रि, चउरेंद्रि, असंज्ञीपंचेंद्रि, संज्ञीपंचेंद्रि एटलाने अपर्याप्तावस्थाये पारनविक होय. पर्याप्ति संज्ञीपंचेंद्रिने ताद्नविक पण लाने. सूक्ष्मएकेंद्रिय अने बादर तेज, वायुमांहे सम्यक्त्वनो लेश जेने छे; तेने उपजवानो अनावछे. तेमाटे एमां सास्वादन न थाय. ए कर्मग्रंथिकनुं मत जाणवुं. अने सिद्धांतिक मतेतो एकेंद्रिय सर्वमांहे सम्यक्त्व कहे नही. जे कारणे श्रीपन्नवणा उपांगमां कह्युंछे. पुढविकाईयाणंपुछागोयमा पुढविकाइया नो समदिछिनो सम्मामिछा दिछिमिछा दिछिविएवं जाववणस्सइकाइया इतिएकविंशति गाथार्थ. ॥ ए७५ ॥ ए७६ ॥

अवतरणः– कुल कोडीणं संखा जीवाणंति एटले जीवोनी कुलकोटीनी संख्या तेनुं एकशोने पचासमुं द्वार कहेछेः मूलः– बारस सत्तय तिन्निय, सत्तय कुलकोडिसय सहस्साइं ॥ नेया पुढवि दगा गिणि, वाऊणं चेव परिसंखा॥९७७॥ कुलकोडिसयसहस्सा, सत्त छय नवय अठ्वीसंच ॥ बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय हरियकायाणं ॥ ९७८ ॥ अर्थः– बारलाख कुलकोटी पृथ्वीकायमांहे जाणवी. सातलाख कुलकोटी अपकायमांहे जाणवी. एरीते सतसहस्रलाख सर्वत्र जोडीये. तेवारे त्रणलाख तेउकायमांहे. सातलाख वायुकायमांहे, कुलकोडीना सतसहस्र लाख ते अनुक्रमे सातलाख बेंद्रियमांहे, आठलाख तेंद्रियमांहे, नवलाख चउरेंद्रि मांहे अने अठावीस लाख सर्व वनस्पतिकायमांहे जाणवी. ॥ ९७७ ॥ ९७८ ॥

मूलः– अद्धत्तेरस बारस, दस दस नवचेव सय सहस्साइं ॥ जलचर पक्खि चउप्पय, उर भुय सप्पाण परिसंखा ॥९७९॥ अर्थः–साडाबारलाख कुल कोडी जलचरमां, बारलाख कोडी खेचर पक्षीने विषे जाणवी, दशलाख चतुष्पद एटले हस्ति, तथा घोडा प्रमुखमांहे जाणवी, दशलाख उरपरिसर्प्प ते परड कालंदर प्रमुखमां जाणवी तथा नवलाख भुजपरिसर्प्प गोह नोलियादिक मांहे जाणवी. ए रीते कुलकोडी लाख ए बे बोल सर्वत्र केहेवा. ॥ ९७९ ॥

मूलः– छवीसा पणवीसा, सुर नेरइयाण सयसहस्साइं ॥ बारसयसयसहस्सा, कुलकोडीणं मणुस्साणं ॥९८०॥ अर्थः– छवीसलाख देवतामां, पचीसलाख नारकीमां अने बारलाख कुलकोडी मनुष्यमां जाणवी. ॥ ९८० ॥

हवे ए सर्वमली जेटला कुलकोडीना लाख थाय ते कहेछे. मूलः– एगाकोडाकोडी, सत्ताणउई नवेसयसहस्सा ॥ पन्नासं च सहस्सा, कुलकोडीणं मुणेयव्वा ॥ ॥ ९८१ ॥ अर्थः– एककोडाकोडी सत्ताणुं सतसहस्र पचासहजार. सर्व मली एटली कुलकोडी थाय. एकक्रोडने साडीसताणुंलाख कुलकोडीनी संख्या थाय. इतिगाथा पंचकार्थ. ॥ ९८१ ॥

अवतरणः– हवे जोणिलक्खाचुलसीइत्ति एटले चोरासी लाख योनीनुं एकशो एकावनमुं द्वार कहेछे. मूलः– पुढविदग अगणि मारुअ, एक्केक्क सत्तजोणि लक्खाउ.॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणिलक्खाउ ॥ ९८२ ॥ अर्थः– पृथ्वी, आप, तेज, वायु ए चारमांहे एकेकने सात सात लाख योनिछे. अने प्रत्येक वनस्पतिमांहे दशलाख योनिछे. अनंत एटले साधारण वनस्पतिमांहे चउदलाख योनिछे.

मूलः– विगलिंदिएसु दोदो, चउरो चउरोय नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो,

चउदसलरकाउ मणुएसुं ॥ ए७३ ॥ अर्थः– विकलेंड्रिय जे बेंड्रियादिक तेमांहे प्र त्येके बे बे लाख योनिछे. अने चारलाख नारकीने, तथा चारलाख देवोने, तथा शेष तिर्यंचमांहे चारलाख योनी जाणवी. वली मनुष्यनेविषे चउदलाख योनी जा णवी. योनी शब्दनो ए अर्थछे के, यु मिश्रणे यु धातु मिश्रणे अर्थे; तेथी एवो अर्थ थायछेके, जीव नवांतरे संक्रमे तेवारे तेजस कार्मण शरीरवंत थको औदारि क शरीर योग्य पुजलनी साथे मिश्र थाय. ते योनी कहिये. ॥ ए७३ ॥

इहां कोई कहेशे के अनंताजीवोने उत्पत्तिस्थानक पण अनंता जोइये. अथ वा जीवोने सामान्य आधारनूत जे असंख्यात प्रदेशात्मक लोकछे; तो असंख्याता उत्पत्ति स्थानक थाय, एमपण न कहेवुं. केमके केवलीनगवान केवलदृष्टे करी घणा स्थानक पण वर्णादिक धर्मे सरखा जाणी तेने एक योनी कहेछे. ते कारण माटे अनंताजीवोनी पण चउरासी लाखज योनी जाणवी. तेज गाथाये करी कहेछे.

मूलः– समवन्नाइ समेया, बहवोविय जोणि लरक नेयाउ ॥ सामन्ना घिप्पंति हु, एक्कग जोणीय गहणेण ॥ ए७४ ॥ अर्थः– समके० सरखे वर्णे प्रमुखेकरी एटले वर्ण, गंध, रस स्पर्शादिकना समपणाथकी समेयाके० सहित एवा बहवोवि के० घणाजे योनीना लाख तेना नेदथकी सामान्यपणे घिप्पंतिके० घणा सरिखे वर्णादिके पण एक योनीनुं ग्रहण करी लइये, योनी ते उत्पत्तिस्थानक समजवुं. जेम वृश्चिकादिकने गोवर; तेम ए जाणवुं. अने एक योनीनेविषे घणां कुल होय. ए वा विशेषपणाने लीधे योनी अने कुल ए बे जूदां जाणवां. इति गाथात्रयार्थः.ए७४

अवतरणः– तिक्कालाई वितञ्च विवरणंति एटले त्रैकालि इत्यादिक वृत्तिना अर्थनो विवरोकरवो एवुं एकशोने बावनमुं द्वार कहेछे. मूलः–स्रग्धरा वृत्तं. त्रैकाल्यं द्रव्य षट्कंनवपदसहितं जीवषट्कायलेश्या, पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचा रित्रनेदाः ॥ इत्येते मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः, प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति चमतिमान् यः सवै शुद्धदृष्टिः ॥ए७५॥ अर्थः–त्रणकाल ते अतीतादिक, द्रव्यषट्क ते धर्मास्तिकायादिक, नवपदते जीवादिक नवतत्व करी सहित, एकेंड्रिया दिक पांच अनिंड्रिय नेला करवा थकी जीव षट्क थाय, एमज पृथ्व्यादिक काय छ, लेश्या ते कृष्णादिक छ, पांच अनेरा धर्मास्तिकायादिक अस्तिकाय जाणवा. वली व्रतते प्राणातिपात विरमणादिक पांच, समिति ते इर्यादिक पांच, गतिते नारकादि क चार, अने तेनी साथे सिद्धमोक्ष नेलिये तेवारे पांच थाय, ज्ञान ते मत्यादिक पांच, चारित्र ते सामायिकादिक पांच, ए प्रत्येके पांच पांच नेद इति. एणे सहित

करी, पूर्वोक्त त्रणकालादिक पदार्थ मोक्षनुं मूल ते त्रिभुवन के० त्रणलोकने म हित के० पूजनिक एवा श्रीअरिहंत तीर्थंकर ते केवाछे? स्वनाविक कर्मक्षय सुरकृ त एवा अतिशये आठप्रातिहार्ये विराजमान, एवा ईशैः के० आश्चर्यवंते कह्युंछे. ते कारणे एने प्रत्येति के० स्वरूपथकी जाणे, जाणीने पछी श्रद्धधातिके० सद्दहे. पो ताना आत्माने रुचावे. तेनुं स्पृशतिके० सम्यक्प्रकारे सेवन करे, ते जीव स्फुटके० प्रगटपणे शुद्धदृष्टि मिथ्यात्वमूलथी रहित पणाथकी शुद्ध सम्यक्त्ववंत जाणवो.

हवे एज सूत्रकार वखाणे छे. मूलः— एयस्स विवरण मिणं, तिक्काल मईय व ट्टमाणेहिं ॥ होइ नविस्स जुएहिं, दव्वछक्कं पुणो एयं ॥ ए७६ ॥ अर्थः— ए वृत्तिनुं विवरणके० व्याख्यान करवुं; ते आवी रीते, त्रणकाल, तेमां अतीत जे थई गयो, वर्त्तते वर्त्तमान, होइके० थाय, अने त्रीजो नविष्य ते थाशे, तेणेकरी युक्त ए काल त्रिक अने द्रव्यनुं षट्क. वली तेज हवे आगली गाथाये कहेछे. ॥ ए७६ ॥

मूलः— धम्मत्थिकायदव्वं, दव्वमह म्मत्थिकायनामंच ॥ आगास काल पोग्गल, जीवादव्वस्सरूवंच ॥ ए७७ ॥ अर्थः— जीव अने पुद्गल जे पोतानी गतिक्रिया प रिणीत छे, तेने तेज स्वनाव धरे, तेथी धर्मकहिये. अने अस्ति शब्दे प्रदेश, तेनो का य जे संघात, ते धर्मास्तिकाय द्रव्य कहिये; तेमज ए जीव तथा अजीवने विपरी त जे स्थिति क्रियापरिणीत द्रव्य छे, तेने स्थिति आपनार जे द्रव्य ते अधर्मास्ति काय कहिये. त्रीजुं, समस्त लोकालोक व्यापी अनंत प्रदेशात्मक अमूर्त्तद्रव्यविशे ष आकाश द्रव्य जाणवुं. चोथुं, समस्त वस्तुना समूहनुं कलन के० मान जेथ की थायछे, ते कालद्रव्य जाणवुं. अथवा कलिये समय आवलिका मुहूर्त्तादिक प्रकारे करी सर्व सचेतन अने अचेतन वस्तु जेणेकरीने जाणिये ते काल कहिये. पांचमुं जे पूराय अने गलि जाय ते पुद्गल जाणवुं. छट्ठो, जे जीव्या, जीवेछे अने जीवशे; ते जीव जाणवो. तेज अस्तिकाय ते जीवास्तिकाय जाणवो. ॥ ए७७ ॥

इहां ए नावछे के, जो धर्मास्तिकाय द्रव्य न होय तो; जीव पुद्गलने गतिपण नहोय, अने जो अधर्मास्तिकाय द्रव्य न होय तो जीव पुद्गलने स्थितिपण न होय तथा जो आकाशास्तिकाय द्रव्य न होय तो, जीवादिपदार्थोने आधार पण न होय. वली जो कालद्रव्य न होयतो बकुल, अशोक चंपकादिकने फूल फल पण न होय; तथा जो पुद्गलद्रव्य न होय तो घटपटादिकनी उत्पत्तिपण न होय, अने जो जीव द्रव्य न होय तो प्राणी प्राणिमात्रप्रत्ये चैतन्यपणुं न होय. ए छ द्रव्यनुं स्वरूप कह्युं.

हवे नवपदनुं स्वरूप कहेछे. मूलः— जीवाजीवा पुन्नं पावासव संवरोय निज्जर

णा ॥ बंधो मुक्को इमाइ, नवपयाइं जिणमयंमि ॥ ७७७ ॥ अर्थः— जे सुखदुःख ने जाणे ते जीव; बीजुं तेथकी विपरीत ते धर्मास्तिकायादिक अजीव जाणवो. त्रीजुं शुभप्रकृतिरूप कर्मते पुण्य, चोथुं तेथकी विपरीत कर्म ते पाप जाणवुं. पांचमुं जेणेकरी शुभाशुभ कर्मरूप जल, ते जीवरूप सरोवरमां प्राप्त थाय; ते आश्रव जाणवो. छठुं गुप्त्यादिके करी ते पूर्वोक्त आश्रवनुं जे रुंधन करवुं ते संवर कहिये; सातमुं विपाके अथवा तप प्रमुखेकरी, देशथकी जे कर्मोने खपाविये, ते निर्जरा जाणवुं. आठमुं कर्मोने जीवनीसाथे एकमेक करिये ते बंध जाणवुं. नवमुं समस्त कर्मोनो क्षयकरीने ज्यां जीव पोताना स्वरूपमां स्थित थाय, ते मोक्ष कहिये. एरीते ए नवपद श्रीजिनशासनने विषे कह्यांछे.

इहां आश्रव, बंध, पुण्य अने पाप ए चार ते मुख्य संसारनां कारणछे, तेने हेय पणे जाणवां. अने संवर, तथा निर्जरा एबेत्ते मुख्य मोक्षनां कारणछे अने मोक्ष ते मुख्यपणे साध्यछे, तेमाटे ए त्रण उपादेय जाणवां.

एम शिष्यने हेय उपादेय जणाववाने अर्थे नवपदार्थ कह्या. अन्यथा संक्षेप अपेक्षायेतो जीवाजीवने विषे पुण्यपापादिकनो अंतर भाव संभवे. द्वित्व संख्याये श्री स्थानांगने विषे कह्युंछे. "उक्तंच जंहुंति वणं लोए, तं सव्वं दुप्पडोयारं" तंजहाजीवाचेव अजीवाचेवत्ति एना विस्तारे उत्तरोत्तर भेद करे तो अनंता थाय.

हवे जीव अजीवने विषे पुण्य पापनुं शी रीते अंतरभवे? ते कहेछे. पुण्यपाप रूप कर्मना जे बंधछे ते पुद्गल परिणामछे. अने पुद्गल अजीवछे ने आश्रव मिथ्या दर्शनरूप ते जीवनुं परिणामछे. वली संवरपण आश्रव निरोध लक्षण देश अने सर्वना भेदेकरी आत्मानुं परिणाम छे. निर्जरा ते कर्मनो परिसाट एटले जे जीव पोतानी शक्तियेकरी कर्म दूर करे ते जाणवुं. तथा मोक्षपण समस्त कर्मरहित, तेपण आत्मानेज जाणवुं. वली अन्यत्र स्थानके पुण्य अने पाप ए बे बंधने विषे अंतर भवेछे तेवारे सात पदार्थ थायछे. ॥ ७७७ ॥

हवे जीव षट्क कहेछे. मूलः— जीव छक्कं इग बिति चउ पंचिंदिय अणिंदियसरूवं छकाया पुढविजला निल वाउ वणस्सइ तसेहिं ॥ ७७७ ॥ अर्थः— एकेंद्रियादिक पांच छट्ठो अनेंद्रियजे समस्त कर्मेकरी रहित, वली शरीर अने इंद्रियादिक जेने नथी एवो सिद्धरूप जाणवो; ए जीव षट्क कह्यो. अने छकाय ते पृथ्वीकाय आदि देइने त्रसकाय पर्यंत थायछे ते जाणवी. ॥ ७७७ ॥

हवे लेश्या छ कहेछे. मूलः— छल्लेसाउ कन्हा, नीला काऊय तेयपम्हसिया ॥

कालविहीणं दवं, ठकं इह अत्थिकायाउ॥ ५५० ॥ अर्थः—जेणेकरी जीवने अने कर्मने मांहोमांहे आश्लेषाय तेने लेश्या कहिये; जेम स्फटिकने कृष्णादिक द्रव्य साथें जोडिये तो तेवोज वर्ण देखाय, तेम जीवने पण जाणवुं. अन्य वली कृष्णा दिक द्रव्यने योगांतर्गत द्रव्य कहेछे. एक वली समस्त कर्मनी प्रकृतिनुं निस्पंदरूप क हेछे. वली कोइकतोकार्मण शरीरनी परें जूदा आठकर्मथकी कार्मण वर्गणा थकी नी पन्या.कृष्णादिक द्रव्य, तेने लेश्या शब्दे कहेछे. इहां तत्व केवली जाणे. इहां जीवने कृष्ण परिणामे कृष्णलेश्या जाणवी. एम बीजी नीलादिक लेश्याउ पण जाणवी.

कालविहीणंके० एक कालद्रव्येकरी रहित जे द्रव्यनो षट्क ते इहां अस्तिका य जाणवो. एटले ठ द्रव्यने एक कालद्रव्य रहित करिये, तेवारे पंचास्तिकाय थाय; अने एक कालद्रव्यने अस्तिकाय न कहिये. केमके प्रदेशनो समूह कालनेविषे नथी, जे कारणे कालनो अतीत समयते विनिष्ट, अने अनागत समय ते अनु त्पन्नपणे करीने प्रज्ञापक समय एक होय, एम कहेशोतो शिष्य कहेछे के; आव ली, मुहूर्त्त दिवसादिकनी प्ररूपणा ते मिथ्या थाशे अने आवलिका कहेशो तो असंख्याते समये एक आवलिका थायछे; तेवारे घणा प्रदेशनी उत्पत्ति थाशे तेनो उत्तर आमछेके, यद्यपि ए वात सत्यछे, तथापि आवलिकादिक जे छे, ते व्यवहार नय आश्री कह्याछे पण निश्चे नय नथाय. ॥ ५५० ॥

हवे व्रत कहेछे. मूलः— पाणिवह मुसावाए, अदत्त मेहुण परिग्गहेहिं इमं ॥ पंचवयाइं भणिया पंचसमिईउ साहेमि ॥ ५५१ ॥ अर्थः— एक प्राणातिपात बी जुं मृषावाद, त्रीजुं अदत्तादान, चोथुं मैथुन; पांचमुं परिग्रह. ए पांचेने विरमण रूपे ले वां, ए पांच महाव्रत इहां श्री जिनशासनने विषे कह्यांछे. हवे पांच समिति कहुंछुं.

मूलः— इरिया भासा एसण, गहण परिठवण नामिया ताउ ॥ पंच गईउ नारय, तिरिय नर सुर सिद्धिनामाउ॥ ५५२ ॥ अर्थः—ईर्याभाषादिक पांच समिति जाणवी. ताउ के० तेनुं स्वरूप व्रत तथा समितिनुं स्वरूप ते पेहेलां पांसठ, छासठ तथा शडसठमा द्वारमां सविस्तरपणे वखाण्युंछे तेथी इहां नाममात्र कह्युं, अने पांच, जे नारकादिक त्यांगम्यते एटले पोताना कर्मरूपदोरडे खेचीने, प्राणीने जे स्थले पमाडिये; ते गति जा णवी. ते एक नारकी संबंधीनी, बीजी तिर्यंच संबंधिनी, त्रीजी मनुष्य संबंधीनी, चो थी देवता संबंधीनी, अने पांचमी ज्यां सर्वकर्मनो क्षय थाय ते सिद्धनी गति जाणवी.

ज्ञान पांच कहेछे. मूलः—नाणाइं पंच मइ सुय उवही मण केवलेहि भणियाइं सामाइय छेय परिहारे सुहुम अहखाय चरणाइं ॥ ५५३ ॥ अर्थः— ज्ञान पांच

तें एक मति, बीजुं श्रुत त्रीजुं अवधि, चोथुं मनपर्यव अने पांचमुं केवलज्ञान तेणे करी नणियाके० कह्याछे चारित्रना भेद ते आवी रीतेछे. प्रथम सामाइयके० समपणु, राग द्वेषना अभावथकी जे समता ते समनावे आयके० जावुंछे ज्यां, ते समाय तेने विषे अथवा तेणेकरी जे निपन्युं ते सामायिक कहिये. अथवा सम जे ज्ञानादिक, तेनो ज्यां आयके० लाभ छे; ते सामायिक कहिये. यद्यपि ए समस्त चारित्र ते सामायिकज कहिये, तथापि छेदादिक विशेषणे विशेषिये; तेवारे नाना पणु भजे, ते इत्वर ने यावत्कथिकना भेदे करी बे प्रकारे थाय.

तेमां इत्वर ते जे थोडा कालसुधी होय. ते भरत ऐरवतादिक दश खेत्रोमां, प्रथम अने छेला तीर्थंकरना तीर्थमां ज्यांसुधी शिष्यने महाव्रतनुं आरोपण कर्युं न होय त्यांसुधी होय. अने यावत्कथिक ते यावज्जीव सुधीहोय. ते भरत ऐरवतना मध्यम बावीश जिनेश्वरना साधुने जाणवी, कारण, तेने उपस्थापना न थाय.

इहां कोइ पूछेजे, इत्वर सामायकनो पण उच्चारतो यावज्जीवसुधी उच्चरेछे, पछी उपस्थापनाने वखते ते छांमेछे. तेवारे केम प्रतिज्ञाभंग न थाय? उत्तर कहेछे. प्रथम कह्युंछे जे समस्त चारित्र, अवशेष सामायिक कहिये. एम जे कोइ चारित्र आगल आगल छे ते विशुद्धरूपछे. तेमाटे पाछल पाछलनुं ते भंग न पामे.

तेम जे पूर्वपर्यायनो छेद करे, अने उपस्थापना महाव्रतनेविषे करे, ते छेदोपस्थापनीय चारित्र बे भेदेछे. एक सातिचार ने बीजुं निरतिचार, तेमां सातिचार ते जे अपराध उपन्याथी मूलगु चारित्र गमावीने नविन व्रत उच्चार कराविये. अने निरतिचारते जे, इत्वर सामायकवंत शिष्यने व्रतनेविषे आरोपण करिये, अथवा तीर्थांतरे संक्रमे. जेम श्री पार्श्वनाथना तीर्थथकी श्रीमहावीरना तीर्थनेविषे आवे तेवारे चतुर्याम धर्मथकी पंचयाम रूप धर्म पडिवजे. तेवारे थाय.

त्रीजुं परिहार विशुद्धि चारित्र बे प्रकारेछे. एक निर्विशमान अने बीजुं निर्विष्ट कायिक. त्यां जे ए चारित्रनो सेवनार ते निर्विशमान. अने जेणे ते चारित्र विशेषे करी सेव्युं ते निर्विष्टकायिक जाणवो.

चोथुं सूक्ष्म लोभांशविशेषरूप संपराय के० कषाय छे जेनेविषे, ते सूक्ष्मसंपराय चारित्र. ते विशुद्ध्मान अने संक्लिशमानना भेदे करी बे प्रकारेछे. अने पांचमुं यथाख्यात चारित्र, ते सर्वोत्तमछे ए पांच चारित्र कह्यां इति गाथानवकार्थः एटले सूत्रनुं वखाण कर्युं. ॥ एए३ ॥

अवतरणः– सड्ढपडिमाउत्ति एटले श्रावकनी प्रतिमानुं एकशोने त्रेपनमुं

द्वार कहेछे. मूलः— दंसण वय सामाइय, पोसह पमिमा अबंभ सच्चित्ते ॥ आरंभपेस उद्दिठ वज्जए समणनूएय ॥ ए७४ ॥ अर्थः— एकदंसणप्रतिमा, बीजी व्रतप्रतिमा, त्रीजी सामायक प्रतिमा, चोथी पौषध प्रतिमा, ते अष्टम्यादिक पर्व दिवसे अनुष्ठानविशेष जाणवी. पांचमी पमिमा के० काउसग्गनुं करवुं. ए पांचनेविषे प्रतिमा अभिग्रह जाणवो. छठी अब्रह्मसेवा ते नियमेकरी करवी. सातमीसचित्त वर्जन प्रतिमा, आठमी कृषिप्रमुख आरंभ वर्जन प्रतिमा. नवमी प्रेष्य ते अनेरा नृत्यादिक पासेथी आरंभ करावववानुं वर्जन करवुं, ते प्रतिमा जाणवी. दशमी उद्दिष्ट एटले श्रावक उद्देसीने जे अशनादिक करवुं. तेनुं वर्जन करवाथी प्रतिमा थाय. अने अग्यारमी प्रतिमामां तो श्रमणनूत एटले साधुवत् साधुनीपरे रहे, ते प्रतिमा जाणवी. इहां सूत्रमांहे दंसण इत्यादिक सर्वपदो आगल प्रतिमा शब्द जोडिये.

यद्यपि श्रीदशाश्रुत स्कंधमां ए प्रतिमाउनो कालमान साक्षात्कारे देखातो नथी. तथापि उपासकदशांगमांहे आणंद श्रावकने अधिकारे साडापांचवर्ष कह्याछे. तेथी तेज कालमान अनुष्ठान विशेषे सहित देखाडेछे. ॥ ए७४ ॥

मूलः— जस्संखा जो पडिमा, तस्संखा तीए हुंति मालावि ॥ कीरंतिसुवि कज्जाउ तासु पुव्वुत्तकिरियाउ ॥ ए७५ ॥ अर्थः— जे संख्याये जे प्रतिमा छे, तेज संख्याये तेनेविषे मास पण तेटलाज होय. जेम प्रथम प्रतिमा एक मासनी, बीजीबेमासनी, त्रीजी त्रणमासनी. एम यावत् अग्यारमी अग्यार मासनी जाणवी. एम ए सर्वे अग्यारे प्रतिमानुं कालमान एकठुं करिये तो बासठ मास थाय. तेम पूर्वोक्त मान जाणवुं. कीरंती सुविकज्जाउके० प्रतिमानेविषे करवी, तेनेविषे ते पूर्वोक्त क्रिया. जेम दर्शन प्रतिमानेविषे दर्शन पालवुं. तथा बीजी व्रत प्रतिमाछे तो त्यां पेहेली प्रतिमानो वीधि जे दर्शनछे; ते दर्शन पण पालवुं. अने व्रत पण पालवां. एरीते पेहेली पहेली प्रतिमानी क्रिया ते पण आगली आगली प्रतिमानेविषे करता जवुं.

एज प्रतिमानुं विशेष अनुष्ठान देखाडे छे. मूलः— पसमाइगुणविसिठं, कुग्गहसंकाइसल्लपरिहीणं ॥ सम्मउदंसण मणहं, दंसण पमिमा हवइ पढमा. ॥ए७६॥ अर्थः— प्रसम शब्दे उपशम अने आदिशब्दथकी संवेद, निर्वेद, अनुकंपा आस्तिक्य लक्षण ए पांच सम्यक्तना गुण, तेणेकरी विशिष्टके० सहित थाय. तेमज कुग्रह जे मावा एवा सम्यक्त्वने विषे जे कदाग्रह तथा शंकादिक पांच अतिचार, तद्रूप सल्यथी परिहीणके० रहित थाय. एवुंजे सम्यक् दर्शन. ते पापरहित जाति योगादिक अपवादे रहित पाले, ते दर्शन प्रतिमा पहेली थाय. ॥ ए७६ ॥

हवे अनुक्रमे बीजी प्रमुख कहेछे. मूलः— बीया णुवयधारी, सामाइ कडोइ होइ तइयाए ॥ होइ चउछी चउदिसि, अठमिमाईसु दिवसेसु ॥ ९९७ ॥ अर्थः— बीजी प्रतिमाने विषे अणुव्रत ते स्थूल, प्राणातिपात विरमणादिक पांच, तथा एनां उपलक्षणथकी त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत. ते पण वध बंधादिक अतिचारे करी रहित, अपवादे वर्जित, सम्यक्प्रकारे पेहेली प्रतिमामां ग्रहण करेला सम्यक्त्व सहित धारण करे; ते बीजी प्रतिमा जाणवी.

सामायिक जे सावद्ययोग वर्जन अने निरवद्ययोग सेवनरूप पौषधविना दर्शन तथा व्रत सहित छतो सदासर्वदा उन्नयकाल सामायिकनो करनार ते, त्रीजी प्रतिमानेविषे थाय. होइचउछी के० चोथी प्रतिमा थाय. चतुर्दश अष्टमी प्रमुख तिथिना दिवसोनेविषे पोसह करे. तेना प्रकार आगली गाथाये कहेछे. ॥९९७ ॥

मूलः—पोसह चउव्विहं पिय पडिपुन्नं सम्म सोउ अणुपाले ॥ बंधाई अइयारे, पयत्त उ वज्जइ इमासु ॥९९८॥ अर्थः—पोसह चार प्रकारनांछे. एक आहारवर्जनरूप पोसह, बीजुं शरीरसत्कारवर्जनरूप पोसह, त्रीजुं अब्रह्मसेवावर्जनरूप, अने चोथुं सावद्य व्यापारपरिवर्जनरूप. ए चार पोसह ते परिपूर्ण सम्यक्प्रकारे पाले. तु शब्द अवधारणेछे. एटले एरीते पालण करेछे. ते वध बंधादिक सात अतिचार अने पांच सम्यक्ना अतिचार; ते प्रयत्न एटले उद्यमेकरी आ चारने विषे वर्जे. ॥ ९९८ ॥

मूलः— सम्ममणुव्वय गुणवय सिरकावयवंथिरोय नाणीयं ॥ अठमि चउद्दसीसुं पडिमंठा एगराईयं॥९९९॥अर्थः—एक सम्यक्त्व, बीजा अणुव्रत, गुणव्रत, ने शिक्षाव्रत वंत थको तथा उपनाउपसर्गे पण स्थिर शब्दे, अविचल सत्व वंतहोय. वली ज्ञानी होय प्रतिमाना कल्पानो जाण होय ते अष्टमि चतुर्दशिने विषे प्रतिमां काउसग्गे रहे, एकरात्री दिवशें पोसह लेइने रात्रे शून्य गृहे चतुःपथादिकें प्रतिमाए रहे.

मूलः— असिणाण वियडनोई, मउलियडो दिवसबंनयारीयं ॥ रत्तिं परिमाणकडो, पडिमावज्जेसु दिवसेसु ।१०००॥अर्थः—अस्नान एटले स्नाननुं परिवर्जन करनारो, अने विकटनोजी एटले दिवसे प्रकाशयुक्त स्थलने विषे नोजन करेछे ते. एमां पूर्वे रात्री नोजन विषे नियम कहेलो न हतो, ते सारु आ रीतें कह्युं. मउलियडो त्ति एटले अबद्ध परिधान कच्छ एवो अर्थ. तेमज दिवसनेविषे ब्रह्मचारी एवो जेनो स्वनाव ते दिवस ब्रह्मचारी. ते रात्रीने विषे रति करेछे. परिमाण के० स्त्रीउंना अने तेउंना नोगनुं जेणे एक किंवा बे वखत एवुं प्रमाण करेलुंछे, ते परिमाणकृत जाणवुं. हवे तेनो काल कहेछे. पडिमा वज्जेसुदिवसेसु के०काउसग्ग रहित अ

ने पर्वादिक रहित एवा दिवसोने विषे रति करे. ते चोथी पोसह पडिमा कही.

मूलः— जायइ पडिमाइठिउ, तिलोयपुज्जे जिणे जियकसाए ॥ नियदोसपच्च णीयं, अन्नं वापंच जामासा ॥ १ ॥ अर्थः— हवे पांचमी काउसग्ग प्रतिमा कहेछे. ए प्रतिमाने विषे स्थित थको काउस्सगमां, त्रणभुवनना पूज्य वली जितकषाय एवा जिनेश्वरनुं चिंतन करे. अथवा निजदोष एटले जे पोताना काम क्रोधादिक दोष छे तेना प्रत्यनिक एटले प्रतिपक्षीभूत, एवा जे क्षमाप्रमुख तेने ध्यावे, एम पांच मास सुधी करे तेवारे. ते पांचमि प्रतिमा थाय. ॥ १ ॥

मूलः— सिंगार कहविभूसुक्करिसं इत्थीकहंच वज्जितो ॥ वज्जइ अबंभमेगं, तउय छठाइ छम्मासे ॥ २ ॥ अर्थः— छठी ब्रह्मचर्यप्रतिमा कहेछे. शृंगारनी कथा अने विभूषानो तथा स्नान, विलेपन धूप प्रमुखनुं उत्कर्ष एटले अधिकपणुं वर्जे. तथा स्त्रीनी कथा ते आवीरीते के, स्त्री एकली होय, तेनी साथे सराग वातो करवी; तेपण वर्जवुं, एक अब्रह्ममैथुन ते वर्जे. प्रथम तो दिवस वर्जिने, रात्रे स्त्री सेवननुं प्रमाण कह्युं हतुं; तेपण इहां पांचमी, पछी छठी प्रतिमाने विषे छमहीना सुधी त्याग कर्युं. तथा कामकथा चित्तविकारनी करनार, तेनो पण इहां प्रतिषेध कर्यो. एम जाणवुं. ए छ मासनी छठी प्रतिमा कही. ॥ २ ॥

सातमी प्रतिमा कहेछे. मूलः— सत्तमिसत्तउमासे, नवि आहारइ सचित्त माहारं ॥ जंजं हेठिल्लाणं, तंतो चरिमाणसव्वंपि ॥ ३ ॥ अर्थः— सातमी प्रतिमा, सातमाससुधी सचित्त आहारने आहारेनहीं एटले सचित्त वस्तुनुं भोजन करे नहीं. अने जंजंहेठिल्लाणंके० जे जे पाछली पूर्वोक्त प्रतिमानुं अनुष्टान, तेते आगले आगले सर्व जाणवुं. एटले आगली प्रतिमानी क्रिया पण करतो रहे. ॥ ३ ॥

आठमी नवमी प्रतिमा कहेछे. मूलः— आरंभ सयं करणं, अठमिआ अठमास वज्जेइ ॥ नवमा नवमासे पुण, पेसारंभेवि वज्जेइ ॥४॥ अर्थः— आठमी प्रतिमाये आठमास सुधी पोते आरंभनुं करवुं वर्जे. इहां शिष्यपूछेछे के, आरंभने करण करावणे सरखो दोषछे. माटे करावणनो दोष तेने थाय. तेने उत्तर कहेछे के; ए वात सत्यछे, तथापि करवा करतां करावावामां अल्प दोषछे; माटे थोडीपण आरंभनी निवृत्ति ते भलीज जाणवी. जेम महोटी व्याधि थइ छतां तेमां किंचित् मात्र पण उपशमे तेवारे सुख थाय छे; तेम इहां पण जाणवुं. तथा नवमी प्रतिमाये पहेलो घरनो कारभार बधो पुत्रादिकोने स्वाधिन करी, नवमहीना सुधी प्रेष्य दासादिकनो करेलो आरंभ पण वर्जे. दासादिक पामीने पण आरंभ करावे नहिं, इतिभाव.॥४॥

मूलः— दसमा दसमासे पुण, उद्दिठ्ठकयं तु जत्तुनविजुंजं ॥ सो होइयखुरु मुंम्गो, सिहिंलिं वा धारए कोइ ॥ ५ ॥ अर्थः— दशमी प्रतिमाये उद्दिष्टकृत एटले तेना उद्देशी जे जक्तादिक कस्या होय तेपण जमे नही. तो शेष आरंजनुं वर्जन करवुं तेमां शुं केवुं? वली ते पुरुष केवो होय ते दशम प्रतिमा प्रतिपन्न जे होय ते कोई तो खुरेकरी मुंम्ग करावे अथवा कोइ तो लगारेक चोटली धारण करेछे.॥५॥

मूलः— जं निहिय मञ्चजायं; पुञ्चंत सुयाण नवरि सोतञ्च ॥ जइ जाणइ तो सोहइ अह नवि तो बेइ नवियाणे ॥ ६ ॥ अर्थः— वली जे हिरण्यादिकने निहितके० जूमिकादिकमां राख्युं होय. एवो जे अर्थजात एटले द्रव्यनो समूह, तेना विषे तेना सुयाण के० सुत जे छोकरा प्रमुख पूछे, तो तेने ते दशमी प्रतिमानो धरनार जो जाणेके अमुक जगाये द्रव्यछे. तो कहे. केमके जो जाणतो थको पण कहे नही तो, सुतादिकनी वृत्तिछेदादिक दोष थाय. पण जो न जाणतो होयतो कहेके हुं जाणतो नथी. ए प्रतिमा दशमाससुधीनी जाणवी. ॥ ६ ॥

हवे अग्यारमी प्रतिमा कहेछे. मूलः— खुरमुंम्गोलोएणय, रयहरण पडिग्गहंच गिण्हिता ॥ समणो हूउ विहरइ, मासे इक्कारसुक्कोसं ॥ ७ ॥ अर्थः— क्षुरे एटले अस्त्रेकरी मुंमित ते क्षुरमुंम्ति अथवा हस्तेकरीने अने लोचेकरी मुंम्ग थइने रजोहरण तथा पात्रो तेना उपलक्षण थकी समस्त साधुना उपकरण लेइने श्रमणजूत एटले यतिनीपरे समस्त अनुष्ठान करतो, समिति गुप्त्यादिक पालतो, भिक्षाने अर्थे गृह कुलादिकने विषे जइने एवुं कहेके प्रतिमा प्रतिपन्न श्रावकने भिक्षा आपो. एवुं कहे त्यां फरताने कोइपूछे के तुं कोणछे? त्यारे ते कहेके, हुं श्रमणोपासक प्रतिमा प्रतिपन्न छुं. एरीते ग्राम नगरादिकने विषे, अग्यारमी प्रतिमा प्रतिपन्न ते अग्यारमास उत्कृष्टे विचरे विहारक्रम मासकल्पे करे. ए सर्वे प्रतिमाउनुं उत्कृष्ट कालमान कह्युं; अने जघन्यंतो प्रत्येक प्रतिमा अंतरमुहूर्त्त कालमान जाणवी. ते मरणे अथवा प्रवर्जितने थाय. अन्यथा नथाय. ॥ ७ ॥

मूलः— ममकारे वोछिन्ने, वच्चइ सन्नाइपल्लिदठ्ठुं जे ॥ तञ्चवि साहुव जहा, गिण्हे फासुंतु आहारं ॥ ८ ॥ अर्थः— हजीसुधी ममकारनो विछेद थयोनथी, स्वजनादिक उपर ममत्वजावछे. तेथी ते कदापि स्वज्ञातिके० पोतानां स्वजनादिक देखवा सारु वच्चइके० जायतो अने जे शब्द छे ते पादपूरणने सारुंछे. तञ्चविके० त्यांपण स्वजनादिकने आग्रहे ग्रहचिंता करे नहीं; तेमज स्वजनना स्नेहेकरी अनेषणीय आहार आग्रहपूर्वक जो आपे तोपण ते लिये नही. पण केवलीतथा यतिनीपरे शुद्ध आहार लिये. ८

इहां आवश्यकनी चूर्णिमां आगली सात प्रतिमामांहे विशेषता कहिछे ; ते आ वीरीतेछे. राईभत्त परिन्नाएत्ति पंचमी, सचित्ताहारपरिन्नाएत्ति छठी, दिया बंभयारि राउपरिमाणकडेत्ति सत्तमी, दियाराउविबंभयारी असिणाणएवो सिही केस मंस नह रोमणहेत्ति अठमी, सारंभ परिन्नाएत्ति नवमी, पसारंभ परिन्नाएत्ति दसमी, उ दिठभत्त समण भूएत्ति एकादशमी, ॥ ८ ॥ इतिगाथापंचदशकार्थ.

अवतरणः– धन्नाणं मबीयत्तत्ति एटले धान्यना अबीजपणानुं एकशो ने चो पनमुं द्वार कहेछे. मूलः–जव जवजव गोहुम सालि वीहिधन्नाण कोठयाईसु ॥ खि विकणं पिहियाणं, लित्ताणं मुद्दियाणंच ॥ ए ॥ अर्थः–एक यव, बीजा यवयव, ते ए यवनोज विशेष जे गोधूम, त्रीजो साली कलमसाली प्रमुख, चोथुं व्रिहि ते सामान्य चोखा, एटला जातना धान्यने कोठप्रमुखमांहे नाखीने, ढांकणाथी ढां की छाण प्रमुखथी लेपनकरी, उपरांत माटी साथे मुद्रि मूक्या होय तो तेनी.॥ए॥

मूलः–उक्कोसेणठिइहोइ तिन्निवरसाणि तयणुएएसिं॥विद्धंसिज्जइजोणी,तत्तोजायइ अबीयत्तं ॥१०॥ अर्थः–उत्कृष्टि स्थिति त्रणवर्षनी थाय. तेवार पछी अंकुर उपज वानुं कारण विद्धंसिज्जइके० विध्वंसथाय,विणसीजाय,पछी तेमां अबीजपणुं थइजाय.

मूलः–तिल मुंग्ग मसूर कलाय मास चवलय कुलञ्च तुबरीणं ॥ तह कसिणचण यवल्लाण कोठयाई सुखिविकणं ॥११॥ अर्थः–तिल, मग, पंचवलक प्रसिद्धछे, मसू र ते वाटलाकारे धान्यविशेष, अने कोइक चनकिका कहेछे, कलायते त्रिपुटनामा धान्यनो विशेष कलायरो, अथवा चवला ते प्रसिद्धछे. कुलञ्चते, चोलाने आका रे ते चिपञ्च लीसा थायछे. तुंबरी ते तुअर, कसिण, चणयके० सिखरे रहित वाट ला चणा जाणवा. वाल प्रसिद्धछे. एटली जातिनां धान्यने कोठी प्रमुखमां नाखी.

मूलः– कुलित्ताणं पिहियाणं लंछियाणंच मुद्दियाणंच ॥ उक्किठठिई वरिसाण, पं चगंतो अबीयत्तं ॥ १२ ॥ अर्थः–ए पूर्वोक्त कोठीने पिहितके० ढांकणासाथे ढां कीने पछी ढांकणुं तथा कोठीनुं बारणो बेउने गोबरादिक साथे लीपीने लांछन के० लीटी प्रमुखनुं चिन्ह कर्युं होय, एवीरीते जे मुद्र्याछे. एवा धान्यनी उत्कृष्ट स्थिति पांचवर्षसुधी जाणवी. तेवारपछी तेमां अबीज पणुं थाय. ॥ १२ ॥

मूलः–अयसी लट्टा कंगू कोमूसगसण बरट्ट सिद्धञा ॥ कोद्दव रालगमूलग बी याणंकोठआईसु ॥ १३ ॥ अर्थः– अलसी, जेनुं तेल थायछे. लट्टाते कसुंबो, कं गूंते पीलाचोखा, कोमूसग ते कोदरा विशेष. सण ते छोतरासहित धान्यनो विशेष बरटी ते सपाद लक्षादिकनेविषे प्रसिद्धछे. सिद्धार्थ ते सरिसव, कोइव ते प्रसिद्धछे

रालकतेकांगूनो विशेष, मूलक ते शाकनो विशेष, तेना बीजने कोगादिकने विषे.

मूलः— निक्खित्ताणं एया; णुक्कोसठिईयसत्तवरसाई ॥ होइ जहन्नेणपुणो. अंतमुहुत्तं समग्गाणं॥ १४ ॥ अर्थः— निक्खित्ताणंके० नाखीने पछी पूर्वोक्त विधि करी होय तो एनी उत्कृष्टस्थिति सातवर्षनी जाणवी ए सर्वनी उत्कृष्ट स्थिति कही, अने जघन्यथी तो ए सर्व पूर्वोक्त धान्यनो अंतरमुहूर्त्ते अबीजपणानो काल व्यवहारे फासु थाय; परंतु निश्चेथी तो केवलीजाणे. तेमाटे साधु एनुं संघटादिक परिहरे. जेम तृषासंयतिने श्री वर्द्धमान जगवंते पाणीनी अनुज्ञा कही नथी. इति गाथा षट्कार्थ ॥१४॥

अवतरणः—खेत्ताणंअचित्तंति एटले खेत्र उलंघवाथी जे अचित्तपणुंहोय तेनो एकशोने पचावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—जोयणसयं तु गंता; अणहारेणं तु जंमसंकंता ॥ वायागणि धूमेहिय, विद्धत्थंहोइलोणाई ॥ १५ ॥ अर्थः—एकशोयोजन गये थके लवणादिक अचित्त थाय; ते अचित्त थवानां कारण देखाडेछे. अणहारेणंके०पोताना देशथी उत्पन्न थएला,साधारण सामर्थ्ये करी, तेनो अर्थ ए के, एकखेत्र थकी, अने थली जे टाढ तावडादिकना संबंधे, दररोजनी दररोज तेनी योनी विनाश पामति जाय; ते ज्यांसुधी एकशो योजन जाय त्यांलगे सर्वथा ते अचित्त थइ जायछे. ए निसीथनी चूर्णिना पाठथकी केइयपठंति. गाउयसयंतु इत्यादिक तेथी शोकोशमाने अचित्त थायछे. तेमज जंमके० एक वासण तेमांथी बीजा वासणमां संक्रातिके० घालवुं. एम एक वखारमांथी बीजी वखारमां नाखतां किंवा वायु अग्नि तडको तावडो धूमप्रमुखे करी, एकशो योजनथकी नजीक अथवा पोताना ज स्थानके पड्योथको पण अचित्त थायछे, एम लुणप्रमुख पृथ्वीकाय आदेदेइने वनस्पतिपर्यंत समस्त पदार्थोने जाणवो. इहां शास्त्रांतरे एटलुं विशेष कह्युंछे. सय जोयण जल मग्गे; थल मग्गे सट्ठिजोयणाणुवरिं ॥ हरडे पिप्पल मिरिया, समय अचित्ताणि जणियाई ॥ १५ ॥

हवे अचित्तथका पण आचरण अनाचरणनो विजाग कहेछे. मूलः—हरियाल मणोसिलपिप्पली उखज्जूरमुद्दिया अजया ॥ आइन्नमणाइन्ना, तेविहु एमेव नायव्वा ॥१६॥ अर्थः—हरियादिकने पण पूर्वोक्त कारणे अचित्तपणुं जाणवुं. शो योजनथी आव्या एक आचीर्ण, बीजा अनाचीर्णछे.तेमां पीपली अने अजयाके० हरडे, ए आचीर्णपणाथकी लेवा. तथा खजूर अने मुद्दियाके० द्राक्ष ए अनाचीर्ण जाणवां. तेमाटे ते अचित्तथका पण न लेवा; एम अन्यके० बीजा पण जाणवा.॥१६॥

हवे प्रासुकपणानां एज कारण देखाडेछे. मूलः—आरुहणे उरुहणे, निसिइ

एगोणाइणं च गाउएहं ॥ जोमाहारछेउ उवक्कमेणं तु परिणामो ॥ १७ ॥ अर्थः– लवणादिकने गामां वंटप्रमुख उपरे आरुहणेके० चडावतां, तेमज उरुहणेके० तेना उपरथी उतारतां; तेउपर वली बेसतां ते गोणके० वृषन्न प्रमुखनी गात्रोष्मता एटले शरीरनी उष्णता एटले बाफे करीने किंवा जे स्थानके पड्या हता, ते पृथ्वी संबंधी आहारना विछेदथकी उपक्रमजे; घणाकालनुं पोतानुं आयुष्य ते छेदी, थोडा कालमां पूरण करे; तेणेकरी परिणामे स्वकाय शस्त्रादिके करी अचित्त थाय. ते आ वीरीते. जेम खारुं पाणी ते मीठापाणीनो गुण नाश करनार छे ते स्वकाय शस्त्र. अने अग्नि, वृक्षनो नाश करनार छे ते परकाय शस्त्र, अने जेम मोहोलाएलुं पाणी शुद्ध पाणीनो नाश करेछे; ते उन्नय शस्त्र. ए शस्त्र ते सचेतपणांने अचित्तपणां ना कारण थायछे. ॥ १७ ॥

अवतरणः–धन्नाइ चउवीसंति एटले चोवीस धान्यना नेदोनो एकशो ने छप्पन्न मुं द्वार कहेछे. मूलः–धन्नाइ चउवीसं, जव गोहुम सालि वीहि सठीय ॥ कोद्दव अणुआ कंगू रालय तिल मुग्ग मासाय ॥ १८ ॥ अयसी हरिमंथ तिउगड निप्फाव सिलिंद रायमासाय ॥ इक्कू मसूर तूवरी, कुलछ तह धन्नय कलाय ॥ ॥१९॥ अर्थः–जव, गोहुम, सालि, व्रीही, साठ दाहाडे नीपजे ते साठी, कोद्रव, जुआर, कांगुणी, राल, तिल, मग, अडद, अलसी, चणा, त्रिपुट, निप्फाव, वाल, मठ, इक्कु, मसूर, तुअर, कुलछ, करडी अने कलायरो. ॥ १८ ॥ १९ ॥

अवतरणः–मरणं सतरस नेयंति एटले सत्तर प्रकारनां मरणनो एकशोने स त्तावनमुं द्वार कहेछे. मूलः–आवीइ उहि अंतिअ, वलायमरणं वसट्टमरणं च अंतोसल्लं तब्भव; बालं तह पंमियं मीसं ॥ २० ॥ छउमछमरण केवलि, वहाण सगिद्धपिछिमरणं च ॥ मरणं नत्तपरिन्ना, इंगिणि पाउवगमणं च ॥ २१ ॥ अर्थः– आविचि, अवधि, आत्यंतिक, वलाय, वसार्त्त, अंतःशल्य, तद्भव, बाल, पंमित, मि श्र, छद्मस्थ, केवली, वेहायस, गृद्धपृष्ठ, नक्तपरिज्ञा, इंगिनी अने पादोपगमन. ए आवीचि प्रमुख शब्द आगल मरण शब्द प्रत्येके जोडवो; तेवारे आवीचिमरणादि क अनुक्रमे जे नाम कह्यां ते जाणवां. ॥ २० ॥ २१ ॥

हवे एनुं वखाण करेछे. मूलः–अणुसमय निरंतर माविसन्नियंतं नणंति पंच विहं ॥ दव्वे खित्ते काले, नवेय नावेय संसारे ॥ २२ ॥ अर्थः–अनु समय समय प्रत्ये निरंतरपणे मरे. इहां शब्दार्थ आमछे केः–आके० समस्त प्रकारे करी वीचि के० कल्लोल तेनीपरे, समयसमयने विषे जे आयुष्यने अनुनविये छइये, तेने अनुलो

मपणे अने अनेरा आयुर्दलिकना उदयथकी; पहेला पहेला आयुष्यना दलिक, तेनुं चवन लक्षण अवस्था विशेष ज्यांछे; तेने आवीचि एवेनामे मरण. ते समयके० सिद्धांतना जाण पुरुषो पांच प्रकारे कहेछे. त्यां इव्यादि नव मरण ते आवीरीते. तेमां नारकादिक संबंधि, आयुष्यना दलिक एकठा कीधाछे; ते समय समय विचें टलेछे ते इव्य आवीचि मरणजाणवुं. एमज नारकादिकनी गतिनी अपेक्षाये क्षेत्र आवीचि मरण जाणवुं. तेम आयुष्य, दिवस, पल्योपमादि नर नारकादिकनेविषे जे छे; ते समय समयप्रत्ये घटेछे. ए काल आवीचि मरण जाणवुं. तथा नारकादिक नव चार प्रकारे छे, ते नव आवीचि मरण जाणवुं. तेम नारकादिकनां आयुष्य पण चार प्रकारे छे. ते नावावीचि मरण जाणवुं. ए पांच प्रकार संसारने विषे संनवे.॥१२॥

अवधिमरण कहेछे. मूलः— एमेव उहिमरणं, जाणिमउ ताणि चेव मरइ पुणो ॥ एमेव आइअंतिअ, मरणं नविमरइ ताण पुणो ॥ १३ ॥ अर्थः—जेम आवीचिमरण इव्यादिक पांच नेदे कह्युं. एमेवके० तेनीपरेज, उहिके० अवधिमरण जाणवुं. तेनुं स्वरूप कहेछे; अवधिके० मर्यादा, जे कोइ आयुष्यना दलिक नोगवी मरण पाम्यो हतो; तेज वली दलिक नोगवीने जेवारे मरण पामशे, ते वारे तेने ते इव्यावधिमरण जाणवुं. एम क्षेत्रादिकनी नावना करवी. हवे त्रीजुं आइअंतिअके० आत्यंतिक मरण. तेपण एरीतेज इव्यादिक पांच प्रकारेछे. परंतु एटलुं विशेष मरण, जे नारकादिकना आयुष्य संबंधी जे दलिक ते मरवा पछी वली ते नोगवे नहीं तेने ते आत्यंतिक इव्य मरण कहिये. तेम क्षेत्रादिक पण जाणवा.

हवे चोथुं बलवन्मरण कहेछे. मूलः—संयमजोगविसन्ना, मरंति जे तं बलायमरणं तु ॥ इंदियविसयवसगया, मरंति जे तं वसट्टं तु ॥१४॥ अर्थः—संयमना जे योग, व्यापार तेथकी खिन्न थयो; परंतु कुलनी लाजथकी मूकी शके नहीं, अने मन मां जाणेके, कोइरीते पण कष्टथी छूटिये तो सारुं. एम संयमानुष्ठान थकी चलतो मरण पामे. ते बलवन्मरण जाणवुं. ए मरण नग्नव्रती जे होय तेने थायछे. बीजा संयमयोगवालाने नथाय, पांचमुं वसार्त्त मरणते इंद्रिय जे चक्षु प्रमुख तेना विषय जे रूपादिक तेना वसे गयो थको, जे मरे ते वशार्त्तमरण जाणवुं. ए मरण जेम दीपशिखा देखी पतंगिउ मरण पामेछे. तेनीपरे जाणवुं. ॥ १४ ॥

सशल्यमरण कहेछे. मूलः—गारवपंकनिबुड्डा, अइयारं जे परस्स नकहिंति ॥ दंसण नाण चरित्ते, ससल्लमरणं हवइ तेसिं ॥ १५ ॥ अर्थः— ऋद्धि, रस, ने सातागारव ए त्रणेने कलुषपणानां कारणथकी पंक एटले कादव कहिये, तेनेविषे

जे निमग्न एटले बूडथाबलां, पोताना दर्शन ज्ञान चारित्रना, अपराधरूप अतिचार ते, आचार्यादिक आगल कहे नहीं. त्यां वांदणादिकआपतां तेना कहेला अनुष्ठानने करतो तेमां साता रहे नहीं; एवो थको जे मरण पामे तेने सशल्य मरण कहिये.

मूलः— मुत्तुं अकम्म नूमिय, नरतिरिएसुरगणेसु नेरइए ॥ सेसाणं जीवाणं, तप्नवमरणं तुं केसिंचि ॥ २६ ॥ अर्थः— अकर्मनूमिना उपन्या मनुष्य, तथा तिर्यंच अने चतुर्विध देवगण, तथा नारकी एटला मूकी शेष जीवोने तद्भवमरण. सातमुं कोइएकने जाणवुं. ए गाथानो नावार्थ इहां टीकामां सम्यक्रीते पामता न थी अने उतराध्ययननी चूर्णिमां पण न वखाण्यो माटे गीतार्थ विचारजो. ॥२६॥

मूलः—मोत्तूण उहिमरणं, आवीइयं तिअं तिअं इचेव ॥ सेसा मरणा सव्वे, तप्नवमरणेण नायव्वा॥ २७ ॥ अर्थः— अवधि, आवीचि अने आत्यंतिक ए त्रण मरण मूकीने शेष समस्त जे मरणछे; ते तद्भवमरण जाणवां. ॥ २७ ॥

हवे बाल मरणादिक त्रण कहेछे. मूलः—अविरयमरणं बालं, मरणं विरयाण पंमिय बिंति ॥ जाणाहि बालपंमिय, मरणं पुण देसविरयाणं ॥ २८ ॥ अर्थः—हिंसादिक थकी जे विरम्या नथी; ते अविरति, तेने बालनी परे मरण जाणवुं, एमज वली सर्व सावद्यनी निवृत्ति जेणे अंगीकार करीछे, ते विरति, तेनुं मरण तेपंमितनी परें जाणवुं माटे; ते पंमितमरण कहिये. एरीते बिंतिके० तीर्थंकर कहेछे. वली बाल पंमितमरण, ते जे देशथकी विरतिछे; एवानुं जे मरण ते मिश्रमरण जाणवुं. ॥२८॥

हवे छद्मस्थ अने केवली मरण कहेछे. मूलः—मणपज्जवोहिनाणी, सुअमइनाणी मरंति जे समणा ॥ छउमत्थ मरणमेयं, केवलिमरणं तु केवलिणो ॥ २९ ॥ अर्थः—अतिविशुद्धपणा थकी, प्रथम मनपर्यवज्ञान, तेमज अवधिज्ञान, श्रुतज्ञान ने मतिज्ञानना धरनार; एवा जे श्रमण तपने विषे जे श्रम करेछे;ते श्रमण कहिये. अने छद्मके० ज्ञानावरणादिक जे कर्म, तेनेविषे जे रहे ते छद्मस्थ जाणवो; तेनुं जे मरण ते बारमुं छद्मस्थ मरण जाणवुं. तेरमुं केवली मरण ते समस्त कर्म पुजलनोपरिसाटन करीकेवलज्ञान पामी जे मरण करे, ते केवलि मरण जाणवुं.॥२९॥

मूलः—गिद्धाइ नरकणं गिद्धि, पिछिजब्बंधणाइ वेहासं॥ एए दोन्निवि मरणा, कारणजाए अणुन्नाया ॥ ३० ॥ अर्थः— गृद्ध ए प्रसिद्धछे, ते गृद्ध जेने आदिछे, एटले समली, शियाल प्रमुख, तेने जे, आपणादेहादिकनुं नक्षण एटले ते समली शियाल प्रमुखने अनिवारणादिके करी, तेणे नक्षण करवा योग्य जे हाथी उंट प्रमुखना कलेवरमां प्रवेश करी; जे नक्षण ते गृध्रादिनक्षण. हवे गृध्रादिकोनो स्पर्श

जेने ठेकाणे छे, ते गृध्रस्पर्शी, अथवा गृध्रनो जक्ष एटले पृष्ठ अने उदरादिक तथा कोणीए लगाडी तेमने खवरावबुं. ऊर्ध्व एटले ऊंचे वृक्षनी शाखादिकने विषे जे बंधन ते उद्बंधन छे; आदि जेने एवो तरु, गिरिशिखर तथा भृगुपातादिक जे पोतेज पोतानाज मरणने माटे करेलुं छे, ते उद्बंधनादिक. वेहायस मरण. आकाशनेविषे जे झंपापात करी मरण पामीए, ते वेहायस. उद्बंधने जे पूर्वे कह्युं; ते जो आकाशनेविषे थयुं होयतो, वेहायस जाणवुं.

इहां कोइ चालना करे छे के, गृध्रपृष्ठ जे पूर्वे कह्युं; तेने पण आत्मघातरूपत्वछे. माटे वेहायसने ठेकाणेज तेनो अंतर्भाव छे तेनो उत्तर. ते खरुंछे परंतु केवल आ वेहायस मरणनुं अल्प धैर्यवाला पुरुषे, निश्चय करवाविषे अशक्यत्व छे, ते कहेवा सारुं, गृध्रपृष्ठ अने वेहायस; ए बे जूदांजूदां कह्यां. वली शंका करेछे. नाविय जिणवयणाणं ममत्तरहियाण नछिहु विसेसो ॥ अप्पाणंमि परंमिय तो वज्जे पीड मुभुउवि ॥ १ ॥ एवो आगमछे. अने आ बे कहेलां मरण अत्यंत आत्मपीडा करनारांछे; पछी आगमने विरोध केम नथी? एजमाटे जक्त परिज्ञानादिकने विषे पीडा परिहार सारु चत्तारि विचित्ताइं विगइंनिज्जूहियाइंचत्तारि ॥ इत्यादि संलेषणाविधि, अने पानकादि विधि त्यां त्यां कहेलीछे. अने बंने ठेकाणे दर्शननुं मलिनपणुं प्राप्त थशे. एवी शंका छतां, तेनो उत्तर. ए कहेला गृध्रपृष्ठ वेहायस नामा मरण, दर्शन मलिन परिहारादिक कारण थयुं छतां, अथवा कारण प्रकार छतां उदायी राजाये जेम पूछयुं तेम गीतार्थ आचार्ये जिन शासननी मलिनता परिहरवा सारु कीधुं. एमाटे पूर्वे कहेला मरणने शंकारूप दोष नथी. ॥२०॥

हवे जक्त परिज्ञातादिक त्रण मरण कहेछे. मूलः—जत्तपरिन्ना इंगिणि, पायवगमणं च तिन्नि मरणाइं॥ कन्निस मज्झिमछेद्वा धिइसंघयणेणउ विसिद्वा॥२१॥ अर्थः- जक्तके० जोजन परिज्ञाछे ज्यां, ते जक्त परिज्ञा, बे प्रकारेछे; एक ज्ञपरिज्ञा बीजी प्रत्याख्यानपरिज्ञा. तेमां ज्ञपरिज्ञा ते. ज्यां एवुं जाणेके, ए अशनादिक, जीवे घणा वखत घणा अरोग्याछे. उक्तंच हिमवंत मलय मंदिर, दीवोदहि धरणि सरिस रासीउ ॥ अहियथरो आहारो, बुहिएणाहारिउंहुज्जा ॥१॥ इत्यादिक जाणीने आहारनो पच्चखाण करे; एमज प्रथम ज्ञपरिज्ञाये स्वरूप जाणुं अने पछी तेने पच्चखाण परिज्ञाये चतुर्विध आहारनो पच्चखाण कर्यो, ए बे जेद कह्या; पछी जे मरण करे तेने जक्त परिज्ञा नामे पन्नरमुं मरण कहियें. सोलमुं इंगितेके० प्रतिनियत देशने विषे चतुर्विध आहारनो त्यागकरी, अनेरानी करेली परिक्रमणाने वर्जतो थको

जे गिरी गुंफादिकने विषे, उद्वर्त्तनादिक पोतेज करतो रहे, ते सोलमुं इंगिनी मरण करे. सत्तरमुं पादपके० वृक्ष तेनीपरे, उपगमनके० रहेवुं एटले जेवारे, अनशननो उच्चार करी, शयन करे, तेवारे जेरीते छेदेलुं वृक्ष जेम पड्युं, तेमनुं तेम पडी रहेछे, तेम ए पण उंची निचि भूमिकाये जे हाथ पगादिक ज्यां जेरीते प्रथमथी राख्यां ते त्यां तेजरीते पड्यां रहे; परंतु हाथ पगादिकने चलावे नहिं; एम जे मरण करे, ते पादोपगमन नामा सत्तरमुं मरण जाणवुं. ए त्रणे कनिष्ट, मध्यम अने उत्कृष्ट अनुक्रमे थायछे. यद्यपि धृति संयमने विषे, चित्तनुं स्थिरताप णुं संहनन वज्र ऋषभनाराचादिक, तेणेकरी त्रणे मरणने धीरपुरुष पमिवजे छे, एनुं फलपण वैमानिक तथा मुक्ति लक्षण त्रणेने सरखुं थायछे. उक्तंच. यतः—सव्वाविय अज्जाउ, सव्वेविअपढम संघयणवज्जा ॥ सव्वेवि देसविरया, पच्चक्खाणेण उ मरंति ॥ १ ॥ आ ठेकाणे प्रत्याख्यान शब्दे भक्त परिज्ञा कहिछे, ए विशेष धृतिमंत पुरुषने थाय; अने इंगिनी मरण ते वली विशिष्टतर धृति संघयणवंतने थाय परंतु साध्विने न थाय. एम पादोपगमन ते वली विशिष्टतम, धृतिवंत वज्र, ऋषभनाराच संघयणवालाने थाय. उक्तंच. पढमंमि असंघयणे, वट्टंते सेल कुट्टसामाणे ॥ तेसिंपि अवोछेउ चउदस पुवीण वोछेए ॥ १ ॥ तीर्थंकर पादोपगमन सेवे तेथी ए उत्तमछे. अने बीजा विशिष्ट साधु सेवे; यदुक्तं. सव्वेसव्वद्धाए, सवन्नू सव्वकम्मभूमीसु ॥ सव्वगुरु सव्वमहियासव्वेमेरुंमि अभिसित्ता ॥१॥ सव्वाहिंल द्धीहिं, सव्वेवि परिसहेपराजित्ता सव्वेविह अतिब्रयरा पाउवगयाउसिद्धिगया ॥ २॥ अवसेसा अणगारा, तीयपच्चुपन्नणागयासव्वे ॥ केईपाउवगया, पच्चक्खाणिंगिणी केई ॥ ३ ॥ तेमाटे भक्तपरिज्ञा कनिष्ट छे तेथी ए जघन्य जाणवो. अने इंगिनी मध्यम जाणवो. तथा पादोपगमन ते ज्येष्ट सर्वोत्तम जाणवो. इतिगाथा दशकार्थः.

अवतरणः—पलिउवमंति एटले पल्योपमनां स्वरूपनुं एकशोने अठावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—पलिउवमं च तिविहं, उद्धारद्धं च खेत्तपलियंच॥एकेकं पुण डुविहं बायरसुहुमं च नायवं ॥२१॥ अर्थः—पल्य एटले जेमां धान्य नाखिये, तेनी जेने उपमा छे, तेने पल्योपम कहिये; ते उद्धार, अद्धा अने खेत्रना भेद थकी, तिविहं के० त्रण प्रकारेछे. वली ए उद्धारादिक, एकेक ते बादर अने सूक्ष्मना भेदेकरी बे बे प्रकारेछे. एटले बादर उद्धार, पल्योपम, अने सूक्ष्म उद्धार, पल्योपम, तेम ज अद्धा अने क्षेत्र ए बे पण बादर अने सूक्ष्म केहेवा. ॥ २२ ॥

पल्योपमनुं स्वरूप कहेछे. मूलः—जं जोयण विछिन्नं, तं तिउणं परिरएण सवि

सेसं ॥ तावइयं उविद्धं, पल्लं पलिउवमं नामा ॥ ३३ ॥ अर्थः—जे एक योजन वि स्तारे वाटले आकारे कहेवाय, ते सविशेष त्रण योजन अने एक योजननो छठो नाग कांइक न्यून, एटले परिरएणके० परीधिए थाय; अने तेटलोज उविद्धके०उंच पणे पण थाय. एवो पल्य एटले पालो तेनी जेने उपमा छे तेने पल्योपम जाणवुं,

एवुं पल्योपम कह्या पछी तेनुं कर्त्तव्य देखाडे छे. मूलः—एगाहिअ बेहिय ते हियाण उक्कोस सत्तरत्ताणं ॥ सम्मठं संनिचिअं, नरियं बालग्ग कोडीहिं॥ ३४ ॥ अर्थः—एक दिवसनो, बे दिवसनो, त्रण दिवसनो, उत्कृष्ट सात दिवस संबंधी करणाके० लोम, तेनी साथे ते पूर्वोक्त पल्य संपूर्ण नर्यो, पछी ते संनिचित मह्य विचित पणे एवो कह्यो के, ते पल्य, जेम वायरे उडेनही, अग्निए बलेनही, पा णीये नीजे नही, एवी रीते वालाग्रनी कोटीये नर्यो. ॥ ३४ ॥

मूलः—तत्तो समए समए, एक्केके अवहियंमि जो कालो ॥ संखेज्जा खलु सम या, बायरउद्धार पल्लम्मि ॥ ३५ ॥ अर्थः—तत्तोके० तेवार पछी. समय समयनेवि षे तेमांथी एकेक वालाग्र अपहरिये. ते खाली करतां जेटलो काल थाय; तेटला समय निश्चेंथी बादर, उद्धार पल्योपमने विषे थाय, अर्थात् संख्याता समय थाय.

मूलः—एकेकमउलोमं, कहुमसंखेज्ज खंमममहिस्सं ॥ समछेयाणं तपए, सियाण पल्लं नरेज्जाहि ॥३६॥ अर्थः—ते करणानो रोम, ते एकेक रोमना वली असंख्याता न्हाना न्हाना खंम करिये, ते ज्यां सुधी अदृश्यते एटले, जे मनुष्यमांहे निर्मल लोचन वालो, छद्मस्थ अतिसूक्ष्म, पुजलद्रव्य पोतानां चक्षुये देखीशके, तेनो असं ख्यातमो नाग मात्र जाणवो,जे न देखी शकाय; एवा सूक्ष्म खंम करे. अने खेत्र थी तो सूक्ष्म पनकनुं शरीर जेटलां खेत्रनेविषे रहीशके. तेथकी असंख्यातगुण खेत्रनुं अवगाहनार जे द्रव्य तेने प्रमाणे खंमकरे. वडेरा वली एम वखाणे छे . के बादर, पर्याप्त, पृथ्वीकायिक जीवना शरीर सरखा छेदके० खंमछे; जेनां वली अनंत परमाणुंए जे नीपन्या छे; एवा वालाग्रे ते पल्य नरिये. ॥३६॥

मूलः—तत्तो समए,समए एक्केके अवहियंमि जो कालो॥संखेज्ज वास कोमी, सु हुमे उद्धारपल्लम्मि ॥ ३७ ॥ अर्थः—तत्तोके० त्यारपछी समये समये एकेका वालाग्रने अपहरता जे काल थाय, ते काल कहे छे. असंख्याता वर्षनी कोडी सूक्ष्म उद्धार पल्योपमनेविषे थायछे. ॥३७॥

मूलः—वाससए वाससए, एकेके बायरे अवहि यम्मि ॥ बायर अद्धापलि यं, संखेज्जा वास कोडिउ ॥ ३८ ॥ अर्थः—ते पल्यमांथी शो शो वर्ष गयां छतां ए

केक बादर खंम काहाडीये; तोबादर अद्धा पल्योपममां संख्याता वरसनीकोडि थाय.

मूलः—वाससए वाससए, एकेके अवह्यिम्मि सुहुमंमि ॥ सुहुमं अद्धापलियं ह्वंति वासा असंखेज्जा ॥ ३९ ॥ अर्थः—शो शो वर्षे एकेक सूक्ष्म खंम काहाडी ये, तो सूक्ष्म अद्धा पल्योपम असंख्याता वर्षनो थाय. ॥ ३९ ॥

मूलः— बायर सुहुमायासे, खेत्तपएसाणु समय मवहारे ॥ बायर सुहुमं खेत्तं उसप्पणीउ असंखिज्जा ॥ ४० ॥ अर्थः—ते पल्यना जे आकाशप्रदेश ते वाला ग्रे करी स्पष्ट ठे; ते आकाश प्रदेशने अनुसमय समय प्रत्ये काहाडतां, जेटले का ले ते पालो खाली थाय, तेटला काले बादर खेत्र पल्योपम जाणवुं. अने तेज प ल्यना वालाग्रे करी स्पष्ट तथा अस्पष्ट जेटला आकाश प्रदेश ठे, ते प्रतिसमय समय काह्डतां जेटलो काल थाय, ते सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम थाय. असंख्याति उत्सर्पि णी प्रमाणे तेना कालनुं मान जाणवुं. ॥ ४० ॥ इति गाथा नवकार्थ. ॥

अवतरणः—आयरत्ति एटले सागरोपमना प्रमाणनुं एकशो ने उंगणसाठमुं द्वार कहेठे. मूलः— उद्धार पल्लगाणं, कोडाकोडी जविज्ज दसगुणिया ॥ तं साग रोवमस्सउ, एकस्स जवे परीमाणं ॥ ४१ ॥ अर्थः—दशकोडाकोडी उद्धारपल्यो पमे, एक सागरोपम थाय. जेनें समुद्रनी उपमा ठे तेने सागरोपम कहिये, अने तेवा एक सागरोपमनुं प्रमाण जाणवुं. ॥ ४१ ॥

मूलः—जावइउउद्धारो, अड्डाइ थाण सागराण जवे ॥ ताव इया खलु लोए, ह्वं ति दीवा समुद्दाय ॥ ४२ ॥ अर्थः—अढी उद्धार सागरोपममां जेटला समय थाय; तावइया के० तेटलाज माने. खलुइति निश्चे लोकनेविषे द्वीप अने समुद्रथाय.

मूलः— तह अद्धा पल्लाणं, कोडाकोडी ह्विज्ज दसगुणिया ॥ तं सागरोवमस्सउ परिमाणं ह्वइ एगस्स ॥ ४३ ॥ अर्थः—तेमज दशकोडाकोडी अद्धा पल्योपमे ए क अद्धा सागरोपमनुं परिमाण थायठे. ॥ ४३ ॥

मूलः— सुहुमेणउ अद्ध सागरस्स माणेण सवजीवाणं ॥ कम्मठिई कायठिई जवठिई होइ नायवा ॥४४॥ अर्थः—सूक्ष्म अद्धासागरोपमना समय तेने मानेकरी सर्व जीवोनी कर्मस्थिति, कायस्थिति अने जवस्थिति होय एम जाणवुं. ॥ ४४ ॥

मूलः— इह्खेत्तपल्लगाणं, कोडाकोडी ह्विज्ज दस गुणिया ॥ तं सागरोवमस्सउ, एक्कस्सजवेपरीमाणं ॥ ४५ ॥ अर्थः—दश कोडाकोडी क्षेत्र पल्योपमे एक क्षेत्र सा गरोपमनुं प्रमाण थायठे. ॥ ४५ ॥

मूलः— एएण खेत्त सागर, उवमाणेणं ह्विज्ज नायवं ॥ पुढविदग अगणि मा

रुश्र, हरियंत साणं च परिमाणं ॥ ४६ ॥ अर्थः—ए क्षेत्र सागरोपमनी उपमाने पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति अने त्रसजीवोनुं परिमाण जाणवुं. ए वात दृष्टिवादमां बहुलपणे कही छे. तेमांथी लगारेक देखाडी छे. इति गाथा षट्कार्थ.

अवतरणः— अवसप्पिणित्ति एटले अवसर्प्पिणीनुं एकशोने साठमुं द्वार कहेछे. मूलः— दसकोडा कोडीर्ठ, अद्धा अयराण हुंति पुन्नार्ठ ॥ अवसप्पिणीए ताए नाया छच्चेव कालस्स ॥४७॥ अर्थः—अद्धासागरोपमनी दश कोडाकोडी पूर्ण थाय, तेवारे अवसर्प्पिणी थाय. अवसर्प्पिणी एटले आरानी घटती दशा तेनी अपेक्षाये आयुष्य, शरीर, कल्पवृक्षादिक शुन्न नावोनी हाणी थाय, एम सर्वनी घटति दशा थाय; माटे अवसर्प्पिणी कहिये. तेनेविषे कालना नाग छ होयछे; तेनां नाम कहेछे.

मूलः— सुसम सुसमाय सुसमा, तईयापुण सुसम डुसमा होइ ॥ सुसम सुस मा चउत्थी, दूसम अइ दूसमा छठी ॥ ४८ ॥ अर्थः—एक सुषमसुषमा, बीजो सु षमा, त्रीजो सुषमडुषमा, चोथो डुषमसुषमा, पांचमो दूषमा अने छठो डुषमडुष मा ए अवसर्प्पिणीना छ आरानां नाम अनुक्रमे कह्यां. ॥ ४८ ॥

हवे ए छ आरानुं कालमान कहेछे. मूलः— सुसमसुसमाइ कालो, चत्तारि हवंति कोमि कोमीर्ठ ॥ तिन्नि सुसमाइ कालो, दोन्निनवे सुसम डुसमाए ॥ ४९ ॥ प्रथम सुषमसुषमानेविषे, चार कोडाकोडी सागरोपम, बीजा सुषमानेविषे त्र ण कोडाकोडी सागरोपम, अने त्रीजा सुषमडुषमानेविषे बे कोडाकोडी सागरोपम.

मूलः— एक्का कोडाकोडी, बायालीसाए जा सहस्सेहि ॥ वासाण होइ ऊणा डुसमसुसमाए सो कालो ॥ ५० ॥ अर्थः— एक कोडाकोडी बेतालीस हजार वर्षे ऊणुं चोथा डुषमसुषमानुं एटलुं काल मान जाणवुं. ॥ ५० ॥

मूलः— अह दूसमाइ कालो, वास सहस्साइ एक्कवीसं तु ॥ तावइर्ठ चेवन्नवे कालो अइ दूसमाएवि ॥ ५१ ॥ अर्थः— अथके० हवे पांचमा डुषम आरानो काल, एकवीश हजार वर्ष अने तावइर्ठ के० तेटलुंज एकवीश हजार वर्षनुं का लमान छठा अतिडुषमानुं पण जाणवुं. ॥ ५१ ॥ इतिगाथा पंचकार्थ.

अवतरणः— उसप्पिणित्ति एटले उत्सर्प्पिणीनुं एकशो ने एकशठमुं द्वार कहेछे, मूलः— अवसप्पिणीइ नागा, हवंतिउस प्पिणीए वि छएए ॥ पडिलोमा परिवाडी, नवरि विनाएसु नायवा ॥ ५२ ॥ अर्थः— जेरीते अवसर्प्पिणीना छ नाग कह्या, ते रीते उत्सर्प्पिणीना पण छज नाग जाणवा. मात्र एटलुं अधिकछे; जे पडिलोम के० उपरांठी, परिवाडी अनुक्रमे विनागे आराने विषे करवी. ते जेम अवसर्प्पिणि

ये प्रथम सुषमसुषमा अने घटता कालने योगे, छट्ठो आरो दुषमदुषमा थाय. तेम उत्सर्प्पिणीमां वधता कालने योगे, पेहेलो दुषमदुषमा आरो थाय. अने छेहे डे, सुषमसुषमा छठो आरो थाय. ॥ ५१ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—दव्वे खेत्ते काले जावे पुग्गलत्ति एटले चार प्रकारना पुद्गल परावर्त्तनुं एकशोने बासठमुं द्वार कहेछे. मूलः—उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल परियट्टो मुणेय व्वो ॥ तेणंतातीअद्धा आणागयद्धा अणंतगुणा ॥ ५२ ॥ अर्थः—अनंति उत्सर्प्पि णीअने आ स्थले उपलक्षणथी अनंति अवसर्प्पिणी पण लेवी. एटले अनंति उ त्सर्प्पिणी अने, अनंति अवसर्प्पिणीये, एक पुद्गल परावर्त्त जाणवो. तेवा अनंता पुद्गल परावर्त ते, अतीत अद्धाके० अतीतकालनेविषे थाय. अने तेथी अनंतगुणा वली अनागताद्धा के० अनागत कालनेविषे थाय. ॥ ५२ ॥

त्यां शिष्य आशंका करेछे के; श्रीजगवतिमां एम कह्युछे के "एणागयद्धाणंती यद्धाउ समयाहियत्ति," तो अतीतकालथकी, अनागत अद्धासमय अधिक क ह्या. अतीत, अनागत ए बन्ने काल, अनादिने अनंतपणा थकी समानछे. अने जगवंतनो प्रश्न पण तेमांछे; ते अविनिष्ट समय अतीतकालमां, प्रवेश करेनहीं; किंतु अनागत अद्धामांहेज प्रक्षेपीये; तेमाटे अतीतकाल थकी समयाधिक अना गताद्धा थायछे. अने इहां तो अतीताद्धाथकी अनागताद्धा अनंतगुणा कह्या तो शीरीते विरोधता नथी? अर्थात् विरोधताज थायछे.

उत्तर कहेछे के; जेम अनागताद्धा अंतरहितछे, अने जेम अतीताद्धानी आ दि नथी, एटले ते बन्नेने अंतना अजाव थकी सरखापणुं थयुं; हवे वर्त्तमान सम ये, अतीताद्धा, अनेअनागताद्धा सरखा थायछे. त्यारपछीसमयनेअतिक्रमेअनागता द्धा उणी थाय, एम बे त्रण समय प्रमुखनुंअतिक्रम करतां समपणुं थाय नही, तेमाटे अतीताद्धा थकी अनागताद्धा अनंतगुणी कही. जे कारणे अनंतोकाल ग ये छते पण अनागताद्धानो क्षय न थाय; अने वर्त्तमाने एक समयरूप वर्त्तमा नाद्धा पण छेज, ते सूक्ष्मपणाथकी, आंहि जूदो कह्यो नथी.

मूलः— पुग्गल परियट्टोइह, दव्वाइ चउव्विहोमुणेयव्वो ॥ थूलेयरनेएहिं, जह होइ तहा निसामेहा ॥ ५४ ॥ अर्थः— ए पुद्गल परावर्त्त ते इहां, द्रव्य क्षेत्र, काल अने जावना जेदथकी चार प्रकारे जाणवो. ते वली एकेको थूलेयरके० स्थूल अने सूक्ष्मना जेदथकी जेरीते थाय, तेरीते कहुंछुं ते सांजलो. ॥ ५४ ॥

प्रथम बादर, द्रव्य, पुद्गल परावर्त कहेछे. मूलः— उरालविउवातेय कम्म जा

साणपाणमणगेहिं ॥ फासेवि सव्वपोग्गल, मुक्काअह्वायरपरट्टो ॥ ५५ ॥ अर्थः— एक औदारिक, बीजी वैक्रिय, त्रीजी तेजस, चोथी कार्मण, पांचमी नाषा, छठी आनपान (श्वासोश्वास) सातमी मन. ए औदारिकादिक साते वर्गणायेकरी चौद राज संबंधी समस्त पुज्ञल, ते जेटले काले एकजीव स्वनावे नोगवी नोगवीने मूके; तेटले काले एक बादर पुज्ञल परावर्त थायछे. ॥ ५५ ॥

मूलः— अह्व इमो दव्वाई, उराल विउव्वि तेयकम्मेहिं ॥ नीसेस दव्वगह्णंमि बायरो होइ परियट्टो ॥ ५६ ॥ अर्थः— अथवा इमोके० ए इव्यादिक एटले इव्य शब्द जे पुज्ञल परावर्तने आदेछे, ते इव्यादिक कहियें. त्यां उरालके० औदारिक, वैक्रिय, तेजस अने कार्मण ए चार वर्गणायेकरी, एक जीवते नीसेसके० समस्त चौदराज लोक संबंधी; इव्य ग्रह्णने विषे एटले पुज्ञल नोगववानेविषे, पण बादर इव्य, पुज्ञलपरावर्तन मतांतरे कह्योछे. ॥ ५६ ॥

इव्यथी सूक्ष्म पुज्ञल परावर्त्त कहेछे. मूलः— दव्वे सुहुम परट्टो, जाहेएगेण तह्सरीरेण ॥ फासेवि सव्वपोग्गल, अणुकम्मेणं नणु गणिज्जा ॥ ५७ ॥ अर्थः—इव्यनेविषे सूक्ष्म पुज्ञल परावर्त्तन आवीरीते थायछे के, जेवारे एक औदारिकादिक शरीरपणे करी, समस्त लोकाकाश नावीपुंज्ञलने स्पर्शे नोगवे; ते पछी अनुक्रमे बीजो वैक्रिय, ते पछी त्रीजो, इत्यादिक गणिये तेवारे सूक्ष्म इव्य पुज्ञल परावर्त्त थाय.

ह्वे क्षेत्रथी बादर पुज्ञल परावर्त्त कहेछे. मूलः— लोगागासपएसा जेयमरं तेण एछजीवेण ॥ पुट्टा कमुक्कमेणं, खेत्तपरट्टो ह्वइ थूलो ॥ ५८ ॥ अर्थः—लोक चउदराज प्रमाणछे; तेमां जे आकाश प्रदेशछे, ते सर्व एक जीवे मरती वखते, अथवा शरीर ग्रह्ण करती वखते, एछके० आ लोकमांहे फरस्या; पण ते क्रमोत्क्रमे आगल पाछल फरस्या; तेवारे बादर क्षेत्र पुज्ञल परावर्त्त थाय. ॥ ५८ ॥

ह्वे सूक्ष्म क्षेत्र पुज्ञल परावर्त्त कहेछे. मूलः—जीवा जइया एगे, खेत्तपएसंमि अह्गिएमरइ ॥ पुणरवि तस्साणंतर, बीयपएसंमि जइ मरइ ॥ ५९ ॥ एवंतरतम जोएण सव्वखित्तंमिजइमउंहोइ ॥ सुहुमो खेत्तपरट्टो, अणुक्कमेणं नणु गणिज्जा ॥ ६० ॥ अर्थः— जीव जेवारे कोइ एकज अधिगतके० विवक्षितप्रदेशनेविषे, मरण पामे; प्राण त्याग करे, वली गत्यंतरे आयुष्यनी परिसमाप्ते; ते प्रदेशथकी अनंतर एटले आंतराविना तेज प्रदेशनी पासेना बीजा आकाश प्रदेशे जइने मरण पामे॥५९॥ एम तरतम योग त्रीजा प्रमुख प्रदेशने संयोगे, निश्चयो ज्यांसुधी सर्वाकाश प्रदेश एकेक केडावेडेनो प्रदेश लेतां छेला आकाश प्रदेशे मरण पामे. एरीते क्रमेकरी, सर्व लोका

काशना प्रदेशो निश्चेथी अनुक्रमे मरण पामी बूटे, तेवारे सूक्ष्म क्षेत्रपुद्गलपरावर्त्त थाय.

हवे बादर काल पुद्गल परावर्त कहेछे. मूलः—उसप्पिणीइसमया, जावइया तेइनिय यमरणेण ॥ पुठाकमुक्कमेणं, कालपरट्टो नवे थूलो ॥६१॥ अर्थः—इहां अवसर्प्पिणी नां उपलक्षणथकी, उत्सर्प्पिणी पण लेवी; एटले उत्सर्प्पिणी तथा अवसर्प्पिणी ए बेउना जेटला समय थाय, तेटला सर्व समय एक जीव नियथके० पोताने मरणे करी, आगल पाउल करतां पुठाके० फरसे, तेवारे बादर काल पुद्गल परावर्त्तथाय.

हवे सूक्ष्म काल पुद्गल परावर्त कहेछे. मूलः—सुहुमो पुणउसप्पिणि पढमे सम यंमि जइ मरइहोइ॥ पुणरवि तस्साणंतर, बीए समयंमि जइ मरइ॥ ६२ ॥ एवंतरतम जोएण सव्वसमएसु चेव एएसु ॥ जइ कुणइ पाणवायं, अणुक्कमेणं नणुगणि ज्जा॥६३॥ अर्थः—सूक्ष्मकाल पुद्गलपरावर्त वलीआवीरीते थाय; के अवसर्प्पिणीने उत्सर्प्पिणीना समय मांहेला पहेला समयनेविषे जे एक जीव मरण पाम्यो होय, तेज जीव, पुणरविके० वली जेवारे ते समयथकी अनंतर बीजा समयनेविषे मरण पामे. तेमज त्रीजा समयनेविषे, एम तरतमयोगे करी, सर्व समयोनेविषे, जे जीव प्राण त्यागकरे; इहां पण समयनुं अनुक्रम गणिये; तेवारे सूक्ष्म काल पुद्गल परावर्त थाय.

हवे नावथी बादर अने सूक्ष्म ए बन्ने पुद्गल परावर्त्त कहेनार उतो, प्रथम अ नुनाग बंधस्थाननुं, परिमाण कहेछे. मूलः— एगसमयंमि लोए, सुहुमगणिजिया उजे उपविसंति ॥ ते हुंतिसंखलोय, पएसतुल्ला असंखिज्जा॥ ६४ ॥ तत्तो असंखगुणि या, अगणिकायाउतेसिकायठिउ॥ तत्तो संजम अणुनाग बंधठाणाणसंखाणि॥६५॥ अर्थः— एक समयनेविषे लोक शब्दे; जगत्रयमां, पृथ्वी कायिकादिक जीवो; अ ने बादर तेऊकाय जीव पण, सुहुम गणिजीयाउ; इहां प्रथमा विनक्ति ते सप्त मीने अर्थे छे, तेथी सूक्ष्म अग्नि कायिक जीवोनेविषे, जेटला पविसंतिके० उपजे, तेने हवे असंख्येयपणुं कहेछे. तेहुंतिके० ते असंख्येय लोकाकाश प्रदेश राशी प्रमाण थाय. इहां जे कोइ पृथ्व्यादिक थकी अथवा बादर तेऊकाय थकी, सूक्ष्म तेऊकायपणे, उपजे ते लेवुं. परंतु प्रथम उपन्या जे तेऊकाय तेज, वली तेवा पर्यायपणे उपजे, ते पूर्वप्रविष्टपणा थकी लेवा नही. सर्वस्तोक इहां एक समयोत्पन्न सूक्ष्म, अग्निकाय जीवो, तत्तोत्ति एटले ते एक समयने विषे उपना जे सूक्ष्म अग्निकाय जीवो तेथकी वली असंख्यात गुणे अधिक सूक्ष्म, अग्निकाय जीवो, पूर्वोत्पन्न जाणवा. केमके एक समये असंख्याता उपजे, तेथीवली अंतर मुहूर्त्तना समय जोइये तो एक समयथकी अंतर मुहुर्त्तोत्पन्न अग्नि कायिया जीवो.

घणा थाय. ते जीवोथकीवली ते अग्निकायजीवोनीकाय स्थितिघणी थाय. कारणके सूक्ष्म अग्निकायिउजीव एक उपन्यो, ते पण अंतर मुहूर्त्त जीवतो रहेछे; अने तेज कायस्थितिए, ते जीव असंख्याति, उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणिसुधी रहेछे; तेथकी वली संयम स्थानकना अनुनाग बंधस्थानक; ते प्रत्येके असंख्येयगुणे अधिक जाणवा. केमके कायस्थितिनेविषे, असंख्याता स्थितिबंधना, सद्भावथकी अने एके कायस्थितिबंधनेविषे, असंख्येय अनुनागबंधनां स्थानक पामिये. अने संयमस्थान तेपण अनुनागबंधस्थान जेटलांजछे. तेमाटे इहां तेनुं ग्रहण कीधुं.

हवे अनुनागबंध स्थान ते शुं कहिये? तेनो शब्दार्थ कहेछे, एनेविषे जीव रहे; तेमाटे स्थान कहिये; अनुनाग बंधनुं स्थान ते अनुनागबंधस्थान कहिये. इहां ए नाव जे एक पण कषायने अध्यवसाये लीधा जे कर्मना पुज्ञल ते विवक्षित एक समय नेविषे, बांध्यो जे रसनो समुदाय तेने, अनुनागबंधस्थान कहिये. ते हवे अनुनागबंधस्थान; ते असंख्येय लोकाकाश प्रदेशप्रमाण. अने अनुनागबंधस्थानना नीपजावनारा कषायना, उदयरूप जे अध्यवसायना विशेष, तेपण अनुनागबंधनां स्थानक कहिये. केमके कारणनेविषे कार्यनो उपचार करिये. ते अनुनागबंधना, अध्यवसाय पण असंख्येय लोकाकाशप्रदेशप्रमाण होयछे. ॥६४॥ ६५॥

हवे बे नेदनो पुज्ञलपरावर्त्त नावथी देखाडेछे. मूलः— ताणिमंतरेणजया, पुट्ठाणिकमुक्कमेण सवाणि ॥ नावम्मिबाय रोसो, सुहुमोय कमेण बोधवो ॥ ६६ ॥ अर्थः— ताणिके० ते सर्वे अध्यवसाय स्थानक आगल पाउल फरसी पूरा करे, तेवारे बादरनाव पुज्ञल परावर्त्त थाय. अने जेवारे, सर्व जघन्य कषायोदयरूप अध्यवसाये वर्त्तमान उतो मरण पामे, तेवार पठी तेज जीव थोडो, अल्प काल अथवा अनंतो काल गये उते वली प्रथमना सर्वे जघन्य, कषायोदयरूप अध्यवसायस्थानकथकी, अनंतर बीजे अध्यवसायने स्थानके, वर्त्तमान उतो जे मरण पामे; तो ते गणतीमां लेवो. पण शेष उत्क्रम नावी, अनंता मरण वचमां थाय; ते गणतीमां लेवा नहीं. वली एज रीते कालांतरे बीजा थकी, त्रीजे अध्यवसाये वर्त्तमान उतो मरण पामे; तो ते गणतीमां लेवो. परंतु वचमांनां मरण गणिये नही. एम अनुक्रमे सर्व अनुनाग बंध, अध्यवसायनां स्थानक, ते जेटले काले मरणे करी, स्पष्ट होय; तेटला कालविशेषे नाव सूक्ष्म पुज्ञल परावर्त्त थायछे. इहां प्रथम बादरनी परूपणा ते सुखावबोधने अर्थे करीछे इतिगाथा द्वादशकार्थः.

अवतरणः— पन्नरसकम्मनूमीउत्ति एटले पन्नरकर्म नूमिनुं, एकशोने त्रेसठमुं

द्वार कहेछे. मूलः—नरहाइ विदेहाइं, परवयाइं च पंच पत्तेयं ॥ नन्नंति कम्मनूमी, उधम्मजोगाउ पन्नरस ॥ ६७ ॥ अर्थः—कर्म जे कर्षण प्रमुख, अथवा मोक्षनुं अनुष्टानरूप जे कर्म; तेनी नूमिका तेने कर्मनूमि कहियें. ते नूमि पन्नरछे. नरत महाविदेह ने, ऐरवत. ए प्रत्येके, पांच पांचना सन्नाव थकी एने कर्मनूमि धर्मने योगे, पन्नर कर्म्मनूमि कहियें. ॥ ६७ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः— अकम्मनूमिउत्ती एटले अकर्म नूमिनी एकशोने चोसठमुं द्वार कहेछे. हेमवयं हरिवासं, देवकुरू तहय उत्तरकुरूवि॥रम्मयमेरन्नवयं, इय छनूमीउ पंच गुणा॥ ६८ ॥ एयाअकम्मनूमीउ, तीससय जुअल धम्मजणठाणं॥दसविहकप्पमहडुम, समुब्न नोगा पसिद्धाउ ॥ ६९ ॥ अर्थः— एक हेमवंत, बीजो हरिवर्ष, त्रीजो देवकुरू, तेमज चोथो उत्तरकुरू, पांचमो रम्यक् अने छठो ऐरवत ए एकेक नूमिका ने पांच गुणो करियें; तेवारे अकर्मनूमिना, त्रीस क्षेत्र थायछे. ते सयके० सदा युगलधर्मि एटले युगलिया जन तेहनुं स्थानक दश प्रकारनां कल्पद्रूम तेथकी उपयो जे नोग तेणेकरी प्रसिद्ध छे. परंतु त्यां कोइ कर्म नथी; माटे ए अकर्मनूमि कहियें. ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ इतिगाथाद्वयार्थ

अवतरणः—अठमयत्ति एटले आठमदनुं एकशोने पांशठमुं द्वार कहेछे. मूलः— जाइ कुल रूव बल सुय, तव लानिस्सरिय अठमयमत्तो॥एआइं चिय बंधइ, असुहाइं बहुंच संसारे ॥ ७० ॥ अर्थः—तेमां एक जाती ते माता संबंधिनी, तथा ब्राह्मणादिकनी. बीजुं कुल ते पिता संबंधी; उग्रादिक त्रीजुं रूप, ते शरीरनुं सुंदरपणुं. चोथुं बल ते शरीरनी सामर्थाइ, पांचमुं श्रुत ते अनेकशास्त्रनुं जाणपणुं. छठुं तप ते अनशनादिकनी सामर्थाई. सातमो लान ते इष्ठित वस्तुनी प्राप्ति. अने आठमुं ऐश्वर्य ते प्रनुतापणुं. ए आठ मदे करी मत्त थयो छतो, जे जीव मातासंबंधीनो मद करे; ते नवांतरे हीन जाती थाय. वली विकट नवाटवीमांहे परिभ्रमण पणुं करे; एरीते शेष मद पण जाणवा. ॥ ७० ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—छन्निसया तेयाला, नेयापाणाइ वायस्सत्ति, एटले बशें ने तेतालीश नेद प्राणातिपातना तेनुं, एकशो ने छासठमुं द्वार कहेछे. मूलः— नूजल जलणा निलवण, बितिचउपंचिंदिएहिं नवजीवा ॥ मण वयण काय गुणिया, हवंति ते सत्तवीसत्ति ॥ ७१ ॥ एक्कासी ईलाकरण कारणाणुमइताडिया होइ ॥ सयियति कालगुणिया, दोन्निसया हुंति तेयाला ॥ ७२ ॥ अर्थः— पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति, बेंडि, तेंडि, चउरेंडि ने, पंचेंडि ए नव जीव कायने मन, वचन, अने

काया ए त्रणनी साथे, गुणाकार करिये; त्यारे नवेत्रिक सत्तावीस थाय. ॥ ३१ ॥ तेने वली करण, करावण अने अनुमतिये करी, त्रिगुणा करिये. तेवारे एक्यासी थाय. सन्नियके० तेवली अतीत, अनागत ने वर्त्तमान ए त्रणकाल साथे, गुण ता बशेंने तेतालीस थाय. ॥ ३२ ॥ इतिगाथा द्वयार्थ.

अवतरणः- परिमाणं अठोत्तर सयंति एटले एकशोने आठ परिमाणनुं एकशो ने सडसठमुं द्वार कहेछे. मूलः-संकप्पाइ तिएणं, मणमाइहिंं तहेव करणेहिं ॥ को हाइचउक्केणं, परिणामेठोत्तरसयंच ॥३३॥ अर्थः-संकल्पशब्दे संरंभ कहिये; आदि शब्द थकी समारंभ, अने आरंभ पण लेवो. एम संरंभ, समारंभ ने आरंभ एत्रणने मन, वचन अने काय साथे गुणिये, तेवारे नव थाय; तेने करण करावण ने अनुमति ए त्रणसाथे गुणतां सत्तावीस भेद थाय. तेने क्रोधादिक चार कषाय साथे गुणतां, एकशो ने आठ परिणाम थायछे. इहां ए भावछे के प्रगटपणे थयो जे क्रोधनो परिणाम, तेथी आत्मा पोतानी कायाये करी, संरंभ करे. तेमज मा नने परिणामे पोते करे, तेमज मायाने परिणामे पोतेकरे तेमज लोभने परिणामे पोते करे, ए रीते पोतेज करे तेना चार भंग थया; तेवाज करावधाना चार भं ग थाय. तेम वली अनुमोदनाए चार भंग थाय; ए त्रणे मली बार भंग थया, ते कायाथकी जाणवा. तेमज वचन थकी बार थाय; तथा मनथकी पण बार थाय; ते सर्व मली संरंभना बत्रीश भंग थाय. तेम बत्रीश समारंभे थाय; तथा बत्रीश आरंभे थाय, सर्व मली एकशो ने आठ परिणामथाय. ॥ ३३ ॥

हवे संकल्पादिकनुं स्वरूप कहेछे. मूलः-संकप्पोसंरंभो, परितावकरोभवे समा रंभो आरंभो उद्दवउ, सुद्धनयाणंचसव्वेसिं ॥ ३४ ॥ अर्थः-जे संकल्प ते संरंभ, अने परितापनो करनार ते समारंभ; तथा ज्यां प्राणीउंने उपद्रव थाय ते आ रंभ जाणवो. ए त्रण भेद, शुद्ध, नय, नैगम, संग्रह, अने व्यवहारने मान्यछे. ते शुद्ध, रूप, नय ए त्रण छे. केमके कर्म्मेकरी, मलीन जे जीव, तेनो शोधन करे, तेमाटे शुद्ध नय. ते अनुयायि द्रव्यनो अंगीकार करे; ते कारणे भवांतरे की धांछे जे कर्म, तेनुं फल भोग माने अने धर्म देशनादिक प्रवृत्तियोगथकी तत्व वृत्ते शुद्ध थाय. तेमाटे ए त्रणनय शुद्ध छे.

अने आगला चार नय ते अशुद्धछे; केमके ते मात्र पर्याय अंगीकार करेछे. अने पर्यायनो मांहोमांहे अत्यंत भेद, एमछतां कृतनाश दोष थाय. ते आवीरीते. मनुष्ये कीधुं जे कर्म ते देवता भोगवे, अने मनुष्यावस्थाथकी देवावस्था जूदीछे;

एम करवाथकी मनुष्यपणे जे कर्म कर्युं तेनो अभाव थयो. केमके मनुष्यपणे ते कर्मनो उपभोग नथयो अने तेनुं फल भोगववामां, देवताने अणकर्यानो आगम थाय, ए अकृतागम अने कृतनाशादिक दोषना सद्भावथकी; धर्म, श्रवण, अनुष्ठानादिकनेविषे कोइ प्रवर्त्ते नही; एटला माटे, मिथ्यात्वशुद्धिनो अभाव थाय. ते अभावथकी ते शुद्धनय कहेवाय नही. अथवा शुद्धनयाणं इहां प्राकृतपणाथकी, पूर्वे आकारनो लोप थयो; तेवारे सर्वे अशुद्ध नयोने, ए संरंभादिक त्रण सम्मत छे. पण शुद्धनयने सम्मत नथी. तेमां प्रथमना त्रण नय, व्यवहारना अंगीकार थकी अशुद्ध अने आगला चारनय ते शुद्ध. निश्चपणानाछे, माटे ते आश्रवाथकी आंही ए तात्पर्यछे केः—संरंभादि त्रणे, नैगमादिक त्रणे नयनेमान्य. अने ऋजुसूत्रादिक, हिंसादिक विचार करतां, बाह्य वस्तुहिंसा अमान्य. तेनो मत एमछे जे आत्माज हिंसाध्यवसायने परिणत, तेज हिंसा पण मनुष्यादिक पर्यायनो, जे विनाश ते, हिंसा नथी. यतः "आया चेवउहिंसा" एवां वचनथी ते कारणे संरंभते तो हिंसा पण, समारंभ ने आरंभ तेने ऋजुसूत्रादिक नयो ते, हिंसामाने नहीं. ॥७४॥ इतिगाथा ढ्यार्थ.

अवतरणः— बंभंअठदस भेयंति एटले ब्रह्मचर्यना, अढार भेदोनुं एकशो, अडशठमुं द्वार कहेछे मूलः—दिव्वा कामरइसुहा, तिविहं तिविहेण नवविहा विरई ॥ उरालिउवि तहा, तं बंभं अठदसभेयं ॥७५॥ अर्थः—दिव्वाके० स्वर्गनेविषे थयो, ते दिव्य. एटले वैक्रियशरीरसंबंधी कामिये, तेथी कामविषय तेनेविषे, रतिजे अभिष्वंग ते कामरति. तेहिज सुख, ते मने करी वैक्रियसंबंधी अब्रह्म करुं नहीं; बीजुं करावुंनही, त्रीजुं अनुमोदु नहीं. एम वचने करी पण त्रण भेद. तेमज कायाना पण त्रण भेद. एरीते नव प्रकारनी विरति तथा, वली उरालियके० औदारिक शरीरसंबंधी पण नवप्रकार थाय; मली अढार भेद थया. इतिगाथार्थ.

अवतरणः—कामाण चउवीसन्ति; एटले चोवीस प्रकारना कामनुं एकशोने ठगणोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—कामो चउवीसविहो, संपत्तो खलु तहा असंपत्तो ॥ संपत्तो चउदसहा, दसहा पुण होइ संपत्तो ॥७६॥ अर्थः—काम चोवीश प्रकारनो छे, तेमां प्रथम संप्राप्तने असंप्राप्तना भेदथकी, बे प्रकार छे. तेमां संप्राप्त ते, कामीजीवोने मांहोमांहे, संगमथी थाय. अने असंप्राप्त ते अभिलाषरूप जाणवो. तेमां संप्राप्त काम चउदप्रकारे, अने असंप्राप्त काम दश प्रकारेछे. ॥७६॥

हवे अल्प वक्तव्यता थकी प्रथम दशप्रकारे असंप्राप्त कहेछे. मूलः—तत्थ असंपत्ता, चिंतातहसद्धसंभरणमेवा ॥ विक्कवयलज्जनासो, पमायउम्मायतब्भावे ॥७७॥

अर्थः–तत्रके० त्यां असंप्राप्तमांहे प्रथम भेद ते अर्थ जे अणदीठेली स्त्रीप्रमुख उ पर गुणने सांभरवे करी अभिलाष मात्र थाय. बीजो भेद चिंताछे. ते स्त्रीना रू पादिक गुण कहेवा, एवा अनुरागेकरी चिंतवे ते चिंता जाणवी. त्रीजो भेद श्र द्धा ते तेना संगमनो अभिलाष, चोथो संभरण ते जेनी साथे प्रीतिभाव थाय. तेनुं रूप आलेखी जूवे; तेम तेम मनने प्रमोद उपजे, ते संस्मरण जाणवुं. पांचमो भेद विक्कवय, ते तेना विरहथी उत्पन्न थयला दुःखेकरी आहारादिक उपर निरपे क्षपणुं थाय. छगे लज्जनासो, एटले गुरु माता पितादिकना समक्षे पण तेना गु णनुं वर्णन करे. सातमो प्रमाद, ते तेनेज अर्थे सर्वकार्यनेविषे प्रवर्त्तवुं. आठमो उन्माद, ते शून्यचित्तपणे करी बोलवुं. नवमो तद्भाव, एटले जे थांबलो प्रमुखने स्त्रीने जाणेके ए तेज स्त्रीछे; एवा भावथी तेने आलिंगन आपे. ॥ ७७ ॥

मूलः–मरणं च होइ दसमे, संपत्तं पिअ समासउ वोछं॥ दिठीए संपाउ, दिठीसेवा यसंभासो ॥ ७८ ॥ अर्थः–दशमो मरण एटले सर्वथा प्राणत्यागलक्षण कहिये. ते इहां न कहेवुं. केमके तेना केहेवा थकी शृंगाररसना भंगनो प्रसंग थायछे. तेथी इहां मरणतो नही पण मरणतुल्य अवस्था ते निश्चेष्टपणेकरी कांइ जाणे नहीं, एवो थइ रहेछे. ए दशमो भेद जाणवो. हवे संप्राप्तपणे तेना समाके० संक्षेपे करी चउदभेद कहुंछुं. तेमां प्रथम, दिठके० लोचन तेनो संपात ते आवीरीते जे, स्त्रीना नयन वदन कुचादिक देखी सराग दृष्टिये तेनी सन्मुख जोवुं, ते दृष्टिसंपात, बीजो दृष्टिसेवा, ते स्त्रीना हाव भाव तेणेकरी प्रधानपणे स्त्रीनी दृष्टिसाथे पोतानी दृष्टिनुं मेलववुं. त्रीजो संभासो, ते उचितकालनेविषे स्त्रीनीसाथे कंदर्पनी वातो करवी.

मूलः–तहसिअ ललिउव गूहिअ दंत नहनिवाय चुंबणं चेव॥ आलिंगण मादा णं, करसेवणा णंगकीडाय ॥ ७९ ॥ अर्थः–चोथो हसिय ते वक्रोक्ति पूर्वक हा स्यनुं करवुं. पांचमो ललित एटले पासा प्रमुखे करी रमत करवी. छठो उपगूढ, एटले आकरां आलिंगन आपवां. सातमो दंतपात एटले अधरनेविषे दांतना घात करवा. आठमो नहनिवाय एटले स्तनने विषे नखघात करवा. नवमो चुंबन ते मुखसाथे मुखनुं मेलववुं. दशमो आलिंगन ते लगारेक स्पर्श करवो. अग्यारमो आदान एटले स्तनादिकनुं ग्रहण करवुं. बारमो कर शब्दे सुरतना आरंभनो यंत्र चोराशी भेद जे वात्सायनशास्त्रमां प्रसिद्धछे ते करवा. तेरमो आसेवन, क्रियानो आरंभ करवो. चउदमो अनंग ते क्रीडा प्रमुख संजोग टालीने अनेरे अंगे अर्थेनी क्रियानुं करवुं. ॥ ७९ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थः.

अवतरणः— दसपाणत्ति एटले दश प्राणनुं एकशोने सीतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—इंदिय बल ऊसासा, पाण चउछक्क सत्तअट्ठेव ॥ इगविगल सन्नि सन्नी, नवदसपाणाय बोधव्वा ॥७०॥ अर्थः—इंद्रिय ते स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, अने श्रोत्र लक्षण पांच जाणवी. मनोबल, वचनबल ने कायबल ए त्रण बल जाणवां ए आठ थया. नवमो श्वासोश्वास, दशमुं आयुष्य, ए दशमांहे अनुक्रमे एकेंद्रिने चार, बेइंद्रियने छ, तेंद्रियने सात, चउरेंद्रियने आठ, असन्नी पंचेंद्रियने नव, अने संज्ञीपंचेंद्रियने मनोबले सहित दश प्राण थाय, एनो भावार्थ सुगमछे. एरीते दश प्राण जाणवा. ॥७०॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरणः—दस कप्प दुमत्ति एटले दशप्रकारना कल्पवृक्षनुं एकशो ने एकोत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः— मत्तंगयायभिंगा, तुडियंगा दीव जोइ चित्तंगा ॥ चित्तरसामणियंगा, गेहागारा अणियणाय ॥ ७१ ॥ अर्थः— एक मत्तांगद बीजो भृगांग त्रीजो त्रुटितांग चोथो दीपांग, पांचमो ज्योतिरंग, छठो चित्रांग सातमो चित्ररस, आठमो मण्यंग, नवमो गृहाकार अने दशमो अणियणा. एनां ए सामान्यपणे नाम कहीने हवे विस्तारे सूत्रकार गाथाये करी वखाणेछे. ॥ ७१ ॥

मूलः— मत्तंगएसु मज्जं, सुहपेज्जं भायणाय भिंगेसु ॥ तुडियंगेसुय संगय, तुडियाइं बहुप्पयाराइ ॥ ७२ ॥ अर्थः—मत्त शब्दे मद तेनुं अंग के० कारण, जे मदिरा, तेने जे आपे तेने मत्तंगद कहिये. तेनेविषे जे मद थाय ते केवो थाय? जेने सुहपेज्जं के० सुखे पीजीये एटले पान करिये. इहां ए भाव जे मत्तांगद नामा कल्पवृक्षने विषे जे फल थाय, ते विशिष्ट, बल, वीर्य, अने कांतिना हेतु थाय. विस्त्रसा परिणामे सुगंध, अनेक प्रकारनी मनोहर मदिराये करी संपूर्ण एवां फल फूटी फुटी तेमांथी मदिरा झरे. बीजो भृतके० भरवुं तेनां अंगजे-वासण, तेने जे आपेछे ते भृतांग कहिये. केमके भरवानुं काम वासण विना थाय नही. ते वासणनां संपादक जे वृक्ष ते भृतांग जाणवां. जेम इहां मणी कनक रजत प्रमुखनां अनेक प्रकारे भाजन देखायछे तेम विस्त्रसा परिणामे अनेक प्रकारना थाल, कचोला, कलसीया करवा प्रमुख भाजन तेणे करी शोभेछे. जेम अन्य वृक्षो फलेकरी शोभेछे तेम ए वृक्ष, भाजने करी शोभेछे. त्रीजु त्रुटित शब्दे वाजित्र, ते तूर्य प्रमुख, तेना अंग प्रतिकार तेने विषे संगत मांहोमांहे जेने. जेनो शब्द संबंधपणे होय. एम वीणा पमह कंसाल कायली प्रमुख फल तेणेकरी विराजमान ते त्रुटितांग कहिये.

मूलः— दीवसिहा जोइस नामगाय एएकरेंति उज्जोयं ॥ चित्तंगे सुयमल्लं, चित्तर

सान्नायणाए ॥ ७३ ॥ अर्थः—इहां दीप, ज्योति ने चित्र ए त्रणेने आगल अंग शब्द जोडिये; तेवारे दीपांग ज्योत्यंग ने चित्रांग एवा शब्द थाय. तेमां दीपांग चोथुंछे, ते कहेछे. दीप शब्दे प्रकाशनो करनार पदार्थ जाणवो. जेम इहां दीवी सुवर्णमय घणा तेलथी अने शबलवाटे करी दीपती देखायछे. तेम विस्रसा परिणामे करी प्रबल अजवालुं करतां रहे ते वृक्ष दीपांग नामे जाणवां, एक आचार्य वली दीपकनी शिखानीपरे रह्यां थकां दीपतां देखायछे तेने दीपशिख वृक्ष एम पण कहेछे. पांचमो ज्योति शब्दे अग्नि तेतो सुषमसुषमाने विषे थाय नहीं. तेमाटे जे उष्णने प्रकाशक वस्तु सूर्यना मांमलानी परे पोताना तेजे करी प्रकाश करे ते ज्योत्यंग नामे कल्पवृक्ष जाणवुं. छगो चित्र शब्दे, विवक्षा प्रधानपणाथकी माल्य तेनां जे अंग एने विषे माला ते अनेक प्रकारना सरस सुरनि कुसुमे करी निस्पन्न एवी थाय. तेथी ए चित्रांग नामा कल्पवृक्ष जाणवुं. सातमो चित्ररस शब्दे नानाप्रकारना रस जे मधुरादिक, ते अति विशिष्ट दाल. शालि, घृत, पक्कान, तीमण अने विविध प्रकारना घोल प्रमुख अपरिमित स्वादिष्टगुणेकरी सहित, जे इंड्रियो तेने कारणे थाय. एटले इंड्रियोने बल अने पुष्टिनी वृद्धिना करनार महा मनोहर जे खाद्य नोज्य पदार्थ तेणेकरी नरेला जे फलनां मध्यनागो तेवा फले करी विराजमान थकांज सर्वदा रहेछे, तेनुं नाम चित्ररस कल्पवृक्ष कहिये. ॥ ७३ ॥

मूलः—मणियंगेसुयनूसण वराइनवणरुरकेसु ॥ तह अणियणेसुधणियं, वज्राइं बहुप्पयाराइ ॥ ७४ ॥ अर्थः—आठमो मणीशब्दे रत्न जाणवुं तेणेकरी प्रधान जे आनरण, तेनां अनेक प्रकारनां अंग जे कारण ते छे जेनेविषे, तेने मण्यंग कहिये. एने विषे वरके० प्रधानजूषण एवां अनेक प्रकारनां कटक केयूर कुंमल चूडा रत्न मुड्रिका प्रमुख आनरणना विशेष विस्रसा परिणामने पामी थाय. तेमाटे एने मण्यंग वृक्ष कहिये. नवमो गेह शब्दे घर कहिये, तेनी पेरे छे आकार जेनो, तेने कहिये गृहाकार, एवे नामे जे नुवनवृक्ष त्यां विस्रसाने परिणामे करी ने उंचा आवास तेना उपरे सुखे चडवाने अर्थे पावडीउं, विचित्र चित्रसाला युक्त तेमां अनेक प्रकारे गोखला जालि छाजा वलि, तोरण मंमप, पडसी तावरा ने फरसबंधी ए सहित तल तेणेकरी शोनायमानछे, तेने गृहाकार कहिये, अने नवन वृक्षपण कहिये. तहके० तेमज दशमो अणियणेसु कहेतां अणीयण कल्पवृक्ष तेनेविषे धणीयं के० अत्यर्थे वस्त्र धवलां प्रमुख अनेक प्रकारनां थाय. इहां ए नावजे एनेविषे विस्रसा परिणामे अतिसूक्ष्म सुकुंमाल देवदूष्य समान

महामनोहर अत्यंत निर्मल कांतिनां धरनार एवां वस्त्र थाय. एनेविषे निवास क रनार जे युगलिया ते नग्न क्यारे पण न थाय. तेथी बीजुं ए वृक्षनुं अनंग्नक एवुं पण एनुं नामछे. ॥ ७४ ॥ इति गाथार्थ ए दश कल्पवृक्षनुं द्वार वखाण्युं.

अवतरणः—नरत्ति एटले सात नरकनां नाम अने गोत्रनुं एकशोने बहुतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—घम्मा वंसा सेला, अंजणरिठा मघायमाघवई ॥ नरयपुढवीण मानाइं; हुंति रयणाइं गोत्ताई ॥ ७५ ॥ अर्थः—घम्मा, वंशा, शैला, अंजना, रिष्टा, मघा अने माघवती ए सात नरक पृथ्वीनां नामछे. ते क्रमेकरी कह्यां. त्यांजे अर्थ रहित अनिधान ते नाम कहिये. अने रत्नप्रनादिक ए एनां गोत्र कहिये. केमके जे अर्थ सहित होय तेने गोत्र कहेछे. तेज आगली गाथाये देखाडेछे. ॥ ७५ ॥

मूलः—रयणप्पह सक्करपह, वालुअपह पंकपहनिहाणाउं ॥ धूमपहतमपहाउं तह महातमपहापुढवी ॥ ७६ ॥ अर्थः—प्रथम घम्मानामे पृथ्वी तेनुं रत्नप्रना एवे नामे गोत्रछे. त्यां रत्न जे कर्केतनादिक तेनी प्रना ते बहुल पणे ज्यांछे तेथी रत्नप्रना कहिये. एम शेषना पण नामार्थ जाणवा. बीजी शर्कराप्रना, त्रीजी वालुकाप्रना; चोथी पंकप्रना ए नामे गोत्र जाणवां. प्रनानुं बहुलपणु सर्वत्र कहेवुं. पांचमी धूमप्रना, छठी तमप्रना, तेमज सातमी महातमप्रना पृथ्वी जाणवी. इहां तमना म अंधकारनुं छे. ॥ ७६ ॥ इति गाथा द्यार्थ.

अवतरणः—नेरइयाणआवासत्ति एटले नारकीना आवासनी संख्यानुं एकशोने तउतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—तीसायपणुवीसा पन्नरस दस चेव तिन्निय ह वंति ॥ पंचूणसयसहस्सं, पंचेवअणुत्तरा नरया ॥ ७७ ॥ अर्थः—त्रीसलाख नर कावासा घम्मानेविषे, पचीसलाख वंसानेविषे, पन्नर लाख शेलानेविषे, दश लाख अंजनानेविषे, त्रणलाख रिष्टानेविषे, पांचेऊणा एक लाख एटले नवाणुं हजार नवशेंने पंचाणुं अधिक मघानेविषे, अने सर्वोत्कृष्ट माघवतीनेविषे, पांच ज नरकावासा जाणवा. इहां आयुष्य अने वेदना ते सर्वोत्कृष्ट छे तेना सद्भावथ की उत्कृष्ट शब्द कह्यो. ॥ ७७ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—वेयणत्ति एटले साते नरकने विषे वेदना संबंधीनुं एकशोने चू मोत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः—सत्तसु खित्तसहावो, अणोन्नदिरया य जा छठी ॥तिसु आइमा सुविधणा, परमाहम्मि असुखयाय ॥ ७८ ॥ अर्थः—साते, नरक पृथ्वीने विषे, क्षेत्रस्वनाव एटले क्षेत्रथकी उत्पन्न थयेली जे वेदना ते थाय. बीजी अन्यो अन्य मांहोमांहे उदीरि लीधेली वेदना ते बे प्रकारे थाय छे. तेमां एकतो प्रहर

एकरी नारकी मांहोमांहे वढवाड करे ते, प्रहरणनी करेली वेदना पांचमी नरक पृथ्वीसुधी थाय. अने बीजी शरीरनी करेली वेदना; उठी नरकपृथ्वीसुधी होय. अने आदिमके० धुरली त्रण पृथ्वीनेविषे परमाधामिक देवोनी करेली वेदना पण थायछे. इतिगाथार्थ ॥ ८८ ॥

अवतरणः—आउत्ति एटले नारकीना आयुष्यनुं एकशोने पंचोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—सागरमेगंतियसत्त दसय सत्तरस तहय बावीसा ॥ तेत्तीसं जाव ठिई, सत्त सु पुढवीसु उक्कोसा ॥८९॥ अर्थः—प्रथम नरकपृथ्वी रत्नप्रभा छे. त्यां एक सागरो पमायु बीजीये त्रण सागरोपम, त्रीजीये सात सागरोपम, चोथीये दशसागरोपम पांचमीये सत्तर सागरोपम, तेमज उठीये बावीस सागरोपम, अने सातमीये तेत्री श सागरोपमायु जाणवुं. ए स्थिति सात नरक पृथ्वीने विषे उत्कृष्टि कही.॥८९॥

मूलः—जा पढमाए जेट्ठा, साबीआ एक णिट्ठिआ नणिआ॥तरतमजोगोएगो, दस वास सहस्स रयणाए ॥९०॥ अर्थः—जे प्रथम नरके उत्कृष्टि स्थिति एकसागरो पमछे; ते बीजी नरके कनिष्ठ एटले जघन्य जाणवी. एम आगली नारकीओनेवि पण पाछलीए उत्कृष्टि स्थिति ते आगलीये जघन्य जाणवी. ए तरतम योग्य जा णवो. अने पहेली रत्नप्रभापृथ्वीए जघन्य स्थिति दशहजार वर्षनी जाणवी.

अवतरणः—तणुमाणंति एटलेशरीरना मानतुं एकशोने छोत्तेरमुं द्वार कहेछे.मूलः—पढमाए पुढवीए, नेरइयाणं तु होइ उच्चित्तं॥सत्तधणु तिन्निरयणी,छच्चेवय अंगुला पु सा ॥ ९१ ॥ अर्थः—पहेली नरक पृथ्वीये नारकीओनुं उच्चपणु एटले देहमान, सात धनुष्यने त्रण रयणीके०हाथ, तथा छ आंगुल उपर एटलुं देहमान थायछे. एने अतिदेशे बीजी नरकपृथ्वीए पन्नर धनुष्य, बे हाथ ने बार आंगल, त्रीजीए, एकत्रीश धनुष्य ने एक हाथ, चोथीए साडीबाशेठ धनुष्य, पांचमीए सवासो धनु ष्य, उठीए अढीसे धनुष्य. ॥ ९१ ॥

मूलः—सत्तमपुढवीए पुण, पंचेव धणुस्सयाइ तणुमाणं ॥ मज्ज्ञिमपुढवीसु पुणो, अणेगहा मज्ज्ञिमं नेयं ॥ ९२ ॥ अर्थः—सातमी नरक पृथ्वीए वली पांचसे धनुष्य देहमानछे अने मध्यमपृथ्वीए तो वली जे पहेली पहेली पृथ्वीए देहमानछे, तेथी आगली आगली पृथ्वीए बमणुं बमणुं करतां उत्कृष्ट शरीर मान थाय. एम म ध्यम अनेक प्रकारेछे. ते प्रथम गाथाए देखाड्युं. ॥ ९२ ॥

हवे उत्तर वैक्रिय शरीर कहेछे. मूलः—जा जम्मि होइ नव धारणिज्जा अवगाहणा इ नरएसु ॥ सा दुगुणा बोधवा, उत्तरवेउव्वि उक्कोसा ॥ ९३ ॥ अर्थः—जे नरक पृ

थ्वीए जे नवधारणिय अवगाहना थाय, तेने बमणी करीए तेवारे ते ते नरकने विषे उत्तरवैक्रिय तेटली जाणवी. ॥ ए३ ॥

मूलः—नवधारणिज्जरूवा, उत्तरवेउव्वियायनरएसु ॥ उगाहणाजहन्ना, अंगुलअ संखनागोय ॥ ए४ ॥ अर्थः—नवधारणीयरूप थकी, उत्तरवैक्रिय नरक नरकने विषे जघन्य अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो नाग ते उत्पत्ति समयनेविषेज होय.

अवतरणः—उप्पत्तिनासविरहोत्ति एटले उत्पत्ति नाश अने विरह कालनुं एक शो ने सीतोतेरमुं द्वार कहेडे. मूलः—चउवीसयंमुहुत्ता, सत्त अहोरत्त तह य पन्नरस॥ मासोय दोय चउरो, ब्म्मासा विरहकालोउ ॥ ए५ ॥ अर्थः—प्रथम नरक पृथ्वीए चोवीश मुहूर्त्त विरहकाल जाणवो. एटले एक नारकी उपन्या पढी बीजो उपजे तेनी वचमां विरह पडे, तो एटलो पडे. एम बीजी नरके सात अहोरात्री, त्रीजीए पन्नर दिवस, चोथीए एक, मास, पांचमीए बे मास, बठीए चारमास अने सातमीए बमासनो विरह काल जाणवो. ॥ ए५ ॥

मूलः—उक्कोसो रयणाइसु, सव्वासु जहन्नउ नवे समउ ॥ एमेवयउवट्टण, संखा पुण सुरसवरातुल्ला ॥ ए६ ॥ अर्थः—ए उत्कृष्टथी रत्नप्रनादिकने विषे विरहकाल कह्यो, अने सव्वासुके० सर्व पृथ्वीने विषे जघन्यथी एक समय विरह काल थाय. एमेवके० एप्रकारे उद्वर्त्तना विरह तेपण एक नारकी उद्वर्यां पढी विरहपडे तो; एटलोज जाणवो. अने ए उत्पत्ति तथा उद्वर्त्तनानी जे संख्या ते देवोनी परे जाणवी. ते इगडुति संखमसंखा, एगसमये हुंतिहुचवंति इत्यादिक जाणवुं. ॥ ए६ ॥

अवतरणः—लेसाउत्ति एटले नारकीनेविषे लेश्यानुं एकशोने अठोत्तरमुं द्वार कहेडे. मूलः—काऊकाऊ तहकाऊनील नीलायनील कन्हाय ॥ कण्हाय तहा एवं, सत्तसु पुढवीसु लेसाउ ॥ए७॥ अर्थः—पहेली पृथ्वीए कापोत लेश्या, अने बीजीए पण कापोत लेश्या, त्रीजीए उपरले नरकावासे कापोत लेश्या, अने नीचले नरकावासे नील लेश्या जाणवी. चोथीए नील लेश्या, पांचमीए उपरना नरकावासे नील अने नीचेना नरकावासे कृष्ण लेश्या, बठीये तथा सातमीए कृष्ण लेश्या ढे; परंतु बठी थकी सातमीए अत्यंत कृष्ण लेश्या जाणवी. एरीते सात पृथ्वीने विषे लेश्या जाणवी.

अवतरणः— अविहित्ति एटले नारकीने विषे अवधिज्ञाननुं एकशो ने उंगणएसीमुं द्वार कहेडे. मूलः—चत्तारि गाउ आई, अहुट्ठाइंति गाउअं चेव ॥ अड्डाइज्जा दोणिवि, दिवड्ढमेगंच नरएसुं ॥ए७॥ अर्थः—पहेली पृथ्वीये चार गाउ अवधिज्ञान थाय, एम बीजीए साडात्रण गाउ, त्रीजीए त्रण गाउ, चोथीए अढीगाउ,

पांचमीए बेगाउ, बठीए दोढगाउ, अने सातमीए एकगाउ. ए सात पृथ्वीए अ वधिज्ञान जाणवुं. एम बार गाथाए करी सात द्वार कह्यां. ॥ ए८ ॥

अवतरणः—परमाहम्मित्ति परमाधामिकना स्वरूपनुं एकशोने एंसीमुं द्वार कहे छे. मूलः—अंबे अंबरिसीचेव सामेया सबलेइयं ॥ रुद्दोव रुद्दकालेय, महाकालेत्ति आवरे ॥एए॥ असिपत्ते धणू कुंजी, वालूवेयरणीइय ॥ खरस्सरे महाघोसे, पन्नरस परमाहम्मिआ ॥ १०० ॥ अर्थः—अंब आदेदेइने पन्नर परमाधामिकनां नामछे; ते क्रियाने अनुसारे जाणवां. ते आवीरीते. पहेलो अंब ते नारकीउने हणे, नीचा पाडे, उंचा आकाशे उछाले. ए अंब कहिये. बीजो जे नारकीने हणीने कातरणी संमासी प्रमुखनी साथे कडका करी, जठीमां पकववा योग्य करे ते, अंबरीख; इहां आंबरीख ते जठी कहिये; तेना संयोग थकी एनुं नाम पण अंबरीख छे. त्रीजो, जे राढू प्रमुखने प्रहारेकरी सातन पातनादिक करे, अने ते वर्णे श्याम छे. तेमाटे एनुं नाम पण श्याम छे. चोथो जे आंतरमूं काढे; हैया अने कलेजानुं विदारण करे अने वर्णे सबल काबरो थाय ते सबल नामे जाण वुं. पांचमु जे शक्ति कुंत अने तोमर तेणेकरी नारकीउने परोवे ते रौद्रपणाना योगे तेनुं नामपण रौद्र जाणवुं. बठो जे नारकीउना अंगोपांग जांगी नाखे; ते वली अत्यंत रौद्रपणाथकी, एनुं नाम उपरौद्र जाणवुं. सातमुं, जे कडाइ मां तावडी प्रमुखमां नारकीउने पकावे, तेमज एनो वर्णपण कालो होय, ते थी एनुं नाम काल कहिये. आठमुं अपरके० बीजा नारकीना न्हाना खंडकरी खवरावेय ने वर्णेपण महाकाला होय तेमाटे एनुं नामपण महाकाल जाणवुं. नवमो असि शब्दे खड्ग तेना आकारे पत्र, तेने वनके० विकुर्वि, पठी तेनेविषे रह्याजे नारकी, तेने ते असिपत्रने पातेकरी तिलतिल जेटला खंमकरे, तेमाटे एनुं नाम पण असिपत्र छे. दशमुं, जे धनुष्य साथे मूकी अर्द्धचंद्रादिक बा णेकरी नारकीना कान नाक प्रमुखनुं छेदन करे; तेथी एनुं नाम पण धनुष्य छे. इहां श्री जगवतिमांहे महाकाल पठी असिपत्र पठी कुंज कह्योछे. तेमां जे खड्गेकरी तेउने बेदे ते असि, अने जे कुंजादिकमां पकवे ते कुंज, बारमा जे कदंब फूल ने आकारे अने वज्रना आकारना जाजनो तेमां वैक्रिय तप्तवेलुनेविषे चणानी परे नारकीने शेके, माटे एनुं नाम पण वालुक छे. तेरमुं, जे विरूपके० मातुं छे तर ण जेनुं, ते त्रांबु जेवुं तपाव्युं होय ते थको पण महाकलकलति रक्त लोहिये ज रेली नदी विकूर्वि तेमां नारकीउने जे कदर्थना करे, तेथी एनुं नाम पण वेतरण

छे. चउदमुं जे वज्रकंटके व्याप्त शाल्मली वृक्ष, त्यां नारकीउने आरोपी पुराणावस्त्र नी परे महाखर स्वरे आरडताने खेंचे, तेथी एनुं नाम पण खरस्वर. पन्नरमुं जे जयथ कीबीहीता नासता आरडता नारकीउनेपशुनीपरे वाडामां घाले तेनुं नाम महाघोषछे.

एरीते ए पन्नर जातना परमाधामिक, ते पूर्व जन्मनेविषे जे महाक्रूर कर्मना करनार, पापनेविषे रक्तछतां पंचाग्नि साधनरूप मिथ्यात्व कष्ट तप करी, रौद्र असुर संबंधिनी गतिनेविषे उत्पन्न थायछे, तेथी एनो एवोज स्वभाव होयछे के ते धुरनी त्रण नरकपृथ्वीनेविषे उत्पन्न थयेला नारकीउने त्यां आवीने अनेक प्रकारनी वेद ना उदीरेछे, अने जेम इहां मेष महिष कूकडादिकने फूभावता जोइ देखनार ने हर्ष थाय; तेम तेउपण त्यां नारकीउने कदर्थना थती देखी हर्षित थया थका चेलोत्क्षेप अट्टहासादिक करे. घणुंशुं? पण जे ते परमाधामिकोने नारकी उने संताप करतां प्रीति उत्पन्न थायछे; तेवी प्रीति ते मनोहर नाटकना जोवाथ की तथा अंगना संगमादिकथी पण न थाय. इतिगाथा ष्यार्थ. ॥एए॥१००॥

अवतरणः— नरउवट्टाणलद्धि संभवोत्ति एटले नरकथकी उद्धर्त्यांने जेजे लब्धी नो संभव होय तेनुं एकशो ने एक्यासीमुं द्वार कहेछे. मूलः—तिसुतित्थ चउत्थीए, केव लं पंचमीए सामन्नं ॥ छठीए विरइविरइ, सत्तमपुढवीइसम्मत्तं ॥१०१॥ अर्थः—प्रथम नी त्रण नरक पृथ्वीना आव्या नारकीउ, तीर्थंकरपणुं पामे, पण चोथी नरक ना आव्या, तीर्थंकर न थाय. परंतु केवल ज्ञान पामे, अने पांचमीना आव्या ना रकीउ ते श्रमणपणुं एटले सर्व विरतिपणुं पामे, पण केवल ज्ञान न पामे. छठीना आव्या नारकी देशविरति अथवा अविरति श्रावक थाय, पण सर्व विरतिपणुं पा मे नही. सातमीना आव्या सम्यक्त्वपणुं पामे परंतु श्रावकादिक भाव पामे नही.

वली इहां विशेष देखाडेछे. मूलः—पढमाउ चक्कवट्टी, बीयाए रामकेसवा हुंति॥ तच्चाउ अरिहंता, तहंतकिरया चउत्थीउ ॥१०२॥ अर्थः—पहेली पृथ्वीना आव्या चक्रवर्त्ती थाय. बीजीना आव्या राम एटले बलभद्र अने केशव एटले वासुदे व तथा प्रतिवासुदेव थाय. त्रीजीना आव्या अरिहंत थाय. तेम अंतक्रिया एटले मुक्तिगामि; ते चोथी पृथ्वीना आव्या थायछे. ॥ १०२ ॥

मूलः—उवट्टिया उ संता, नेरइया तमतमाउ पुढवीउ॥ न लहंति माणुसत्तं, तिर क्खजोणिं च उवणमंति ॥१०३॥ अर्थः—तमतमा पृथ्वीथकी उद्धर्त्या छतां एवा जे नारकी ते मनुष्यपणुं न पामे, पण तिर्यंचयोनी पामे. ॥ १०३ ॥

मूलः—छठीउ पुढवीउ, उवट्टा इह अणंतरभवंमि ॥ भज्जा मणुस्स जम्मे, संजम

लाजेणउ विहीणा ॥१०४॥ अर्थः—उठी नरकपृथ्वीथकी उद्धर्त्या थका जे होय तेनी इहां अनंतर नवनेविषे मनुष्यजन्म संबंधि नजाके०, नजना करवी. एटले कोइक मनुष्यपणुं पामे अने कोइक न पण पामे. कदाचित् मनुष्य थाय तोपण संयम पामे नही. ॥ १०४ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थ.

अवतरणः—तेसु जेसिं उववाउत्ति एटले नारकीनेविषे जे जीवोनुं उपजवुं था य तेनुं एकशोने ब्यासीमुं द्वार कहेछे. मूलः—असन्नी खलु पढमीं दोच्चंच सिरीसि वात इयपरकी ॥ सीहा जंति चउत्थिं, उरगा पुंण पंचमी पुढवी ॥१०५॥ अर्थः—अ संज्ञी मरण पामी पहेली पृथ्वीए जाय. गर्नज सरीसृप गोह नोलियादिक बीजी पृथ्वीए जाय. पंखी त्रीजीए जाय. सिंह तथा तेना उपलक्षणथकी सर्व चतुष्पद चोथी पृथ्वीसुधी जाय. उरग सर्पप्रमुख ते वली पांचमी पृथ्वीसुधी जाय. ॥१०५॥

मूलः—उठिंच इत्थियाउ, मच्छा मणुयाय सत्तमिं पुढविं ॥ एसो परमुववाउ, बोधव्वो नरयपुढवीसु ॥ १०६ ॥ अर्थः—उठी पृथ्वीसुधी स्त्रीनुं जावुं छे. मच्छ अने मनुष्य जे कोइ अत्यंत क्रूर अध्यवसायना धरनार होय ते सातमी नरक पृथ्वी सुधी जायछे. ए सात नरकपृथ्वीनुं परमके० उत्कृष्ट उपपातके० उपजवुं जाणवुं.

मूलः—वालेसुय दाढेसु, परकीसुय जलयरेसु उववन्ना ॥ संखिज्जा उतिईया, पुणोवि नरयाउया होंति ॥१०७॥ अर्थः—व्याल ते सर्पादिक तेनेविषे, तथा दाढी ते सिंहादिकने विषे, अने परकीसुके० खेचरने विषे, अने जलचर ते मच्छादिकने विषे जे नरकथकी आवीने उपन्या होय, तेपण जे संख्याता वर्षायुष्यनी स्थिति वाला होय ते क्रूर अध्यवसायना वशथकी पंचेंद्रियना वधपणाने योगे वली नरकनुं आयुष्य बांधी नरकमांज उपजे. ॥१०७॥ इतिगाथा त्रयार्थ.

अवतरणः—संखाउप्पज्जंकंताणंति एटले एक समयने विषे केटला नारकी उपजे तेनुं एकशो ने त्राशीमुं द्वार, तेमज उवट्टमाणाणंत्ति एटले एक समयनेविषे उर्द्वर्तमान ते नरकथकी एक समयनेविषे निकलतानी संख्यानुं एकशो ने चोरासीमुं द्वार ए वे द्वार नाश अने विरह कालनी गाथामां कह्यांछे, तेथी इहां कह्यां नथी.

अवतरणः—एगिंदियविगल सन्नि जीवाण कायठियत्ति एटले एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, अने संज्ञी जीव, ते पोतानीज कायनेविषे जेटलो काल रहे तेने कायस्थिति कहिये. जेम, पृथ्वीकाय जीव मरणपामिने वली पृथ्वीकायमांज उपजे. ए कायस्थितिनुं एकशो ने पच्चासीमुं द्वार कहेछे. मूलः—असंखो सप्पिणि सप्पिणीउ एगिंदियाणय चउन्हं॥ताचे वक अणंता वणस्सईएउ बोधव्वा॥१०८॥अर्थः—इहां काय

स्थिति ते संव्यवहारकजीव आश्री जाणवी. असंव्यवहारिकजीवोने तो अनादि एकज कायस्थिति होय तेथी मरुदेवादिकनी साथे व्यभिचार जाणवो नही. तथाच क्षमाश्रमणः॥तहकायठिईकाला दुविहा सेसे पडुच्च किर जीवो॥नाणाइ वणस्सइणो, जे संववहार बाहिरिया ॥ १ ॥ अर्थः—जे असंव्यवहारिक जीवोने अनादि कायस्थितिछे, ते पण कोइक जीवने अनादि अपर्यवसान थाय. ते आवीरीते. जे जीव असंव्यवहारिक राशिथी निकलीने संव्यवहाराशिमां न आवे; अने कोइकने अनादि पर्यवसान, ते आवी रीते के, जे असंव्यवहारराशिथकी निकलीने संव्यवहारराशिमां आवे ते जाणवा.

इहां शिष्यपूछेछे के कहोने केवी रीते असंव्यवहारराशि मूकी संव्यवहारराशिमां पण आवे? तेने गुरु कहेछे के आवे. केमके, विशेषणवतीमां कह्युंछे. यडुक्तं सिझंति जेत्तियाकिरइह संववहार जीवरासीउ ॥ इंत्तियणाइवणस्सइ, रासीउ तत्ति आतम्मि ॥१॥ इहां ए भावछे के, जे जीव असंव्यहारराशिमूकीने संव्यवहार राशिमां आवी सीजे; परंतु तोपण संव्यवहारराशिमांहे तेटलाज. जेने पृथ्व्यादिकनो व्यवहार प्राप्त थयो ते व्यवहारिक. अने जेओने एवो व्यवहार न होय ते जीव असंव्यवहारिक जाणवा. अने जे व्यवहारराशिमां एकवार आवी वली निगोदमां जाय ते व्यवहारराशिमां पड्या तेथी तेने संव्यवहारिकज कहिये.

हवे सूत्रार्थ कहेछे. असंख्याता लोकाकाश, प्रदेश, अपहार, प्रमाण क्षेत्रे असंख्याति उत्सर्प्पिणीने अवसर्प्पिणी प्रमाण एकेंद्रिय पृथ्वी, अप, तेज वायु रूप चारेने कायस्थिति थाय. ताचेवक के० तेज उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी ते अनंति वनस्पतिनी पण कायस्थिति जाणवी. इहां चेव ए पद पूर्णार्थेछे.॥१०८॥

मूलः— वास सहस्सा संखा, विगलाणठिईउ होइ बोधव्वा ॥ सत्तठ्ठभवाउ भवे, पणिंदितिरिमणुय उक्कोसा ॥ १०९ ॥ अर्थः—संख्याता सहस्रवर्ष विकलेंड्रियनो कायस्थिति थाये. तथा सात आठ भव ते पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने कायस्थिति थाय. ए उत्कृष्टथी कायस्थिति कही. ॥१०९॥ इतिगाथाद्वयार्थ.

अवतरणः—एगिंदियविगलसन्नी ए भवठियत्ति एटले एकेंद्रियादिक जीवोनी भवस्थितिनुं एकशोने छयाशीमुं द्वार कहेछे. मूलः—बावीसई सहस्सा, सत्तेव सहस्स तिन्नि होरत्ता ॥ वाए तिन्नि सहस्सा, दसवाससहस्सिया रुरका॥११०॥ अर्थः—बावीशसहस्र वर्ष पृथ्वी कायिकजीवनी भवस्थिति जाणवी. अने अपकायिक जीवनी सातहजार वर्ष, अग्निकायनीत्रण अहोरात्री, वायुकायजीवने त्रण हजार वर्ष, अने वनस्पतिकायने दशहजारवर्ष भवस्थिति जाणवी. ॥११०॥

मूलः- संवछराइं बारस, राइंदिय होंति अउणपन्नासं ॥ छम्मास तिन्निपलिया, पुढवाईणं वि उक्कोसा ॥१११॥ अर्थः-बारवर्ष बेंद्रियने, राइंदियके० रात्रदिवस ते उंगणपचाश दिवश तेंद्रियने जाणवा. चउरेंद्रियने छ महीना, अने पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यने त्रण पल्योपम ए पृथ्वी आदेदेइ सर्व जीवोनी उत्कृष्टि आयुस्थिति कही; परंतु ए निरूपद्रव्य स्थानके जे रह्याछे प्रवाहे तेने जाणवी. ॥१११॥

पृथिविकायने विषे श्लक्ष्णादिकने जूदो जूदो विशेष देखाडेछे. मूलः-सण्हाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्कराय खरपुढवी ॥ एकं बारस चउदस, सोलस अढार बावीसा ॥ ११२ ॥ अर्थः-श्लक्ष्ण नाम पृथ्वी जे सपाट मारवाड प्रमुखनी तेने एक हजार वर्ष अनुक्रमे छ बोलने छबोल लगाडवा. शुद्ध शब्दे सूधी सुंवाली अने कोमल माटी तेने बारहजारवर्ष. वालूका शब्दे वेलू तेनेचौद हजार वर्ष, मणसिलने सोलहजारवर्ष, अने शर्करा शब्दे नानी कांकरी तेनेविषे अढार हजारवर्ष. खर पृथ्वी मोटी जे शिला पटादिक तेनी बावीशहजार वर्ष स्थिति जाणवी. ॥११२॥ इतिगाथा त्रयार्थ.

अवतरणः-एएसिंतणु माणंति एटले एना शरीरना माननुं एकशोने सत्याशीमुं द्वार कहेछे. मूलः- जोयण सहस्स महियं, उहिय एगिंदिए तरुगणेसु ॥ मछजुअले सहस्सं, उरलेसुय गब्भजाईसु॥११३॥अर्थः-हजारयोजन जाझेरुं सामान्यपणे एकेंद्रियनेविषे अने विशेष चिंताए तरुगणेसुके० प्रत्येक वनस्पतिनेविषे जाणवुं. पण ते समुद्रमांगो तीर्थादि गत वेली कमल अधिकरीने जाणवुं. केमके अनेरे स्थानके एटला उदारिकशरीरनो असंभवछे माटे.

तेमज मछनुं युगल जे गर्भज समूर्छिम लक्षण तेनेविषे पण हजारयोजननुं थाय. उरगपरिसर्पनेविषे एक हजारयोजन शरीरमानछे. पण ते गर्भजने होय. इहां शरीरमान उत्सेधांगुले कह्युंछे. अने समुद्र पद्मद्रहादिकमांहेला पाणीनुं मान ते प्रमाणांगुले थाय तेवारे प्रमाणांगुलने उरूपणे, उत्सेधांगुलनी अपेक्षाए अत्यंत दीर्घपणुं होय. एवी आशंका निवारवाने अर्थे सूत्रकार कहेछे.॥११३॥

मूलः-उसेहंगुल गुणिअं, जलासयंजमिह जोयण सहस्सं ॥ तब्भुप्पन्नं नलिणं, विसेयं नणिय माणंति ॥ ११४ ॥ अर्थः-उत्सेधांगुलेकरी गणितपणे कह्यां जे हजारयोजन प्रमाण जलाश्रय, तेनेविषे उपन्युं जे नलिन कमल, ते नणितमान हजारयोजन जाझेरुं जाणवुं. एटले हजार योजन जलाश्रय छते कमल बाहेर रहे तेटलुं जाझेरुं कह्युं.॥११४॥

मूलः—जंपुण जलहि दहेसुं, पमायण जोयण सहस्समाणेसुं॥उप्पज्जइवर पउमं, तं जाण सुजूविया रंति ॥११५॥ जे कारणे समुद्र द्रहादिकनेविषे प्रमाणांगुले करी हजारयोजन प्रमाण पाणीमांहे उपजे जे वरप्रधान कमल, तेम श्रीदेविनो निवास कमल. ते तुं जाण, जूके० पृथ्वीनो विकार पण, वनस्पतिकाय न थाय.
अनेरां पाणीनां जे आश्रय, जेनेविषे उपद्रव नथी,एवा कोइकस्थानकनेविषे कह्या जे वेलि लता प्रमुख ते यथोक्त मान हजारयोजन जाझेरा तेणेकरी सहित जाणवा.

मूलः—वणणंतसरीराणं, एगनिल सरीरगं पमाणेणं ॥ अनलोदग पुढवीणं, असंखगुणिया नवे वुड्ढी ॥ ११६ ॥ अर्थः—सूक्ष्म वनस्पतिनां अनंतां शरीर एकठां करिए; तेवारे एक वायुकायनुं शरीर थाय. एम अनल शब्दे, तेऊकायिक, दग ते अपकायिक पृथ्वीकायिकनी असंख्यात गुणि वृद्धि थाय. ते आवीरीतेः— असंख्यातां वायुकायनां शरीर एकठां करीए; तेवारे एक तेजसकायिक थाय. असंख्याता तेजसकायिक प्रमाणे एक अपकायिकनुं शरीर थाय. असंख्याता अपकायिके एक पृथ्वीकायिकनुं शरीर थाय. ॥११६॥

हवे बेंद्रियादिकनुं देहमान कहेछे. मूलः—विगलिंदियाण बारस, जोयणाणि तिन्निचउरको साय ॥ सेसाणोगाहणउ, अंगुल भागो असंखिज्जो ॥ ११७ ॥ अर्थः—विकलेंद्रियमां, बेंद्रियने बार योजननी अवगाहना; अने तेंद्रियने त्रण कोशनी अवगाहना, चउरेंद्रियने चार कोशनी अवगाहना, अने शेषाण एटले शेष शब्दे पृथ्वी, अप, तेज, वायु साधारण वनस्पति, समूर्छिम मनुष्य, समस्त अपर्याप्ता. तेने उत्कृष्टे आंगुलनो असंख्यातमो भाग अवगाहना देहमान जाणवुं.॥११७
हवे पंचेंद्रियनुं देह मान कहेछे. मूलः—गप्भ चउप्पय छग्गाउ आइ भुयगेसु गाउय पुहुत्तं ॥ पक्कीसुधणुपुहुत्तं, मणुएसुय गाउआ तिन्नि ॥ ११८ ॥ अर्थः—गर्भज पंचेंद्रिय चतुःपद गाय, बलद, घोडा, हाथीनुं शरीर छ गाउ मान थायछे, अने भुजगपरिसर्प्प जे गोह नोलियादिक तेने बे गाउथी मांडी नव गाउसुधी एटले गाउ पृथक्त्व शरीर मान थाय. तेम पंखी जे खेचर तेने धनुष्य पृथक्त्व शरीर थाय. अने मनुष्यने विषे त्रण गाउनुं देह मान थाय. इति गाथा सप्तकार्थः॥

अवतरणः— इंदिय सरूव विसयत्ति एटले इंद्रियनुं स्वरूप अने इंद्रियनो विषय तेनुं एकशो ने अठयासीमुं द्वार कहेछे. मूलः—कायंब पुप्फगोलय, मसूर अइमुत्तयस्स कुसमंव ॥ सोयं चक्कूघाणं, खुरप्प परिसंठिअं रसणं ॥ ११९ ॥ अर्थः—

इंद एवो धातु ऐश्वर्यनेविषे. ते कारणे ऐश्वर्यना योगथकी इंद्र आत्मा अने सकल द्रव्य. तेनी उपलब्धिरूप परम ऐश्वर्यनुं चिन्ह अविनाभाव ते इंद्रि कहि ये. तेना बे प्रकारछे. एक द्रव्येंद्रि. बीजी भावेंद्रि. तेमां द्रव्येंद्रिय ते निवृत्ति अ ने उपकरणना भेदथकी वली बे प्रकारेछे. तेमां, निवृत्ति ते जे विशिष्ट संस्थान नुं विशेष ते जाणवुं. तेपण वली बे प्रकारे छे. एक बाह्यसंस्थान ने बीजो अ भ्यंतर संस्थान. तेमां, बाह्य ते कान पापडी प्रमुख, ते अश्व गज ने मनुष्यना विचित्रतापणाथकी उपदेशी न शकिये. अने अभ्यंतर निवृत्ति ते, समस्त जीवने समान ते आश्रयी. सूत्रमांहे संस्थान विशेष कहिये. केवल स्पर्शनेंद्रियनी निवृ त्तें प्रवाहे बाह्य अभ्यंतरनुं विशेष नथी. तत्वार्थनी मूल टीकाने विषे तेमज कह्युंछे.

उपकरण ते जे खड्गस्थानीय बाह्य निवृत्तिनी जे धार समान निर्मलतर पुद्ग ल समूहे नीपनी, अने अभ्यंतरनिवृत्ति ते धारनी शक्ति विशेष जाणवी. ए उप करणरूप द्रव्येंद्रिय अंतरंग निवृत्तिथकी कोइकरीते अर्थांतर शक्तिने शक्तिमंते कोइक एकरीते भेदछे. एम कोइएक रीते भेदथके पण छती जे अंतर निवृत्ते द्रव्यादिक उपकरणने विघातनो संभव देखाडेछे.

अंतर निवृत्ते छतिये कदंब पुष्पादिकनी आकृते अति कठोरतर मेहने गाज वादिके शक्तिने उपघाते जाणवुं. तेप्रत्ये प्राणीउ समर्थ होय. शब्दादिकने भावें द्रिय ते पण बे भेदेछे. एक लब्धि, बीजो उपयोग, तेमां लब्धि ते जे श्रोत्रेंद्रिया दिकनुं विशेष, सर्व आत्माना प्रदेशने तदावरण कर्मना क्षयोपशमथकी थाय: अने उपयोग, ते पोत पोताना विषयनेविषे लब्धिरूप इंद्रियने अनुसारे आत्मा नो व्यापार, ते श्रोतादिकना भेदथकी पांच प्रकारेछे. ते आवीरीते:—कायंब शब्दे कदंब नामे वृक्ष तेनां फूलने आकारे मांसनो गोलक रूप श्रोत्रेंद्रिय जाणवी. अने मसूर ते धान्यनुं विशेष, तेना आकारे चक्षुइंद्रिय जाणवी. अने अइमुत्तय शब्दे अतिमुक्तक वृक्षनां कुसुम समान नासिकाइंद्रि जाणवी: एम श्रोत चक्षु ने ना सिका ए त्रण अनुक्रमे कह्या. तथा क्षुरपलाने संस्थाने रसनेंद्रिय जाणवी.॥११९॥

मूलः—णाणागारं फासिं,दियंतु बाहल्लउ यसवाइं॥अंगुल असंखभागं, एमेव पुहुत्त उ णवरं ॥१२०॥ अर्थः—जे कारणे शरीरना असंख्याता भेदछे ते कारणे णा णागारंके० अनेकप्रकारना आकारे स्पर्शेंद्रिय होय पण एक संस्थाने न होय अने बाहुल्यपणे तो सर्वे इंद्रिउ अंगुलने असंख्यातमे भागे होय. तथा पुहुत्तके० जाड

पणे पण एमेवके० एटलुंज जाणवुं. नवरंके० रसनेंद्रियने स्पर्शनेंद्रियनो विशेष ते सूत्रकर्त्ता पोतेज आगली गाथाये देखाडेछे. ॥ १२० ॥

मूलः—अंगुल पुहुत्तरसणं, फरसंतु सरीरविछडंन्नणियं ॥ बारसहिं जोअणेहि सोयं परिगिसहइ सद्दं ॥ १२१ ॥ अर्थः—अंगुल पृथक्त्व रसनेंद्रिय कही छे अने स्पर्शनेंद्रिय शरीरने विस्तारे कहीछे, हवे ए इंद्रिउनो विषय कहेछे, बारसहिंके० बारयोजननो आवेलो शब्द मेघनी गर्जना प्रमुखनो ते श्रोत्रेंद्रिय परिगिएहइएके० सांजले, पण एथी अधिक सांजलवानुं श्रोतेंद्रियमां बल नथी. ॥१२१॥

मूलः—रूवं गिएहे चरक्, जोयणलरकाउ सायरेगाउ॥गंधं रसंच फासं, जोयणनव गाउसेसाए ॥१२२॥ अर्थः—सातिरेक लाखयोजन एटले लाखयोजन छाछेरामां रहेलुं रूप ते कट कूटयादिकने अजावे चक्षुइंद्रिय जोइ शकेछे, ए अजासुर ड्व्य आश्रीने कहिये. अने जासुर ड्व्य प्रमाणांगुले नीपन्या ते एकवीशलक्षयोजन त्यांथकी दूर जे क्षेपा आंक ते सर्वे देखेछे. उक्तंच. इगवीसं खलु लरका चउतीसंचेव त ह सहस्साइं ॥ पंच सया नणिया सत्त नीसाए अइरित्ता॥इइ नयण विसयमाणं पुरकरदीवद्धवासिमणुआणं ॥ पुव्वेणय अवरेणय पिहंपिहं होइनायव्वं ॥जेम पुष्कर वरद्वीपनेविषे मानुषोत्तर पर्वतने नजीक रहेलाछे जे मनुष्य, ते कर्क संक्रांते सूर्य नुं मांमलो देखेछे. अने गंधके० घ्राणेंद्रिय, रसनेंद्रिय अने स्पर्शेंद्रिय ए त्रणेइंद्रियो ते सातिरेक एटले नवयोजन छाछेराना आव्या गंधादिक लइ शकेछे॥१२२॥

हवे इंद्रिउनो जघन्य विषय कहेछे. मूलः—अंगुल असंखनागा,मुणंति विसयं जह सुउमोत्तुं ॥ चरकुं तं पुण जाणे, अंगुलसंखेज्जनागोउ ॥१२३॥ अर्थः—चक्षुरिंद्रिय मुकीने बाकीनी चार श्रोतादि इंद्रियो जघन्यतो अंगुलना असंख्यातमां जागथकी पोतपोताना विषय जे शब्दादिक तेने जाणे, अने चक्षु इंद्रिय ते अंगुलना संख्यातमा नागथकी. जाणे इहां पृथक्त्व प्रमाण ते चार इंद्रियने आत्मांगुले करी जाणवो, अने स्पर्शेनेंद्रियने उत्सेधांगुले जाणवुं. अने विषय परिणाम सर्वे इंद्रियनो आत्मांगुले जाणवुं. ॥ १२३ ॥

अवतरणः—लेसाउत्ति एटले लेश्या संबंधी एकशोनेनेव्यासीमो द्वार कहेछे. मूलः—पुढवीआउवणस्सइ, बायरपरितेसु लेस चत्तारि॥गप्नयतिरियनरेसु,छल्लेसा तिन्नि सेसाणं ॥ १२४ ॥ अर्थः—इहां बादरशब्द प्रत्येके जोडिये. प्रत्येक वनस्पतिनुं स्वरूप जणाववाने अर्थे अने व्यभिचार न आववा सारुं वली पर्याप्त एवुं विशेषण तेपण सामर्थ्यथकी जाणवुं. अन्यथा प्रकारे तेजोलेश्यानो अनावछे; तेकारणे

बादर पर्याप्त पृथ्वीकाय. अपकाय. वली प्रत्येक वनस्पतिमांहे धुरली चार लेश्या थाय तथा गर्नज तिर्यंच अने नरके० मनुष्यनेविषे ब ए लेश्याउ जाणवी, अने शेष तेउकाय, वाउकाय, सूक्ष्म, पृथ्वी, साधारण वनस्पति, अपर्याप्ता बादर पृथ्वी, अप, प्रत्येक वनस्पति, बेइंडिय, तेइंडिय, चउरिंडिय, समूर्बम पंचेंडिय, जे मनुष्य तथा तिर्यंच तेने धुरली त्रण लेश्या थाय इति गाथार्थ. ॥ १२४ ॥

अवतरणः—एथाणंजबगइति एटले ए पूर्वोक्त जीवोनी ज्यां गतिथाय तेनुं एकशो ने नेवुमुं द्वार कहेबे. मूलः—एगेंदिअजीवाणं, जंति नरति रिबेसुजु अलवज्जेसु॥ अमण तिरियाविएवं, नरयंमिवि जंति ते पढमे ॥१२५॥ अर्थः—एकेंडियजीवो ते युगलिया वर्जीने बाकीना मनुष्य तथा तिर्यंचमांहे जाय पण युगलियामां नजाय. अने अमणके० मनरहित एवां जे समूर्बिम तिर्यंच, ते पण एमज जाणवां पण मात्र ते ते असंज्ञी प्रथम नरकपृथ्वीसुधी जाय बे.॥ १२५ ॥

मूलः—तह संमुब्बिम तिरिया,नवणाहिव वंतरेसु गबंति॥जं तेसिं उववाउ,पलिया संखिज्जआउसु॥१२६॥ अर्थः—तेमज संमूर्बिम तिर्यंच ते नवणाहिवके० नवनपति अने व्यंतरनेविषे जाय,केमके तेनुं उपपातके० उपजवाने स्थानके पल्योपमना असंख्यातमा नाग जेटलुं आयु थवुं जोइये, ते तेनेविषे थाय. पणज्योतिषमांनजाय.

मूलः—पंचेंदिअतिरियाणं, उववाउ कोसउ सहस्सारे॥ नरएसुं समग्गेसुवि, वियलाअ जुअलतिरिनरेसु ॥१२७॥ अर्थः—पंचेंडिय तिर्यंचनुं उपपातके० उपजवुं ते उत्कृष्ट आठमा सहस्रार देवलोक सुधीथाय. तेथी आगले योग्यताना अनाव थकी उपजवुं थाय नही. तथा नरएसुके० साते नारकीनेविषे पण जाय; अने विकलेंडिय तथा युगलिया वर्जिने बाकीना बीजा तिर्यंच तथा मनुष्य तेमांहे पण उपजे.

मूलः—नरतिरिअसंखजीवी, जोइसवज्जेसुं जंति देवेसु॥नियआउयसमहीणाउएसु इसाणअंतेसु ॥ १२८ ॥ अर्थः—मनुष्य तथा तिर्यंच जे असंख्याता वर्षनां आयुष्य वाळां होयते इहां विशिष्ट खेचर जे तिर्यंच पंचेंडिय ते अंतरद्वीपना तिर्यंचने मनुष्य युगलिया जाणवा. ते ज्योतिषि वर्जिने शेष देवोमां उपजे; एटले जे देवलोकमां एना आयुष्य जेटलुंज आयुष्य होय, अथवा तेथी न्यून आयुष्य होय; एवा देवलोकमां उपजे पण अधिक आयुष्य वाळा देवलोकमां उपजे नही. ते ईशान देवलोक सुधी उपजे पण आगल न उपजे. ॥ १२८ ॥

मूलः—उववाउ तावसाणं, उक्कोसेणं तु जाव जोइसिआ ॥ जावंति बंनलोगो, चरग परिवाय उववाउ ॥ १२९ ॥ अर्थः—तापसोउ उपपातके० उपजवुं ते उ

त्कृष्टे ज्योतषी सुधी थाय. पण आगल न थाय. अने चरक ते धाडीनी निक्षाना लेनारा, अने त्रिदंमि अथवा चरक अने कछोटीआ ते परिव्राजका अने कपिल मुनिना संतानिया जे चरकने परिव्राजकछे तेओनुं उत्कर्षथी उपजवुं यावत् पांच मा ब्रह्मदेवलोक सुधी थाय. ॥ १२ए ॥

मूलः-जिणवय उक्किठ तवे, किरियाहिं अजव जव जीवाणं ॥ गेविज्ञेणुक्कोसोगई जहन्ना जव तिवइसु ॥१३०॥ अर्थः-श्रीवीतरागना वचनने अनुसारे साधुगुणे करी सहित समस्त समाचारी अनुष्ठाने युक्त, पण सम्यक्त्वथी रहित मिथ्यादृष्टि ड्व्यलिंग ना धरनार, अजव्य अने जव्य जीव तेने केवल क्रियाना प्रमाण थकी उत्कृष्टे ग्रैवेय कनेविषे उपजवुं थाय, अने जघन्यथी जुवनपतिनेविषे उपजवुं थायछे. ॥१३०॥

मूलः-उउमछ संजयाणं, उववाउक्कोसउ य सवठे ॥ उववाय सावयाणं, उक्को सेणं चुउ जाव ॥ १३१ ॥ अर्थः-उद्मस्थ यतिनो उत्पात उत्कष्टथी सर्वार्थसिद्धि नेविषे थाय. श्रावकनुं उत्कृष्टथी अच्युत नामा बारमा देवलोकनेविषे उपजवुं थाय.

मूलः-उववाउ लंतगंमी, चउदस पुविस्स होइउ जहन्ना ॥ उक्कोसो सवठे, सिद्धिगमो वा अकम्मस्स ॥ १३२ ॥ अर्थः-चौदपूर्वधरनो उपपात जघन्यथी ठ ठा लांतक देवलोके थाय; अने उत्कृष्टथी सर्वार्थसिद्धिमां थाय. अथवा अकर्मक जे कर्मेकरी रहित थाय तेने मोक्षनी गति प्राप्त थाय. ॥ १३२ ॥

मूलः-अवराहिअ सामन्नस्स साहुणो सावयस्सविजहन्नो ॥ सोहम्मो उववाउ, व यजंगे वणय राईसु ॥१३३॥ अर्थः-चारित्र ग्रहणना दिवसथी मांमीने जेने लगा रमात्र पण चारित्रनी विराधना थई न होय, एवा अविराधित श्रमणने, अने तेमज श्रावक पण जे दिवसथी देशविरतिपणुं पाम्यो छे; ते दिवसथी पोताना ग्रहण करे ला व्रतने शुद्ध पाल्युं होय ते श्रावकने पण जघन्यथी सौधर्मदेवलोके उपपात थाय; तथा पोतपोताना व्रतजंग थएला साधु तथा श्रावकने जघन्यथी जुवनप ति अथवा व्यंतरमां उपपात थाय; अने उत्कृष्टे ज्योतषिमां उपजवुं थाय. ॥१३३॥

मूलः- सेसाण तावसाईण, जहसेवंतरे सुउववाउ ॥ जणिउंजिणेहि सो पुण नियकिरिय ठियाण विसेउ ॥१३४॥ अर्थः-शेष जे तापसादिक छे तेओनो जघन्ये व्यंतरनेविषे उपपात थाय. एम श्रीतीर्थंकरदेवे जणिउंके० कह्युंछे. ते वली नि जके० पोतपोतानी क्रिया जे मोक्षनुं अनुष्ठान, तेनेविषे जे निरत होय तेने थाय. परंतु हीणाचारीने न थाय; एम जाणवुं ॥ १३४ ॥ इति गाथादशकार्थ.

अवतरणः-एएसिंजुत्तो आगइत्ति एटले ए जीवोनी ज्यांथकी आगति एटले आव

वुं थाय तेनुं एकशो ने एकाणुमुं द्वार कहेछे. मूलः—नेरइय जुयल वज्जा ॥ एगिंदि सु इंति अवरगइ जीवा॥विगलत्तेणं पुण ते, हवंति अनिरय अमर जुयला॥१३५॥ अर्थः— नारकी अने जुगलिया वर्जी अनेरी गतिना जीवो एकेंद्रियनेविषे आवे. वली ते सर्वे विकलेंद्रियपणे उपजे, परंतु नारकी, देवता अने युगलिया वर्जीने बाकीना सर्वे जीवो उपजे पण ए त्रणनो त्यां उत्पात न थाय. ॥ १३५ ॥

मूलः—हुंति डुअमण तिरिछा, नर तिरिया जुअल धम्मिए मोत्तुं॥गप्न चउप्पय जावं, पावंति अजुअल चउगइआ ॥१३६॥ अर्थः—हुंतिके० होय. असंज्ञीमनुष्य ने तिर्यंच. ने मनुष्य तथा तिर्यंच युगलिया मूकीने गर्भज चतुःपद, एने ग्रहणे बीजा पण तिर्यंच पंचेंद्रियपणुं युगलिया मूकी चारेगतिना जीव पामे. ॥१३६॥

हवे मनुष्य संबंधी कहेछे. मूलः—नेरइया अमराविअ, तेरछा माणवा य जायंति॥ मणुयत्तेणंवत्तु जुअलधम्मियनरतिरिछे ॥१३७॥ अर्थः—नारकी, देवता, गर्भज तिर्यंच अने मनुष्य, चारे ए मनुष्यपणे उपजे. पण युगलधर्मि वर्जीने बाकीना उपजे. अने युगल धर्मि मनुष्य तथा तिर्यंच देवगतिमां उपजे॥१३७॥इतिगाथात्रयार्थ.

अवतरणः—उप्पत्ति मरण विरहोत्ति एटले उपजताने अने मरताने एक सामयिकादिक विरहकालनुं एकशो ने बाणुमुं द्वार अने जायत मरंत संखाउत्ति एटले उपजता ने मरतानी संख्यानुं एकशो ने त्राणुमुं द्वार; ए बे द्वार साथे कहेछे. मूलः— निन्न मुहुत्ते विगलेंदियाण संम्मुछिमाण य तहेव ॥ बारस मुहुत्त गप्ने, सवेसु जहन्नउसमउ ॥ १३८ ॥ अर्थः—निन्नके० कांइएक माठेरो अंतर मुहूर्त्त काल ते विकलेंद्रियने निरंतर उपजताने विरह पडे, तो एटलो विरह पडे. संमूर्छिमने पण तेमज जाणवुं. तथा बार मूहुर्त्त गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंचने उपजतां विरह पडे अने बीजा सर्वजीवोने जो उपजतां अथवा मरतां विरह पडे तो जघन्यथी एक समयनो विरह पडे. ॥ १३८ ॥

मूलः— उव्वट्टणावि एवं, संखा समएण सुरवरत्तुल्ला ॥ नर तिरिय संख सवे,सु जंति सुर नारया गप्ने ॥१३९॥ अर्थः—उद्वर्त्तनानी पण उत्पत्तिनीपरे संख्या जाणवी एक सामयिकीप्रमुख. देवतानी परे जाणवी मनुष्य तथा तिर्यंच संख्याता आउखावाला सर्वेनेविषे उपजे. देवता नारकी गर्भजनेविषे देवता एकेंद्रिमां पण आवे उपजे.

मूलः—बारस मुहुत्त गप्ने, मुहुत्त सम्मुछिमेसुचउवीसं॥उक्कोस विरहकालो, दोसु विअजहण्णउ समउ ॥१४०॥ अर्थः—बारमुहूर्त्त गर्भजने उपपात विरह जाणवो. अने चोवीशमुहूर्त्त सम्मुर्छिमनविषे उपपात विरह जाणवो. ए उत्कृष्टे विरहकाल

कह्यो. अने जघन्यथी तो गर्भज समूर्छिमनेविषे एक समय उपपात विरह थाय.

मूलः—एमेवय उबट्टण, संखासमएण सुरवरुत्तुल्ला ॥ मणुएसुंउववज्जे, संखाउ यमोत्तुसेसाउ ॥१४१॥ अर्थः—उद्वर्त्तना पण एमेवके० एमज. जेम उपपात कह्यो तेनीपरेज जाणवी. एक समय आदिनी संख्याते देवताने तुल्य देवतानी परे मनुष्य नेविषे सर्व उपजे. असंख्यातायुष्क मनुष्य तथा तिर्यंचना उपलक्षणथकी सात मी पृथ्वीना नारकी, तेजकाय अने वायुकाय, मूकी शेष उपजे. इतिगाथा, चतुष्टयार्थः.

अवतरणः—नवण, वइवाण मंतर, जोयसिय, विमाण, वासि, देवाण, ठिइत्ति, एटले चतुर्विध देव निकायनी स्थितिनुं एकशो ने चोराणमुं द्वार कहेछे. मूलः—नवणवइवाणमंतर, जोइसियविमाणवासिणोदेवा ॥ दसअठ्ठपंचछव्वीस, संखजुत्ता कमेणइमे ॥१४२॥ अर्थः—नवनपति, व्यंतर, ज्योतषि अने वैमानवासि देव तेणे पूर्वेनवने विपे कीधोछे पुण्यनो समूह, तेना योगथीपाम्याछे विशिष्ट नोगसुख, तेणे करी जे दिव्यंतके० शोने, तेने देव कहीए. एना अनुक्रमे नेद कहेछे. दशनुवनपतिना, एम आठ व्यंतरना, पांच ज्योतषिना, छव्वीश वैमानवासीनानेद, एसंख्याये संयुक्त होय.

हवे दशप्रकारे नुवनपतिछे तेनां नाम कहेछे. मूलः—असुरा नागा विज्जू, सुवन्न अग्गीय वाउथणियाय ॥ उदही दीवदिसाविय, दसनेयानवणवासीणं ॥ १४३ ॥ अर्थः—ए नुवनपतिने कुमारनीपरे क्रीडा प्रियछे, तेथी ए सर्व असुरादिक शब्दनी आगल कुमार शब्द जोडिये. तेवारे एक असुरकुमार, बीजो नागकुमार, त्रीजो विद्युत्कुमार, चोथो सुवर्णकुमार, पांचमो अग्निकुमार, छठो वायुकुमार, सातमो स्तनितकुमार, आठमो उदधिकुमार, नवमो द्वीपकुमार अने दशमो दिशिकुमार ए दशनेद नुवनवासीना कह्या. ॥ १४३ ॥

हवे व्यंतरना नेद देखाडेछे. मूलः—पिसाय नूया जक्खा, यरक्खसा किंन्नरा यकिं पुरिसा ॥ महोरगागंधव्वा, अठविहावाणमंतरिआ ॥ १४४ ॥ अणपन्निपणपन्नि, इसिवायनूइयवाइएचेव ॥ कंदीय महाकंदी, कोहंडेचेव पयगेय ॥ १४५ ॥ अर्थः—एक पिशाच, बीजा नूत, त्रीजा यक्ष, चोथा राक्षस, पांचमा किंन्नर, छठा किंपुरिस, सातमा महोरग, अने आठमा गंधर्व, ए आठ प्रकारना वाणमंतर देव छे. त्यां एम ने मनुष्यपणाथकी विगतके० गयोछे अंतर, तेमाटे व्यंतर कहिए. अने वनना आंतरानेविषे थया ते वाणमंतर जाणवा, मकार अलाक्षणीक छे, वली ए आ ठ नेद व्यंतरना अणपन्नी इत्यादिक नाम प्रगटछे. ॥ १४४ ॥ १४५ ॥

मूलः— इयपढम जोयणसए, रयणाएअठवंतरा अवरे ॥ तेसुइहसोलसेंदा, रु

यगअहोदाहिणुत्तरउ ॥ १४६ ॥ अर्थः—ए पिशाचादिकथी जुदा आठ व्यंतर निकाय, इयके० इहां रत्नप्रजाना प्रथमना शो योजनमां होयछे, तेनेविषे शोल इंद्र छे, ते मेरुने नीचली गोस्तनाकार रुचकछे तेने नीचले दक्षिण उत्तरने विजागे जाणवा. ॥ १४६ ॥

हवे ज्योतषिनुं स्वरूप कहेछे मूलः—चंदा सूरा य गहा, नरकत्तातारयायपंचइमे॥ एगेमलजोइसिया, घंटायाराथिरा अवरे ॥ १४७ अर्थः—चंद्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने तारा ए पांच ज्योतषि जाणवा. तेमां एक जे मनुष्यक्षेत्रमांछे, ते चलज्योतषि जाणवा. बीजा जे मनुष्यक्षेत्रथी बाहेरछे, ते बाधियाघाट, जेम एकस्थानके रहेछे तेनीपरे एकस्थानके रहेछे, ते माटे ते स्थिरज्योतिषी जाणवा. ॥ १४७ ॥

हवे वैमानवासी देवो, चार गाथायेकरी कहेछे.मूलः—सोहम्मीसाणसणं, कुमार माहिंद बंजलोयतहा ॥ लंतयसुक्कसहस्सार, आणयपाणयाकप्पा ॥ १४८ ॥ तह आरणच्चुआविद्धु, इणिहगेविज्ज वरविमाणाइं॥पढमंसुदरसणंतस्स, बीइयंसुंप्पबद्धंति ॥ १४९ ॥ तइयंमणोरमंतह, विसालनामंचसवउन्नदं ॥ सोमणसंसोमाणस, मह पीइकरंच आइवं ॥ १५० विजयंचवजयंतं, जयंतअपराजियंचसवद्धं ॥ एचमणुत्तर पणगं, एएसिचउव्विहसुराणं ॥ १५१ ॥ अर्थः—सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेंद्र, ब्रह्म, लांतक, शुक्र, सहस्रार, आनंत, प्राणत, आरण अने अच्युत ए बारने विषे कल्प एवी संज्ञाछे, इहां जे देवता उपजे तेने इंद्र, सामानिक अने त्रायत्रिंसक इत्यादिक समस्त वकुराईनोकल्पछे; तेथी इहां उत्पन्न थया जे देव, तेने कल्पोपपन्न कहिये. अने हवे इणिहके० ग्रैवेयकना, वर प्रधान विमाणकहुंछुं. ते लोकना पुरुषनेविषे ग्रीवाके० कंठने स्थानकेछे, माटे ते ग्रैवेयक कहिये. तेमां प्रथम सुदर्शन, बीजो सुप्रन्न त्रीजो मनोरम तेमज चोथो विशाल, पांचमो सर्वतोनइ छहो सोमनस, सातमो सोमाणस, आठमो प्रीतिकर अने नवमो आदित्य. हवे पांच अनुत्तर विमान कहेछेः—एकविजय, बीजुं विजयंत, त्रीजुं जयंत, चोथुं अपराजित अने पांचमुं सर्वार्थसिद्ध. ए अनुत्तर एटले समस्तमांहे उत्कृष्ट पांच विमान जाणवां एएसिंके०ए चतुर्विध देवनिकायनां नाम कह्यां. ॥१४८॥१४९॥१५०॥१५१॥

हवे स्थिति कहेछे. मूलः— चमर बलिसार महियं, सेसांण सुराण आउ अं वोछं ॥ दाहिण दिवड्ढ पलियं, दोदेसूणुत्तरिल्लाणं ॥ १५२ ॥ अर्थः—चमरेंद्र दक्षिणदिशिनो अने बलिंद्र उत्तरदिशिनो इंद्र. तेने अनुक्रमे चमरेंद्रने एक सागरोपम अने बलिंद्रने पल्योपमने असंख्यातमे जागे अधिक एक सागरोपमस्थिति जा

एवी. हवे शेष नवनिकायना देवोनुं आयु कहेछे. दाहिणके० दक्षिण दिशिवालाने दि वड्ढके०दोढ पल्योपम आयु अने उत्तर दिशिवालाने देशोन बे पल्योपम आयुजाणवुं.

भवनपतिनुं आयुष्य कहिने हवे भवनपतिनी देवि तथा व्यंतरनी देविनी स्थिति कहेछे. मूलः— अद्धुठ अद्ध पंचम, पलिउवम असुरजुअल देवीणं॥ सेसवण देवयाणय, देसूणद्ध पलिय मुक्कोसं ॥ १५३ ॥ अर्थः—दक्षिणदिशिनी देविने साडा त्रण पल्योपम अने उत्तरदिशिवाली देविने साढाचार पल्योपम, ए अनुक्रमे असुर युगल, ते चमरेंद्र बलिंद्रनी देविनुं आयु कह्युं. अने शेष नागकुमारादिक इंद्रनी उत्तरदिशिनी देविउनुं देशोन पल्योपम आयु छे. तथा दक्षिण दशिनी देविनुं अनेउत्तर दक्षिणवर्त्ति व्यंतरेंद्रनी देविउनी अर्द्ध पल्योपम उत्कृष्टि स्थिति थाय. ॥ १५३ ॥

हवे भुवनपति अने व्यंतरनी देविउना आयुष्यनी जघन्य अने उत्कृष्टी स्थिति कहेछे. मूलः—दसभवण वणयराणं, वास सहस्सा ठिई जहन्नेणं॥ पलिउवम उक्कोसं, वंतरियाणं वियाणिज्जा ॥१५४॥ अर्थः—भुवनपति तथा व्यंतरनी देविने दशहजार वर्ष जघन्यस्थिति छे अने व्यंतर देवोनुं उत्कृष्टथी एक पल्योपम आयुष्य जाणवुं.

हवे ज्योतषिनी आयुस्थिति कहेछे. मूलः—पलिअस्सवरिसलक्खं, ससीणपलियं रवीणससहस्सं ॥ गहणखत्तताराणं. पल्लियमद्धंचचउभागो॥१५५॥अर्थः—एकपल्योपम ने एकलाख वर्ष अधिक चंद्रमानुं आयुष्य जाणवुं. अने एक पल्योपम एक हजार वर्षे अधिक सूर्यनुं आयुष्य जाणवुं. हवे ग्रहादिकनुं अनुक्रमे आयुष्य कहेछे. तेमां ग्रह जे मंगलादिक छे.तेनुं एक पल्योपमनुं आयुष्य जाणवुं. अश्विन्यादिक नक्षत्रो नुं अर्द्ध पल्योपम आयुष्य जाणवुं. तारानुं एक पल्योपमनुं चतुर्थांश आयुष्य जाणवुं.

मूलः—तद्देवीणवित्तठिइ, अद्धंअहिअंतमंतदेवडुगं ॥ पाउजहन्नमह्ठ, तारीण तारीणमट्ठंसे ॥ १५६॥ अर्थः—चंद्रमानी देविनुं अर्द्धपल्योपम ने पचाशहजारवर्ष, सूर्यनी देविनुं अर्द्धोपल्योपम ने पांचशे वर्ष उपर, ग्रहनी देविनुं अर्द्धोपल्योपम. ए देवो नी स्थितिथी एमनी देविना आयुनी स्थिति अर्द्ध थइ. हवे अहियंके० अधिको अंत्यनी देवि द्विकनो ते आवी रीते के, नक्षत्रनी देविनुं अने तारानी देविनुं, अनुक्रमे पल्योपमनो चोथोभाग अने आठमोभाग कांइक विशेषाधिक जाणवो. अने जघन्य आयुष्य ते पादके० पल्योपमनो चोथोभाग जाणवुं. अने तारा तथा तारानी देविनुं जघन्यथी पल्योपमनो आठमोभाग स्थिति जाणवी. यदुक्तं. चउजुअले च उभागो जहन्नमडभाग पंचमए इति वचनात्. ॥ १५६ ॥

हवे सर्व विमानवासिनी आयुस्थिति कहेछे. मूलः—दोसाहिसत्तसाहिअ,

दसचउदससत्तरेवअयराइ ॥ सोहम्माजासुक्को, तडुवरिएक्केकमारोवे ॥ १५७ ॥ अ र्थः–सौधर्मदेवलोके बे सागरोपम, ईशाने साधिक बे सागरोपम, सनत्कुमारे सा तसागरोपम, महेंद्रे साधिक सातसागरोपम, इहां साधिक अथवा न्यून आवे ते स र्वत्र पल्योपमनो असंख्यातमो नाग अविशेष जाणवो. पांचमा ब्रह्मदेवलोके दशसा गरोपम, बठे चउद, सातमे सतर, एटले सौधर्मदेवलोकथी मांमीने सातमा शु क्रदेवलोकसुधी आयुस्थिति कही. तेथकी उपरांतना देवलोके एकेक सागरोपम व धारीये. ते आवी रीते जे, आठमे अढार, नवमे ओगणीश, दशमे वीश, अग्यारमे ए कवीश ने बारमे बावीश, प्रथमग्रैवेयके त्रेवीश, द्वितीयग्रैवेयके चोवीश, तृतीयग्रै वेयके पचीश, चतुर्थ ग्रैवेयके बविश, पंचम ग्रैवेयके सत्तावीश, षष्ठग्रैवेयके अठ्ठा वीश, सप्तमिये ओगणत्रीश, अष्टमीये त्रीश, अने नवमीये एकत्रीश सागरोपम आयुस्थिति जाणवी. तेवारपठी विजयादिक चार अनुत्तर विमाननेविषे बत्रीश सागरोपम आयुस्थिति उत्कृष्ट जाणवी. ॥ १५७ ॥

मूलः–तित्तीसयरुक्कोसा, विजयाइसुछिइजहन्न इगतीसं ॥ अजहन्नमणुक्को सो, सवठ्ठेअयर तेतीसं ॥ १५८ ॥ अर्थः–तेत्रीश सागरोपम सर्वार्थसिद्धिनी उ त्कृष्टि स्थिति कही बे. हवे जघन्य अजघन्योत्कृष्ट स्थिति सर्वत्र देखाडेबे. विजय, विजयंत, जयंत ने अपराजित ए चारविमाने जघन्य एकत्रीश सागरोपम अने सर्वार्थसिद्धिविमाने तेत्रीश सागरोपम ते अजघन्योत्कृष्टस्थिति जाणवी. ॥१५८॥

मूलः–पलिअंअहिअंसोहम्मी, साणेसुंतउहकप्पठिई॥ उवरिल्लंमिजहन्ना, कमे एणजावेक्कतीसयरा ॥ १५९ ॥ अर्थः–सौधर्मे जघन्यस्थिति एक पल्योपम, ईशाने पल्योपम जाजेरी, तउके० तेवार पठी अधके० नीचेना देवलोके जे उत्कृष्टि स्थिति बे; ते आगले देवलोके जघन्यस्थिति जाणवी. एम क्रमके० अनुक्रमे त्रीजे देव लोके बे सागरोपम साधिक जघन्य स्थिति, चोथे सातसागरोपम, पांचमे साधिक सात सागरोपम, एम यावत् विजयादिक चारनेविषे एकत्रीश सागरोपम जघन्य स्थिति जाणवी. अने सर्वार्थे तो जघन्य स्थिति नथी. ॥ १५९ ॥

हवे देविनी स्थिति कहेबे. मूलः–सपरिग्गहेयराणं, सोहम्मी साणपलिअसाही अं ॥ उक्कोससत्तपन्ना, नवपण पन्नायदेवीणं ॥ १६० ॥ अर्थः–देवि बे प्रकार नी बे. एक तो परिगृहित, ते एकज धणीनी स्त्री जाणवी. अने बीजी, अपरिगृहित ते वेश्यानीपरे कोइना पण उपनोगमां आवे. हवे सौधर्म देवलोके परिगृहित देविनुं आयुष्य उत्कृष्टे एक पल्योपम, अने ईशानदेवलोके परिगृहितनुं साधिक पल्योपम. ए

जघन्यस्थिति कही; अने उत्कृष्टथी तो सोधर्म देवलोके परिगृहित देविनी सात पल्यो पम अने अपरिगृहित देविनी पचाश पल्योपम आयुस्थिति छे अने ईशानदेवलोके परिगृहितदेविनुं उत्कृष्ट नव पल्योपम, तथा अपरिगृहित देविनुं उत्कृष्ट पचावन्न पल्योपम आयुछे. ए देविनी स्थिति कही. इति ॥१६०॥ गाथानवकार्थ.

अवतरणः—नवणत्ति एटले भुवन गृहसंबंधि एकशो ने पंचाणुमुं द्वार कहे छेः मूलः— सत्तेवय कोमीओ, हवंति बावत्तरी सयसहस्सा ॥ एसोनवण समा सो, नवण वईणं वियाणिज्जा ॥ १६१ ॥ अर्थः—सातकोडीने बहोतेर लाख ए टलो नवननो समासके० संक्षेप ते भुवनपतिनो जाणवो. ॥ १६१ ॥

हवे जूदाजूदा देखाडेछे. मूलः—चउसठीअ सुराणं, नागकुमाराण होइ चुलसी ई ॥ बावत्तरिकणगाणं, वाउ कुमाराण छसुउई ॥ १६२॥ दीव दिसा उदहीणं, वि त्थ कुमारिंद थणिय अग्गीणं ॥ छण्हपि जुअलिआणं, बावत्तरिमो सय सहस्सा ॥ १६३ ॥ अर्थः—चोशठलाख असुरकुमारनेविषे, तेमां चोत्रीशलाख चमरेंद्रनां दक्षिणदिशिए, अने त्रीश लाख बलिंद्रना उत्तरदिशाये. सर्व मली चोशठ लाख विमानछे. एज रीते चउचउलक्ख विहुणा तावश्या चेव उत्तरदिशाए एटले दक्षि णदिशाथकी उत्तरदिशाना विमान दर एकेका कुमारना ते चार चारलाख ओ छाछे. ए यथोक्त माने देखाडेछे. चोराशीलाख नागकुमारमां, बहोतेरलाख सुवर्ण कुमारमां, छन्नुलाख वायुकुमारमां ॥१६३॥ द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार विद्युतकुमार, स्तनितकुमार, अने अग्निकुमार, ए छ युगलनेविषे दक्षिण अने उत्तर ना विनागथकी प्रत्येके बहोतेर लाख विमान थाय. ॥ १६३ ॥

हवे व्यंतरनां विमान अने ज्योतिपिनां विमाननी संख्या कहेछे. मूलः—इह संति वणयराणं, रम्माजोमनयरा असंखिज्जा॥ तत्तो संखिज्जगुणा, जोइ सियाणंवि माणाउ ॥ १६४ ॥ अर्थः— इहां संतिके० छे. वनचर जे व्यंतर तेना रम्यके० म हामनोहर नूमिनेविषे छे तेथी नोम कहिये. एवा असंख्याता नगर व्यंतर देवो नांछे अने तेथकी पण असंख्यातगुणो अधिक ज्योतषिनां विमान छे. ॥ १६४ ॥

हवे विमानवासी देवोना विमानोनी संख्या कहेछे. मूलः—बत्तीसछावीसा, बारस अट्ठ चउ विमाण लक्खाइं ॥ आरेण बंजलोया, विमाण संखा नवेएसा ॥ १६५ ॥ अर्थः—बत्रीशलाख विमान सौधर्मे, एमज अठावीशलाख ईशाने, बार लाख सनत्कुमारे, आठलाख माहेंद्रे, चारलाख ब्रह्मदेवलोके. ए ब्रह्म देवलोक सुधी विमानना लाखनी संख्या थायछे. ॥१६५॥

मूलः—पंचास चत्त उब्बेव, सहस्सा लंत सुक्क सहसारे ॥ सय चउरो आणय प्पा, णएसु तिसारणच्चुयउ ॥ १६६ ॥ अर्थः—पचाशहजार लांतके, चालीशहजार शुक्रे, ठ हजार सहस्रारे, चारशें आनत तथा प्राणत ए बेनेविषे, त्रणशें आरण ने अच्युत ए बेनेविषे. ॥१६६॥

मूलः—इक्कार सुत्तरंहिठिमेसु, सत्तुत्तरंच मछिमए ॥ सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तर विमाणा ॥ १६७ ॥ अर्थः—एकशो ने अग्यार विमान नीचला त्रण ग्रैवेयकनेविषे, अने एकशो ने सात विमान मध्यना त्रण ग्रैवेयकनेविषे, अने एकशो उपरना त्रण ग्रैवेयकनेविषे, तथा पांच विमानज, पांच अनुत्तर संबंधी जाणवां.

ए सर्व विमानोने एकवां कखाथी जेटलां थाय ते कहेछे. मूलः—चुलसीय सय सहस्सा ॥ सत्ताण उइनवे सहस्साइं; तेवीसं चविमाणा, विमाण संखाजवेए सा ॥ १६८ ॥ अर्थः—चोराशीलाख सत्ताणुंहजार ने त्रेवीश. ए समस्त विमान वासी देवोनां विमानो, संख्याये थायछे. ॥ १६८ ॥ इतिगाथाष्टकार्थः.

अवतरणः—देहमाणंति एटले देहमाननुं एकशो ने उन्नूमुं द्वार कहेछे. मूलः—नवण वण जोइसोहम्मी, साणे सत्तहुंति रयणिउ ॥ एकेक हाणि सेसं, डुडुगेय डुगे चउक्केय॥१६९॥अर्थः—नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि, सौधर्म अने ईशान, एटलाने सात रयणीशब्दे हाथनुं शरीर मान होय. तेवारपछी एकेक हाथनी हाणी करीए. ते आवी रीते. सनत्कुमार अने माहेंद्रे ठ हाथ, ब्रह्म अने लांतके पांच हाथ; तेपछीना वली बे देवलोकनेविषे चार हाथ, आनतादिक चारनेविषे त्रण हाथ.

मूलः—गेविज्जेसुं दोसुय, एगारयणी अणुत्तरे सुनवे ॥ नवधारणिजिएसा, उक्कोसाहुंति नायव्वा ॥ १७० ॥ अर्थः—नव ग्रैवेयकनेविषे बे हाथ, अने पंचानुत्तर विमाननेविषे एक हाथनुं शरीर जाणवुं. ए नवधारणीय अवगाहना उत्कृष्टे जाणवी.

हवे सर्व देवोनो उत्तरवैक्रिय अवगाहना कहेछे. मूलः—सव्वेसुक्कोसा, जोयणाण वेउव्विया सय सहस्सा ॥ गेविज्जणुत्तरेसुं, उत्तर वेउव्वियानछि ॥ १७१ ॥ अर्थः— सर्वदेवोनेविषे उत्तरवैक्रिय लक्षयोजन होय. अने ग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमाने उत्तरवैक्रिय न थाय. केमके जे उत्तरवैक्रिय ते तो गमनागमनने अर्थे अने परिवारने अर्थे करवी पडे; तेनुं प्रयोजन ए देवोने नथी; तेथी तेने उत्तरवैक्रियनो अनाव कह्योछे. ॥१७१॥

हवे जघन्यथी कहेछे. मूलः—अंगुल असंखनागो, जहन्न नवधारणि अपारंजे संखेया अवगाहण, उत्तरवेउव्विया सावि ॥ १७२ ॥ अर्थः—जघन्यथकी नव

धारणीय शरीर प्रारंभ काले अंगुलनो असंख्यातमो भाग होय, अने अंगुलनो संख्यातमो भाग शरीरनी अवगाहना ते उत्तर वैक्रियनी थाय. इतिगाथा चतुष्टयार्थ

अवतरणः– लेसाउत्ति एटले लेश्यानुं एकशोने सत्ताणुमुं द्वार कहेछे. मूलः– किण्हा नीला काऊ, तेऊलेसाय भवण वंतरिया ॥ जोइस सोहम्मीसाण, तेउ लेसा मुणेयव्वा ॥ १७३ ॥ अर्थः–कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो; ए चार लेश्या वाला भवनपति तथा व्यंतरदेवो होय तथा ज्योतिषि, सौधर्म ने ईशान ए तेजो लेश्यावंत जाणवा. ॥ १७३ ॥

मूलः–कप्पेसणं कुमारे, माहिंदे चेव बंभलोएय ॥ एएसुपम्हलेसा ॥ तेणपरं सुक्क लेसाउ ॥ १७४ ॥ अर्थः–सनत्कुमार, माहेंद्र ने ब्रह्म; ए त्रण देवलोकनेविषे पद्मलेश्या होय, अने तेथी आगले बीजा बधा देवलोके शुक्कलेश्या होय. इ ति गाथा द्वयार्थ. ॥ १७४ ॥

अवतरणः–ओहिनाणंति एटले अवधि ज्ञानना माननुं एकशो ने अठाणुमुं द्वार कहेछे. मूलः–सक्कीसाणापढमं, दोच्चंचसणंकुमार माहिंदा ॥ तच्चंव बंभ लंत ग, सुक्कसहस्सार चउत्थिं ॥ १७५ ॥ अर्थः–सौधर्म अने ईशानना देवता, नीचे प्र थमनरकपृथ्वीसुधी देखे. अने सनत्कुमार तथा माहेंद्रना देवो, बीजी पृथ्वी सुधी देखे. अने ब्रह्म तथा लांतक देवलोकना देवो, त्रीजीनरकपृथ्वीसुधी देखे, अने शुक्र तथा सहस्रारना देवता, चोथी नरक पृथ्वी सुधी देखे. ॥१७५॥

मूलः–आणय पाणय कप्पो, देवा पासंति पंचमिं पुढविं ॥ तंचेव आरण च्चु य, ओहीणाणेण पासंति ॥ १७६ ॥ अर्थः–आनत अने प्राणत देवलोकना देव पांचमी नरकपृथ्वीसुधी देखे. वली तंचेवके० तेज पांचमी पृथ्वीसुधी आरण्य ने अच्युत विमानवासी, देवो अवधिज्ञाने करी देखे. ॥१७६॥

मूलः– छट्ठिंहिट्ठिम मज्झिम, गेविज्जा सत्तमिं चउवरिल्ला ॥ संभिन्न लोग ना लिं, पासंति मणुत्तरादेवा ॥ १७७ ॥ अर्थः–छठी नरकपृथ्वीसुधी हेठिमित्रक अने मध्यमत्रिक, ए बे त्रिक एटले छठी ग्रैवेयकसुधीना देवता देखे, अने सातमी नरक पृथ्वीसुधी उपरली त्रण ग्रैवेयकना वासी देवो देखे. तथा अनुत्तरविमानवासी जे देवो छे, ते सभिन्नके० कांइक मातेरी पोताना विमाननी ध्वजाथी उपरांत न देखे. तेमाटे ध्वजाथी उपरांते कणी बाकी समस्त चउदराजलोकनी नालीसुधी देखे.

मूलः–ए ए सिमसंखिज्जा, तिरियं दीवाय सागरा चेव ॥ बहुयरं उवरिमग्गा, उड्ढंच सकप्पथूभाई ॥ १७८ ॥ अर्थः–एएसिंके० ए देवोने असंख्याता द्वीप अ

ने समुद्रसुधी तिर्छो अवधिज्ञान होय. बहुलतरके० अत्यंत अधिक, ते जेम जे म उपरना देवो तेम तेम ते बहुलतर एटले घणुं देखे; अने उंचो पोताना विमाननी ध्वजा सुधीज देखे. ॥१७७॥

मूलः—संखिज्ज जोयणा खलु, देवाणं अद्धसागरेऊणे ॥ तेण परम संखिज्जा जहन्न यंपन्नवीसंतु ॥ १७९ ॥ अर्थः— जे देवोनुं अर्द्धसागरोपम मारेरुं आयु होय ते देवोने संख्याता योजनसुधी अवधि थाय, अने तेथकी अधिक जेनुं आयु होय, तेने असंख्याता योजननुं अवधिज्ञान थाय. जघन्यतो पचीश यो जन अवधिक्षेत्र थाय. ॥ १७९ ॥

मूलः—भवणवइ वणयराणं, उड्ढं बहुउं अहोय सेसाणं ॥ जोइस नेरईयाणं, तिरियं उरालिउचित्तो ॥ १८० ॥ अर्थः—भवनपति अने व्यंतरने उंचु अवधि घ णुं होय, अने शेष दिशिए अवधिनो विषय अल्प होयछे. अने शेष जे वैमानिक देवोछे, तेने नीचुं अवधि घणुं होय, अने ज्योतषि ने नारकीओने तिर्छो घणो होय, अने शेष दिशाओनेविषे थोडो होय. वली औदारिक तिर्यंच अने मनुष्यने अ वधि ते नानाके० अनेक प्रकारे होय. कोइकतो नीचुं घणुं देखे, कोइक उचुं घणुं देखे, कोइक तिर्छो घणुं देखे, इत्यादिक जाणवुं. ॥१८०॥ इतिगाथा षट्कार्थः.

अवतरणः— उप्पत्तिए विरहोत्ति एटले उत्पतिना विरहनुं एकशो ने नवाणुमुं द्वार कहेछे. मूलः—भवण वण जोइ सोहम्मी, साणे चउवीसइ मुहुत्ताउ ॥ उक्को स विरहकालो, सव्वेसु जहन्नउ समउ ॥ १८१ ॥ अर्थः—भवनपति, व्यंतर ज्यो तषि सौधर्म अने ईशानना अंतसुधीना देवोने उत्कृष्टे चोवीश मुहूर्त्तनो उत्पत्ति विरह थायछे. अने जघन्यतो ए समस्त देवोने एक समय विरह काल होय.॥१८१॥

हवे सनत्कुमारादिकने उत्कृष्ट विरहकाल कहेछे. मूलः—नवदिण वीसमुहुत्ता, बारस दस चेव दिण मुहुत्ताउ ॥ बावीसा अद्धंचिय, पणयाल असीइ दिवस सयं ॥ १८२ ॥ अर्थः—नवदिवस ने वीसमुहूर्त्त, सनत्कुमारे, बारदिवस ने दशमुहूर्त्त, माहेंद्रे. साडीबावीश दिवस ब्रह्मदेवलोके; पिस्तालीश दिवस, लांतकदेवलोके, एंशी दिवस शुक्रदेवलोके, एकशो दिवस सहस्रार देवलोके विरह काल जाणवो.

मूलः—संखिज्जा मासा आणय, पाणएसु तह आरण अच्चुए वासा ॥ संखे ज्जाविन्नेया, गेविज्जेसुं अउवोच्छं ॥ १८३ ॥ अर्थः—आनत प्राणातनेविषे संख्याता मास एटले अग्यारमास ने ओगणत्रीश दिवस सुधी संख्याता मास कहिए. वली आरण अने अच्युतनेविषे संख्याता वर्षनो उत्पत्ति विरहकाल निश्चेयकी जाण

वो. ज्यांसुधी शो वर्ष पुरां न थाय. त्यांसुधी संख्यातां वर्ष कहेवायछे. ॥ १७३ ॥
हवे ग्रैवेयकने विषे विरहकाल कहुंछुं.

मूलः—हिठिमवास सयाइं, मझिम सहसाइं उवरिमेलक्का ॥ संखिज्जाविसेया जाहा संखेणतिसुंपि ॥ १७४ ॥ अर्थः—हेठिमत्रिकने विषे वर्षनां शइकमां संख्यातां जाणवां, मध्यमत्रिकनेविषे संख्यातां हजारवर्ष जाणवां, उपरली त्रिकने विषे संख्यातां लाप वर्ष जाणवां. एम यथा संख्यपणे त्रणेनेविषे जाणवां.॥१७४॥

मूलः—पलिया असंख नागो, उक्कोसो होइ विरह कालोओ ॥ विजयाइ सुनिद्दिठो, सव्वेसुजहणाउ समउ ॥ १७५ ॥ अर्थः—पल्योपमनो असंख्यातमो नाग उत्कृष्ट विरहकाल ते विजयादिक चार विमाननेविषे होय. अने सर्वार्थसिद्धि नामा पांचमा विमाननेविपे पल्योपमनो संख्यातमो नाग कह्योछे. एमज ए सर्व देवोने जघन्य तो एक समय नगवंते कह्योछे. ॥ १७५ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थ ॥

अवतरणः—उवट्टणाए विरहोत्ति एटले उद्वर्त्तनानेविषे विरहकालनुं बत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः—उववाय विरहकालो, ए सोजह वष्मिउंय देवेसु॥ उव्वट्टणाविएवं, सव्वेसिं होइ विसेया॥१७६॥ अर्थः—उपपात विरहकाल ए देवोनेविषे जेम पूर्वोक्त वर्णव्यो, तेमज उद्वर्त्तना पण एवीज रीते सर्व देवोनेथाय एम जाणवुं. इति गाथार्थ.

अवतरणः—इमाण संखत्ति एटले ए देवता एकसमयमां केटला उपजे अने केटला चवे तेनी संख्यानुं बत्रीने एकमुं द्वार कहेछे. मूलः—एकोवि दोवि तिन्निव संखमसंखाय एग समएणं ॥ उववज्जं तेवइया ॥ उव्वट्टंतावि एमेव॥१७७॥अर्थः—एक अथवा बे अथवा त्रण एमज संख्याता असंख्याता पण एक समयनेविषे उपजे. अने उव्वट्टंताके० चवता पण एज रीते जाणवा. ॥ १७७ ॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरणः—जम्मि ए याणं गइत्ति एटले ज्यां ए देवो चविने जाय ते गतिनुं बत्रीने बीजुं द्वार कहेछे. मूलः—पुढवी आउ वणस्सइ, गप्ने पज्जंत संख जीवीसु सग्गच्चुआणवासो, सेसा पडिसेहिआ गणा ॥ १७८ ॥ अर्थः—पृथ्वी, अप, वनस्पति, अने गर्भज, पर्याप्ता, मनुष्य तथा तिर्यंच जे कोइ संख्याता आयुष्य वाला होय तेनेविपे स्वर्गथकी चविने देवो आवे, ए देवोने आववानां स्थानक छे. शेष थाकता स्थानक प्रतिषेध्याछे; माटे तेमां न उपजे. ॥ १७८ ॥

एज वात विशेषे देखाडेछे. मूलः—बायर पज्जत्तेसुं, सुराण नूदग वणेसु उप्पत्ति ॥ ईसाणं ताणं चिअ, तछ विनउछ्ट गाणंपि ॥ १७९ ॥ अर्थः—बादर पर्याप्ता पृथ्वी अप वनस्पतिमांहे जुवनपति आदे देइ ईशानदेवलोकसुधीना देवो

नी उत्पत्ति थाय. वली उछ्ठगके० सनत्कुमार आदेदेइ सहस्त्रारदेवलोकसुधी ना देवतानी, पचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यमां उत्पत्ति छे. पण पूर्वोक्त पृथिव्यादि कमां उत्पत्ति न थाय. ॥ १७९ ॥

मूलः–आणय पजिईहिंतो, जाणुंत्तरवासिणो च वेऊणं ॥ मणुएसिं चिय जा यहि, नियमा संखेवजीवीसु ॥ १८० ॥ अर्थः–आनत देवलोक आदेदेइने अनु त्तरविमानवासी पर्यंतना देवो चवीने संख्याता आयुष्यवाला मनुष्योनेविषेज नि यमेके० निश्चेथकी उपजे. ॥ १८० ॥ इति गाथा त्रयार्थ.

अवतरणः–जत्तो आगईए संति एटले ज्यांना आव्या, देवता थाय ते आ गति कहिये तेनुं बशेने त्रीजुं द्वार कहेछे. मूलः–परिणाम विसुद्धिए, देवाउ कम्मबंध जोगाए ॥ पंचंदियाउगछे, नरतिरिया सेस पडिसेहो ॥ १८१ ॥ अर्थः– परिणाम ते मननो व्यापार जाणवो, ते विशुद्धपणे थाय, अने अविशुद्धपणे थाय. त्यां जे विशुद्ध परिणाम ते देवगतिनुं कारण छे. तेमाटे सूत्रमां परिणाम विसुद्धिए एवो कह्यो. वली जो कदाचित् अतिविशुद्धमननो परिणाम होय तो ते परिणाम मोक्षने पमाडनारो थायछे. तेमाटे वली परिणामनी विशुद्धिनुं विशे षण, देवाउके० देवताना आयुष्यने योग्य जे कर्मबंध तेने योग्य जे विशुद्धि, तेणेकरी पंचेंद्रियमनुष्य ने तिर्यंच तेज देवतामां जायः पण शेष दंमकना जीवो न जाय. तेने जवानो अनाव छे. ॥ १८१ ॥

मूलः–आईसाणाकप्पा,उववाउ होइ देव देवीणं॥तत्तोपरंतु नियमा,देवीणंनत्थि उ ववाउ॥१८२॥अर्थः–नवनपति आदेदेइने ईशानदेवलोकसुधी देव देविनी उत्पत्ति थाय. पण तेथी आगल निश्चेथकी देविनुं उपजवुं न थाय. अने देविनुं गमनाग मन सहस्त्रार देवलोक सुधी छे. ते दो कप्पकाय सेवी. इत्यादिक जाणवुं. इति॥१८२॥

अवतरणः–विरहो सिद्धिगइएत्ति एटले सिद्धगतिनेविषे उपजताने विरहनुं ब शेने चोथुं द्वार कहेछे. मूलः–एक्कसमउ जहन्नो, उक्कोसेणं तुजावछम्मासा ॥ विरहो सिद्धिगईए, उव्वट्टण वज्जिया नियमा ॥ १८३ ॥ अर्थः–समये समये सि द्धगतिमां जीवो जायछे, परंतु जो विरहपडे तो जघन्यथी एक समयनो विरह पडे, अने उत्कृष्टथी तो छ महीनासुधी पण कोई सिद्धगतिए जाय नही. ए सिद्धगति नो विरह कह्यो. अने सिद्धगतिमां निश्चेयकी सिद्धोने उद्वर्तना न होय. इतिगाथार्थ.

अवतरणः–जीवाण आहार गहण उसासत्ति एटले जीवोने आहार ग्रहण अने श्वासोश्वासनां प्रकार कहेवानुं बशे ने पांचमुं द्वार कहेछे. मूलः–सरिरेणो

आहारो, तयाइ फासेण लोम आहारो ॥ पक्खेवाहारोपुण, कावलिउ होइनायव्वो ॥ १९४ ॥ अर्थः—केवल तेजस कार्मण शरीरे, विग्रहे अथवा अविग्रहे उत्पत्ति देशनेविषे गयोथको प्राणी प्रथमसमय तो औदारिकादिक शरीर योग्य पुद्गल आहारे. बीजे समये औदारिकादिक मिश्र आहारे. ज्यांलगे शरीर निस्पत्ति, त्यांलगे आहारे, अथवा उज शब्दे पोताना जन्मस्थानकने योग्य शुक्रमिश्रशोणितना पुद्गलनुं संघात, तेनो जे आहार ते उजा आहार जाणवो. तयाइके० त्वचाने स्पर्शे शीतल पवनादिकनी प्राप्तिए जेम तृषा उपशम पामे, ते लोमआहार कहिये. प्रक्षेप शब्दे मुखमांहे नाखवुं. ते कावलिक आहार होइके० होय. नायव्वोके० जाणवो.

मूलः—उयाहाराजीवा, सव्वेवि, अपज्जत्ता मुणेयव्वा॥पज्जत्त गायलोमे, पक्खेवो होइ न इयव्वा॥१९५॥अर्थः—जे गतिमां जीव जाय त्यां गयाछता तेज समयनेविषे उजा आहारी सर्व जीव अपर्याप्तावस्थाए जाणवा. अने जेवारे पर्याप्ता थाय तेवारे सर्वजीव सर्व काल वायु प्रमुखना स्पर्शेने करी निरंतर लोम आहारी होयछे अने प्रक्षेपाहारे तो नजना करवी. केमके जेवारे कोलिउ ग्रहण करे तेवारेज कावलिक कहेवाय छे. ए रीते नजना जाणवी. एटले कावलिक कोइ वखतहोय पण, ने न पण होय.॥१९५॥

मूलः—रोमाहारा एगिंदियाय नेरइय सुरगणाचेव ॥ सेसाणं आहारो, रोमे पक्खेवउ चेव ॥ १९६ ॥ अर्थः—ते कारणे एकेंद्रिय लोमाहारी होय; तेमज नारकी अने चतुर्विध देवनिकाय पण लोमाहारी होय अने शेष समस्त जीवोने लोमाहार तथा प्रक्षेपाहार पण थाय. ॥१९६॥

मूलः—उयाहारामण जिक्कणोय सव्वेवि सुरगणा हुंति ॥ सेसाहवंति जीवा लोमाहारा मुणेयव्वा ॥ १९७ ॥ अर्थः—एमज देवताने अपर्याप्तावस्थासुधी उजाहार होय, अने पर्याप्ता थया छतां मनमां चिंतवन करे तेवो आहार पामे. देवोना समूह एवा थाय, अने शेष जीवो लोमाहारी थाय एम जाणवुं. ॥ १९७ ॥

मूलः—अपज्जत्ताण सुराणं,णाजोगनि वूत्तिउय आहारो॥पज्जत्ताणं मण जक्कणेण आजोगनिम्माउ ॥ १९८॥ अर्थः—ज्यांसुधी अपर्याप्तास्थितिए देवता होय त्यांसुधी अनाजोगे निवर्त्तित एटले अनाजोगे नीपन्यो आहार थाय, अने पर्याप्ता थया पछी तो मनने वांछित आहारने ग्रहणे आजोगे निपन्यो आहार होयछे. ॥१९८॥

हवे उश्वासनी वात कहेछे, मूलः—जस्सजयसागराई, विइतस्सय तेत्तिएहिंपक्खेहिं ॥ ऊसासोदेवाणं, वास सहस्सेहिं आहारो ॥१९९ ॥ अर्थः—जे देवताने जेटला सागरोपम आयुस्थिति होय; ते देवताने तेटला पखवाडियां गयेछते श्वासोश्वासनुं

ग्रहण.अने तेटलाज हजार वर्ष गया छतां ते देवोने आहार लेवानो अभिलाप थाय.

मूलः—दसवास सहस्साइं, जहन्नमाउं धरंतिजेदेवा ॥ तेसिंचउछाहारो, सत्तहि थोवेहि ऊसासो ॥ २०० ॥ अर्थः—दशहजार वर्ष प्रमाण जघन्यायुने जे देवो धारण करेछे, तेहने चतुर्थ आहारनुं ग्रहण जाणवुं. अने ते सात स्तोक काल प्रमाणे श्वासोश्वास लियेछे. ॥२००॥

मूलः—दसवास सहस्साइं, समयाहिय जाव सागरं ऊणं ॥ दिवसमुहुत्त पहुत्ता, आहारूसास सेसाणं ॥२०१॥ अर्थः—दशहजार वर्ष ते समयादिके अधिक करतां ज्यांसुधी सागरोपमथी उंछुं आयुष होय, तेवा देवोने दिवस पृथक्त्वे आहार होय. अने मुहूर्त्त पृथक्त्वे श्वासोश्वास लिये. एरीते शेष समस्तने जाणवुं. इति गाथाष्टकार्थः.

अवतरणः—तिन्निसयातेवठा पासंमीणंत्ति एटले त्रणशे ने त्रेशठ पाखंमीनुं बशे ने छहुं द्वार कहेछे. मूलः—असिअसयं किरियाणं, अकिरिय वाईण होइचुलसीइ ॥ अन्नाणिय सत्तठी, वेणइयाणंच बत्तीसं ॥ २०२ ॥ अर्थः—प्रथम कर्त्ताविना क्रिया जे पुण्यबंधादि लक्षणछे ते संभवे नही. तेमाटे एवुं जाणीने जे क्रिया, आत्मसमवायनी कहेछे, एवुं जेनुं शीलछे ते क्रियावादि आत्मानुं अस्तित्वपणुं-मानेछे. एवा क्रियावादि ते एकशो ने एंसी थायछे. ॥२०२॥

एमज बीजा उत्पत्तिने अनंतरे जे वस्तुना विनाशनो संभव; ते कारणे कोईपण पदार्थथकी क्रिया संभवे नही. आत्मादिकने नास्तिपणाना करनार ते एम कहेछे के क्षणिकाः सर्वसंस्काराः अस्थिराणांकुतः क्रिया ॥ इत्यादिकना बोलनार ते अक्रियावादि. ते चुलसिके० चोराशी भेदे थायछे.

त्रीजा जे अन्नाणियके० कुत्सित मातुं.जे ज्ञान तेने अज्ञान कहिये. तेने ग्रहण करी जे प्रवर्त्ते ते अज्ञानी कहेवाय. एवा अज्ञानी ते चिंतव्याविना बंधनी विफलताना करनार छे,ते एवुं कहेछे के, ज्ञान ते भलुं नथी. केमके, ज्ञान छते मांहोमांहे विवादना योगथकी चित्त कलुषित थायछे, तेणेकरी दीर्घ संसारनी प्रवृत्ति थाय, ते आवीरीते जे, कोइक पुरुषे अन्यथा प्रकारे प्ररूपणा कीधी छतां कोइक विवक्षित ज्ञानी ज्ञानभावे गर्वाध्मात चित्तथको तेना उपर चित्तनो कलुष भाव धारण करी वाद करवा मंमी जाय, ते वाद करतां करतां तो चित्तनो कलुषता भाव वृद्धि पामेछे. तेथकी अहंकारनी वृद्धि थाय, तेथकी अशुभकर्मनो बंध पडेछे, तेना योगे दीर्घ संसार थायछे; अने जो ज्ञान न जाणिये अने अज्ञाननेज आश्रयीए तेवारे ते अज्ञानना योगथकी अहंकारनो संभव थाय नही. तेथी अन्यथ

पर चित्तनां माठां परिणाम थाय नही. तेथी कर्मबंध पण न थाय. अने जे कर्म, चिंतवीने करिए तेना दारुण विपाक ते अवश्य वेदवामां पण आवे, अने जे मनना व्यापारविना केवल काय अने वचने करी कर्मप्रवृत्ति मात्र करिए, त्यां मननुं तीव्र अध्यवसाय न होय, तेथी ते अवश्य वेदवामां पण न आवे. अने तेनो दारुण विपाक पण न होय. केवल ओल्युक भींतनेविषे जेवी सुकी धुल लागे, तेवो तेने कर्मनो समागम पण थाय. ते पण रूडा अध्यवसायरूप पवने करी प्रेरणेथको ते कर्मरूप रज पण जती रहे ठे. तेमाटे मोक्षमार्ग प्रवर्त्तक मुनिश्वरने अज्ञाननो अंगीकार करवोज नलोछे; परंतु ज्ञाननो अंगीकार करवो नलो नथी. अने जो ज्ञाननुं निश्चय करी शकिये तो ज्ञान नलुं ठे, परंतु ते निश्चे करायज नही. केमके, सर्व दर्शनीओ जूदाजूदा ज्ञानने अंगीकार करेछे, तो तेमां कयुं ज्ञान अने कयुं अज्ञान? एवुं केम कहेवाय! एवा कारणोने लीधे अज्ञानपणे रहेवुं तेज नलुं ठे. एवुं मानेठे ते अज्ञानवादि जाणवा. ते सत्तसठिके० सडसठठे. ॥ २०२ ॥

हवे चोथा विणयके० विनयवादि ते केवल विनये करीज चाले ते बत्रीशछे. हवे जेम उद्देस तेम निर्देस एवा न्यायथकी प्रथम क्रियावादिनी एकशो ने एंशीनी संख्या पूरण करवाने अर्थे नंग आणवानो उपाय आगली गाथाये करी कहेछे.

मूलः— जीवाइ नवपयाणं, अहोठविऊंतिसय परयसद्दा ॥ तेसंपिअहोनिच्चा, निच्चा सद्दा ठविज्जंति ॥२०३॥ कालस्स हावि नियई, ईसर अप्पत्ति पंच विपयाई॥ निच्चा निच्चाणमहो, अणुक्कमेणे ठविज्जंति ॥ २०४ ॥ अर्थः—जीवादिक नवपदार्थ अनुक्रमे पाटला उपर मांमिये. वली तेनी नीचे प्रत्येके स्वतः ने परतः शब्द मांमिये, तेनी नीचे वली नित्य अने अनित्य शब्द स्थापिये, वली ते नित्य ने अनित्य शब्दोने नीचे अनुक्रमे काल स्वजाव नियत ईश्वर अने आत्मारूप पांच पद स्थापीये.

हवे ते नेदोना जेम अजिलाष ठे तेम कहेछे. मूलः—जीवोइह अछिसठ, नीचो कालाउ इय पढम नंगो ॥ बीउय अछिजीवो, सउय निच्चोय कालोउ ॥ ॥ २०५ ॥ एवंपरउविहुदोन्नि नंगया पुव्वछुग जुआ चउरो ॥ लद्धा कालेणेवं, सहाव पमुहावि पावंति ॥ २०६ ॥ पंचाहिविचोकेहिं, पत्ता जीवेणवासई नंगा ॥ एवमजीवाईहिवि, इय किरिया वाइ असिय सयं ॥ २०७ ॥ अर्थः—इह अस्तिजीवः स्वतोनित्यःकालतः ए पहेला नांगानो ए अर्थ ठे, इयके० आ जगत्रयमां अस्तिके० ठे. जीवात्म स्वतः पोताने रूपे ठे. पण उपाधि अपेक्षाये न्हस्वदीर्घनी परे न जाणवुं. नित्यके० शाश्वतठे पण क्षणिक नथी. जे कारणे पूर्वोत्तरकालनेवि

पे अवस्थायीछे पण कालवादिने मते तो कालवादि ते कहिये के जे आ समस्त जगत्रयते कालनो करेलो छे एवुं कहेछे, केमके कालविना आंबा चंपक अशोकादिक फूलनो उजम न थाय. वली फलबंध, हिमपात, नक्षत्र, गर्भाधान, वर्षादिक ते पण कालविना होय नही. तेमज बाल, कुमार, यौवन, पलीनो आगम एवा अवस्थाना विशेष जे थायछे तेपण नियमित कालने विभागेज थायछे. पण ए सघलुं अवस्थाएज थाय. वली हांमली प्रमुख घणी सामग्री छती होय तोपण प्रथम समयनेविषेज मग प्रमुख सीजता देखाता नथी. किंतु काले करीज सीजेछे. तेथी जे कृतक ते सर्व काल कृत्येज जाणवुं, यदाहुः न कालव्यतिरेकेण, गर्भबालशुभादिकं ॥ यत्किंचिज्जाय ते लोके, तद सौकारणंकिल ॥ १ ॥ किंच कालादृतेनैव, मुद्ग पंक्ति परीक्षते ॥ स्थाल्यादि संन्निध्यानेपि, ततःकालावसौमता ॥ २ ॥

बीजो भंग आवीरीतेछेः—अस्तिजीवःस्वतो अनित्यः कालतः एरीते बीजा पण भंगछे ते कहेछे. एवपरउक्ति अस्तिजीवः परतोनित्यतः कालतः समस्त पदार्थने परपदार्थने स्वरूपे जाणपणुं जेम दीर्घनी अपेक्षाए ह्रस्वपणुं अने ह्रस्वनी अपेक्षाए दीर्घपणु; तेम आत्माने स्तंभ कुंभादिक देखी तेथकी अनेरो वस्तु विशेष त्यां आत्मानी बुद्धि प्रवर्त्ते. ते कारणे आत्मानुं स्वरूप ते पर थकी अवधारिए. ए स्वतः बे भंग, तेम परतः बे भंग लाध्या, तेवारे काल पदे चार भंग लाध्या; एम स्वभाव प्रमुखे पण चार चार भेद पामिए, तेवारे वीश भंग प्रत्येके जीवे लाध्या. एम अजीवादिके वीश वीश करतां नवपदे एकशो ने एंसी थाय. तेनो उच्चार आवीरीते करीये

एक अस्तिजीवः स्ततोनित्यः स्वभावतः बीजुं, अस्तिजीवःस्ततो अनित्य स्वभावतः त्रीजुं, अस्तिजीवः परतोनित्यस्वभावतः चोथुं, अस्तिजीवः परतो अनित्यः स्वभावतः॥ एनो अर्थ आमछेः—ते स्वभाववादी कहेछेके जे जे भाव संसारमां थायछे ते स्वभाव थकी थायछे, जेम माटी थकी घट थाय छे, तंतुथकी पट थायछे; पण माटी थकी पट थतुं नथी अने तंतुथकी घट थतो नथी. एवुं निश्चेपूर्वक जे होवुंछे ते स्वभावविना होतुं नथी. वली बीजा तो सर्व कार्य रह्यां पण जे मग प्रमुखते समस्त छती सामग्रीए पण करडू एटले कांगडु मग सीजे नही एटले चडे नही. तेनो तेज स्वभावछे तो एम जाणिये जे समस्त वस्तु स्वभाव कृतज होयछे. एम अस्तिजीव स्ततोनित्योनियतितः

हवे नियतवादि एम कहेछे के, नियति तत्वांतरे जेना वशथकी समस्त स्वभाव नियतरूपपणे प्रगट थाय. ते आवीरीते, जे जेवारे जे थकी थाय ते तेवारे ते

थकी नियतरूपपणे थयो देखायछे. अन्यथा प्रकारे कार्यकारणनावनी नियत व्यवस्था प्रति नियतरूप व्यवस्थाना प्रेरकने अनावथकी न थाय तो एवी नियत कार्ये नियतथकी कोण निवर्त्तावी शके?

ईश्वरवादी कहेछे. अस्तिजीवःस्वतो नित्यः ईश्वरतः इत्यादि चार नंग ईश्वरवादी आवीरीते कहेछे. समस्त जगत्रय ईश्वरकृतछे. अने ईश्वरने सर्व कोई माने. ईश्वर स्वतःसिद्ध, ज्ञान वैराग्य, धर्म, ऐश्वर्यवान्, वली प्राणीउने स्वर्ग अने अपवर्गनो प्रेरक छे.

हवे आत्मवादी कहेछे. अस्तिजीवः स्वतोनित्यः आत्मनः इत्यादि चार नंग आत्मवादी विश्व परिणतरूप एक आत्माज माने. ते एवुं कहेछे के एकज आत्मा नूत नूतनेविषे रह्यो छतो तेज एक प्रकारे पण देखायछे, अने अनेक प्रकारे पण देखायछे. जेम पाणीमां चंद्रमा देखाय तेनी परे जाणवुं. यडुक्तं. एकएव हि नूतात्मा नूतेनूते व्यवस्थितः॥ एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचंद्रवत् ॥१॥ एरीते क्रियावादीना एकशो ने एंसी नेद देखाड्या ए क्रियावादिना यंत्रनी स्थापना.

जीवः	अजीवः	पुण्यः	पापः	आश्रवः	संवरः	निर्जराः	बंधः	मोक्षः
स्वतः	परतः	स्वतः	परतः	स्वतः	परतः	स्वतः	परतः	स्वतः
नित्यः	अनित्यः	नित्यः	अनित्यः	नित्यः	अनित्यः	नित्यः	अनित्यः	नित्यः
कालतः	स्वनावतः	नियतितः	ईश्वरतः	आत्मनः	एवा	पांच	पद	जाणवा

हवे अक्रियावादीना चोराशी नंग आणवानो उपाय कहेछे. मूलः—इह जीवाइ पयाइं, पुन्नं पावंविणा ठविज्जंति॥तेसिमहो नायम्मि, ठविज्जएस परसद्दडुगं॥२०७॥ तस्सवि अहो लिहिज्जइ, कालज हिछाय पयडुगसमेयं ॥ निइय सहाव ईसर, अप्पत्ति इमं पयचउक्कं ॥ २०ए ॥ पढमे नंगे जीवो, नत्थि सउ कालउ तयणु बीए ॥ परउवि नत्थि जीवो, कालाइय नंगगा दोन्नि ॥ २१० ॥ एवं जइछाई हिवि पएहि नंग डुगं डुगं पत्तं ॥ मिलीया विते डुवालस, संपत्ता जीवतत्तेण ॥२११॥ एवमजीवाइ हिवि, पत्ता जाया तउय चुलसीई ॥ नेया अकिरिय वाई ण हुंति मे सव्व संखाए ॥ २१२ ॥ अर्थः—इहके० इहां ए अक्रियावादीना नेद आणवाना प्रक्रमनेविषे पुण्य अने पाप विना बाकीना जीवादिक सात पदार्थ स्थापन क

रीए, तेने नीचे वली स्वतः ने परतः ए बे शब्द स्थापीए, अने आत्माना अनावथकी नि त्य अने अनित्य शब्द मांमीए नही. वली स्वपर शब्दने नीचे कालतः यदृछातः एवां जेबे पद ते सहित नियत, स्वनाव, ईश्वर आत्मालक्षण चार पद लखिये, इहां जे य दृछावादी ते अक्रियावादी सर्व जाणवा. हवे विकल्पनो अनिलाष देखाडेछे.

पढमेके० पहेला नंगनेविषे नास्तिंजीवः स्वतःकालतः बीजो नास्तिजीवः पर तःकालतः ए बे नंग, कालेकरी लाध्या. एम यदृछादिक पांच बोल ते प्रत्येके बेबे विकल्प पामे, त्यारे सर्वमली बार नेद थाय छे. एनो अर्थ पहेलानीपरे जाणवो. प रंतु एटलुं विशेष जे यदृछावादीने मते ते एम प्ररूपणा करेछे के, इहां पदार्थने संताननी अपेक्षाए प्रतिनियत कार्यकारणनाव न होय. किंतु यदृछाएज थाय. तेवा प्रमाणना अनावथकी जाणवुं. ते आवीरीते जे, कीडाना विशेषथकी कीडो थाय. एम गणाथकी पण कीडो थाय, तेमज अग्निथकी अग्नि थाय, तेम अरणी थकी पण अग्नि उपजे, धूंम्रथकी धूम्र थाय. अग्नि ते नीला इंधणने संयोगे प ण थायछे. तेमाटे निश्चित कार्य कारण नाव ते क्यांए न होय. यदृछाथकीज क्यां एक कांइएक थाय. एमज अंगीकार करवुं. पण एम नही जे दाहियारछे ते वस्तुनो सन्नाव अनेरी रीते देखी अनेरी रीते पोतानो आत्मा संक्लेश करे तेकरे नही. एम यदृ छावादीना मते तो सर्व यदृछानुं करेलुंज थायछे. एटले जेम जीवपदे बार नंग लाध्या, तेम बीजा अजीवादिक छ पदनेविषे पण प्रत्येके बार बार नंग करता, बार सतां चोराशी नंग थाय छे. ए अक्रियावादीनी सर्व संख्या जाणवी.॥२१२॥

हवे अज्ञानीकना सडसठ नंग आणवानो उपाय देखाडवाने अर्थे बे गाथा क हेछे. मूलः–संतमसंतं संता, संतमवत्तवसय अवत्तव॥असय अवत्तवंसय,सयवत्तवं च सत्तपया ॥ २१३ ॥ जीवाइ नवपयाणं, अहोकमेणं इमाइ ठविऊणं ॥ जइ कीरइ अहिलावो, तह साहिज्जइ निसामेह ॥ २१४ ॥ अर्थः–पहेली सत्वं, बीजी असत्वं, त्रीजी सदसत्वं, चोथी अवक्तव्यं, पांचमी सदवक्तव्यं, छही असद् वक्तव्यं, सात मी सदसद्वक्तव्यं, ए साते पदे सातनंग थया. एनो आम अर्थछेः–सत्व ते पोतानेरूपे विद्यमान, असत्व ते पररूपे अविद्यमान, सदसत्व ते पोतानेरूपे अने पररूपे पण वि द्यमानपणु तथा अविद्यमानपणु, त्यां यद्यपि ए समस्त वस्तुस्वरूपेकरी सदाए स दसत छे. तोपण क्यांएक कांइएक किवारेक प्रगटपणे प्रमाणना जाण कहेछे; ते थी ए त्रीजो विकल्प जाणवो. हवे तेज सत्व ने असत्व ते समकाल एक शब्दे बो लिए एवोतेनो केहेवावालो शब्द कोई नथी. तेमाटे अवक्तव्य. अने जेवारे एकनाग

सत, बीजो भाग अवक्तव्य. समकाले ए बेहु बोलिये तेवारे सदवक्तव्य थाय अने जे वारे एक भाग असत् अने बीजो भाग अवक्तव्य एवी समकाले विवक्षा करिये तेवारे असदवक्तव्य छठो भंगथाय. तथा जेवारे एक भाग सत्, बीजो भाग असत्, अपर वली अवक्तव्य. तेवारे सदसदवक्तव्यत्वं भंग थाए. ए सातविकल्प थकी बीजा विकल्प संभवे नही, बीजा सर्वे विकल्पनो ए सातमांज अंतर्भाव जाणवो.

एनी कांइक भावना, एक घटपदार्थ आश्री देखाडिये छयें. मुख, ग्रीवा, कपाल, कुक्षि बुध्नादिक ते पोताने पर्याए विद्यमान भावे करी विशेषित जे कुंभ तेने कुंभ कहिए, एटले सतूघट ए प्रथम भंग जाणवुं. तेम पटादिगत शरीरने ढांकवादि परपर्याएकरी असत्वपणे विवक्षित कुंभ थाय नही. समस्त घटादिक पदार्थे परपर्याए करी जेवारे असत्वपणे विवक्षिए तेवारे सतूघट ते असत् घट थाय. ए बीजो भंग. वली ते घट स्वपर्याए, परपर्याए सद्भावे, असद्भावेकरी विशेषे समकाल कहेवाने इष्ट एवुं, त्रीजुं भंग अनिष्ट अवक्तव्यः पोताने पर्याए अने परपर्याए सत्व असत्व पणे करी, एके असंशयोत्पन्न वचने करी तेने समकाले कही न शकिये, ते अवक्तव्य. ए अवक्तव्य नामें चोथुं भंग. एम एकदेशे पोताने पर्याए करी सत्वपणे विवक्षिए, अने परउभय पर्याएकरी सत्व असत्वपणे समकाल असांकेतिक एक शब्दे कहेवासारु विवक्षा करीए, तेवारे ते कुंभसत् अवक्तव्य कहीए. ए पांचमुं भंग. एकदेशे घटपणाथकी सत् अन्यदेशे कहि न शकिये, तेवारे सत् अवक्तव्य. ए छठुं भंग. एक देशे परपर्याए असत्वपणे विवक्षीये. अन्यस्थानके स्वपर्यायें परपर्याय अने एम उभय पर्यायै सत्वपणे विवक्षिए. अन्य वली एकदेशे परपर्याए असत्वणे विवक्षिये, एवो कुंभ सदसदवक्तव्य घट अघट अवक्तव्य थाय. ए सातमु भंग. एरीते सातभेद घटना कह्या, तेम पटादिकनी भावना पण करवी, ए सातपद पट्टकादि उपर स्थापन करी ते उपर जीवादिक नवपद स्थापिये. ॥२१३॥२१४॥

हवे अभिलाप कहेछे. मूलः—संतोजीवो कोजाण ईहवाकिंच तेण नाएण ॥ सेसपएहि विभंगा, इय जाया सत्त जीवस्स ॥ २१५ ॥ एवमजीवा ईणवि, पत्तेयं सत्त मिलिय तेसठी ॥ तह अन्ने विहुभंगा, चत्तारि इमे उ इह हुंति॥२१६॥ अर्थः— सन्जीवः कोवेत्ति किंवा तेनज्ञानेन ए प्रथम भंग जाणवुं. एनो अर्थ कहेछे. कोईकने विशिष्ट ज्ञान नथी, जे अत्येंद्रिय आत्माने जाण्यो. तोपण शुं ने न जाण्यो तो पण शुं? तथाहि जे नित्य सर्वगत अमूर्त्तिक ज्ञानादिक गुणोपेत होय, तो पण शुं?

अथवा एवा गुणोथकी रहित आत्मा छे तोपण शुं? अथवा तेना जाणवाथकी कया पुरुषार्थनी सिद्धि थवानी छे? तेथी अज्ञानपणामां रहेवुंज नलुं छे. असन्जीवः कोवेत्ति किंवा तेनज्ञातेन इत्यादिक शेष छ पद छे, तेणेकरी सात नंग जीव पदार्थना थाय, एरीते बीजा अजीवादिक आठपदनेविषे पण सात सात नंग करतां त्रेसठ नंग थाय.

तेम वली अज्ञाननी प्ररूपणाविषे अनेरा पण चार नंग थाय. ते आवी रीते. मूलः— संती नावुप्पत्ती कोजाणइ किंच तीइनायाए; एवमसंती नावुप्पत्ती सदसंतिया चेव ॥२१७॥ तह अवत्तवाविहु, नावुप्पत्तीइमेहिमिलिएहिं ॥ नंगाण सत्तसठी, जाया अन्नाणियाणइमा ॥२१८॥ अर्थः—सतीनावोत्पत्तिः कोजानाति किंवा नयाज्ञातया. १ असतीनावोत्पत्तिः कोवेत्ति किंवा नया ज्ञातया २ सदसतीनावोत्पत्तिः कोवेत्ति किंवा नया ज्ञातयान् ३ तहके० तेमज चोथा नंगने विषे अवक्तव्या नावोत्पत्तिः किंवा नया ज्ञातया ४

ए चार नंगनो तात्पर्यार्थ कहेछे. इहां नाव पदार्थनी संती कहेतां छतां विद्यमान उत्पत्तिके० उपजवानो प्रकार ते कोणजाणे? अने तेना जाणवाथी पण शुं? शेषविकल्प ते अछति नाव पदार्थनी उत्पत्ति २ एम छती अछती नावनी उत्पत्ति ३. चोथे नंगे अवक्तव्य जे कहेवाय नही, आगलो अर्थ प्रथमनो समस्त पद आगल कहिये, परंतु त्रण विकल्प तेज पदने अवयवनी अपेक्षाए होय, ए कारणपणामाटे इहां संनवे नही. एटले पूर्वोक्त त्रेसठमां आ चार नंग प्रक्षेपिए त्यारे अज्ञानीना नंग सडसठ थायछेः ॥ २१७ ॥ २१८ ॥

हवे विनयवादीना बत्रीश नेद बे गाथाये करी कहेछे. मूलः—सुर निवइ जइ न्नाई, थविरा वम माइ पियसु एएसिं ॥ मणवयण काय दाणेहि चउविहो कीरए विणउ॥२१९॥अठवि चउक्क गुणिया, बत्तीस हवंति वेणइय नेया॥ सवेहिं पिंमिएहि, तिन्नि सया हुंति तेवठा ॥ २२० ॥ अर्थः— १ सुर शब्दे देवता २ निवइ शब्दे राजा ३ यति ते साधु ४ ज्ञाति ते स्वजन ५ स्थविर ते वडेरा ६ अवमके० अनुकंपनीय कापडी प्रमुख ७ माता ८ पिता ए बे प्रसिद्धछे. ए आठनुं एक मन, बीजुं वचन, त्रीजुं काया, अने चोथुं दान ए चारे प्रकारे करी विनय करवो. ए आठने चारे गुणतां विनयवादीना बत्रीश नेद थायछे. ते विनयवादी एवुं बोलेछे के स्वर्ग अने अपवर्गनो जे मार्ग छे ते केवल विनयथीज थायछे. अने जे विनय छे ते नम्रवृत्ति करवी, तेमज अनुत्सेकपणु जाणवुं. एरीते पूर्वोक्त देवादिक आठने विषे करतो थको जीव स्वर्ग अने अपवर्गनो संनागी थाय. ए सर्वने पिंमिके० एकठा करवाथी त्रणसें ने त्रेसठ पाखंमी थायछे. इति एकोनविंशति गाथार्थ.

अवतरणः—अठपमायत्ति एटले आठ प्रमादनुं वर्णवीने सातमुं द्वार कहेछे. मूलः—पमाउय मुणिंदेहिं, नणिउ अठ्ठनेयउ ॥ अन्नाणं संसउंचेव, मिछानाणं त हेवय ॥ २११ ॥ अर्थः—मुनिजे साधु, तेना इंद्र जे श्रीतीर्थंकर देव तेणे प्रमाद आठनेदे नणिउकें० कह्योछे. तेमां पहेलो अज्ञान शब्दे मूढपणुं, बीजो आ वात एमज छे किंवा अन्यथा प्रकारेछे? एवो जे संदेह ते संशय कहिए. त्रीजुं मिथ्या ते उपरांतु ज्ञान, तेना उपर प्रतिपत्ति होय. तहेवयके० तेमज. ॥ २११ ॥

मूलः—रागो दोसो मइब्भंसो, धम्मंमिअ अणायरो ॥ जोगाणं डुप्पणीहाणं, अठ्ठ हा वज्जिअव्वउ ॥ २१२॥ अर्थः—चोथुं राग ते अनिष्वंग लक्षण जाणवुं, पांचमुं द्वेष ते अप्रीतिरूप, छठुं स्मृतिभ्रंश ते विस्मरण शीलपणुं, सातमुं धर्मने विषे अना दरपणुं, एटले आलसनुं करवुं, आठमुं योग ते मनोयोगादिकने डुष्टपणे धरवा. ए आठ प्रकारना प्रमादनुं वर्जन करवुं. ॥ २१२ ॥ इतिगाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—नरहाहिवत्ति एटले नरतक्षेत्रना अधिपति जे चक्रवर्त्ती तेना ना मोनुं वर्णवीने आठमुं द्वार कहेछे. मूलः—नरहो सगरो मघवं सणंकुमारोय राय सद्दूलो ॥ संती कुंथूअ अरो, हवइ सुनूमोय, कोरवो ॥२१३॥ नवमोय महापउमो हरिसेणो चेव रायसहूलो ॥ जय नामोय नरवई, बारसमो बंनदत्तोय ॥ २१४ ॥ अर्थः—एक नरत, बीजो सगर, त्रीजो मघवा, चोथो सनत्कुमार. ते राजाओमांहे शार्दूल समान, पांचमो श्रीशांति, छठो श्रीकुंथु, सातमो श्रीअर, आठमो सुनूम कौरव गोत्रमां उत्पन्न थयो, नवमो महापद्म, दशमो हरिषेण. राजाओमां शार्दूल एटले सिंहसमान, अग्यारमो जय एवे नामे मनुष्यनो पति, बारमो ब्रह्मदत्त. ए बार चक्रवर्त्तिनां नाम जाणवां. इति ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ गाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—हलहरत्ति एटले बलदेवोनुं वर्णोंने नवमुं द्वार कहेछे. मूलः— अ यलेविजएनद्दे, सुप्पनेयसुदंसणे ॥ आणंदे नंदणेपउमे, रामेआविअपछिमे ॥ ॥ २१५ ॥ अर्थः—एक अचल, बीजो विजय, त्रीजो नद्र, चोथो सुप्रन, पांचमो सुदर्शन, छठो आनंद, सातमो नंदन, आठमो पद्म, नवमो राम वली छेहेलो अ पश्चिम शब्द मांगलिक्य वाची छे. ॥२१५॥ इति गाथार्थ.

अवतरणः— हरिणोत्ति एटले वासुदेवोनुं वर्णवीने दशमुं द्वार कहेछे. मूलः—ति विठ्ठूय डुविठ्ठूय सयंनू पुरिसोत्तमे पुरिस सीहे, तह पुरिस पुंमरीए, दत्ते नारायणेकि एहे ॥ २१६ ॥ अर्थः—एक त्रिपृष्ठ, बीजो द्विपृष्ठ, त्रीजो स्वयंनू, चोथो पुरिसोत्तम

पांचमो पुरुषसिंह, तेमज छठो पुरुषपुंडरीक, सातमो दत्त, आठमो नारायण, नवमो कृष्ण, ए नव वासुदेवोनां नाम कह्यां. ॥२२६॥ इति गाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—पडिवासुदेवेत्ति एटले प्रतिवासुदेवोनुं वर्णन ने अग्यारमुं द्वार कहेछे. मूलः—आसग्गीवे तारय, मेरय मदुकेटके निसुंभेय ॥ बलिपल्हाए तह रावणेय न वमे जरासिंधू ॥ २२७ ॥ अर्थः—पूर्वे जे त्रिपृष्ठादिक नव वासुदेव कह्या, तेना ए य थाक्रमे अश्वग्रीवादिक प्रतिशत्रु, ते सर्व चक्रयोद्धी पोतानाज चक्रथी मरण पामे. तेथी ते प्रतिवासुदेव एटले पोतानुंज चक्र वासुदेवने हणवा सारु नाखे, अने पुण्योदयथकी ते चक्र आवी वासुदेवने प्रणाम करी तेना हाथमां बेसे, पछी तेज चक्र ते वासुदेव, प्रतिवासुदेव उपर नाखे, तेथी ते मरणपामे. ते प्रतिवासुदेवना नाम कहेछे. एक अश्वग्रीवा, बीजो तारक, त्रीजो मेरक, चोथो मधुकैटभ, पांचमो निशुंभ, छठो बली, सातमो प्रल्हाद, आठमो रावण, नवमो जरासिंधु इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः—रयणाइं चउदसत्ति एटले चक्रवर्तिना चौद रत्नना नामोनुं वर्णन ने बारमुं द्वार कहेछे. मूलः—सेणावइ गाहावइ, पुरोहि गय तुरय वड्ढई इत्थी ॥ चक्कं छत्तं चम्मं, मणिकागिणिखग्ग दंमोय ॥ २२८ ॥ अर्थः—सेनापत्यादिक जे पोत पोतानी जातीमां उत्तम होय तेने रत्न कहिए. एमां साततो एकेंद्रियछे. ते जेवारे जे चक्रवर्त्ती होय, तेवारे ते चक्रवर्त्तिना आत्मांगुले थाय. अने सात पंचेंद्रिय ते ते ज कालना जे पुरुष तेने उचित प्रमाणे होय.

तेमां प्रथम सेनापति ते समस्त सेनामांहे मुख्य होय. ज्यां चक्रवर्त्ती न जाय ते खंड सेनापति साध्य करे. चक्रवर्त्तिना खड्गप्रमुख हथीयार झाले. अश्वरत्न उपर चडे इत्यादिक काम ए सेनापतिनां जाणवां. बीजो गाथापतीते कौटंबिक समस्त सेनामांहे जे धान घृत प्रमुख वस्तु ते एना स्वाधीनमां रहेछे, ते चक्रवर्त्तिना हुकुमथी सर्वने आपे. ए कोठारीने स्थानके जाणवो. त्रीजो पुरोहित ते शांति कर्म जे चक्रवर्त्तिने करवुं ते करे, तेथी समस्त विघ्न उपशम पामे. चोथुं गजरत्न ते जेवारे तमिश्रा गुफाखंड प्रपातगुफा मांहे पेसवानुं काम पडे तेवारे गजरत्नने कुंभस्थले मणीरत्न बांधे. बीजुं पण जेवारे इछामां आवे तेवारे तेना उपर चढे. पांचमो अश्वरत्न ते जेवारे गुफाने बारणे जाय तेवारे कमाड खडकावे ने ताबडतोब बार योजनसुधी पाछले पगे पाछो फरे. अनेरो अश्व होयतो बलती गुफानी बाफ थकी बली भस्म थाय, जेम कृत्रिम अश्वरत्नेकरी कोणी राजा त्रणखंड साधीने गुफाने बारणे भस्म थयो तेनी परे जाणवुं. छठो वार्द्धिकरत्न ते सूत्रधारना कर्मनो कर

नार उन्मग्न जलातिमग्नजलानाम नदी ते गुफामां जतां आडी आवे, त्यां पूल बांधे. तेम बीजा पण गृह नगरादिक करवाने अर्थे ते प्रवर्त्ते. सातमुं स्त्रीरत्न ते चक्रवर्त्तिना शरीर साथे संजोगना काममां आवे पण बीजी स्त्री तेनुं पराक्रम सहन करी शके नही. बीजी चोशठहजार अंतेउर तथा सवालाख पिंम विलासणी तेनी साथे वैक्रिय शरीरे संजोग करे. ए सात पंचेंद्रिय रत्न जाणवां.

हवे एकेंद्रिय कहेछे. आठमुं चक्र ते एक वाम प्रमाण होयछे. ते वामनुं स्वरूप आमछे के ज्यां पुरुष बंने बाहुप्रसारे तेने प्रमाणे. एवुं लोक प्रसिद्धछे. अने हजार यक्षे अधिष्ठित सर्व शत्रु निवारक सर्व वांछित कारक एवुं चक्ररत्न जाणवुं. नवमुं छत्र रत्न पण एक वाम प्रमाण जाणवुं. दशमुं चर्मरत्न ते बे हाथ प्रमाण. ए नवमुं छत्ररत्नने अधोजागे चर्मरत्न ए बन्नेने चक्रवर्त्तिना हाथनो स्पर्शथाय तो बारयोजन सुधी विस्तार पामेछे, अने तेमां चर्मरत्न उपर पहेले पहोरे साली वावे ते पाछले पहोरे जमे; ए चर्मरत्ननो महिमाछे. अग्यारमुं मणीरत्न ते चार अंगुल लांबु अने बे अंगुल पहोलुं. वैडूर्य रत्नमय उपर त्रणहांस होय, अने नीचे छ हांस होय. ते छत्र अने चर्मरत्नना मध्य छत्रने तुंबे मूक्यो छतो बार योजन सुधी कटकमांहे उद्योत करे. अने गुफामां प्रवेश करतां गजरत्ननी जमणी बाजुना कुंजस्थले बांध्योथको उद्योत करे, हाथीने मस्तके बांध्यो थको तिर्यंच अने मनुष्यना करेला सर्व उपद्रव हरण करे छे. अने सर्व रोगनो नाश करे. अने कांने बांध्यो थको संग्राममां जय करावे सदा अवस्थित यौवन होय. बारमुं कांगणीरत्न आठसौवर्णिक प्रमाण समचउरस्त्र विपापहारी, ज्यां चंद्रसूर्यनी प्रभा प्रसार न करे त्यां गुफामांहे ए प्रकाश करेछे. वली चक्रवर्त्ति ओगण पचाश मांमला लखे ते ज्यांसुधी चक्रवर्त्ती त्यांसुधी रहे. तेरमुं खड्गरत्न बत्रीश अंगुल प्रमाण जाणवुं. चउदमुं दंमरत्न ते एक वाम प्रमाण. ते महायत्ने वापर्यो होयतो हजार योजन ऊंमो जाय. भूमिकानुं विदारण करे. ए चउद रत्न कह्यां. ते एकेक हजार यक्षे अधिष्ठित जाणवां ॥ २१८॥

मूल– चक्कं खग्गं च धणू, मणिय माला तहा गया संखो; एए सत्तउ रयणा सव्वेसिं वासुदेवाणं ॥ २१९॥ अर्थः–एक चक्र अने बीजुं खड्ग प्रसिद्धछे, त्रीजुं मणी ते प्रसिद्धछे, चोथुं सारंग धनुष्य, पांचमी माला ते आभरण विशेष, छठी गदा कौमोदकीनामे, सातमो पांचजन्यनामे संख, तेनी ध्वनि बारयोजनमां थाय, ए सात रत्न सर्व वासुदेवोने होयछे. ॥ २१९॥

मूलः–चक्कं छत्तं दंमं, तिन्निवि एयाइं वाममित्ताइं ॥ चम्मं दुहछदीहं, बत्तीसं अं

गुलाइ असी ॥२३०॥ चउरंगुलो मणीपुण, तस्सद्धं चेव होइ विछिन्नो ॥ चउरंगुल प्पमाणा, सुवन्नवरकागिणी नेया ॥ २३१ ॥ ए बे गाथा प्रमाणनीछे ते प्रमाण पूर्वे कही आव्या माटे इहां वखाणता नथी. अने वासुदेवना रत्नसंबंधी महात्म शास्त्रांतरथी जोइ लेजो. ॥ २३० ॥ २३१ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थ.

अवतरणः—नवनिहीउत्ति एटले नवनिधाननुं वर्णने तेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—नेसप्पे पंडुयए, पिंगलए सव्वरयणमहापउमे ॥ कालेय महाकाले, माणवग महानिहीसंखे ॥ २३२ ॥ अर्थः—एक नैसर्प्प, बीजुं पांडूक, त्रीजुं पिंगलक, चोथुं सर्वरत्न, पांचमुं महापद्म, छठुं काल, सातमुं महाकाल, आठमुं माणवकनामे महानिधानने नवमुं संख ए नवनां सामान्य पणे नाम कह्यां. ॥ २३२ ॥

हवे जे निधानमां जे थाय छे ते कहेछे. मूलः—नेसप्पंमि निवेसा, गामागर नगर पट्टणाणंच ॥ दोणमुहमंडबाणं, खंधाराणं गिहाणंच ॥ २३३ ॥ अर्थः—नैसर्प्पनामा निधाननेविषे निवेसाके० स्थापवानो प्रकार पण ते केनुं तोके ग्राम आकरादिकनुं तेमां ग्रामते जेने फरति वाडीओ थाय ते जाणवुं अने आकरते ज्यां लूण प्रमुख नीपजे ते जाणवुं. तथा नगरते ज्यां राज्यधानी थाय ते जाणवुं. पाटणते ज्यां जलने स्थलना मार्ग होय ते जाणवुं.द्रोणमुख मंडब ते ज्यां जलमार्ग होय अने अडी गव्यूतमां कोइ ग्राम न थाय ते जाणवुं. स्कंधवार शब्दे कटक जाणवुं जेम ते चक्रव्यूह गरूडव्यूहादिकनी रचनायें उतरे अने गिहके० घरनी मांमणी जेणे करी राजादिकना घर मांमीयें, ए सर्व प्रकार नेसर्प्प निधानमांहे होयछे.

मूलः—गणियस्सय गीयाणं, माणुम्माणस्स जं पमाणंच ॥ धन्नस्सय बीयाणं, उप्पत्ती पंडुए जणिया ॥ २३४ ॥ अर्थः—गणित ते दीनार एटले सोनामोर, नालियर, सोपारी प्रमुख तेनी गणितं एटले संख्यानुं करवुं अथवा गणित ते संकलित व्यकलितादिक प्रकारें जेम गुणाकार जागाकारना जेद जे अंकविद्या; ते सर्व जाणवुं. तेमज गीत जे स्वर करणादिक गावाना प्रकार अने मानजे सेईप्रमुख जे नाथकी धान्यनुं माप करियें. उन्मान तुलाकर्ष प्रमुख जे धरिम तेना प्रकार प्रमाणना विशेष. वली धान्य चोवीस प्रकारनां बीज समस्त तेना उपजवाना प्रकार ते पांडुकनामा निधाननेविषे जणितके० कह्यांछे. ॥ २३४ ॥

मूलः—सवा आहरण विही, पुरिसाणं जाय जाय महिलाणं; आसाणय हत्थीणय, पिंगलगनिहिम्मि सा जणिया ॥ २३५ ॥ अर्थः—पुरुष अने स्त्री संबंधी

समस्त आजरण, तेम अश्व जे घोडा तथा हाथी ने योग्यआजरणनो विधि ते सर्व पिंगलकनामा निधानने विषे कह्योछे. ॥ २३५ ॥

मूलः— रयणाइ सव्वरयणे, चउदस पवराइ चक्कवट्टीणं ॥ उप्पज्जंती एगेंदियाइं पंचेंदियाइंच ॥ २३६ ॥ अर्थः— सर्व रत्ननाम निधाननेविषे चक्रवर्त्तिना महा प्रधान चउद रत्न थाय. एमां सात एकेंद्रिय ने सात पंचेंद्रियनी उत्पत्ति वर्णवीछे. अनेरा कहेछे के एने प्रजावे महादीप्तिवंत थाय. ॥ २३६ ॥

मूलः—वत्थाणय उप्पत्ती, निप्पत्ती चेव सव्व जत्तीणं ॥ रंगाणय धाऊणय, सव्वा एसा महापउमे ॥ २३७ ॥ अर्थः—जेटलां वस्त्रछे ते सर्वेनी उत्पत्ति, तेम ज वली वस्त्रगत जे जक्तिके० विशेष तेनी निष्पत्ति एटले नीपजवाना प्रकार, तथा रंग जे मजीठ क्रमिराग कसुंबो प्रमुख, तेनी उत्पत्ति. तथा धातु जे लोखंम त्रांबु प्रमुख सात धातु अथवा धोऊणय एवा पाठ थकी वस्त्रादिक धोवानी जे रीति ते आम के खुमो वस्त्र आवीरीते धोवुं. अने रेसमी वस्त्र एम धोवुं, उननुं वस्त्र आम धोवुं; इत्यादिकसर्व महापद्मनिधाननेविषे जाणवां. ॥ २३७ ॥

मूलः—काले कालन्नाणं, जव्वपुराणं च तिसुवि वंसेसु ॥ सिप्पसयं कम्माणिय, तिन्नि पयाए हियकराइं ॥ २३८ ॥ अर्थः—कालनामा निधाननेविषे समस्त काल ज्ञान ज्योतिषसंबंधि जे ज्ञान कह्युंछे ते. अने जव्यके० जे थशे; पुराणके० जे थयुं. एना उपलक्षणथकी वर्त्तमानकालसंबंधी तीर्थंकरना वंश, चक्रवर्त्तिना वंश, बलदेव वासुदेवना वंश, ए त्रणे वंश तेनेविषे जे वक्तव्यता अने तिसुविवंसेसु ए पाठथकी अनुक्रमे थयो, थशे अने वर्त्तमानकालना वर्षनी वातनुं कथन. अने क्यांएक जव्व पुराणं च तिसुकालेसु एवो पाठ छे; तेथी थशे, थयुं अने वर्त्तमान कालनुं शुजाशुज ज्ञाननुं कहेवुं. तेमज सिप्पसयं एटले घट, लोखंड, चित्र, वस्त्र, नापित शिला ए पांचना प्रत्येके वीश वीश जेद छे. तेवारे एकशो प्रकारनुं शिल्प, अने कर्म ते कर्षण तथा वाणिज्यादिक, ते जघन्य मध्यम अने उत्कृष्टना जेदथकी जे प्रजालोकना हितने अर्थे करवुं; ते सर्व कालनामा निधाननेविषे जाणवुं. ॥ २३८ ॥

मूलः—लोहस्सय उप्पत्ती, होइ महाकाल आगराणंच ॥ रुप्पस्स सुवन्नस्सय, मणि मोत्ति सिलप्पवालाणं ॥२३९॥ अर्थः—लोह अनेक प्रकारनुं छे; तेनी उत्पत्ति. वली रुपुं ने सोनुं प्रसिद्धछे. मणी ते चंद्रकांतादिक अने मुक्ता ते मोती. शिला स्फटिक प्रवाला ते विद्रुम तेना आकर ते सर्व महाकालनामा निधाननेविषे जाणवा.

मूलः—जोहाणय उप्पत्ती, आवरणाणंच पहरणाणंच ॥ सव्वाय जुद्ध नीई, मा

णवगे दंमनीईय ॥ २४० ॥ अर्थः—योद्धा जे शूरवीर पुरुषो छे तेनी उत्पत्ति अ ने आवरण, सन्नाह् एटले खेटक प्रमुख, प्रहरण तरवार, कटारी, नाला, फरशी इत्यादिक हथीयारना विशेष. वली समस्त जे युद्धनी सामग्री तेनी नीति तथा दं मनीति ते साम, दाम नेद ने दंम एरीते चार प्रकारनी जे राजनीति कही छे. ते सर्व माणवकनामा निधाननेविषे जाणवी. ॥ २४० ॥

मूलः—नट्टविहि नामय विही, कवस्स चउविहस्स निप्पत्ती ॥ संखे महानिहि म्मिउ, तुमियं गाणंच सव्वेसिं ॥ २४१ ॥ अर्थः—नाट्य जे नरतादिक संबंधी तेनो विधि, अने नाटकविधि तेने कहिये जे अनिनय बंधादिकनो प्रकार, अने जेमां धर्म, अर्थ, काम ने मोक्षनुं वर्णन करेलुं होय; एवी चार प्रकारनी का व्य, अथवा संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश संकीर्ण लक्षण. तेवी नाषाए निबद्ध अथवा गद्य, पद्य, गेय, चौर्ण्य, तेमां गद्य ते बूटो समराजिर इत्यादिक अने पद्य ते अनेक अनुष्टु बादिक जातिए करी पद रचना. तथा गेय ते गीतगोविंदादिक गीत, अने चोर्ण्य ते प दने चूरण करिए खंमिए ज्यां, ते नत्तुपार्वत्ति इत्यादिक. एवां चार प्रकारनां काव्य तेनी निष्पत्ति करवाना प्रकार ते संखनामा महानिधानमां छे. तथा तेमां वली त्रु टितांगके० त्रुटित वादित्र, तेनां अंग जेटला प्रकारनां छे, तेनी उत्पत्ति वखाण ए टलां वानां लन्यमान थाय. एक आचार्य एम कहेछे के, जे जे निधानमांहे जे जे वस्तु कहिछे, ते ते वस्तु साक्षात् तेज निधानमांहेज उपजेछे. ॥ २४१ ॥

हवे ए नवे निधाननुं स्वरूप समस्त साधारणपणे कहेछे. मूलः— चक्कट्ठ पइ ठाणा, अठुस्से हाय नवय विरकंने ॥ बारस दीहा मंजूस संठिया जएहवी प मुहे ॥ २४२ ॥ अर्थः—चक्र शब्द पइनुं ते आठ पइडे तेनुं प्रतिष्ठानके० रहेवुंछे. अने अठुस्सेहाय के० आठयोजननुं उत्सेध एटले उंचपणुं छे जेनुं, तथा नव यो जन विष्कंन एटले विस्तारछे जेनो. वली बार योजन दीर्घके० लांबपणेछे. मंजूष ने संस्थाने एटले आकारे, ते जान्हवी जे गंगा तेने मुखे सदा सर्वदा रहेछे. ते जे वारे चक्रवर्त्ती उपजे ते नरतखंम साधी पाछो फरे तेवारे चक्रवर्त्तीनी साथे थइ चक्रवर्त्तीनी नगरीए आवीने पातालमां रहे. ॥ २४२ ॥

वली ते कहेवो होय ते कहेछे. मूलः—वेरुलीयमणिकवाडा, कणय मया वि विहरयणपडिपुन्ना ॥ ससिसूरचक्क लरकण, अणु समवयणोववत्तीया ॥ २४३ ॥ अर्थः—वैमूर्यरत्नमय वरप्रधान कमाडछे जेनां, कनकमय एटले सूवर्णेकरी निष्पन्न नीतिछे तथा विविध प्रकारनां रत्न तेणेकरी परिपूर्ण एटले संहित चंद्रमा अने सू

येनी परे चक्रने आकारे लक्षण एटले चिन्हछे जेने, वळी अनुसमके० समी. वदनके० बारणांनी उपपत्तिके० घटनाछे ज्यां, अथवा अणुवम वइणो एवा पाठ थकी ज्यां उपमाये रहित वचननी घटना छे; एटले जेनुं स्वरूप वर्णन करवासारु वचननी रचना पण थाय नहीं, अर्थात् स्वरूप वर्णवी शकीये नहीं इतिभाव. अ थवा अनुसमय समयप्रत्ये पुद्गलनुं जावुं. अने उपपत्तिके० आववुंछे एतावता स मय समयनेविषे जेवा पुद्गल जायछे तेवा वळी आवेछे. परंतु तेमां कांइ घटता नथी.

अने श्रीठाणांगमां अणुसमयुगबाहुवयणत्ति एहवो पाठछे. ते अणुसमयके० अविषम, जुगके० धुसर तेने आकारे वाटलापणे करीने बाहुके० बारसाख मुख नेविषे ज्यां. ते अनुसमय जाणवो. ॥ २४३ ॥

मूळः—पलिउवमट्ठिईया, निहिसिरि नामाय तछ ते देवा ॥ जेसिं ते आवासा, अक्केया आहि वच्चाया ॥२४४॥ अर्थः—पल्योपमआयुनी स्थितिए अने जे निधाननुं जेवुं नाम तेवेज नामे ते निधाननेविषे त्यां देवता वासकरेछे. तेदेवअन्य कार्यैरहित थका जेमनुं अधिपतिपणुं मूल्ये पण लाभे नहीं, एतावता ज्यां वक्रुराइ अमोलिकछे.

मूळः—एए ते नव निहिणो, पभूयधण रयण संचय समिद्धा ॥ जेवस मुवग छंती, सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥२४५॥ अर्थः—एएके० ए पूर्वेजे नवे निधानोनुं स्वरूप व खाएयुं ते नवे निधान प्रभूतके० घणुं एवुं जे धन; अनेरत्ननो संचय तेनी समृद्धिएकरी सहितछे, ते सर्वे चक्रवर्त्तिउने नवे निधान प्राप्त थायछे॥२४५॥इतिगाथा चतुर्दशकार्थ॥

अवतरणः— जीव संखाउत्ति एटले जीवनी संख्यानुं बशेने चउदमुं द्वार कहे छे मूळः—नमिउं नेमिएगाइ जीवसंखं भणामि समयाउ ॥ चेयण जुत्ताएगे, भ वछ सिद्धा दुहाजीवा ॥ २४६ ॥ अर्थः—श्रीनेमिनाथप्रत्ये नमस्कार करीने एक आदेदेइने जीवनी जे संख्या ते श्रीसिद्धांतथकी भणामिके० कहुंछुं. तेमां चेतना ए युक्त जीव ए प्रथम प्रकार जाणवो. संसारमां रहेते भवस्थ अने जे निर्वाण पद पाम्या तेसिद्ध. एरी ते बे प्रकारना जीवो जाणवा. ॥ २४६ ॥

मूळः—तसथावराय दुविहा, तिविहा थीपुंनपुंसग विन्नेया ॥ नारय तिरिय नरामर, गइ भेयाउ चउभेया ॥ २४७ ॥ अर्थः—अथवा त्रसने थावरना भेदेकरी बे प्रकारे जाणवा. स्त्री पुरुष ने नपुंसकना भेदे करी त्रण प्रकारे जाणवा. नार कादिक गतिना भेदे करी चार प्रकारे जाणवा. ॥ २४७ ॥

मूळः—अहवातिवेय अविगय, सरूवउवा हवंति चत्तारी ॥ एग बिति चउपणिं दिय रूवा पंचप्पयारा ते ॥ २४८ ॥ एएन्द्रियअणिंदिय जुत्ता अहवा अभू

जलग्गि निला ॥ वण तस सहिया ढप्पिय, ते सत्त अकाय संवलिया ॥ १४ए ॥ अथवा त्रण वेद ने चोथुं अवेद ते सिद्धना जीवो मली चार प्रकार थाय. एकेंद्रिया दिकना भेदे करी पांच प्रकार थाय छे; ॥१४७॥ एज पांच प्रकारमां अनेंद्रिय जे सिद्धना जीवोछे ते भेलिये तेवारे छ प्रकार थायछे. अथवा पृथिव्यादिक पांच त्रस जीवो सहित करतां छ भेद थायछे. वली ए छ कायने साथे सातमा अकायिक सिद्धना जीवो मेलव्याथी सात भेद थायछे. ॥ १४ए ॥

मूलः—अंमय रसय जराउअ, संसेयय पोयया समुच्छिमया ॥ उब्भिय तहोववा इय, भेएणं अठ्ठहा जीवा ॥१५०॥ अर्थः—अंमज एटले जे ईमाथकी उपजे एवा पंखी प्रमुख, बीजा, रसथकी उपजे ते रसज, सूक्ष्मजीव तक्रादिकना उपन्या जाणवा. त्रीजा, जरायुज जे जरामां उपन्या मनुष्यादिक जाणवा, चोथा, संस्वेद शब्दे परसेवो तेथकी जे उपन्या ते संस्वेदज यूका उप्पई प्रमुख जाणवा, पांचमा, पोतजा ते हाथी प्रमुख जाणवा; छठा, संमूर्छिम मक्षिका प्रमुख; सातमा उभ्भेद जे भूमिका फोडीने उपजे ते उभ्भेदज ते तीडप्रमुख जाणवा; तेम आठमा उत्पाते उपजे ते उत्पातज ते देव नारकी जाणवा. एरीते आठ प्रकारे जीवो जाणवा.॥१५०॥

मूलः—पुढवाइ पंच वि तिचउ, पणिंदि जुत्ताय नवविहा हुंति ॥ नारय नपुंस तिरि नर, तिवेय सुरथी पुमेवंच ॥ १५१ ॥ अर्थः—पृथ्व्यादिक पांच अने बेंद्रिया दिक चार तेणे युक्त नव प्रकारे जीवो थायछे. अथवा नारकी ते एक नपुंसक वेदज थाय छे. अने तिर्यंच तथा मनुष्यना पुरुष स्त्री ने नपुंसक एवा त्रण त्रण वेद छे. ए सात थया. तथा देवता स्त्री ने पुरुष बे प्रकारेछे एमपण नव भेदज थायछे.

मूलः—पुढवाइ अठ असन्नि, सन्नि दस ते ससिद्ध इगदसउ ॥ पुढवाइ थातसंता. अपज्ज पज्जत्त बारसहा ॥१५२॥ अर्थः—पृथ्व्यादिक पांच अने विकलेंद्रियादिक त्रण ए आठ थया, नवमा असन्नी, दशमा सन्नी ए दशप्रकार थया; तेमज एनी साथे सिद्ध भेला करिए तेवारे अग्यार भेद थायछे. तथा वली पृथ्वीथी मांमीने त्रस प र्यंत छ प्रकारना पर्याप्ता तथा छ प्रकारना अपर्याप्ता करिए तेवारे बारभेद थायछे.

मूलः—बारस वि यतणुजुत्ता, तेरस सुहुमियरगिंदि बे इंदी ॥ तिय चउ अस न्नि सन्नी, अपजत्त पजत्त चउदसहा ॥ १५३ ॥ अर्थः—पूर्वोक्त बार भेद ते अ तनु जे सिद्ध तेणे सहित करतां तेर भेद थायछे. एक सूक्ष्म ने बीजा बादर ए बे भेद एकेंद्रियना तथा बेंद्रि, तेंद्रि, चउरेंद्रि, असन्नी, ने सन्नी ए सात पर्याप्ता ने सात अपर्याप्ता मली चउद भेद थाय. ॥ १५३ ॥

मूलः—चउदस वि अमल कलिआ, पनरस तह अंमगाइ जे अठ ॥ ते अपजत्तग पज्जत्त भेदउ सोलस हवंति ॥ २५४ ॥ अर्थः—पूर्वे चउद प्रकार कह्या ते अमलके० मलरहित जे सिद्धना जीवो छे ते सहित करतां पंदर प्रकार थायछे, तेमज अंमजादिक जे आठ प्रकार प्रथम कह्या हता तेना पर्याप्ता ने अपर्याप्ताना भेदे करी शोल प्रकार थायछे. ॥ २५४ ॥

मूल.—सोलसवि यकायजुत्ता, सतरस नपुमाइ नव अपज्जत्ता ॥ पज्जत्ता अ ढारस, अकम्म जुअ ते इगुणवीसं ॥२५५॥ अर्थः—पूर्वोक्त शोल ने अकाय एटले कायरहित सिद्ध जीवोयुक्त करतां सत्तर भेद थायछे. अने नपुमाइके० पूर्वे नारकी नपुंसकादिक नव भेद कह्या हता ते नवने पर्याप्ता ने अपर्याप्ताना भेदे करतां अढार भेद थया; एनेज अकर्मक सिद्ध सहित करतां ओगणीश भेद थया.

मूलः—पुढवाइ दस अपज्जा, पज्जत्ता हुंति वीस संखाए ॥ असरीर जुएहि ते हि वीसई होइ एगहिया ॥ २५६ ॥ अर्थः—पूर्वेजे पृथ्व्यादिक दश भेद कह्या तेनेज पर्याप्ता अपर्याप्ता करतां वीश संख्याए थायछे. तेने अशरीर जे शरीररहित सिद्धना जीवो छे तेना सहित करतां एकवीश भेद थायछे. ॥२५६॥

मूलः—सुहुमिअरभूजलानिल, वाउवणाणंत दस सपत्तेआ ॥ बितिचउ असन्नि सन्नी, अपज्ज पज्जत्त बत्तीसं ॥ २५७ ॥ पृथ्व्यादिक पांच ते सूक्ष्म तथा बादरना भेदे करी दश थायछे, एमां अणंतकाय आवी अने अग्यारमो प्रत्येक वनस्पति तथा बेंद्रियादिक त्रण अने असंज्ञी तथा संज्ञी मली शोल भेद ने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ताना भेदें करी बत्रीश थायछे. ॥२५७॥

मूलः—तह नरय भवण वण जोइ कप्पगेविज्जणुत्तरु प्पसा ॥ सत्तदस अपण बारस, नवपण उप्पन्न वेउव्वा ॥ २५८ ॥ अर्थः—नारकी रत्नप्रभादिकना सात भेद, भवनपति असुरादिकना दश भेद, व्यंतर यक्षादिक आठ, अथवा अणपन्नी आदिक आठ ए बे मांथी एक अष्टक गणीए. ज्योतिष चंद्रादिक पांच, कल्प ते सौधर्मादिक बार. ग्रैवेयक हेठिमादिक नव. अने अनुत्तर ते विजयादिक पांच विमान. ए उपन्न भेद वैक्रियना थया. ॥ २५८ ॥

मूलः—हुंति अडवन्न संखा, तेनर तेरिच्छ संगया सव्वे ॥ अपज्ज पज्ज भेहिं, सोलसउत्तर सयं तेहिं ॥ २५९ ॥ अर्थः—ते पूर्वोक्त वैक्रियना उपन्न भेदनी संख्या मां नरके० मनुष्य अने तिर्यंच मेलवीए तेवारे सर्वे अठ्ठावननी संख्या थायछे. एनेज पर्याप्ता अपर्याप्ता करतां एकशो ने शोल भेद थाय. ॥२५९॥

मूलः—सन्नी डुग हीण बत्तीस संगयं तंसयं ठयत्तालं ॥ तंनवा नवगदूर नव आसन्न नवंच ॥ २६०॥ अर्थः—प्रथम सुहुम्मियर गाथाए करी बत्रीश नेद जे पूर्वे कह्या हता तेमांथी संज्ञी ने असंज्ञी ए बे हीन करिए तेवारे त्रीश नेद थाय. ते एक शो ने शोल वैक्रियनी साथे मेलवतां एकशो ने ठेतालीश नेद थायठे. एमां वली कोइ नव्य, कोइ अनव्य, अने कोइ दूरनव्य ते गोशालादिक जाणवा, अने जे कोइ तेज नवे अथवा बीजे त्रीजे नवे मोक्ष जवानाठे ते आसन्ननव्य जाणवा. ॥२६०॥

मूलः—संसारनिवासीणं, जीवाण सयं इमं ठएतालं ॥ अप्पंच पालियव्वं, सिव सुहकंखीहि जीवेहिं ॥ २६१ ॥ अर्थः—संसारनिवासी जीवोना ए एकशो ने ठेतालीश नेद जाणवा. ते अप्पंचके० पोताना आत्मानीपरे जह्ममपिअं डुरकं इत्यादिक जाणीने ए एकशो ने ठेतालीश प्रकारना जीवोने जे कोइ शिव सुखनी वांठना करनार जीवोठे तेणे पोतानी आत्मानीपरे पालवा. ॥ २६१ ॥

हवे ए कुलक एज शास्त्रकारनो करेलो एवो जणाववाने अर्थे गुरुना नाम सहित पोतानुं नाम जणावेठे. ते प्रयोजन पूर्वक गाथा कहेठे. मूलः—सिरिअम्म एव मुणिवइ, विणेय सिरिनेमि चंदसूरीहिं ॥ सपरहियठं रइयं, कुलयमिणं जीव संखाए ॥ २६२ ॥ अर्थः—श्रीआम्रदेव नामे मुनिपति जे आचार्य तेना विनेयके० शिष्य श्रीनेमिचंद्रसूरि तेणे पोताने तथा परने अर्थे ए जीव संख्याना कुलकनी रचना करीठे, एटले सत्तर गाथाए करी कुलक वखाण्यो. ॥ २६२ ॥

अवतरणः—कम्माई अठति एटले आठकर्मनुं बशोने पन्नरमुं द्वार कहेठे. मूलः—पढमं नाणावरणं, बीयं पुण दंसणस्स आवरणं ॥ तइ यंच वेयणीयं, तहा चउठं च मोहणिअं ॥२६३॥ पंचममाउं गोयं, ठठं सत्तमगमंतरायमिह ॥ बहुत म पयडित्तेणं, नणामि अठम पए नामं ॥ २६४ ॥ अर्थः—पहेलुं ज्ञान जे मत्यादिक तेने जे आवरे ते ज्ञानावरण कहिए. बीजुं दर्शन जे लोचन तेने आवरे ते दर्शनावरण कहिए. त्रीजुं जेणे करी सुख अने डुःख वेदिये तेने वेदनीय कहिए, तेमज चोथुं जेणेकरी आत्मा मोह पामे तेने मोहनीय कहिए. पांचमुं आयु बांध्युं ठतुं अवश्य उदय आवे तेथी तेने आयुकर्म कहीए. ठठुं गूय ते नाना महोटा शब्देकरीने कहिये ते गोत्र कर्म जाणवुं, सातमुं जे विघ्न करे ते अंतराय कर्म जाणवुं. इहां जिनशासननेविषे, हवे जेनी घणी प्रकतिठे तेणे करीने नणामिके० कहीशुं, आठमा स्थानकनेविषे जे नमयंतिके०नमाडे तेनाम कर्म. इति गाथा द्वयार्थ.॥२६३॥२६४॥

अवतरणः—तेसिउत्तर पयडीणं अडवन्न सयति एटले आठकर्मनी उत्तर प्रक

तिनुं बत्रीं ने सोत्तमुं द्वार कहेछे. मूलः—पंचविह नाण वरणं, नवन्नेया दंसण स्स दोवेए॥अघावीसं मोहे, चत्तारिय आउए हुंति ॥ १६५ ॥ गोयम्मि डुन्निपंचं तराय तिगहियं सयं नामे ॥ उत्तर पयडीएवं, अघावन्नं सयं होइ ॥१६६॥अर्थः— मतिज्ञानादिक पांच ज्ञानने आवरे तेथी पांच प्रकारे ज्ञानावरणीय जाणवुं. बीजुं चार प्रकारना दर्शनने जे आवरे तथा पांच प्रकारनी निद्रा जेनाथकी उदय आ वे ते नवप्रकारे दर्शनावरणीय कर्म जाणवुं. त्रीजुं साता अने असाताना भेद थकी बे प्रकारे वेदनीय कर्म जाणवुं. चोथुं सोल कषाय अने नव नोकषाय तथा त्रण दर्शन मोहनीय मली अघावीस प्रकारे मोहनीय कर्म जाणवुं. नरकादिक गतिना भेद थकी आयुकर्म चारभेदे जाणवुं. उंच नीचना भेद थकी गोत्र कर्म बे भेदे जाणवुं. दानांतरायादिकना भेद थकी अंतराकर्म पांचप्रकारे जाणवुं. अने नाम कर्म एकशोने त्रण प्रकारे जाणवुं. ॥ १६५ ॥ १६६ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिना प्रत्येक नाम कहेछे. मूलः—मइसुय उहीमण केवलाणि जीवस्स आविरिज्जंति ॥ जस्स प्पभावउतं, नाणावरणं भवेकम्मं ॥१६७॥ अर्थः— चारप्रकारनो व्यंजनावग्रह अने अर्थावग्रह, ते पांचइंद्रिय अने छठुं मन ते अवग्रह, इहा, अपाय ने धारणा ए एकेकना चार चार भेद करतां छ चोक चोवीश भेद थायछे, तेनी साथे चार व्यंजनावग्रह भेला करिये तो मति ज्ञानना अघावीश भेद थायछे. अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, संज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, असम्यक्श्रुत, सादिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यवसितश्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगमिकश्रुत, अंगप्रविष्टश्रुत, अनंगप्रविष्टश्रुत, एरीते चउदप्रकारनां श्रुतछे. अथवा पर्यायश्रुत्या दिक वीशप्रकारनां श्रुत ते आवीरीतेछे. पर्यायश्रुत, पर्यायसमासश्रुत, अक्षरश्रुत, अक्षरसमासश्रुत, पदश्रुत, पदसमासश्रुत, संघातश्रुत, संघातसमासश्रुत, प्रतिपत्तिश्रुत, प्रतिपत्तिसमासश्रुत, अनुयोगश्रुत, अनुयोगसमासश्रुत, प्राभृतश्रुत, प्राभृतसमासश्रुत, प्राभृतप्राभृतश्रुत, प्राभृतप्राभृतसमासश्रुत, वस्तुश्रुत, वस्तुसमासश्रुत, पूर्वश्रुत, पूर्वसमासश्रुत, एरीते वीशभेद श्रुतज्ञानना जाणवा, तथा अनुगामि, अननुगामि, वर्द्धमान, हीयमान, प्रतिपाति ने अप्रतिपाति ए छ भेद अवधिज्ञानना जाणवा. तथा ऋजुमति अने विपुलमतिना भेद थकी बे प्रकार मनपर्यवज्ञानना जाणवा, अने केवल ज्ञाननो एकज भेद छे. अन्य ज्ञानोनेविषे जेटलुं क्षयोपशम होय तेटलुं ज्ञान थायछे, अने सर्वथा ज्ञानावरणीयना क्षयथकीज जेनुं उपजवुं थाय ते केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानना भेद सामान्ये कह्या. हवे गाथार्थ कहेछे. जीवस्सके०

मूलः—सन्नी दुग हीण बत्तीस संगयं तसयं हयचालं ॥ तंनवा नवगदूर नव आसन्न नवंच ॥ २६०॥ अर्थः—प्रथम सुहुम्मियर गाथाए करी बत्रीश नेद जे पूर्वे कह्या हता तेमांथी संज्ञी ने असंज्ञी ए बे हीन करिए तेवारे त्रीश नेद थाय. ते एक शो ने शोल वैक्रियनी साथे मेलवतां एकशो ने छेतालीश नेद थायछे. एमां वली कोइ नव्य, कोइ अनव्य, अने कोइ दूरनव्य ते गोशालादिक जाणवा, अने जे कोइ तेज नवे अथवा बीजे त्रीजे नवे मोक्ष जवानाछे ते आसन्ननव्य जाणवा. ॥२६०॥

मूलः—संसारनिवासीणं, जीवाण सयं इमं छएतालं ॥ अप्पंच पालियवं, सिव सुहकंखीहि जीवेहिं ॥ २६१ ॥ अर्थः—संसारनिवासी जीवोना ए एकशो ने छेतालीश नेद जाणवा. ते अप्पंचके० पोताना आत्मानीपरे जहममपिअं दुरकं इत्यादिक जाणीने ए एकशो ने छेतालीश प्रकारना जीवोने जे कोइ शिव सुखनी वांछना करनार जीवोछे तेणे पोतानी आत्मानीपरे पालवा. ॥ २६१ ॥

हवे ए कुलक एज शास्त्रकारनो करेलो एवो जणाववाने अर्थे गुरुना नाम सहित पोतानुं नाम जणावेछे. ते प्रयोजन पूर्वक गाथा कहेछे. मूलः—सिरिअम्म एव मुणिवइ, विणेय सिरिनेमि चंदसूरीहिं ॥ सपरहियछं रइयं, कुलयमिणं जीव संखाए ॥ २६२ ॥ अर्थः—श्रीआम्रदेव नामे मुनिपति जे आचार्य तेना विनेयके० शिष्य श्रीनेमिचंद्रसूरि तेणे पोताने तथा परने अर्थे ए जीव संख्याना कुलकनी रचना करीछे, एटले सत्तर गाथाए करी कुलक वखाण्यो. ॥ २६२ ॥

अवतरणः—कम्माइं अठति एटले आठकर्मनुं बशोने पन्नरमुं द्वार कहेछे. मूलः—पढमं नाणावरणं, बीयं पुण दंसणस्स आवरणं ॥ तइ यंच वेयणीयं, तहा चउछं च मोहणिअं ॥२६३॥ पंचममाउं गोयं, छठं सत्तमगमंतरायमिह ॥ बहुत म पयडित्तेणं, नणामि अठम पए नामं ॥ २६४ ॥ अर्थः—पहेलुं ज्ञान जे मत्या दिक तेने जे आवरे ते ज्ञानावरण कहिए. बीजुं दर्शन जे लोचन तेने आवरे ते दर्शनावरण कहिए. त्रीजुं जेणे करी सुख अने दुःख वेदिये तेने वेदनीय कहिए, तेम ज चोथुं जेणेकरी आत्मा मोह पामे तेने मोहनीय कहिए. पांचमुं आयु बांध्युं छतुं अवश्य उदय आवे तेथी तेने आयुकर्म कहीए. छठुं गूय ते नाना महोटा शब्देकरीने कहिये ते गोत्र कर्म जाणवुं, सातमुं जे विघ्न करे ते अंतराय कर्म जाणवुं. इहां जि नशासननेविषे, हवे जेनी घणी प्रकृतिछे तेणे करीने नणामिके० कहीशुं, आठमा स्थानकनेविषे जे नमयंतिके०नमाडे तेनाम कर्म. इति गाथा द्वयार्थ.॥२६३॥२६४॥

अवतरणः—तेसिंउत्तर पयडीणं अडवन्न सयति एटले आठकर्मनी उत्तर प्रकृ

तिजुं बत्रीं ने सोलमुं द्वार कहेछे. मूलः—पंचविह नाण वरणं, नवनेया दंसण स्स होवेए॥अडवीसं मोहे, चत्तारिय आउए हुंति ॥ २६५ ॥ गोयम्मि डुन्निपंचं तराय तिगहियं सयं नामे ॥ उत्तर पयडीएवं, अडावन्नं सयं होइ ॥२६६॥अर्थः— मतिज्ञानादिक पांच ज्ञानने आवरे तेथी पांच प्रकारे ज्ञानावरणीय जाणवुं. बीजुं चार प्रकारना दर्शनने जे आवरे तथा पांच प्रकारनी निद्रा जेनाथकी उदय आवे ते नवप्रकारे दर्शनावरणीय कर्म जाणवुं. त्रीजुं साता अने असाताना नेद थकी बे प्रकारे वेदनीय कर्म जाणवुं. चोथुं सोल कषाय अने नव नोकषाय तथा त्रण दर्शन मोहनीय मली अडावीस प्रकारे मोहनीय कर्म जाणवुं. नरकादिक गतिना नेद थकी आयुकर्म चारनेदे जाणवुं. उंच नीचना नेद थकी गोत्र कर्म बे नेदे जाणवुं. दानांतरायादिकना नेद थकी अंतराकर्म पांचप्रकारे जाणवुं. अने नाम कर्म एकशोने त्रण प्रकारे जाणवुं. ॥ २६५ ॥ २६६ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिना प्रत्येक नाम कहेछे. मूलः—मइसुय उहीमण केवलाणि जीवस्स आविरिज्जंति ॥ जस्स प्पनावउत्तं, नाणावरणं नवेकम्मं ॥२६७॥ अर्थः— चारप्रकारनो व्यंजनावग्रह अने अर्थावग्रह, ते पांचइंद्रिय अने छठुं मन ते अवग्रह, इया, अपाय ने धारण ए एकेकना चार चार नेद करतां छ चोक चोवीश नेद थायछे, तेनी साथे चार व्यंजनावग्रह नेला करिये तो मति ज्ञानना अडावीश नेद थायछे. अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, संज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, असम्यक्श्रुत, सादिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यवसितश्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगमिकश्रुत, अंगप्रविष्टश्रुत, अनंगप्रविष्टश्रुत, एरीते चउदप्रकारनां श्रुतछे. अथवा पज्जवइत्यादिक वीशप्रकारनां श्रुत ते आवीरीतेछे. पर्यायश्रुत, पर्यायसमासश्रुत, अक्षरश्रुत, अक्षरसमासश्रुत, पदश्रुत, पदसमासश्रुत, संघातश्रुत, संघातसमासश्रुत, प्रतिपत्तिश्रुत, प्रतिपत्तिसमासश्रुत, अनुयोगश्रुत, अनुयोगसमासश्रुत, प्राभृतश्रुत, प्राभृतसमासश्रुत, प्राभृतप्राभृतश्रुत, प्राभृतप्राभृतसमासश्रुत, वस्तुश्रुत, वस्तुसमासश्रुत, पूर्वश्रुत, पूर्वसमासश्रुत, एरीते वीशनेद श्रुतज्ञानना जाणवा, तथा अनुगामि, अननुगामि, वर्द्धमान, हीयमान, प्रतिपाति ने अप्रतिपाति ए छ नेद अवधिज्ञानना जाणवा. तथा ऋजुमति अने विपुलमतिना नेद थकी बे प्रकार मनपर्यवज्ञानना जाणवा, अने केवल ज्ञाननो एकज नेद छे. अन्य ज्ञानोनेविषे जेटलुं क्षयोपशम होय तेटलुं ज्ञान थायछे, अने सर्वथा ज्ञानावरणीयना क्षयथकीज जेनुं उपजवुं थाय ते केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानना नेद सामान्ये कह्या. हवे गाथार्थ कहेछे. जीवस्सके०

जीवने ए ज्ञानने आवरिये रुंधिये जेना प्रभावथकी ते ज्ञानावरणीय कर्म कहिये.

मूलः—नयणे यरोहि केवल, दंसण आवरण यं नवे चउहा ॥ निद्दापयला हि छहा, निद्दाय डुरुत्त थीणद्धी ॥ १६८ ॥ अर्थः—नयन शब्दे चक्षु तेनुं आवरण जे लोचन तेने आवरे ते चक्षुदर्शनावरणीय; अने इतर जे बीजी अन्य इंद्रियनुं ज्ञान हणे ते अचक्षुदर्शनावरणीय. अवधिदर्शनने आवरे ते अवधिदर्शनावरण कहेवाय. एम केवलदर्शनने आवरे ते केवल दर्शनावरण. एरीते दर्शनावरणीय चार भेदे थाय. हवे पांच निद्रा कहेछे. त्यां प्रथम सुखे चीपटीना वजाडवा थकी जागी उठे ते निद्रा, बीजी घणा धका थकी जागृत थाय ते निद्रानिद्रा; त्रीजी डुरुक्ता ते एक निद्रा बीजी निद्रानिद्रा एम इहांपण द्विरुक्त प्रचला ते बेठा अने उजाथका निद्रा आवे ते प्रचला समजवी; तथा चोथी चालतां हालतां निद्रा आवे ते प्रचला प्रचला जाणवी. पांचमी स्त्यानर्द्धि ते जे दिवसे वात चिंतवी होय ते रात्रिए करे, राजाना हस्तिना दंतुसल काढनार शिष्यनीपरे जाणवुं. ए निद्रामां वासुदेवना बलथकी अर्द्ध बल होय छे. ए नव प्रकार थया ॥ १६८ ॥

मूलः—एयमिह दरिसणा वरण मेयमा वरइ दरिसणं जीवे ॥ सायमसायंच डुहा, वेयणियं सुह डुहनिमित्तं ॥ १६९ ॥ अर्थः—ए नव प्रकारनुं दर्शनावरण ते जीवनो पूर्वोक्त दर्शनगुणछे तेने आवरे ढांकी मूके. वली शाता अने अशाताना भेदे करी बे प्रकारे वेदनीय कर्म ते सुख तथा डुःखनुं निमित्त कारण छे. ॥ १६९॥

हवे मोहनीयकर्म कहेछे. मूलः—कोहो माणो माया, लोभोणंताणुबंधिणो चउरो ॥ एवमपच्चरकाणा, पच्चरकाणाय संजलणा ॥ १७० ॥ अर्थः—क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार जे अनंता संसारनुं अनुबंध करे ते जेने उत्पन्न थया छतां ज्यांसुधी ते प्राणी जीवतुं रहे त्यांसुधी तेनीसाथे रहे, अने नरकगतिना कारण थाय. सम्यक्त्वनुं रुंधन करे एटले सम्यक्त्व आववा न आपे. तेमां अनंतानुबंधी क्रोध ते पर्वतनी स्फुट समान जाणवो अने अनंतानुबंधी मान ते पाखाणना थांभला समान जाणवुं. तथा अनंतानुबंधी माया ते महानिबड वांशना मूल समान जाणवी, तथा अनंतानुबंधि लोभ ते क्रमिना रंग समान जाणवो. ॥ १७० ॥

एवंके० एरीते वली अप्रत्याख्यानीयानावरण जे अणुव्रतरूप पच्चखाणने आवरे एना उदयथी जीव कोइ पच्चखाण करी शके नही ए उपना थका एकवर्ष सुधी रहेछे, तिर्यंचनी गतिना कारण थाय तेमां अप्रत्याख्यानी क्रोध ते पृथ्वीना स्फुट समान जाणवो, अने अप्रत्याख्यानी मान ते अस्थि समान जाणवुं, वली

अप्रत्याख्यानी माया ते मेंढाना शिंगडा समान जाणवी. तथा अप्रत्याख्यानी लोन ते कादव समान जाणवो.

हवे जे जीवना सर्व विरतिरूप गुणने आवरे ते प्रत्याख्यानावरण जाणवुं, ए उपन्या छतां चार मास सुधी रहेछे, ए मनुष्यनी गतिनुं कारण थाय छे. तेमां प्रत्याख्यानी क्रोध ते वेलुनी रेखा समान जाणवो, अने प्रत्याख्यानी मान ते काष्ठ समान जाणवुं. तथा प्रत्याख्यानी माया ते गोमूत्रिका समान जाणवी. वली प्रत्याख्यानी लोन ते खंजन समान जाणवो.

हवे संज्वलन ते किंचितमात्र दीपे, उपरांत उपशमि जाय. ते उपन्या छतां घणामां घणो रहे तो पन्नर दिवससुधी रहे छे. देवनी गतिनुं कारण थाय, यथाख्यात चारित्रनुं रुंधन करे. तेमां संज्वलनो क्रोध ते पाणीनी रेखासमान जाणवो. अने संज्वलन मान ते नेत्रनी लाकमी समान जाणवुं; अने संज्वलननी माया ते वृक्षनी अवलेहिका समान जाणवी अने संज्वलननो लोन ते हलदना रंग समान जाणवो.

मूलः—सोलस इमे कसाया, एसो नव नोकसायसंदोहो ॥ इत्थी पुरिस नपुंसग, रूवं वेयत्तयं तंमि ॥२७१॥ अर्थः—ए सोल कषाय कह्या. हवे वली नव नोकषायनो संदोहके० समूह देखाडेछे. इत्थी शब्दे स्त्री, तेनो जे वेद ते स्त्रीवेद जाणवो. जेना उदयथकी पुरुषप्रत्ये अनिलाष थाय छे. बीजो पुरुषवेद ते, जेना उदयथकी स्त्रीप्रत्ये अनिलाष थाय ते जाणवोः त्रीजो नपुंसकवेद, जेना उदयथकी पुरुष तथा स्त्री बंने प्रत्ये अनिलाष थाय. कारिस, तृण, ने नगर दाह समान अनुक्रमे एवे स्वरूपे ए त्रणे वेद जाणवा. ॥२७१॥

मूलः—हासरइ अरइ नय सोयं छुगंछ त्तिहास छक्कमिमं ॥ दरसिण तिगंतु मिछ,त्त मीस संमत्त जोएण ॥ २७२ ॥ अर्थः—कारण उपन्ये अथवा कारण उपन्या विना नयन विकार उपजे, हास्य आवे, ते हास्यमोहनीय जाणवी. तेमज कोइक सुखनुं कारण उपन्ये अथवा कारण उपन्याविना स्वनावे सुखनुं वेदवुं ते बीजुं रतिमोहनीय कर्म जाणवुं. त्रीजुं ए थकी विपरीत ते अरतिमोहनीयकर्म जाणवुं. चोथुं इह लोकादिक सकारण अथवा कारण विना मनमां नय उत्पन्न थाय ते नयमोहनीयकर्म जाणवुं. पांचमुं इष्टवियोगादिक जनित अश्रुपात शोक उपजे ते शोकमोहनीयकर्म जाणवुं. छठुं बीनत्सगंधने योगे प्राणीने छुगुप्सा उपजे ते छुगुप्सामोहनीयकर्म जाणवुं. ए हास्य षट्क जाणवुं. हवे दर्शन त्रिक ते, मिथ्यात्व मिश्र ने सम्यक्त्वरूप अविशुद्ध अर्धविशुद्ध ने शुद्ध पुंजत्रिक रूप जा

णवा. अनुक्रमे मिथ्यात्व ते श्रीवीतराग प्रणीत तत्वने सद्दहे नही, अने मिश्रने प्रजावे श्री जिनोक्त तत्व उपर राग पण न होय अने द्वेष पण न होय. सम्यक्त्व ते जीवादिक तत्वनेविषे रुचिनुं करवुं. ए समकितने योगे मल्या त्रण थाय. ॥२७२॥

मूलः–इयमोह अडवीसा, नारय तिरि नर सुराउय चउक्कं॥ गोयं नीयं उच्चं,च अंतरायंतु पंचविहं ॥ २७३ ॥ अर्थः–एरीते मोहनीयकर्मनी अठावीश उत्तर प्रकृति कही अने नारकी, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवताना आयुष्यना जेद संबंधी आयुकर्मनी उत्तरप्रकृति चार कहीछे. उंच अने नीचना जेदथकी गोत्र कर्मनी उत्तर प्रकृति बे प्रकारेज जाणवी. अने अंतराय पांच प्रकारेछे तेज सूत्रकार कहेछे.॥२७३॥

मूलः–दाउं नलहे लाहो, न होइ पावइ न जोग परि जोगो ॥ निरुउविय सत्ता होइ अंतराय प्पजावेण ॥ २७४ ॥ अर्थः–छति सामग्रीए तथा छता पात्रने संयोगे दान आपी शके नही ते दानांतराय जाणवुं. छति वस्तुए आपनार आपतो होय पण जेना उदयथी प्राणीने ते वस्तुनी प्राप्ति न थाय ते लाजांतराय जाणवुं. जोगनी छति सामग्रीये पण जोगवी शके नही ते जोगांतराय जाणवुं. तेमज जली गृहणी प्रमुख उपजोगनी सामग्री छतिए पण उपजोगवी न शके ते उपजोगांतराय जाणवुं. शरीरे गाढो निरोगी पुष्ट छतो पण अशक्त, तृण मात्र जांजी न शके ते वीर्यांतरायनो प्रजाव जाणवो. ॥२७४॥

हवे नामकर्मनी प्रकृति जेटले प्रकारे थाय ते अनुक्रमे देखाडेछे. मूलः–नामे बायालीसा, जेयाणं अहव होइ सत्तठी ॥ अहवा विहु तेणउई, तिग अहिय सयं हवइ अहवा ॥ २७५ ॥ अर्थः–नामकर्मनेविषे बेतालीश उत्तरप्रकृतिना जेद अथवा सडसठ होयछे, अथवा वली त्र्याणु पण थायछे, अथवा एकशोने त्रण पण थायछे, तेमां प्रथम बेतालीश प्रकृति कहेछे. ॥ २७५ ॥

मूलः–पढमा बायालीसा, गइ जाइ सरीर अंगुवंगेय ॥ बंधण संघायण संघयणय संठाण नामंच॥२७६॥अर्थः–प्रथम बेतालीश प्रकृति ते आवीरीते गति,जाति, तनु ते, औदारिकादिक, अंगोपांग, बंधन, संघातन, संघयण, संस्थान, नाम

मूलः–तह वन्न गंध रस फास नाम अगुरु लहुअंच बोधवं ॥ उवघाय पराघाया, णुपुविऊसास नामंच ॥ २७७ ॥ आयावुज्जोयविहाय गई तसथावराजिहाणं च ॥ बायर सुहुमं पज्जत्ता पज्जत्तंच नायवं ॥२७८॥ पत्तेयं साहारण, थिर मथिर सुजासुजंच नायवं ॥ सूजगदूजगनामं, सूसर तह दूसरंचेव ॥ २७९ ॥ आएज्जमणाइज्जं, जसकित्ती नाम अजस कित्तीय ॥ निम्माणं तिडयरं, जेयाणवि हुंतिमेजे

था ॥ २८० ॥ अर्थः—तेमज वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, आनुपूर्वी, श्वासोश्वासनाम, आतप, उद्योत, विहायोगति, त्रस, थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, जाणवा. प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, जाणवुं. सुभग, दुर्भगनाम, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्त्तिनाम, अयशःकीर्त्तिनाम, निर्माण अने तीर्थंकरनामकर्म, ए बेतालीश भेदनां नाम कह्यां.॥२८०॥

हवे ए बेतालीश भेदना वली प्रतिभेद थाय ते कहेछे:—मूलः—गइ होइ चउपयारो, जाईविय पंचहा मुणेयवा ॥ पंचय हुंति सरीरा, अंगोवंगाइ तिन्नेव ॥२८१॥ अर्थः—गम्यते एटले जवुं प्राणी ए जे एनेविषे एटला माटे एने गति कहिये. ते देवादिकना भेदथकी चार प्रकारे छे. जाति ते एकेंद्रियादिकना भेद थकी पांच प्रकारे जाणवी. शरीर ते औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस ने कार्मण एपांच जाणवां. अंगोपांग ते तेजस तथा कार्मण ए बे शरीरने होतां नथी, माटे औदारिकादिक त्रण शरीरनांज होय छे तेथी त्रणज जाणवां. ॥२८१॥

मूलः—छस्संघयणा जाणसु, संठाणा विय हवंति छच्चेव ॥ वन्नाईण चउक्कं, अगुरुलहु वघाय परघायं ॥ २८२ ॥ अर्थः—संहनन ते वज्रऋषभ नाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका, अने सेवार्त्तरूप ए अस्थि रचना विशेष जाणवां. संस्थान ते समचतुरस्र, न्यग्रोध, सादि, वामन, कुब्ज अने हुंमक एवे नामे छ होयछे. वर्णादिक चार ते आवीरीते. वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श. अगुरुलघु ते जेना उदयथकी प्राणीनुं शरीर भारी अने हलवुं पण न थाय तेअगुरु लघु. अने. उपघात नाम कर्म तेने कहिए; जेना उदयथी जीव उपघात एटले विनाश पामे ते विनाश पण पोतानाज शरीरे करी थाय. जेम पडजीभप्रमुख निकले, ते जाणवुं. पराघात नाम कर्म ते जेना उदयथी पोताथकी बलवंत जे होय तेने पण दुर्निरीक्ष्य होय; कोइ सन्मुख जोइ शके नही, कोइ सांमो बोली शके नही.॥२८२॥

मूलः—अणुपुव्वी चउभेया, उस्सासं आयवंच उज्जोयं ॥ सुहअसुहा विहगगई, तसाय वीसंच निम्माणं ॥ २८३ ॥ अर्थः—आनुपूर्वीपण गतिनीपरे चार प्रकारे जाणवी. पण एटलुं विशेषछे के जीवे जे गतिनुं आयुष्य बांध्युं होय ते गतिनेविषे दोरिए बांधि वृषभादिकने जेम खेंची लइ जइए तेम खेंचीने लइ जाय ते चारगति आश्री चार अनुपूर्वी जाणवी. जेना उदयथकी जीव श्वासोश्वास लेवानी समर्थाइए करी सहित थाय ते उश्वास नाम कर्म जाणवुं. जेना उदयथकी पोते अतापवंत थको पण अनेरा जीवोने ताप उपजावे. जेम सूर्यनुं मांमलुं

पृथ्वी कायिक जीव ते पोते शीतलथका परने ताप उपजावे छे, तेनी परे ताप उपजावे ते आतप नाम कर्म जाणवुं, जेना उदयथकी जीवना अंग उद्योतवंत थाय; जेम देवता यतिने उत्तरवैक्रिये ज्योतिषि तथा खजूआ प्रमुखना शरीर दीपे ते उद्योत नाम कर्म जाणवुं. शुभने अशुभ विहायो गति-तेमां शुभ विहायो गतिना उदय थकी गज वृषभादिकनी परे भली गति थायछे. अने अशुभ विहा योगतिना उदयथकी खर शूकरादिकनी परे माठी गति थायछे.

त्रसादिक वीश ते त्रस दशक तथा स्थावर दशक. तेमां त्रसनाम कर्मना उद यथकी प्राणी बे इंद्रियादिक भाव पामे; बादरना उदयथकी जीव बादरपणुं ल हे. जे पोतपोतानी पर्याप्ति पूरण करे ते पर्याप्तनाम कर्म, प्रत्येक भाव प्राणी पामे ते प्रत्येकनामकर्म, जेना उदयथकी दांत प्रमुखने स्थिरपणुं थाय ते स्थिर नाम कर्म, जेना उदयथी नाभीनी उपरना अंगने शुभपणुं होय ते शुभनामकर्म, जेना उदयथकी समस्त प्राणीने इष्टथाय ते सौभाग्यनाम कर्म, जेना उदयथकी मनोहर स्वर थाय ते सुस्वरनाम कर्म, जेना उदयथकी तेनुं वचन समस्त लोकने ग्राह्य थाय ते आदेयनाम कर्म अने जेना उदयथकी यशःकीर्त्तिए करीसहित थाय ते यशःनाम कर्म. ए त्रस दशको कह्यो. ए थकी विपरीत स्थावर दशक छे. जेना उदयथकी जीव पृथ्व्यादिकपणु पामे ते स्थावर नामकर्म, एम सर्व दशेबोल विपरीतपणे जाणवा. एटले सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ ते ना भीथकी नीचे पादादिक, अवयव, अशुभ होय, दौर्भाग्य ते दुर्भाग्यना उदयथकी जीव दुर्भाग्य थाय, दुस्वर, अनादेय, अयश ते कोइनुं घणुज भलुं कर्या थका पण यश मले नही. ए थावर दशक कह्यो. निर्माण ते सूत्रधारनी परे आप आ पणा अंग जे ठामो ठाम रहे ते जाणवुं. ॥ २०३ ॥

मूलः—तित्थयरेणं सहिया, सत्तठीए हवंति पयडीउ ॥ सम्मामीसेहिविणा, तेव न्ना सेस कम्माणं ॥ २०४ ॥ अर्थः—ए पूर्वोक्त प्रकृतिने तीर्थंकरनाम कर्म करी सहित करिए तेवारे नामकर्मनी शडसठ प्रकृति थायछे. तथा शेष सात कर्मनी जे पंचावन प्र कृति छे तेमांथी सम्यक्त्व अने मिश्र विना शेष कर्मनी त्रेपन प्रकृति थायछे. ॥ २०४ ॥

मूलः—एवं वीसुत्तरसय, बंधेपयडीण होइ नायव्वं ॥ बंधण संघायाविय, सरी रगहणेण इह गहिया ॥ २०५ ॥ अर्थः—एम सडसठ तथा त्रेपन मेलव्याथकी आठे कर्मनी एकशो ने वीश प्रकृति बंधनेविषे थायछे ते जाणवी. इहां कोइ कहेशेके प्रथ म जेवारे बेतालीश प्रकृति कही तेवारे तेमां बंधन अने संघातन प्रकृति कही; अ

ने हमणां सडसठमांहे ते केम गणता नथी? तेने कहेछे के बंधन ने संघातन ते शरीरने ग्रहणे इहां लीधाछे. माटे ए पृथक् ग्रहण कर्याछे ॥ २०५ ॥

हवे त्याणु नेद देखाडेछे. मूलः—बंधण नेया पंचव, संघाया विय हवंति पंचे व ॥ पणवन्ना दोगंधा, पंचरसा अठ फासाय ॥२०६॥ अर्थः—बंधनना पांच नेद. त्यां जे औदारिकादिक पुजल बांध्याछे, अने बांधिए छइए तेने तेजस अने कार्मण साथे जेम लाख संश्लेष द्रव्य तेनी परे मेलववुं ते औदारिक बंधन. एमज वैक्रिय, आहारक, तेजस अने कार्मणना नेदे करी पांच प्रकारे जाणवुं. तेम संघात ते पण पांच प्रकारे थायछे. त्यां जेम दंताली तृणना समूहने एकठा करेछे तेम जे औदारिकादिक पुजलने एकठा करेछे ते संघात कहिए. ते औदारिकादिक पांच जाणवा; अने वन्नाके० वर्ण पांच. कृष्ण, नील, रक्त, पीत, अने श्वेतना नेदे जाणवा. सुरजी अने डुरजी ए बे गंध जाणवी. तिक्त, कटु, कसायल, आम्ल ने मधुर ए पांच रस जाणवा. गुरु, लघु, मृड, खर, शीत, उष्ण, स्निग्ध ने रुक्ष, ए आठ स्पर्श जाणवा.

मूलः—दस सोलस छवीसा, एया मेलेवि सत्त सठीए ॥ तेणउई होइ तउं, बंधण नेयाउ पन्नरस ॥ २०७ ॥ अर्थः—बंधन पांच अने संघात पांच ए दश थया तथा सोलसके० सोल ते आवीरीते के वर्णादिक वीश प्रकृतिथकी सामान्यपणे प्रथमनी सम्सठमां वर्ण चतुष्क आवी गयुंछे ते, वीशमांथी वर्ण चतुष्क काहाडी नाखिये तेवारे सोल प्रकृति रहेछे; ते पूर्वोक्त पांच बंधन ने पांच संघात साथे मेलवतां छवीश थाय. ते वली सम्सठ साथे मेलवी थकी त्राणुं थाय छे.॥२०७॥

हवे एकशोने त्रण नेद देखाडेछे. बंधनना पन्नर नेद ते आवीरीते थाय छे. मूलः—वेउवाहारो रालियाण संगतेय कम्मजुत्ताण ॥ नवबंधणाणिइयर, डुसहियाणं तिन्नि तेसिंच॥२०८॥ अर्थः—वैक्रिय, आहारक ने औदारिक एना संगके० पोत पोताना त्रण. ते आवीरीते, वैक्रिय वैक्रिय बंधन, आहारक आहारक बंधन, औदारिक औदारिक बंधन, ए त्रण थया तथा तेजस ने कार्मणे युक्त ते आवीरीते. वैक्रिय तेजस बंधन, वैक्रिय कार्मण बंधन, आहारक तेजस बंधन. आहारक कार्मण बंधन, औदारिक तेजस बंधन, ने औदारिक कार्मण बंधन ए सर्व मली नव बंधन थयां. अने इतर ते तेजस कार्मणरूप, ए बे सहित त्रण थाय, ते आवीरीते, वैक्रिय तेजस कार्मण बंधनरूप, आहारक तेजस कार्मण बंधन, औदारिक तेजस कार्मण बंधन ए बार थया. तिन्नितेसिंके० वली तेजस ने कार्मणना त्रण ते आवी रीते; तेजस तेजस बंधन, तेजस कार्मणबंधन, कार्मण कार्मण बंधन ए पन्नर थया.

मूलः—सव्वेहिं वि बठेहिं, तिगअहिय सयंतु होइ नामस्स ॥ इय उत्तरपयडीणं, क म्मठग अठवन्नसयं॥ १७७॥ अर्थः—एम सर्व ए पन्नर बंधन ते पूर्वोक्त पंचक रहित करी मेलविये तेवारे एकशोने त्रण नाम कर्मनी उत्तर प्रकृति थायछे, एम उत्तर प्रकृति सर्व अठगके० आठेकर्मनी मली एकशोने अठावन्न थायछे. इति पंचविंशति गाथार्थ.

अवतरणः—बंध उदय उदीरणा सत्ताणंकिंपिसरूवंति एटले कर्मना बंध उदय उदीरणा अने सत्तानुं किंचित् स्वरूप कहेवानुं बशोने सत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः— सत्तठछेग बंधा, सतुदया अठसत्तचत्तारि ॥ सत्तठछ पंच दुगं, उदीरणा ठाण संखे यं॥१७०॥अर्थः—पेहेलो सात, आठ, छ अने एक ए चार स्थानक बंधनेविषे होय, सत्ता अने उदयनेविषे, आठ, सात अने चार ए त्रण स्थानक होय. तथा सात, आठ, छ, पांच अने बे उदीरणानेविषे होय. ए स्थानकनी संख्या कही. ॥१७०॥

मूलः— बंधेठ सत्तणाउग, ठविह मोहाउ इगविहंसायं ॥ संतोदएसु अठउ, स त्त अमोहा चउ अघाई ॥ १७१ ॥ अर्थः—बंध ते जीव आठकर्मनुं करे, अने जे वारे सात कर्मनुं बंध करे, तेवारे आयु वरजीने करे, जेवारे छ कर्मनुं बंध करे तेवारे मोहनीय तथा आयु ए बे वरजीने शेष छनुं बंध करे. जेवारे एकनुं बंध करे तेवारे एक सातावेदनीयनुंज बंध करे. एवं बंधस्थाननी संख्या कही. हवे संतो दएसुके०सत्ता अने उदयनेविषे कहिए छैए. त्यां सत्ताये अने उदये आठ कर्म होय. अने मोहनीयरहित सात होय. अने चार घनघातिकर्म रहित होय तेवारे शेष चार सत्ता अने उदये थाय. ॥ १७१ ॥

हवे उदीरणाना स्थानकनुं स्वरूप कहेछे. मूलः—अठउदीरइसत्तउ, अणाउठ विह भवेयणियआऊ ॥ पण अवियण मोहाउग अकसाइ नाम गोत्तदुगं ॥ १७२॥ अर्थः—मिथ्यात्व गुणठाणाथी मांमीने प्रमत्तगुणठाणासुधी जीव निरंतरपणे आ ठकर्मनी उदीरणा करे, अने केवल जे जवसंबंधी आयुष्य अनुजवेछे ते जेवारे आवलिकाविशेष थाय तेवारे आयुष्यने आवलिका प्रविष्टपणाये करीने उदीर णानो अजाव. तेथी सात कर्मनुं उदीरक होय. वली सम्यक् मिथ्यादृष्टि गुणस्थान के प्रवर्त्तमान थको सदा आठ कर्मनुं उदीरकहोय; जे कारण माटे आवलिका विशेष आयुष्यछते मिश्रगुण ठाणानो असंजव छे, ते आवीरीते अंतरमुहूर्त अवशेष आ युष्ये मिश्र गुणठाणाथकी पड्यो थको जीव सम्यक्त्वे अथवा मिथ्यात्वे जाय माटे; तथा अप्रमत्त अपूर्वकरण अने अनिवृत्ति बादर ए गुणठाणानेविषे वेदनी य अने आयुष्य वरजी शेष छ कर्मनुं उदीरक थाय. वेदनीय ने आयुषनेविषे

अति विशुद्ध अध्यवसायपणे करी उदीरणायोग्य अध्यवसाय स्थानकनो अभाव छे, पण सूक्ष्म संपरायगुणगाणे ज्यांलगे मोहनीय आवलिकाविशेष नथाय त्यां लगे आवलिकाविशेषे मोहनीयने उदीरणाना अभावथकी छ कर्मनुं उदीरक थाय.

अने उपशांत मोहे वेदनीय, मोहनीय तथा आयु वर्जी पांचनुं उदीरक, त्यां वेदनीयने आयुषानुं कारण प्रथम कह्युं; अने मोहनीयना उदयना अभावथकी उदिरे नही, तथा अकषाइ क्षीणमोह बारमे गुणगाणे ज्यांसुधी ज्ञानावरण दर्शनावरण अंतराय आवलिका प्रविष्ट न होय, त्यांलगी पांचनुं उदीरक; अने ते जेवारे त्रणे आवलिका प्रविष्ट थाय तेवारे तेनी उदीरणाना अभावथकी नाम अने गोत्र ल क्षण बे कर्मनुंज उदीरणहार होय. त्यां कारण ए छे के घातीयां चारकर्ममूलथी क्षीण थयां, तेहनी उदीरणा रही नथी; अने वेदनीयने आयुषानी पण उदीरणा न थाय; त्यां कारण पूर्वोक्तज जाणवुं. अने अयोगीगुणगाणे योगना अभावथकी उदीरणा न करे. अजोगि अणुदीरगोभयवं इति वचनात्. ॥ १९१ ॥

हवे सामान्यपणे बंधादिकनेविषे प्रकृतिनी संख्या कहेछे. मूलः—बंधेवि सुत्त रसयं, सयबावीसंतु होइ उदयंमि॥ उदीरणाए एवं, अडयाल सयंतु संतंमि॥१९३॥ अर्थः—नवा कर्मनुं ग्रहण ते बंध, तेने सामान्यपणे एकशोने वीश प्रकृतिनो बंधछे. विपाकेकरी कर्मना पुद्गलनुं वेदवुंछे ज्यां, तेने उदय कहिए. त्यां एकशोवीश कर्म प्रकृति उदयावलिकाये थाय. अणपाम्या कर्मने उदयावलिकानेविषे आणवो ते उदीरणा. त्यांपण एमज एकशो ने बावीश कर्मप्रकृतिनी उदीरणा थाय. सत्ता तेने कहिए जे छतानो भाव ते सत्ता कर्मनी स्थिति पोतेज जाणवी. ते एकशो ने अट्ठावन, तेमां पंदर बंधनछे तेमांथी दशबंधन जूदां काढीए, शेष पांच बंधन राखिए तेवारे एक शो ने अडतालीश प्रकृति सत्ताए जाणवी. एनो यंत्र देखाडेछे. इतिगाथा चतुष्टयार्थः ॥

ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ९	वेदनी २	मोहनी २६	आयु ४	नाम ६७	गोत्र २	अंतराय ५	बंधनेविषे १२०
ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ९	वेदनी २	मोहनी २८	आयु ४	नाम ६७	गोत्र २	अंतराय ५	उदय अने उदीरणाए १२२
ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ९	वेदनी २	मोहनी २८	आयु ४	नाम ९३	गोत्र २	अंतराय ५	सत्तानेविषे १४८

अवतरणः—कम्मठिई साबाहत्ति एटले कर्मनो अबाधाकाल तेणेकरी सहित कर्मनी स्थितिनुं वर्णने अढारमुं द्वार कहेछे. मूलः—मोहे कोडाकोडी, सत्तरी वी सं नामगोयाणं ॥ तीसयराण चउण्हं, तेत्तीस यराइं आउस्स ॥ १९४ ॥ अर्थः—मोहनीयकर्मनी स्थिति सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी तथा नाम अने गोत्रनी वीश कोडाकोडी; अने इतरके० बीजा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेद नीय अने अंतराय ए चार कर्मनी प्रत्येके त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. अने आयुकर्मनी तेत्रीश सागरोपमस्थिति जाणवी. ॥ १९४ ॥

मूलः—एसा उक्कोस ठिई, इयरा वेयणिय बारसमुहुत्ता ॥ अट्ठनाम गोत्ते सुसेस ए सुंमुहुत्तंतो ॥ १९५ ॥ अर्थः—ए आठकर्मनी उत्कृष्ट स्थिति कही. अने इयराके० इतर ते जघन्य स्थिति तो वेदनीय कर्मनी बार मुहूर्त्त, अने नाम तथा गोत्रकर्मनी आठ आठ मुहूर्त्त. शेष ज्ञानावरणीय, दर्शनावरनीय, मोहनी, आयु ने अंतराय ए पांचकर्मनी जघन्यस्थिति एक एक अंतरमुंहूर्त्तनी जाणवी. ॥ १९५ ॥

मूलः—जस्स जइ कोडिकोडीउ तस्स तेत्तिय सयाणि वरसाणि ॥ होइ अबाहाका लो, आउंमि पुणो नवति नागो ॥१९६॥ अर्थः—जे कर्मनी जेटली कोडाकोडी स्थि ति तेने तेटला वर्षना शेकडा अबाधाकाल होय, अने आयुकर्मनो अबाधाकाल नवनो त्रीजो भाग होय. केमके आयुष्यनो बंध वर्तमान आयुशने त्रीजे भागे थाय. यडुक्तं ॥ सोवक्कमाउ आपुण, सेसति भागे हवा नवमभागे ॥ सत्तावीसे मेवा, अंत मुहुत्तंति मेवावि ॥ १९६ ॥ इति गाथा त्रयार्थ.

अवतरणः—बायालीसाउ पुन्नपयडीउत्ति एटले बेंतालीश पुंण्यप्रकृतिनुं वर्णो ने ओगणीशमुं द्वार वखाणेछे. मूलः—सायं उच्चागोयं, नरतिरि देवाउ नाम एयाउ॥ मणुअडुगं देवडुगं, पंचिंदिअ जाइ तणुपणगं ॥ १९७ ॥ सातावेदनीय, उच्चैर्गोत्र, म नुष्यायु, तिर्यंचायु, अने देवायु, हवे एमां नाम कर्मनी जेटली प्रकृति छे ते कहेछे. मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, देवगति, देवानुपूर्वी, पंचेंद्रियजाति, औदारिक वैक्रि य, आहारक, तेजस ने कार्मण ए पांच शरीर जाणवां. ॥ १९७ ॥

मूलः—अंगोवंगतिगंपिय, संघयणं वज्जरिसहनारायं ॥ पढमंचिय संठाणं, वन्नाइ चउक्क सुपसत्थं ॥१९८॥ अर्थः—आद्यना त्रण शरीरना अंगोपांग, वज्र ऋषभनाराच संघयण, समचतुरस्र संस्थान, सुप्रशस्त के०भलो वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श.॥१९८॥

मूलः—अगुरुलहु पराघायं, उस्सासं आयवंच उज्जोयं ॥ सुपसत्था विहगगई, तस्साइ दसगंच निम्माणं ॥ १९९ ॥ अर्थः—अगुरुलघु, पराघात, श्वासोश्वास,

आतप, उद्योत, सुप्रशस्त, शुनविहायोगति, त्रसदशक, ते आवीरीते. त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुन, शुनग, सुस्वर, आदेय, ने यश ए त्रसदशक अने निर्माण.

मूलः—तिछयरेणं सहिया, पुन्नप्पयडीउ हुंति बायाला ॥ सिवसिरि कडकियाणं, सयावि सत्ताण मेयाउ ॥ ३०० ॥ अर्थः—तीर्थंकरनाम कर्म सहित बेतालीश पुण्य प्रकृति होयछे ते मोक्ष लक्ष्मीए जेनेसन्मुख जोयुंछे. एवा प्राणी तेने ए सदा थायछे.

अवतरणः—बासीई पाव पयडिउत्ति एटले ब्यासी पाप प्रकृतिनुं बशोने वीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—नाणंतराय दसगं, दंसण नवमोह पयइ छवीसा ॥ अस्सायंनिर याउ, नीयागोएण अडयाला ॥ ३०१ ॥ अर्थः—मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनपर्यवज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, दानांतराय, लाभांतराय, नोगांतराय, उपनोगांतराय, वीर्यांतराय, तथा चार दर्शन ने पांच निद्रामली नवप्रकारे दर्शनावरण कर्म. तथा सम्यक्त्वने मिश्रटाली शेष छवीश प्रकृति, मोह नीयनी असातावेदनीय, नरकायु, ने नीचैर्गोत्रेकरी सहित अडतालीश नेद थया.

मूलः—नरयडुगं तिरियडुगं, जाइ चउक्कंच पंच संघयणा ॥ संठाणा विय पंचउ वन्नाइ चउक्क मपसबं ॥ ३०२ ॥ अर्थः—नरकगति, नरकानुपूर्वी, तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेंद्रियजाति, बेइंद्रियजाति, त्रेंद्रियजाति, चउरेंद्रियजाति, ऋषन नाराचादिक पांच संघयण, न्यग्रोधादिक पांच संस्थान, अप्रशस्त वर्णादिक चार.

मूलः—उवघाय कुविहयगई, थावर दसगेण हुंति चउतीसा ॥ सवाउ मिलियाउ, बासीई पावपयमीउ ॥ ३०३ ॥ उपघातनाम, अशुनविहायोगति, थावर दशक कहे छे, थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अथिर, अशुन, दौर्जाग्य, डुःस्वर, अनादेय अने अयश ए दश मेलविए तेवारे नरकद्विकादिथकी मांमी इहां सुधी चोत्रीश थायछे. अनेअडतालीश प्रथमनी सर्व मेलवतां ब्यासी पाप प्रकृति थायछे. इतिगाथात्रयार्थः

अवतरणः—नाव छक्कंच पडिनेयं एटले प्रतिनेदे करी सहित छ नावनुं वर्णने एकवीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—नावाछ ज्ञोवसमिय, खइय खउवसम उदय परिणा मा ॥ डुनवद्वारिगवीसा, तिगनेया सन्निवाउय ॥ ३०४ ॥ अर्थः—विशिष्टहेतुथकी स्वनावथकी अथवा प्राणीने ते ते स्वरूपे होय ते नाव परिणामनुं विशेष जाणवुं. अथवा ए उपशमादिक पर्याये जे होय ते नाव जाणवो. इहां च शब्द अवधारणने अर्थे छे, त्यां पहेलो नस्म छन्न अग्निनीपरे जे अवस्था प्रदेशे होय पण उदयनो अनाव एवो उपशम ते मोहनीयनोज थाय पण शेष कर्मने उपशम न थाय. ते का रणे मोहनीयने उपशमे थयो ते उपशमिकनाव जाणवो. बीजो मोहनीयना क्ष

थथकी थयो ते क्षायिक जाव. त्रीजो केटलाक कर्मनो क्षय अने केटलाकनो उपश म तेणे करी थयो ते क्षायोपशमिकजाव. चोथो आठ कर्मने पोताना उदयनेविषे पहोंच्योछे तेनो पोताना स्वरूपे करी अनुजववो ते उदय; तेणेकरी निपन्यो ते उदयिकजाव जाणवो. पांचमो परिणमवुं ते कोइक रीते प्रथमनी अवस्थाने मू की आगली अवस्थानेविषे जावुं ते परिणाम तेने विषे जे निपन्यो ते परिणामिक जाव जाणवो. छठो सम्यक्प्रकारे करी निपतन के० एकठो मळवो ज्यांछे ते सन्नि पात, घणा जाव एकठा मल्याछतां ए छठोजाव निष्पन्न थायछे. एमां पांच जावना अनुक्रमे बे, नव, अढार, एकवीश ने त्रण ए जेद जाणवा; अने ए सर्व जाव एकठा मळवाथकी छठो सन्निपातजाव केहेवायछे. ॥ ३०४ ॥

उपशमिकना बे जेद अने क्षायिकना नव जेद कहेछे. मूलः—सम्मचरणाणि पढमे, दंसणनाणाइ दाण लाजाय ॥उवजोग जोग वीरिय, सम्मचरित्ताणि य त्रिईए ॥३०५॥ अर्थः—दर्शन सप्तकना उपशमथकी सम्यक्त्व थाय अने चारित्र मोहनीयने उपशमे चारित्र थायछे. ए बे जेद पढमेके०पहेलो उपशमिकजावनेविषे थायछे. त था दंसण नाण ए सूत्र ते सूचकमात्र तेथी दर्शननाण शब्दे केवल दर्शन ने केवल ज्ञान लेवुं तथा दानादिक पांच प्रकारनी लब्धी ते पंचविध अंतरायना क्षयथकी था यछे. एम क्षायिकसम्यक्त्व पण सप्तकना क्षयथी थायछे, एम क्षायकचारित्र ते पण चारित्रमोहनीयना क्षयथकी थायछे. ए नव बोल बीजे क्षायक जावे थायछे.

हवे क्षायोपशमिकना अढार जेद कहेछे. मूलः—चउनाणा नाणतिगं, दंसणतिगं पंचदाण लद्धीउ ॥ सम्मत्तं चारित्तं,च संजमा संजमो तइए ॥३०६॥ अर्थः—मत्या दि चार ज्ञान तथा मत्यादिक त्रण अज्ञान, दर्शनत्रिक ते चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन ने अवधिदर्शन लक्षण जाणवुं. तथा दान, लाज, जोग, उपजोग ने वीर्य ए पांच लब्धी; इहां ए विशेषछे के क्षायिकजावनेविषे कोइ कहेशे के दानादिक पांच लब्धि पूर्वे क्षायिक जावे कही, तो इहां वली क्षायोपशमिक जावे केहेता थका विरोध उ पजेछे. त्यां ए उत्तर जे; दानादिक लब्धी बे प्रकारे छे; अंतराय कर्मना क्षय थवाथी क्षायकलब्धी केवलीने थाय. तथा क्षायोपशम लब्धि जे कही ते छद्मस्थने थायछे. ए पन्नर थया अने सोलमुं सम्यक्त्व पण सप्तकने क्षायोपशमे थायछे. अने सत्तरमुं क्षायोपशमे धुरला चारित्र सामायिकादिकचार थायछे; तेमज अढारमुं संयमासंय म रूप देशविरतिचारित्र ते अप्रत्याख्यानावरण कषाय मोहनीयने क्षयोपशमे था य. ए अढारजेद त्रीजा क्षायोपशमिक जावना थया. ॥३०६॥

हवे उदयिक जावना एकवीश जेद कहेछे. मूलः—चउगइ चउक्कसाया, लिंगतिअं लेसछक्क मन्नाणं ॥ मिछत्तम सिद्धत्तं, असंजमो तह चउछंमि ॥३०७॥अर्थः—गतिप्रमुख सर्व चोथे उदयिक जावे थायछे. त्यां गतिचार ते नामकर्मना उदयथकी जीवने होय. अने चार कषाय ते कषायमोहनीयना उदयथी थाय, लिंग त्रण पण मोहनीयना उदयथी संजवे, अने लेश्या छ ते जे कहेछे के योगपरिणाम ते लेश्या तेने मते तो योग त्रणनुं उपजावनार जे कर्म तेना उदयथी लेश्या समजवी. अने जे कहेछे के कर्म निष्पंद लेश्याछे तेने अभिप्राये तो आठकर्मना उदयथकी लेश्या समजवी. जेम संसारीने असिद्धपणु ते आठ कर्मना उदयथकी होयछे. एक वली कषायनो निष्पंद ते लेश्याछे एम कहे छे; तेना अभिप्रायें तो कषाय मोहनीयना उदयथकी थायछे. ए सत्तर थया अने अढारमुं अज्ञान, ओगणीशमुं मिथ्यात्व वीशमुं असिद्धपणु अने एकवीशमुं अविरति असंयमपणुं. तेमां अज्ञान ते विपरीत बोधरूप जे मति अज्ञानादिक त्रण ते ज्ञानावरण मिथ्यात्व मोहनीयना उदयथकी थाय. अने प्रथम जे अज्ञानत्रिक क्षायोपशमिक जावे कह्यो हतो ते वस्तुना अवबोध मात्रनी अपेक्षाये समस्त वस्तुनुं जाणपणुं विपरीत जावे तथा अविपरीत जावे ते ज्ञानावरणी कर्मने क्षयोपशमेज थाय. अने जेने समस्तपणे विपर्यस्त लक्षण अज्ञानपणु होय ते ज्ञानावरण. अने ते मिथ्यात्व मोहनीय कर्मनाज उदयथी संजवे. एटला माटे अज्ञाननेविषे क्षायोपशमिक अने उदयिक ए बंने जाव संजवे छे, तेमां विरोध न जाणवो. मिथ्यात्व मोहनीयना उदयथकी असिद्धत्वपणुं, अने आठकर्मना उदय थकी असंयम, अविरतिपणु, ते अप्रत्याख्यानावरण कषायना उदयथकी थाय; एटला बोलना उपलक्षणथकी निद्रा पांच अशातावेदनीय हास्य रति अरति प्रमुख अनेरा पण पोतपोताना कर्मने उदयिक जावे चोथा जावनेविषे संजवता जाणवा. ॥ ३०७ ॥

हवे पारिणामिक जावना त्रण जेद कहेछे. मूलः—पंचमगंम्मिय जावे, जीवो जवत्त जवया चेव ॥ पंचण्हवि जावाणं, जेया एमेव तेवन्ना ॥३०८॥ अर्थः—पांचमा जावनेविषे जीवत्वपणु अनादि पारिणामिक जावेछे. एमज बीजुं अजव्यत्वपणुं अने त्रीजुं जव्यत्वपणुं पण अनादि पारिणामिक जावे छे. एनां उपलक्षणथकी घृत गोल सालिप्रमुख ने तेमज मदिरादिकने नव पुराणादिक अवस्थानाविशेष, तेमज वर्षधर, पर्वत, जवन, विमान, कुट, रत्नप्रजादिकना पुद्गलनुं विघटवुं. नवा पुद्गलनुं लागवुं इत्यादिक सर्व तथा वली गंधर्व नगर, हसितहसता सरखो देखाय. उल्का

पात कपिके० वानर, गाज, धूंहरि, दिग्दाह, वीजली चंद्रमाने सूर्यने फरतुं मं... देखाय. ग्रहणे इंद्रधनुष्य थाय. ते सर्व सादि पारिणामिकनावे ठे अने लोकअलोकन स्थिति धर्मास्तिकायादिक ए सर्वअनादि पारिणामिकनावे जाणवा. एरीते पंचएहि... के० पांचे नावना बे, नव, अढार, एकवीश ने त्रण मव्याथी त्रेपन नेद होयठे.

हवे ठहो सांनिपातिक नाव ते प्रथम पांच नाव कह्या तेने जेवारे बेने ... गे, त्रणने संयोगे, चारने संयोगे इत्यादिक आगमोक्त प्रकारे करी पांच ... जे नाव ते मव्या ठतां ठवीश नेद थायठे. ते आवीरीतेः—द्विकसंयोगे दशनंग, त्रिकसंयोगे दश, चतुःसंयोगे पांच अने पंचसंयोगे एक मली ठवीशनंग थाय. तेमां द्विकसंयोगे दश थाय तेनीरीत कहेठे. एक उदयिक ने उपशमिक, बीजो उदयिक ने क्षायिक. त्रीजो उदयिक ने क्षायोपशमिक, चोथो उदयिक ने पारिणामिक, पांचमो उपशमिक ने क्षायिक, ठहो उपशमिक ने क्षायोपशमिक, सातमो उपशमिक ने पारिणामिक, आठमो क्षायिक ने क्षायोपशमिक, नवमो क्षायिक ने पारिणामिक, दशमो क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. हवे त्रिकसंयोगे दश नंग कहेठे. एक उदयिक, उपशमिक ने क्षायिक, बीजो उदयिक, उपशमिक ने क्षायोपशमिक, त्रीजो उदयिक, उपशमिक ने पारिणामिक, चोथो उदयिक, क्षायिक ने क्षायोपशमिक, पांचमो उदयिक, क्षायिक ने पारिणामिक, ठहो उदयिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक, सातमो उपशमिक, क्षायिक ने पारिणामिक, आठमो उदयिक, क्षायिक ने पारणामिक, नवमो उपशमिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. दशमो क्षायिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. हवे चतुःसंयोगे पांच नंग कहेठे. एक उदयिक, उपशमिक, क्षायिक ने क्षायोपशमिक. बीजो उदयिक, उपशमिक, क्षायिक ने पारिणामिक. त्रीजो उदयिक, उपशमिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. चोथो उदयिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. पांचमो उपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिकने पारिणामिक. ए सर्व मली पचीश नंग थया. ठवीशमो पंचकसंयोगे एक नंग थाय ते सुप्रसिद्धठे; ए ठवीश तो नंगनी रचना मात्रे देखाड्या, परंतु जे संनवी नांगा एमां परमार्थिक ठ ठे ते आवीरीतेः—एक द्विक संयोगे, बे त्रीक संयोगे, बे चतुष्क संयोगे, एक पंचसंयोगे. एना प्रकारांतरे पन्नर नंग थायठे ते सूत्रनो करनार देखाडेठे. ॥२०८॥

मूलः—उदयय खाउवसमिअ, परिणामेहि चउरो गइ चउक्के ॥ खइय जुएहिं चउरो, तदनावे उवसमजुएहिं ॥ २०९ ॥ एक्केक्को उवसमसेढि, सिद्धकेवल सुएवम

विरुद्धा ॥ पन्नरस सन्निवाइय, जोयावीसंअसंनविणो ॥ ३१० ॥ अर्थः—उदयिक क्षायोपशमिक ने पारिणामिक ए त्रणे नांगे निपन्यो जे सांनिपातिक ते गतिना नेदथकी चिंतवतो चार प्रकारे थाय. ते आवीरीतेः—तेमां उदयिकादिक त्रण नेद ते प्रथम तो नरकगति साथे देखाडेछे. नारकीनी गतिनेविषे योजना करवी ते आ म, उदयिक नारकीपणुं. क्षायोपशमिक इंद्रियादिकजाणवुं. अने पारिणामिक ते जीवत्वादिक. एम शेष त्रण गतिनेविषे पण योजना करवी. हवे खइय जुएहिं ए टले एज उदयिकादिक क्षायिके सहित सांनिपातक नेद जे थायछे तेपण गतिना नेदथकी चार प्रकारे बोलिये.ते आवीरीतेः—उदयिकीतोनारकगति छे.तथा क्षायि क सम्यक्त्वछे,अने क्षायोपशमिके इंद्रियादिकछे,तथा पारिणामिक नावे जीवत्वादिक छे,एम वली शेष त्रण गतिनेविषे नावना करवी. प्रकारांतरे वली चतुष्कसंयोगे चार नेद कहेछे. तदनाव इति ; एक क्षायिकने अनावे उपशमनावयुक्त उदयिक नो सांनिपातक चतुष्कसंयोगे एम अनिलापछे. उदयिक, उपशमिक, क्षायोपशमि क पारणामिक ए पण पहेलानी परे गतिना नेदथकी चार प्रकारे नाववुं, नवरं एटलुं विशेष जे उपशमिक ते सम्यक्त्व जाणवुं. हवे जे एक संख्याये सांनिपाति क नेद उपजे. उपशमश्रेणी सिद्धकेवलीनेविषे अविरुद्ध होय. ते देखाडेछे. एक उ दयिक, बीजो उपशमिक, त्रीजो क्षायिक, चोथो क्षायोपशमिक, पांचमो पारिणा मिक. एने संयोगे निपन्यो एक नेद जे कोइ क्षायिक सम्यक्दृष्टिछतो उपशमश्रेणी पडिवजे तेने उदयिक मनुष्यपणुं, अने उपशमिक चारित्र, तथा क्षायिक सम्यक्त्व वली क्षायोपशमिक इंद्रियादिक जाणवा; अने पारिणामिकनावे जीवत्वपणु जाणवुं. अने सिद्धनेविषे द्विकसंयोगलक्षण एक नेद सांनिपातिक होय ते आवीरीतेः— क्षायिक ने पारिणामिक तेमां क्षायिकनावे सम्यक्त्व अने केवल ज्ञानादिकजाणवा, तथा पारिणामिक नावे जीवत्वादिकजाणवुं,तथा केवलीने एक त्रिकसंयोगलक्षण सां निपातिक नेद होय ते आवीरीतेः—उदयिक क्षायिक ने पारिणामिक,त्यां उदयिके मनु ष्यत्वादिक जाणवुं, अने क्षायिके केवलज्ञानादिक जाणवुं, पारिणामिके जीवत्व न व्यत्वपणुंछे. एम गति प्रमुखनेविषे छ संयोगनी चिंताने प्रकारे अविरोध मांहोमांहे वि रोधने अनावे पन्नर सांनिपातिक नेद छत्तनावना विकल्प थाय अने बाकीना वी श नंग ते असंनवी संयोग मात्रे होय, परंतु जीवनेविषे ते क्यारे पण पामिये नही.

हवे एज छ नंग, जे जे जीवनेविषे संनवे ते सूत्रकार कहेछे. मूलः— डुगजो गो सिद्धाणं, केवलि संसारियाण तिगजोगा ॥ चतुजोगजुअं चउसुवि, गईसुमणुआ

ण पणजोगो ॥ ३११ ॥ अर्थः—द्विकसंयोगे दश नंग थायछे, तेमां क्षायि क पारिणामिक ए बे नावे निपन्यो जे नवमो द्विकसंयोग ते सिद्धनेविषे संनवे छे. शेष नव संयोग प्ररूपणा मात्रेज छे. अनेरा जीवोने उदयिकी ते गति जाण वी, अने क्षायोपशमिक इंद्रिय जाणवा, तथा पारिणामिक नावे जीवितव्य जाणवुं, एवा त्रण नाव जघन्यथी पण थाय. केवलिके० केवलीने अने संसारी जीवोने त्रि कयोग, त्यां दश त्रिकयोगमांहे केवलीने उदयिक क्षायिक ने पारिणामिक एवा त्रण नावे निपन्यो,पांचमो नंग संनवेछे. अने उपशमिक ते मोहनीय आश्रितपणाये करी नेछे माटे मोहनीयनो जेने क्षय थयोछे; एवा केवलीने ते संनवे नहीं. एम क्षायोपश मिक पण इंद्रियादि आश्रितपणाये करीने अनेंद्रियने थाय नही. संसारी चतुर्गतिक जीवोने उदयिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक ए त्रण नावथी निपन्यो छठोनाव त्रिकसंयोगी नांगो लाने, शेष आठ ते प्ररूपणा मात्र क्यांयपण संनवे नहीं.

हवे चतुष्कसंयोगे निपन्या जे पांच नंग तेमांना बे नंग चार गतिनेविषे संनवे ते आवीरीते.—उपशमिक, सम्यक्दृष्टिने उदयिक, उपशमिक क्षायोपशमिक ने पा रिणामिक ए चार नावे निपन्यो त्रीजो नांगो होय,अने क्षायिक सम्यक्दृष्टिने उद यिक क्षायिक क्षायोपशमिक ने पारिणामिक एवो चोथो नंग संनवेछे, ते चारे ग तिनेविषे पामिए अने मणुआणके० मनुष्यने पूर्वोक्त पंचकयोगे निपन्यो नंगो संनवेछे, पणते जे क्षायिक सम्यकूदृष्टि छतो उपशमश्रेणी पडिवजे, तेनेज होय. प रंतु अनेराने संनवे नहीं. एटले ए जीव आश्री सर्व नाव कह्या. ॥३११॥

हवे कयाकर्मे करी कयोनाव संनवे? ते कहेछे. मूलः—मोहस्सेवोवसमो, खा उवसमो च चलहगाईणं ॥ उदयरकयपरिणामा, अट्ठण्हविहुंति कम्माणं ॥ ३१२ ॥ अर्थः— आठकर्ममांहे विपाके अने प्रदेशे मोहनीयने उपशम थाय; परंतु शेष क र्मने नथाय. इहां सर्व उपशमनी विवक्षा करिए परंतु देशथकी उपशम लेवुं नहीं. ते सर्व कर्मने संनवे अने उदयावलिकाये प्रविष्ट अंशने क्षये अनुदयावलिकाये प्रविष्ट तेहने उपशमे, विपाकोदयने रुंधवाथकी निपन्यो ते क्षायोपशमिक. ते चउण्हके० चार ज्ञानावरणादिक घातिकर्मने थाय, परंतु शेषकर्मने क्षायोपशमिक नथाय. वली ए चारमां पण केवलज्ञानावरण केवलदर्शनावरण तेणेकरी रहितने ज ते बेहुने विपाकोदयने रुंधवाथकी क्षायोपशमनो असंनव छे.

हवे उदय रकय परिणामा एटले उदयिक,क्षायिकने पारिणामिक ए त्रण नाव ते आ ठ कर्मने संनवे. त्यां उदयते विपाके अनुनववुं,ए समस्त कर्मोनो सर्वजीवोने संसार

मां देखायछे; क्षय ते अत्यंत उच्छेद, ते मोहनीयने सूक्ष्म संपराय गुणठाणाना चरम समये अने शेष त्रण घातियाकर्मोनो क्षय, ते क्षीण कषाय बारमा गुणठाणाना चरमसमयनेविषे होय, अने अघातिकर्मनो क्षय चउदमा अयोगी केवली गुणठाणाना चरमसमयनेविषे संभवे.

तेम परिणमवुं ते परिणाम, जीवना प्रदेश साथे एकतुं थवुं, अथवा तेवा तेवा द्रव्य, क्षेत्र, कालना अध्यवसायनी अपेक्षाए तेम तेम संक्रमणादिक रूपपणे जे परिणमवुं ते परिणाम. इहां ए तात्पर्यछे के मोहनीयने, उपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, उदयिक ने पारिणामिक. ए पांच भाव संभवे. अने ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय, ने आयु एनेविषे क्षायिक उदयिक ने परणामिक ए त्रण भाव संभवेछे. ॥ ३१२ ॥

हवे गुणठाणानेविषे पांच भाव कहेछे. मूलः—सम्माइ चउसु तिग चउ, भावा चउ पणुवसामगुवसंते ॥ चउखीणापुव्वेतिन्नि सेस गुणठाणगेगजिए ॥ ३१३ ॥ अर्थः—अविरतिसम्यक्दृष्टि, देशविरति, प्रमत्त ने अप्रमत्त लक्षण, चार गुणठाणानेविषे त्रण अथवा चार भाव लाभे त्यां क्षायोपशमसम्यक्दृष्टिने ए चारे गुणठाणे त्रण भाव लाभे, ते यथा संभवपणे देखाडीए छैए.

उदयिक भावेगति. क्षायोपशमिक भावे, इंद्रिय ने सम्यक्त्वादिक जाणवा. पारिणामिक भावे जीवत्वछे, अने क्षायिकसम्यक्दृष्टिने तथा उपशमिकसम्यक्दृष्टिने चार भाव लाभे, तेमां त्रण तो पूर्वोक्तज. अने चोथुं उपशमिकने उपशमिक सम्यक्त्व लक्षण भाव होय, एमज क्षायिकने क्षायिकसम्यक्लक्षण चोथो भाव होय. वली चउपणके० चार अथवा पांच भाव उपशमिकने उपशांतनेविषे होय, त्यां अनिवृत्ति बादर अने सूक्ष्मसंपराय ए बेऊ गुणठाणे जे जीव वर्त्ते ते उपशमिक कहिए अने उपशांतमोह गुणठाणे वर्त्ते ते जीव उपशांत होय. त्यां अनिवृत्ति बादर अने सूक्ष्मसंपराय ए बे गुणठाणे चार अथवा पांच भाव होय तेमां त्रण जे प्रथम कह्या तेज जाणवा. अने चोथुं उपशमिक सम्यक्त्व तथा अन्यने क्षायिक सम्यक्त्वरूप होय, अने पांचमुं, नवमे दशमे अने अग्यारमे ए त्रण गुणठाणे दर्शनसप्तकना क्षयथी क्षपकने क्षायक चारित्ररूप होय अने उपशमश्रेणी पडिवजताने उपशमिक चारित्रना सद्भावथकी जाणवा तथा चउखीणके० चारभाव क्षीणमोह गुणठाणानेविषे अने अपूर्वकरण गुणठाणे होय, त्यां त्रण पहेलानीपरे जाणवा, अने चोथुं क्षीणमोहे क्षायिक सम्यक्त्व चारित्ररूप अने अपूर्वकरणे क्षायिक सम्यक्त्वरूप

अथवा उपशमिक सम्यक्त्वरूप होय. अने तिन्निसेस एटले त्रण नाव ते शेष गुण गणा जे मिथ्यादृष्टि, सास्वादन, मिश्रदृष्टि, सयोगी अने अयोगी लक्षणनेविषे होय, त्यां मिथ्यादृष्टि आदेदेइने त्रण गुणगणानेविषे उदयिक, क्षायोपशमिक पारिणामिक ए त्रण नाव होय अने सयोगी तथा अयोगीनेविषे उदयिक, क्षायिक ने पारिणामिक ए त्रण नाव होय. ए त्रण प्रमुख नाव जे कह्या ते एकजीवनी अपेक्षा ए जाणवा, पण नाना प्रकारना जीव आश्री कहीए तेवारे संनवी सर्व नाव होय.

अवतरणः– जीवचउ दसत्ति एटले जीवना चउद स्थानकनुं बशें ने बावीशमुं द्वार कहेले. मूलः–इह सुहुम बायरेगिंदि बि ति चउर असन्नि सन्निपंचिंदि ॥ पज्जत्तापज्जत्ता, कम्मेण चउदस जियगणा ॥ ३१४ ॥ अर्थः– ए जिनशासननेविषे एकेंड्रिय ते सूक्ष्म ने बादरना नेदथकी बे प्रकारे कहीले. त्रीजुं बेंड्रिय, चोथुं तेंड्रिय, पांचमुं चउरेंड्रिय, बठुं जेने मन नही ते असंज्ञीपंचेंड्रिय अने सातमुं जे मन सहितले ते संज्ञीपंचेंड्रिय. ए बे नेद पंचेंड्रियना जाणवा. ए सात पर्याप्ता ने सात अपर्याप्ता मली अनुक्रमे चउद जीवनां स्थानक होयले.॥३१४॥इतिगाथार्थः॥

अवतरणः–अजीव चउदसगंति एटले अजीवना चउद नेदोनुं बशें ने त्रेवीशमुं द्वार कहेले. मूलः–धम्माधम्मागासा, तियतिय नेया तहेव अद्धाय॥खंधा देस पएसा, परमाणुअजीव चउदसहा॥३१५॥अर्थः–धर्मास्तिकायादिकनुं स्वरूप त्रैकाल्य त्रतना वखाणमांहे इव्य षट्कने अधिकारे कह्युं ले. इहां नेद कहियेलैये. एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय,त्रीजो आकाश ए त्रणेना स्कंध,देश ने प्रदेश एवा त्रण त्रण नेद करतां नव नेद थाय ले. दशमो अद्धाके०काल जे समय, आवली मुहूर्त्त इत्यादिक समस्त वस्तुनी कलनानो करनार जाणवुं, अने स्कंध, देश, प्रदेश तथा परमाणु ए पुजलना चार नेद मली अजीवना चउद नेद थया.॥३१५॥इति गाथार्थः

अवतरणः–गुणगण चउदसगोत्ति एटले चउद गुणगणानुं बशें ने चोवीशमुं द्वार कहेले. मूलः–मिछे सासणमिस्से, अविरयदेसे पमत्त अपमत्ते॥नियट्टि अनियट्टि सुहुम उवसम खीणसजोगि अजोगिगुणा ॥ ३१६ ॥ अर्थः–इहां संसारमां वसता जीवने अनादि मोहलक्षण, मिथ्यात्व सदा सर्वदा लेज, परंतु जेवारे व्यक्त मिथ्यात्व जे कुदेव उपर देवनी बुद्धि. कुगुरु उपर गुरुनी बुद्धि, अधर्म उपर धर्मनी संज्ञा; ए प्रगट मिथ्यात्वनो जे उदय थाय ते गुणस्थानकपणे जाणवो, ए मिथ्यात्वगुणस्थानक कह्युं.

बीजुं सास्वादन ते आवीरीते के, जीवने पोते अनादि मिथ्यात्व मोहनीयले; प

रंतु जेवारे तेनो उपशम थाय, तेवारे जीव उपशम, सम्यक्त्व, प्रथम पामे, अने वली इहां जे अनंतानुबंधिया कषाय उपशमाव्या हता; तेना उदयथी उपशमिक सम्यक्त्वथकी पडताने हजी जीव मिथ्यात्वे गयो नथी, एवुं छ आवली सुधी सास्वादन नामे बीजुं गुणस्थानक होय.

त्रीजुं मिश्रगुणस्थानक, ते आवीरीते के, मिश्रमोहनीय कर्मना उदयथकी सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व उपर सरखी बुद्धि होय, जेम घोडी अने गर्दभना संयोगथकी वेसरनी जाती उत्पन्न थाय. अथवा जेम गोल अने दहीना संयोगथकी बे रस होयछे. तेम श्री वीतरागना धर्मनेविषे अने अन्यदर्शनीना धर्मनेविषे पण श्रद्धा होय; ए अंतरमुहूर्त काल सुधी रहेछे, एने विषे वर्तमान छतो जीव परनवनुं आयुष्य पण बांधे अने मरण पण पामे नहीं. पण सम्यक्त्वे अथवा मिथ्यात्वे आवी पोताना पूर्वबद्धायुष्यने अनुसारे परनवे जाय. ए त्रीजुं मिश्रगुणठाणुं कह्युं.

चोथुं अविरतिगुणस्थानक ते आवीरीते छेः—श्रीवीतरागना नाषिततत्वनेविषे रुचि थाय, ए उपशमादिक गुणोसहित अपार्द्ध पुद्गल परावर्त संसार छते नव्य जीव पामे; देव गुरु अने संघनी नक्ति अने उन्नति जेम थाय तेम करे, तेंत्रीश सागरोपमसाधिक एनी स्थिति छे. अने अप्रत्याख्यान नामे जे कषाय तेना उदयथकी थोमीपण विरति करी शके नहीं अने सम्यक्त्व पण होय, तेथी ए चोथुं अविरतिसम्यक्दृष्टिगुणस्थानक कहिये.

पांचमुं देशविरतिगुणस्थानक छे, ते आवीरीते के, ए गुणठाणानेविषे प्रत्याख्यानावरण कषायना उदयथकी जीव सर्वविरतिपणुं करी शके नही, अने देशथकी विरति होय, इहां श्रावक संबंधी छ कर्म, प्रतिमा व्रत एनेविषे तत्पर थाय, आर्त्त ने रौद्र ध्यान घणुं होय; अने धर्म ध्यान थोडुं होय. देशोकणी पूर्वकोमी ए गुणठाणानी स्थिति जाणवी. ए देशविरति नामे पांचमुंगुणस्थानक जाणवुं.

छठा प्रमत्तगुणस्थाननुं लक्षण आमछे के, इहां संज्वलन कषायना उदयथकी प्रमाद संनवेछे, एनेविषे रह्योथको जे यति ते प्रमत्तयति कहेवाय छे, अने वली नोकषायना उदयथकी आर्त्तध्यान घणुं होय, अने धर्मध्यान थोडुं संनवे छे. प्रमादना बहुलपणाये करी मिथ्यात्वे मोहितथको श्रीजिनोक्तआगम पूर्ण वेदे नहीं, एनी अंतरमुहूर्त्तनी स्थिति छे. ए प्रमत्त यतिनुं छठुं गुणठाणुं जाणवुं.

सातमुं अप्रमत्तगुणस्थानक देखाडेछे. इहां संज्वलन कषायना मंद उदयपणे करीने प्रमादहीन होय, तेथी ए गुणठाणे वर्तमान छतो बंने श्रेणीनो आरंन

अथवा उपशमिक सम्यक्त्वरूप होय. अने तिन्निसेस एटले त्रण नाव ते शेष गुण ठाणा जे मिथ्यादृष्टि, सास्वादन, मिश्रदृष्टि, सयोगी अने अयोगी लक्षणनेविषे हो य, त्यां मिथ्यादृष्टि आदेदेइने त्रण गुणठाणानेविषे उदयिक, क्षायोपशमिक पारि णामिक ए त्रण नाव होय अने सयोगी तथा अयोगीनेविषे उदयिक, क्षायिक ने पारिणामिक ए त्रण नाव होय. ए त्रण प्रमुख नाव जे कह्या ते एकजीवनी अपेक्षा ए जाणवा, पण नाना प्रकारना जीव आश्री कहीए तेवारे संनवी सर्व नाव होय.

अवतरणः— जीवचउ दसत्ति एटले जीवना चउद स्थानकनुं बशें ने बावीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—इह सुहुम बायरेगिंदि बि ति चउर असन्नि सन्निपंचिंदि ॥ प ज्जत्तापज्जत्ता, कम्मेण चउदस जियठाणा ॥ २१४ ॥ अर्थः— ए जिनशासननेवि षे एकेंद्रिय ते सूक्ष्म ने बादरना नेदथकी बे प्रकारे कहीछे. त्रीजुं बेंद्रिय, चोथुं तें द्रिय, पांचमुं चउरेंद्रिय, बडुं जेने मन नही ते असंज्ञीपंचेंद्रिय अने सातमुं जे मन सहितछे ते संज्ञीपंचेंद्रिय. ए बे नेद पंचेंद्रियना जाणवा. ए सात पर्याप्ता ने सात अपर्याप्ता मली अनुक्रमे चउद जीवनां स्थानक होयछे.॥२१४॥इतिगाथार्थः॥

अवतरणः—अजीव चउदसगंति एटले अजीवना चउद नेदोनुं बशें ने त्रेवीश मुं द्वार कहेछे. मूलः—धम्माधम्मागासा, तियतिय नेया तहेव अद्धाय॥खंधा देस पएसा, परमाणुअजीव चउदसहा॥२१५॥अर्थः—धर्मास्तिकायादिकनुं स्वरूप त्रैकाल्य व्रतना वखाणमांहे द्रव्य षट्कने अधिकारे कह्युं छे. इहां नेद कहियेछैये. एक धर्मास्ति काय, बीजो अधर्मास्तिकाय,त्रीजो आकाश ए त्रणेना स्कंध,देश ने प्रदेश एवा त्रण त्रण नेद करतां नव नेद थाय छे. दशमो अद्धाके०काल जे समय, आवली मुहूर्त्त इ त्यादिक समस्त वस्तुनी कलनानो करनार जाणवुं, अने स्कंध, देश, प्रदेश तथा प रमाणु ए पुद्गलना चार नेद मली अजीवना चउद नेद थया.॥२१५॥इति गाथार्थः

अवतरणः—गुणठाण चउदसगोत्ति एटले चउद गुणठाणानुं बशें ने चोवीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—मिछे सासणमिस्से, अविरयदेसे पमत्त अपमत्ते॥नियट्टि अनिय ट्टि सुहुम उवसम खीणसजोगि अजोगिगुणा ॥ २१६ ॥ अर्थः—इहां संसारमां वस ता जीवने अनादि मोहलक्षण, मिथ्यात्व सदा सर्वदा छेज, परंतु जेवारे व्यक्त मिथ्यात्व जे कुदेव उपर देवनी बुद्धि. कुगुरु उपर गुरुनी बुद्धि, अधर्म उपर धर्म नी संज्ञा; ए प्रगट मिथ्यात्वनो जे उदय थाय ते गुणस्थानकपणे जाणवो, ए मिथ्यात्वगुणस्थानक कह्युं.

बीजुं सास्वादन ते आवीरीते के, जीवने पोते अनादि मिथ्यात्व मोहनीयछे; प

रंतु जेवारे तेनो उपशम थाय, तेवारे जीव उपशम, सम्यक्त्व, प्रथम पामे, अने वली इहां जे अनंतानुबंधिया कषाय उपशमाव्या हता; तेना उदयथी उपश मिक सम्यक्त्वथकी पडताने हजी जीव मिथ्यात्वे गयो नथी, एवुं छ आवली सुधी सास्वादन नामे बीजुं गुणस्थानक होय.

त्रीजुं मिश्रगुणस्थानक, ते आवीरीते के, मिश्रमोहनीय कर्मना उदयथकी सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व उपर सरखी बुद्धिहोय, जेम घोडी अने गर्दभना संयोगथकी वेस रनी जाती उत्पन्न थाय. अथवा जेम गोल अने दहीना संयोगथकी बे रस होयछे. तेम श्री वीतरागना धर्मनेविषे अने अन्यदर्शनीना धर्मनेविषे पण श्रद्धा होय; ए अंतरमुहूर्त्त काल सुधी रहेछे, एने विषे वर्तमान छतो जीव परभवनुं आयुष्य पण बांधे अने मरण पण पामे नहीं. पण सम्यक्त्वे अथवा मिथ्यात्वे आवी पोताना पूर्वबद्धायुष्यने अनुसारे परभवे जाय. ए त्रीजुं मिश्रगुणठाणुं कह्युं.

चोथुं अविरतिगुणस्थानक ते आवीरीते छेः—श्रीवीतरागना भाषिततत्वनेवि षे रुचि थाय, ए उपशमादिक गुणेसहित अपार्द्ध पुद्गल परावर्त संसार छते भव्य जीव पामे; देव गुरु अने संघनी भक्ति अने उन्नति जेम थाय तेम करे, तेंत्रीश सागरोपमसाधिक एनी स्थिति छे. अने अप्रत्याख्यान नामे जे कषाय तेना उद यथकी थोडीपण विरति करी शके नहीं अने सम्यक्त्व पण होय, तेथी ए चोथुं अविरतिसम्यक्दृष्टिगुणस्थानक कहिये.

पांचमुं देशविरतिगुणस्थानक छे, ते आवीरीते के, ए गुणठाणानेविषे प्रत्याख्या नावरण कषायना उदयथकी जीव सर्वविरतिपणुं करी शके नही, अने देशथकी विर ति होय, इहां श्रावक संबंधी छ कर्म, प्रतिमा व्रत एनेविषे तत्पर थाय, आर्त्त ने रौद्र ध्यान घणुं होय, अने धर्म ध्यान थोडुं होय. देशेऊणी पूर्वकोडी ए गुणठा णानी स्थिति जाणवी. ए देशविरति नामे पांचमुंगुणस्थानक जाणवुं.

छट्ठा प्रमत्तगुणस्थाननुं लक्षण आमछे के, इहां संज्वलन कषायना उदयथकी प्रमाद संभवेछे, एनेविषे रह्योथको जे यति ते प्रमत्तयति कहेवाय छे, अने वली नोकषायना उदयथकी आर्त्तध्यान घणुं होय, अने धर्मध्यान थोडुं संभवे छे. प्र मादना बहुलपणाये करी मिथ्यात्वे मोहितथको श्रीजिनोक्तआगम पूर्ण वेदे नहीं, एनी अंतरमुहूर्त्तनी स्थिति छे. ए प्रमत्त यतिनुं छठुं गुणठाणुं जाणवुं.

सातमुं अप्रमत्तगुणस्थानक देखाडेछे. इहां संज्वलन कषायना मंद उदयप णे करीने प्रमादहीन होय, तेथी ए गुणठाणे वर्तमान छतो बंने श्रेणीनो आरंभ

करे. एने अप्रमत्त यति कहिये. इहां कालमान बन्ने प्रमत्तादिक गुणगणाथी लेइने बारमासुधी साते गुणस्थानकनेविषे अंतरमुहूर्त होय, इहां आवश्यकना अनावथकी पण ए सदा शुद्धात्मा जाणवुं.

आठमुं निवृत्तिगुणस्थानक एटले इहांथकी वली पाछुं निवर्त्ते, तेथी ए निवृत्तिगुणस्थानक समजवुं. अने नवमाथकी निवर्त्ते नहीं तेथी एनुं नाम अनिवृत्ति छे, दशमुं सूक्ष्मलोजना विद्यमानपणाये करीने एनुं नाम पण सूक्ष्मसंपराय छे. अग्यारमुं उपशांतमोह गुणस्थानक; एनेविषे उपशमश्रेणीनुं पडिवजण हार आवीने घणी जवस्थिति छते वली इहांथी पाछुं पडवुंथकुं मिथ्यात्वे जाय, अने जेने थोडी जव स्थिति होय तथा तद्भव मोक्षगामि होय ते पाछो पड्यो थको सातमा गुणगणा सुधी आवे. अने क्षपकश्रेणीवालो ते दशमाथकी बारमे जाय पण अग्यारमे गुणगणे आवे नही.

क्षीणपणे थयोछे मोह ज्यां ते क्षीणमोह नामा बारमुं गुणगणुं जाणवुं.

तेरमुं सयोगी नामे गुणगणुं ते इहां मन, वचन अने काययोगना सद्भावथकी सयोगीगुणगणुं केवाय छे. एनुं कालमान देशोन पूर्वकोटी प्रमाण जाणवुं. ए केवलीनुं गुणगणुं कहेवाय छे.

चउदमुं अयोगी गुणगणुं ते आवीरीते; अ इ उ ऋ लृ एवा पांच ह्रस्व अक्षरनो उच्चार करतां जेटलुं वखत थाय तेटलुं एनुं कालमान जाणवुं. तेने इहां छती काथाए कायानो जाव छे तो पण तेने आगले तुरत कायानो क्षय थशे; ते कारणे एने काया संबंधी कार्यना अजावथकी ए अयोगी कहेवाय छे. एनेविषे वर्त्ततो शुक्लध्याननो चोथो जेद ध्यातो छेल्ला समयनेविषे वेदनीयादिक तेर प्रकृति खपावी सिद्ध जगवंत थाय. ए चउदगुणगणा कह्या. ॥ ३१६ ॥ इति गाथार्थः ॥

अवतरणः—मग्गण चउदस गोत्ति एटले चउदमार्गणाना स्थानकुं बशेने पचीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—गइ इंदिएयकाए, जोए वेए कसाय नाणेय ॥ संजम दंसण लेसा, जवसम्मे सन्नि आहारे ॥३१७॥ अर्थः—एक, गतिचार ते देव, नर, तिर्यंच, ने नारकी, बीजी इंद्रिय, पांच, तेमां स्पर्शन लक्षण इंद्रिय जेने ते एकेंद्रिय, एम बेंद्रिय, तेंद्रिय, चउरेंद्रिय, पंचेंद्रियलक्षण पांचे जाणवी. त्रीजी काय ते पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति ने त्रस लक्षण छ जाणवी. चोथी योगमार्गणा ते मन, वचन ने काय लक्षण त्रण, जेदेछे पांचमी वेदमार्गणा ते पुरुष, स्त्री ने नपुंसकना जेदथकी जाणवी. छठी कषायमार्गणा ते क्रोध, मान, माया ने लोजरूप जाणवी, सातमी ज्ञान

मार्गणा ते मति, श्रुत, अवधि, मनपर्यव ने केवल ए पांच ज्ञान तथा मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान ने विभंगज्ञान ए त्रण अज्ञान मली आठ भेदे छे; आठमी संयम मार्गणा ते सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, देशसंयम ने असंयमना भेदे सात प्रकारेछे. नवमी दर्शनमार्गणा ते चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन ने केवलदर्शनना भेदे करी चार प्रकारे जाणवी. दशमी लेश्यामार्गणा ते कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म ने शुक्ल रूप छ प्रकारे जाणवी. अग्यारमी भवमार्गणा ते भव्य ने अभव्य लक्षण बे प्रकारे जाणवी. बारमी सम्यक्त्वमार्गणा ते उपशम, सास्वादन, मिश्र, क्षायोपशमिकने क्षायक ए पांच भेदे जाणवी. तेरमी सन्निमार्गणा ते संज्ञी ने असंज्ञीना भेदे जाणवी. चउदमी आहार मार्गणा ते आहारक अने अनाहारक रूप बे भेदे जाणवी. ज्यां जीवपदार्थनुं शोध करवुं ते मार्गणा मूल चउद जाणवी.तेना प्रतिभेद करिये तेवारे बाशठ थाय ते कह्या. इति॥

अवतरणः—उवउंगा बारसत्ति एटले बार उपयोगनुं बशेने छवीशमुं द्वार कहेछेः—मूलः—मइ सुअ उही मण केवलाणि मइ सुअ अन्नाण विभंगा ॥ अचक्खु चक्खु अवही, केवल चउदंसणुवउंगा ॥ ३१८ ॥ अर्थः—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, अने केवलदर्शन. ए चार दर्शन अनाकार रूपछे ते मेल्यां थका बार उपयोग थायछे. ॥ ३१८ ॥ इति गाथार्थ. ॥

अवतरणः—जोगा पन्नरसत्ति एटले पन्नर योगनुं बशेने सत्तावीशमुं द्वार कहे छे. मूलः—सच्चं मोसं मीसं, असच्च मोसं मणो तह वईय ॥ उरल विउव्वा हारा, मीस कम्मयग मिय जोगा ॥३१९॥ अर्थः—सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, मिश्र मनोयोग, असत्यामृषामनोयोग, जेम ए चार मनना, तेमज चार वचनना योगछे ते कहेछे. सत्यवाग्योग असत्यवाग्योग मिश्र ते सत्य, असत्य, वाग्योग, असत्यामृषावचनयोग. एवं आठ थया; अने सात औदारिकादिक कायना ते आवीरीते. औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रिय, वैक्रियमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, कार्मण योग. ए सात भेला करिए तेवारे पन्नर योग थाय. ॥ ३१९ ॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरणः—परलोयगई गुणगणंगेसुत्ति एटले जे गुणस्थानकनी साथे जीव परलोके जाय अने जे गुणस्थानक अहींयां होय पण जीवनी साथे परलोके न जाय ते नुं बशेने अठ्यावीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—मिछे सासाणेवा, अविरयभावम्मि अहिगए अहवा ॥ जंति जिआ पारलोयं, सेसेक्कारस गुणे मोत्तुं॥३२०॥ अर्थः—मिथ्यात्वगुणठा

णु: सास्वादनगुणगणुं अथवा अविरति नाव गुणगणुं ते अधिगत एटले पामे बते ए त्रण गुणगणां जीवनी साथे परलोकनेविषे जाय. शेष अग्यार गुणगणा न जाय. इहां एटलुं विशेष जे मीसे खीणसजोगे, नमरंते कारसेसुयमरंति ॥ जेसु वि तिसु गहि एसुं, परलोय गमोन अंन्नेसु ॥ १ ॥ ३२० ॥

अवतरणः—गुणगणा कालमाणंति एटले चउद गुणगणानुं कालमान कहेवानुं बशे ने ओगणत्रीशमुं द्वार कहेले. मूलः—मिन्नत्तम नव्वाणं, अणाइय मणंत यंच विन्नेयं ॥ नव्वाणंतु अणाई, सपज्जवसिअंचसम्मत्ते॥३२१॥ बवलियं सासाणं, समहिय तेत्तीस सायर चउत्थं ॥ देसूण पुव्वकोडी, पंचमगं तेरसंच पुढो ॥ ३२२॥ लहुपंचक्खरचरमं, तइयं ठगाइ बारसं जाव ॥ इय अच्चुणगणा, अंतमुहुत्तापमाणेणं ॥ ३२३ ॥ अर्थः—अनव्यजीवोने अनादि अनंत मिथ्यात्व जाणवो अने नव्यजीवोने अनादि सपर्यवसित जाणवुं सम्यक्त्व पामे बते मिथ्यात्व नथाय, अने ज्यां नव्यजीव पण सम्यक्त्व न लहे त्यांसुधी अनादि मिथ्यात्वमांहेज जीव वसतो जाणवो. अने ब आवलिका सास्वादनगुणस्थानकनुं कालमान जाणवुं. ते त्रीश सागरोपम साधिक अविरति सम्यक्हष्टि चोथा गुणगणानुं कालमान जाणवुं. अने देशेकणी ते आठवर्षें कणी पूर्वकोडी कालमान ते पांचमुं देशविरति, अने तेरमुं सयोगी ए बे गुणगणानेविषे पुढोके० प्रत्येके होय-लघुके० हस्व अ, इ, उ, ऋ, लृ, एवा पांच अक्षर उच्चारसम कालमान चउदमा गुणगणानुं जाणवुं. हवे नही कह्यां एवां जे त्रीजुं, बठुं, सातमुं, आठमुं, नवमुं, दशमुं, अग्यारमुं, बारमुं, ए आठ गुणगणानो काल अंतरमुहूर्तप्रमाण प्रत्येके जाणवो. इति गाथात्रयार्थ.

अवतरणः— नरय तिरिनर सुराणं उक्कोस विउव्वणा कालोत्ति एटले नारकी तिर्यंच मनुष्य ने देवता एने उत्कृष्टविकुर्वणा करेली जेटलो काल रहे तेनुं बशो ने त्रीशमुं द्वार कहेले. मूलः—अंतमुहुत्तं नरएसु होइ चत्तारितिरिय मणुएसु ॥ देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउव्वणाकालो ॥३२४॥ अर्थः—नारकीनेविषे नारकीनी करेली विकुर्वणा एक अंतरमुहूर्त्तसुधी रहे. एम चार अंतरमुहूर्त तिर्यंचने अने मनुष्यनेविषे एनी करेली विकुर्वणा चार अंतरमुहूर्त सुधी रहेले. अने देवतानेविषे विकुर्वणा करी बतां पन्नर दिवस सुधी रहेले. ए उत्कृष्ट विकुर्वणानुं कालमान जाणवुं.॥३२४॥

अवतरणः—सत्त समुग्घायत्ति एटले सात समुद्घातनुं बशेने एकत्रीशमुं द्वार कहेले. मूलः—वेयण कसाय मरणे, वेउव्विय तेय एय आहारे ॥केवलिअसमुग्घाए, सत्त इमे हुंति सत्ताणं ॥ ३२५ ॥ अर्थः—समवहत ते आपणा आत्माना प्रदे

शनुं मोकलुं करवुं छे ज्यां; ते समुद्घात कहिए. ते एरीते. एक वेदना, बीजी कषाय, त्रीजी मरणांतिक, चोथी वैक्रिय, पांचमी तेजस, छठी आहारक; अने सातमी, केवली समुद्घात. ए साते समुद्घात संज्ञीने थाय. ॥३२५॥

हवे शेषजीवोने समुद्घात कहेछे. मूलः—एगिंदीणं केवलि, आहारग वज्जिया इमे पंच ॥ पंचाविय वेउव्वा, विगला सन्नीण चत्तारि ॥ ३२६ ॥ अर्थः—एकेंद्रिय जीवोने, एक केवली, बीजी आहारक; ए बे समुद्घात वर्जीने शेष पांच समुद्घात थायछे. विगलेंद्रियने अने असंज्ञीने वैक्रिय समुद्घात वर्जी शेष चार समुद्घात थायछे. ए गाथा पन्नवणा जीवसमास अने पंचसंग्रहादिक शास्त्रांतर साथे विघटति देखायछे; सूत्रकारे केवा अभिप्रायथी कह्युंछे ते तेज जाणे. ॥ ३२६ ॥

हवे केवली समुद्घातनुं स्वरूप कहेछे. मूलः—केवलिय समुग्घाउ, पढमे समयम्मि विरयए दंमं ॥ बीए पुणो कवामं, मंथाणं कुणइ तइयम्मि ॥ ३२७ ॥ अर्थः—केवली जेवारे समुद्घात करे तेवारे पहेला समयनेविषे दंम विरचेके० करे, बीजे समये पोताना जीवना प्रदेश विस्तारी कपाटने आकारे करे, त्रीजे समये मंथाणंके० जेणेकरी दहीने मथिए तेने आकारे करे. ॥ ३२७॥

मूलः—लोयं नरइ चउछे, पंचमए अंतराय संहरइ ॥ छठे पुण मंथाणं, हरइ कवाडंपि सत्तमए ॥ ३२८ ॥ अर्थः—चोथा समयनेविषे समस्त लोक पोताना प्रदेशे भरे, ए रीते भरीने पछी पांचमा समयनेविषे आंतरा संहरे, छठे समये वली पूर्वे जे पोताना प्रदेशे मंथाणुं कर्युं छे तेने संहरे, सातमा समयनेविषे जे कपाटने आकारे प्रदेश कर्या हता तेने संहरे. ॥ ३२८ ॥

मूलः—अठमए दंमंपिहु, उरलंगो पढम चरमसमएसु ॥ सत्तम छठ बिइज्जेसु होइ उरालमिस्सेसो ॥ ३२९ ॥ अर्थः—आठमा समयनेविषे जे प्रथम समये दंमाकारे प्रदेश करेला हता तेने संहरे, पण इहां पहेलाने छेला समयनेविषे औदारिक शरीर थाय. सातमा छठा अने बीजा समयने विषे औदारिक मिश्र थाय.

मूलः—कम्मण सरीरजोई, चउछए पंचमे तइज्जेयं॥जं होइ अणाहारो, सो तम्मि तिगे समयाणं, विसेसाणं॥एमपाठांतरछे. ॥३३०॥ अर्थः—केवल कार्मण शरीर योगी ते चोथा पांचमा ने त्रीजा समयनेविषे होय. जे कारणे ते त्रण समयनेविषे अनाहारक छे, ज्यां अनाहारक कह्या त्यां केवलीणोसमुद्दया एटले केवली केवल समुद्घात करे, तेवारे ए त्रण समयनेविषे अनाहारक होय. ३३० इतिगाथा षट्कार्थ.

अवतरणः—छपज्जत्तीउत्ती एटले छ पर्याप्तिनुं बत्रीशमुं द्वार कहेछे.

मूलः—आहारसरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण जासमणे ॥ चत्तारिपंच छप्पिय, एगेंदिय विगलसन्नीणं ॥ ३२१॥ अर्थः—आहारादि पुजल लेवाने परिणमाववानुं कारणजे आत्माने शक्तिनुं विशेष ते पर्याप्ति कहीए. त्यां पहेली आहारपर्याप्ति, बीजी शरीरपर्याप्ति, त्रीजी इंद्रियपर्याप्ति, चोथी आणपाण ते श्वासोश्वासपर्याप्ति, पांचमी जाषापर्याप्ति अने छठी मनपर्याप्ति. तेमां धुरली चार पर्याप्ति एकेंद्रियने होय, विकलेंद्रियने पांच होय अने असन्नीने जाषायुक्त पांच होय; तथा जे संज्ञी तेने मनसहित छ होय.

हवे एनुं कालमान कहेछे. मूलः—पढमा समयपमाणा, सेसा अंतोमुहुत्तियाय कमा ॥ समगंपि हुंति नवरं, पंचमछठाउअमराणं ॥ ३२२ ॥ अर्थः—पहेली आहारपर्याप्ति एक समय प्रमाणछे, अने शेष थाकती पर्याप्ति अंतरमुहूर्त्त प्रमाणनी अनुक्रमे प्रत्येके जाणवी. इहां कोइ कहेशे के, पहेली आहारपर्याप्ति एक समये थाय; एवात केम जाणिये? ते उपर जगवंत श्रीआर्य श्यामाचार्ये पन्नवणाना आहारपदना बीजा उद्देसाने विषे एवुं सूत्र कह्युंछे. आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तएणंजंते किंआहार ए अणाहार ए गोयमानो आहारए अणाहारए. इहां ए जाव जे आहार पर्याप्ते अपर्याप्तोजीव विग्रहगतिएज जाय; परंतु उपपात क्षेत्रनेविषे अणाहारक न होय त्यां आव्यो जीव पहेलेज समये आहारनुं परिग्रहण करे, ते कारणे एक सामायिकी आहार पर्याप्ति होय. अने जे उपपात क्षेत्रे आव्यो पण आहार पर्याप्ते अपर्याप्तो थाय तो एवुं सूत्र कह्युंछे. सिअआहारएसिअअणाहारएत्ति. जेम शरीरादिक पर्याप्तिनेविषे सूत्र पाठ आवो कह्यो छे. सिअ आहारए सिअ अणाहारएत्ति एटले ए प्रथम समयज आहार पर्याप्तिनी सिद्धि थइ. हवे शेषप्रत्येकेअंतरमुहूर्त्तप्रमाणे कही. ए सामान्य पणे सूत्रकारे कह्युं ते पण औदारिक शरीर आश्री कह्युं जाणवुं. अने वैक्रिय आहारकने पांच पर्याप्ति समय समयनी थाय. शरीरपर्याप्ति ते अंतरमुहूर्त्त प्रमाण छे.

हवे देवताने विशेष कहेछे. समगंपिके० समकालेज पांचमी जाषापर्याप्ति अने छठी मनःपर्याप्ति ए बन्ने थाय. नवरं इहां ए विशेषछे. जे सिद्धांतमां पंचविहाए पज्जत्तीएत्ति; एवा कथनथकी पांचे समकाले जोइये अने इहां छ कही ते कांइ बहुश्रुताभिमत अभिप्राय कोइ जाणवो. अथवा क्यांएक छ पण कहीछे ३२१ इतिगाथा द्यार्थ.

अवतरणः—अणहारगत्ति एटले अनाहारक चारनुं बशेने तेत्रीशमुं द्वार कहे छे. मूलः—विग्गहगइमावन्ना, केवलिणो समुहया अजोगीय ॥ सिद्धाय अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥३२३॥ अर्थः—एकतोविग्रहगते जेवारे जीव प्राप्त थाय तेवारे

अणाहारक जाणवुं. बीजुं केवली केवल समुद्घात करे तेवारे त्रण समय आहार न लिये माटे अणाहारक होय. त्रीजुं अयोगी केवली अयोगी चउदमे गुणठाणे अ णाहारक होय. चोथा तेमज सिद्धजगवंत सदा अणाहारक छे अने शेष समस्त जीव आहारक जाणवा. ॥ २३३ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—सत्तजयठाणाईंति एटले सात जयना स्थानकनुं बशेंने चोत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—इहपरलोयायाणमकन्हा आजीव मरण मसिलोए ॥ सत्तज यठाणाइ, इमाइ सिद्धांतजणियाइं ॥ २३४ ॥ अर्थः—इहलोकजय तेने कहिये जे मनुष्यने मनुष्यथकी जय उपजे. बीजुं एमज मनुष्यने तिर्यंचादिकथी जय उप जे ते परलोकजय जाणवुं. त्रीजुं आदानजय ते आदान एटले ग्रहण तेनुं जय एटले कोइ कहेशे ताहारुं धन, राजादिक लइ लेशे ए आदानजय जाणवुं. चोथुं अ कस्मात्जय ते वीजली प्रमुखनुं जाणवुं. पांचमुं आजीविकानुं जय ते दुःकाल पड्यो हवे केम जीवता रहीशुं? ते जाणवुं. छठुं कोइके कह्युं जे ताहरुं मरण अ मुक दिवसे थशे; तेनाथी जे जय उत्पन्न थाय ते मरणजय जाणवुं. सातमुं अ यश ते लोकापवादनुं जय जाणवुं. ॥ २३४ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—छप्पासाउ अप्पसछाउत्ति एटले छ अप्रसस्त जाषाउनुं बशेने पात्रीस मुं द्वार कहेछे. मूलः—हीलिय खिंसिय फरसा, लिआउ तह गारहछिया जासा ॥ छठी पुण उवसंता, हिगरवउछासरसंजणणी ॥२३५॥ अर्थः—जे जाखिये बोलिए ते जाषा कहिये, तेमां अप्रशस्त कर्मबंधना कारणे करीने माठी जाषा ते छ प्रकारे थायछे. तेमां पहेली हेलित तेने कहियेके जे रीशेकरी अवगणना पूर्वक वाचक ज्येष्ठ आर्य इत्यादिक कहे ते जाणवी. बीजी खिंसित ते जे जन्म कर्म प्रमुख उघाडां पाडवां. अर्थात् जाहेर करवां, ते. त्रीजी परुष डुष्टादिक कर्कश वचननुं बोलवुं ते. चोथी अली क ते शुं दिवशे प्रचला करेछे के इत्यादिक प्रश्नेविषे प्रचला नकरुंछुं एवुं बोलवुं ते जा णवी. पांचमी गृहस्थनी ए जाषाते गारहछिया बेटा बाप मामा जाणेजा इत्यादिक व चन कहे ते जाणवी. छठी पुणःके० वली उपशांतके० उपशम तेनुं अधिकरण ते क लह कहिये तेनो उछासके० प्रवर्त्तावुं तेहनी जननीके० उपजावनारी एटले एवुं व चन बोले के जे वचने करी अणछतो क्लेश उत्पन्न थाय इतिगाथार्थ. ॥ २३५ ॥

अवतरणः—जंगागिहिवयाणंति एटले गृहस्थना व्रतना जांगाउं बशेने छत्रीस मुं द्वार कहेछे. मूलः—डुविहा अठविहावा, बत्तीसविहाय सत्तपणतीसा ॥ सोलसय सहस्सजवे, अठसयछुत्तरा वइणो ॥ २३६ ॥ अर्थः—डुविहाके० बे प्रकारे अथ

वा आठ प्रकारे अथवा बत्रीश प्रकारे अथवा सातसेने पांत्रीश प्रकारे अथवा शो लहजार आठसेने अडोत्तर व्रतिना भंगा होय. इहां वइणो एवा वचनथकी व्रत शब्दे नियमविशेष ते जेने छे तेवा व्रती सामान्य श्रावक ग्रहण करवा: पण देशविरति इहां लेवा नही. अविरति सम्यक्दृष्टि एने पण सम्यक्त्व प्रतिपत्ति लक्ष ण नियमना सद्भावथकी सम्यक्त्वधारी व्रती इहां जाणवा. ॥ ३३६ ॥

हवे एज भेद प्रत्येके वखाणनार छतो सूत्रकार धुरला त्रण भेद कहेछे. मूलः– डुविहा विरियाविरया, डुविहं तिविहाइए अछहा हुंति ॥ वयमेगेगं छविह, गुणियं डुगमिलियबत्तीसं ॥ ३३७॥ अर्थः–विरति जेने छे ते विरति अने जे व्रत न जाणे अने व्रतनो अंगीकार करे नही, वली व्रत पालवानो उद्यम न करे ते अविरति सत्य कि श्रेणीक तथा कृष्णादिक जेने क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थयलुं एवा श्रावक जाण वा. ए बेहु भंगे पहेलुं द्विविधपणु कह्युं; हवे जे अज्ञान अने अनभ्युपगम अयत्नादि क ए त्रण पद कह्यां ए त्रण पदे करी आठ भांगा होय, ते आठ भंगमांथी धुरले सात भंगे निश्चे थकी अविरति जाणवुं. कारणके व्रत घुणाक्षरन्याये पाल्यां पण फलवंत न थाय. किंतु सम्यक्ज्ञानने सम्यक्ग्रहणपूर्वक पाल्याथका सफल थाय छे अने आठमे भंगे देशविरति ते एकादि व्रतनो लेनार ज्यांलगे छेहलो अनुमति मात्रनुं सेवनार शेष पाप तेणे सर्व पच्चख्यो, अने अनुमति पण त्रण प्रकारे छे; तेमां जे कोइ पोते अथवा अनेरे कोइ बीजे कर्युं जे पाप तेनी श्लाघा करे, सा वद्ये करी निपन्यो जे आहारादिक ते पोते जमे तेवारे तेने प्रतिसेवा अनुमति होय, अने जेवारे पुत्रादिकनुं करेलुं पाप सांभले ते सांभलीने अनुमोदे,परंतु तेने निवारे न ही तेवारे प्रतिश्रवणानुमति बीजो भेद जाणवुं. अने त्रीजुं वली जेवारे सावद्यारंभने विषे प्रवर्त्त्यां छे जे पुत्रादिक, तेहनेविषे मात्र ममता भाव सहितछे, परंतु अनेरु सांभले नही,अने अनुमोदे पण नही,तेवारे संवासानुमति ते त्रीजो भेद जाणवो. हवे जे कोइ संवासानुमति मात्रनो सेवनार ते चरम भांगे देशविरति अने जे सं वासानुमति थकी विरत्या थका होय तेने यति कहिये. एणे कारणे विरति ने अ विरतिना भेदथकी बे प्रकारे कहिये.

हवे आठ प्रकार कहेछे. डुविह तिविहाइके० त्यां द्विविधपणु करण करावणरूप अने त्रिविध ते मन वचन अने कायने भेदे जाणवुं. ते द्विविध त्रिविध ए एक भंग जाणवो. तेज जे भांगाना समूहनेविषे आदिके० धुरेछे ते द्विविध त्रिविधा दि कहिये. ते द्विविध त्रिविधादि भंगे करी आठ प्रकारे श्रावक जे आगल डुविह

अने एगविह ए बे गाथामांहे कहेशे, ते सोपयोगपणा लगीने इहां वखाणिये छैये. इहां व्रतनो पडिवजणहार ते श्रावकना घणा भंगना विशेषथकी कोइएक कांइक प डिवजे. त्यां पहेलो द्विविध ते करण करावणना भेदथकी जाणवो. त्रिविध ते मन वचन कायाये करी जाणवुं. एम पढमके० पेहेलो भंगो होयछे. इहां भावना एमछे के मन वच न अने कायाये करीने स्थूलहिंसादिक पोते न करे, अने अनेरा पासे करावे नही, अने अपत्यादिक परिग्रहना सद्भावथकी अनुमतिने निषेधी नथी ते पुत्रादिके करेली हिंसादिकनेविषे हजी तेने अनुमति लागेछे. अन्यथा प्रकारे जेने एटलुं प ण न होय तो परिग्रही अने अपरिगृही, प्रवर्जित अने अप्रवर्जितनो मांहोमांहे भेद नथाय. अने वली जे श्रीभगवती प्रमुख सिद्धांतमांहे गृहस्थने त्रिविध त्रिवि धनुं पच्चखाण कह्युं ते विशेष विषइउ जाणवुं ते आवीरीते छे.

जे कोइ दीक्षा लेनार होय अने पुत्रादिकना पालवाने अर्थे विलंब करतो थ को प्रतिमा पडिवजे. अथवा जे कोइ विशेषे करी स्वयंभुरमण समुद्रना माछला नुं मांस तेनु पच्चखाण करे. एम हाथीना दांत, चित्रानां चर्म अथवा स्थूलहिंसा दिक कोइक अवस्थाना विशेषनेविषे पच्चखे तेज त्रिविध त्रिविधे एवुं पच्चखाण करे, ए अल्पविषयपणाथकी इहां विवक्ष्यो नथी. वली द्विविध द्विविधे ए बी जो भंग जाणवो. इहां आगले पदे त्रणभांगा कह्या छे त्यां एक जेवारे मने करीने वचने करी न करे तेमज करावे नही, तेवारे मनेकरी हिंसादिकने अभिप्राये रहि त अने वचने पण हिंसादिकनुं वचन अणबोलतो छे; केवल शरीरे करी असन्नी नीपरे हिंसादिक करेछे. बीजुं जेवारे मनेकरी अने कायायेकरी नकरे अने न करा वे तेवारे चित्तनी अभिसंधिरहितथको शरीरे करी डुश्चेष्टितादिक परिहरतो अना भोगादिकथकी वचनेकरीने हणु एवुं कहे. त्रीजुं एमज जेवारे वचन अने काया येकरी न करे न करावे तेवारे केवल मनने अभिप्राये करे अने करावे. पण इहां अनुमति त्रणेने छेज. एम शेषविकल्प पण भाववा. एरीते मूल भंग छ थया ते छ ना उत्तर भंग एकवीश थाय, ते आगल कहेशे. उक्तंच॥ डुविह तिविहाविछच्चिअ, तेसिं भेया कमेण मे हुंति ॥ पढमेको डुन्नितिआ, डुगेगदोछक्कइगवीसं ॥ १ ॥ अने उ त्तरउगुण सत्तमउके० जेणे त्रण गुणव्रत ने चार शिक्षाव्रत लक्षण उत्तरगुण पडिवज्या छे. ए सातमो भेद जाणवो. अने अविरति सम्यक्दृष्टिनो आठमो भेद जाणवो, ए आठ भेद देखाड्या.

हवे बत्रीश भेद देखाडेछे. वयमेगगंके० एक एक व्रतने स्थूल प्राणातिपात वि

रमणादि लक्षण मूल पांच महाव्रत छे तेने पूर्वोक्त छ प्रकारे गुणतां त्रीश थाय. अने एक उत्तरगुणप्रतिपत्तिनो, बीजो अविरति सम्यक्दृष्टिनो. ए बे भेद मेलविये तेवारे बत्रीश भेद थायछे ते आवीरीतेः–

पहेलुं प्राणातिपात विरमण स्थूल व्रत कोइये छ भंगामांहे पहेले भंगे पडिवज्युं, कोइएके बीजे भंगे पडिवज्युं, कोइए त्रीजे भंगे पडिवज्युं, एम यावत् कोइए छठे भंगे पडिवज्युं, एरीते पहेला प्राणातिपात विरमण व्रतना छ भंग जाणवा. तेमज मृषावाद विरमणादिक पांचे मूल व्रतोना छ छ भंग मेलविये तेवारे त्रीश भंग थाय. अने श्रावश्यकमां एम कह्युंछे के कोइएके पांचे अणुव्रत एकठां लीधां त्यां द्विविध त्रिविधादिक छ भंगछे. अने वली बीजो कोइ चार व्रतनुं ग्रहण करे त्यांपण छ भंगछे. ते ज्यांसुधी कोइएक एक अणुव्रतनुं ग्रहण करे त्यां पण छ भंग जाणवा. ए आवश्यकना अभिप्रायथी भंग देखाड्या. ॥ २२७ ॥

हवे ग्रंथकर्त्ता सातशें पांत्रीश भंगनी प्ररूपणा करनार छतो श्री भगवतीने अभिप्राये नव भंगी कहेछे. मूलः–तिन्नितिआ तिन्निदुआ, तिन्निकेक्काय हुंतिजोगेसुं ॥ तिदुएक्कंतिदुएक्कं, तिदुएक्कं चेव करणाइ ॥२२८॥ अर्थः–योग ते मनोयोगादिक त्रण तेनेविषे करण करावण ने अनुमतिरूपे करी त्रण त्रगडा ने त्रण बगडा अने त्रण एकडा हुंतिके० होय. योगनेविषे अनुक्रमे त्रण त्रगडा थापी नीचे त्रण बगडा, ते नीचे त्रण एकडा करण मन वचन कायाए स्थापिए. हवे कोइक गृहस्थ मने करी सावद्य योग करे नही, करावे नही, तथा अनेरो करतो होय तेने अनुमोदे नही; तेवारे ए मन साथे त्रण भंग थाय. एम वचन साथे त्रण भंग तथा कायासाथे पण त्रण भंग करतां मूल नव भंग थया. तेना उत्तरभंग उगणपचाश थाय; ते नीचे लखाशे त्यांथी जोवा. ॥२२८॥

इहां शिष्य पूछेछे के वचन अने काया एणे करी तो करण करावण ने अनुमति देखायछे; परंतु मनने करण करावण ने अनुमति केम थायछे? तेने गुरु कहेछे. काया अने वचने करी निर्व्यापारथको पण मनथकी एवुं चिंतवे जे अमुक सावद्य योग करुं; तेवारे मनेकरी करण थयुं. अने मने करी एम जाणे के अमुक सावद्य योग करावुं, तेपण तेनुं इंगित जाणी तेवा अभिप्राये प्रवर्त्ते तेवारे मने करी करावण थयुं. अने जेवारे सावद्य करी मनमां चिंतवे जे आ में सारुं कर्युं तेवारे मने करी अनुमति थइ. एरीते मननां भंग देखाडतां उगणपचाश भंग देखाडया जाणवा.

सांप्रत प्रकारांतरे सूत्रकार एज देखाडेछे. मूलः–मणवयणकायजोए, करणे

करावणे अणुमईए ॥ एकगडगतिगजोगे, सत्तासत्तेव दगुवन्ना ॥ २३ए ॥ अर्थः–
इहां प्राकृतपणाथकी विजक्तिनुं विपरीतपणुं तेथी मन, वचन ने काय साथे योग
संबंध बते करण करावण ने अनुमति तेणे कारणे एक द्विक त्रिक साथे योग
कीधा बतां सात सातका थायढे ते आवीरीतेः–

एक स्थूलहिंसादिक मने न करे, बीजुं वचने न करे, त्रीजुं कायाये न करे. ए
त्रण एक संयोगे थया. हवे द्विकसंयोगे कहेढे. चोथुं मन ने वचने न करे, पांचमुं म
ने ने कायाये न करे, बठुं वचन ने कायाये न करे, हवे त्रिक संयोग ते मन वचन
ने कायाये न करे, ए सातमो जंग थयो. ए सात जंग करणे थया. तेमज बीजा सा
तजंग करावण थकी थाय. तथा त्रीजा सातजंग अनुमतिये थाय. तथा चोथा सातजं
ग वली करणने करावण थकी थाय. तथा पांचमा सात जंग, करण ने अनुमतिये
थाय. तथा बठा सात जंग करावण अने अनुमतिये थाय. तथा सातमा सात
जंग ते करण करावण ने अनुमति ए त्रणे एकठा करतां थाय. एरीते सातो सत्ति
यु उंगणपच्चाश जंग देखाड्या.

हवे सुखे जाणपणुं थवामाटे ए उंगणपचाशजंगनो उच्चार जेवीरीते थाय
तेवीरीते लखी देखाडिये वैये १ मनेकरी करुं नही २ मनेकरी करावुं नही ३ म
ने करी अनुमोडुं नही ४ मनेकरी करुं नही करावुं नही ५ मनेकरी करुं नही ने अनु
मोडुं नही ६ मनेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही ७ मनेकरी करुं नही करावुं न
ही अनुमोडुं नही ८ वचनेकरी करुं नही ए वचनेकरी करावुं नही १० वचनेक
री अनुमोडुं नही ११ वचनेकरी करुं नही करावुं नही १२ वचनेकरी करुं नही
अनुमोडुं नही १३ वचनेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही १४ वचनेकरी करुं न
ही करावुं नही अनुमोडुं नही १५ कायायेकरी करुं नही १६ कायायेकरी करा
वुं नही १७ कायायेकरी अनुमोडुं नही १८ कायायेकरी करुं नही करावुं नही
१ए कायायेकरी करुं नही अनुमोडुं नही २० कायायेकरी करावुं नही अनुमोडुं
नही २१ कायायेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही २२ मनेकरी वचने
करी करुं नही २३ मनेकरी वचनेकरी करावुं नही २४ मनेकरी वचनेकरी अनु
मोडुं नही २५ मनेकरी वचनेकरी करुं नही करावुं नही २६ मनेकरी वचनेकरी
करुं नही अनुमोडुं नही २७ मनेकरी वचनेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही २८
मनेकरी वचनेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही २ए मनेकरी कायायेकरी
करुं नही ३० मनेकरी कायायेकरी करावुं नही ३१ मनेकरी कायायेकरी अनु

मोडुंनही ३२ मनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही ३३ मनेकरी कायायें करी करुं नही अनुमोडुं नही ३४ मनेकरी कायायेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही ३५ मनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही ३६ वचनेकरी कायायेकरी करुं नही ३७ वचनेकरी कायायेकरी करावुं नही ३८ वचनेकरी कायायेकरी अनुमोडुं नही ३ए वचनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही ४० वचनेकरी कायायेकरी करुं नही अनुमोडुं नही ४१ वचनेकरी कायायेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही ४२ वचनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही ४३ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करुं नही ४४ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करावुं नही ४५ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी अनुमोडुं नही ४६ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही ४७ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करुं नही अनुमोडुं नही ४८ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही ४ए मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही.

हवे ए उंगणपचाश जंगना एकशो ने सडतालीश जंग देखाडवा सारुं सूत्रकार गाथा कहेछे. मूलः—पढमेक्को तिन्नितिआ, दोन्नि नवा तिन्नि दोनवा चेव ॥ कालतिगेणय गुणिया, सीयालं होइ जंगसयं ॥ ३४० ॥ अर्थः—पहेलो एक पछी त्रण त्रगडा पछी बे नवडा वली एक त्रगडो पछी वली बे नवडा एम अनुक्रमे मांमिये; पछी काल त्रिक साथे गुणाकार करिये एटले अतीत काले जे कस्चा तेनी निंदा करवी, वर्त्तमाने करवानुं संवर करवुं, अने अनागत ने पच्चरकाणे. यडुक्तं. अईयं निंदामि परुप्पन्नं संवरेमि अणागयं; पच्चखामि एम करतां एकशोने सडतालीश जंग थायछे. इहां एक जंग ते त्रिविध त्रिविधे थाय,तथा त्रिविध द्विविधे त्रण जंग थाय, तथा त्रिविध एकविधे त्रण जांगा थाय, अने द्विविध त्रिविधे त्रण जांगा थाय द्विविध द्विविधे नव जंग थाय, द्विविध एकविधे नव जंग थाय, एकविध त्रिविधे त्रण जंग थाय एकविधे द्विविधे नव जंग थाय एकविध एकविधे नव जंग थाय छे एम जंग जाणवा. एम सातशें नें पांत्रीश पण श्रावकना जेद होय तेज कहेछे.

मूलः—पंचाणुवयगुणियं, सीयाल सयंतु नवरि जाणाहि ॥ सत्तसया पण तीसा सावयवयगहणकालंमि ॥ ३४१ ॥ अर्थः—ए पूर्वोक्त एकशो सडतालीश जंगनुं पांचे अणुव्रतनेविषे प्रत्येके सद्भाव छे. ते श्रावकने व्रतग्रहणकालनेविषे पांच अणुव्रतना अंगीकारने प्रस्तावे पांच अणुव्रतनी साथे एकशो समतालीशनो गुणाकार करिये तेवारे नवरिके० अनंतर तुं जाण के सातशेने पांत्रीश जंग थाय छे. ॥ ३४१ ॥

हवे ए भंग यथार्थपणे जेणे जाण्या तेज पच्चखाणनेविषे प्रवीण जाणवा,एम कहेछे. मूलः—सीयालं भंगसयं, जस्स विसुद्धीइ होइ उवलद्धं ॥ सो खलुपच्चरका णे, कुसलो सेसा अकुसलाउ ॥३४३॥ अर्थः—ए पूर्वोक्त एकशो ने सडतालीश भंग ते जस्सके० जेने विशुद्ध निर्मलकारी पणे करी होय तेने विशुद्धपच्चखाण कहिये. अने तेज पच्चखाणनेविषे उपलब्ध एटले जाणपणे थया तेज खलुइति निश्चेकरीने पच्चखाणनेविषे कुशल माह्या जाणवा अने शेष थाकता ते चतुर जाणवा नही.

हवे मूल छ भंगना उत्तर एकवीश भंग देखाडेछे. मूलः—डुविहतिविहाइ छव्विय, तेसिं भेया कमे णिमे हुंति ॥ पढमेक्को डुन्नितिया, डुगेग दो छक्क इगवीसं ॥३४३॥ अर्थः—द्विविध त्रिविध जेनी आद्यमांछे एवाजे छ भंग तेसिंके० तेना भेद ते कमेणके० अनुक्रमे इमेके० ए हुंतिके० थायछे. पढमेक्कोके० पहेलुं एको, पछी बीजा बे कोष्टकमां त्रण त्रण वली एक कोष्टके बगडो मांमीये एवुं एककोष्टक, पछी बे कोष्टके छ छ मांमिये तेवारे सर्व एकवीश भंग होयछे. ए स्थापनानो उच्चार आवीरीते करिये. द्विविध त्रिविधे एक भंग, द्विविध द्विविधे त्रण भंग, द्विविध एकविधे त्रणभंग एकविध त्रिविधे बे भंग, एकविध द्विविधे छ भंग, एकविध एकविधे छ भंग.

हवे डुविह तिविहाइ इत्यादिक भंगना समूहे करीने श्रावकने योग्य पांच अणुव्रतादिकनी संतति तेना भंगनी देवकुलिका सूचवी ते देवकुलिका एकेक व्रत प्रत्ये कही. जे षड्भंगी एकवीश भंगी नवभंगी उगणपचाश भंगी तेणे करी नि पजे अने सर्व देवकुलिकाने विषे प्रत्येके त्रण त्रण राशी थाय ते आवीरीते; धुर मां गुणराशी, वचमां गुणकराशी अने छेहडे गतागत राशी.

त्यांपहेली एजदेवकुलिकानेषम्भंगीप्रमुखनेअनुक्रमे विवक्षितव्रतना भंगनीसर्वसंख्या रूप एवंकारके०जे राशी ते देखाडणहार छतो पहेलो षम्भंगीए एवंकारनी राशी देखाडेछे.

मूलः—एगवएछभंगा, निद्दिठा सावयाण जे सुत्ते ॥ ते च्चिय वयवु ढीए, सत्तगुणा छ जुआ कमसो ॥ ३४४ ॥ अर्थः—श्रावकना एक व्रतनेविषे छ भंग जे आवश्यकादिक सूत्रनेविषे कह्या तेज मृषावादादिक एकेक व्रतनी वृद्धिए सातगुणा अने छ ए सहित कस्या छता अनुक्रमे भंगना राशीनी संख्या उपजावे. इहां भावार्थ एम छे के पहेला प्राणातिपात व्रतनेविषे छ भंग, ते अवधे स्थापिने सातगुणा करीए; ते वारे बेंतालीश थाय. तेमां छ भेलिये तेवारे अडतालीश थया. वली एने सातगु णा करीने छ भेलियेः एम अनुक्रमे करतां अग्यारमी वेलाए १३८४१२८४२०० एटला आवे. अने ६ ४८ ३४२ इत्यादिक बारेराशी उपर नीचे एवीरीते थापीये तेवारे

अर्द्धि देवकुलिकानी नूमिका समान देखाय, तेने खंमदेवकुलिका एम कहिए. एट ले षमनंगीनी देवकुलिका जेम उपजे तेम देखाडी. ॥ ३४४ ॥

हवे एकवीश नंगनी देवकुलिका देखाडेछे. मूलः—इगवीसं खलु नंगा, निद्दिठा सावयाण जे सुत्ते ॥ तेच्चिअ बावीसगुणा, इगवीसं पक्खिवेयव्वा ॥३४५॥ अर्थः—निर्ग्रंथकी एकवीश नंग जे श्रावकने सूत्रमां कह्याछे, तेनेज बावीशगुणा करीने तेमांहे एकवीश नेलिये. इहांपण एकवीशादि अनुक्रमे अग्यार वार गुणाकार करतां अग्यारमी वेलाए १२८५५००२६३१०४ए२१५ थाय. एम एकवीश नंगीये बीजी देवकुलिका होय. ॥ ३४५ ॥

हवे नव नंगिये जे थाय ते देखाडेछे. मूलः—एगवएनवनंगा, निद्दिठा सावयाण जे सुत्ते ॥ तेच्चिय दसगुणकाउं, नवपक्खेयम्मि कायव्वा ॥३४६॥ अर्थः—एक व्रतनेविषे नव मूल नंग जे श्रावकने कह्याछे, तेने दशगुणा कस्याथका नेवुं थाय; तेमां नव मेलविये तेवारे नव्वाणुं थाय. एम अनुक्रमे बीजीवार नव्वाणुंने दशे गुणतां नवशेने नेवुं थाय. तेमां नव नेलिये तेवारे नवशे ने नव्वाणुं थाय. एम अग्यारमि वेलाए एएएएएएएएएएएए एम ए त्रीजी देवकुलिका एमां नव नंगीना नंग देखाड्या.

हवे उंगणपचाश नंगनी संख्या देखाडेछे. मूलः—इगवन्नं खलु नंगा, निद्दिठा सावयणा जे सुत्ते ॥ तेच्चिअ पन्नासगुणा, इगुंवन्ना पक्खि वेयव्वा ॥३४७॥ अर्थः—निर्ग्रंथकी उंगणपचाश नंग श्रावकनें सूत्रमांहे जे कह्या. छे तेनेज पचाश गुणाकरी उंगणपचाशमांहे नेलविये तेवारे २४एए थाय. एम अनुक्रमे करतां अग्यारमी वेलाए २४४१४०६२४८एएएएएएएएएएए एटला नंग थाय. ए चोथी उंगणपचाश नंगनी देवकुलिका कही. ॥ ३४७ ॥

हवे पांचमी एकशोने सडतालीश नंगनी देवकुलिका देखाडेछे. उक्तंचः—सीयालं नंगसयं, वयवुड्डइयालसय गुणंकाउं ॥ सीयालसएण जुअं, सव्वग्गं जाण नंगाणं॥ ॥ १ ॥ अर्थः—एगाथा बीजी क्यांक्यां प्रत्यंतरे देखाती नथी; परंतु पांचमी देवकुलिका एणेकरी थाय. ते कारणे वखाणिये छैये. एकशोने सडतालीश नंगा व्रतनी वृद्धि छे, तेने एकशो अडतालीशगुणाकरीने एकशोने सडतालीश युक्त करिए तेवारे सव्वग्गके० एवंकारे ते तूं जाण. एम गुरु शिष्य प्रत्ये कहेछे, एनी नावना एम छे के एकशो सडतालीश, तेने जेवारे व्रतनी वृद्धिये एकशोने अडतालीश गुणा करीए; पछी एकशोने सडतालीशे युक्त करीए तेवारे २१ए०३ नंग थया.

एम वृद्धियेकरतां अग्यारमीवेलाए ११०४४३६०७७१९६११५३३३५६९५७६९५ एटला थाय ए संख्याए पांचमी देवकुलिका जाणवी.

ए पांचे देवकुलिका कही ते पांचे खंमदेवकुलिका जाणवी. सांप्रत संपूर्ण देव कुलिकानो अवसर त्यां व्रत व्रत प्रत्ये एकेक देवकुलिकाने सद्भावे करी षड्भंगी प्रमुख नेविषे प्रत्येके प्रत्येके बार बार देवकुलिका उपजे तेवारे बारपंचां शाठ सर्वे म ली देवकुलिका थाय. ते सर्वे देवकुलिका इहां कहिये, तो घणो विस्तार थाय; तेथी लगारेके देशमात्र देखाडवासारुं षड्भंगीनेविषे बारमी देवकुलिका कहेनार छतो ग्रंथकार एक द्विकादि संयोगना कहेनार जे पहेली त्रण राशी कही हती ते मांहे ली गुणाकारक राशी आणवा सारु उपाय कहेछे.

मूलः—एगाईएगुत्तर, पत्तेयपयंम्मि उवरिपक्खेवो ॥ एक्केकहाणिअवसाण संखया हुंति संयोगा ॥२४०॥ अर्थः—जेटला पदोनो एक द्विकादिक संयोग आणवा वांछि ए, तेवे प्रमाणेज एक आदेदेइने एकोत्तर वृद्धिए करीने उपर उपर क्रमे क्रमे स्थापना स्थापिये. एम आंकनी स्थापनाकरी प्रत्येके व्रत बारनेविषे उपरे पखेवोके० उपरला जे आंक तेमां नीचला घालिये एरीते एकेकहाणि एटले एकेक उपरना आंकनी हाणी करतां वृद्धि कहिये; ते जेम थाय तेम आंकने घालवे करवी, ते ज्यांलगे अवसाणसंखयाके० छेहडे समस्त आंकनुं प्रक्षेपरूप एतावता सर्वे आंक पूरा घाल्या तेवारे जे आंक थाय तेटला अनुक्रमे एक बे त्रण प्रमुखपदनुं मेलववुं त द्रूप थाय तेसंयोग कहिये. ते आवीरीतेः—

पहेलो एक आगल बीजो ते ज्यांसुधी छेहडे बार आंक आवे, हवे एको, बग डामां प्रक्षेपे तेवारें त्रण थाय. ते त्रण उपरला त्रण मांहे घालिये तेवारे छ था य, ते उपरला चारमांहे घालिये तेवारे दश थाय. एम दशने पांचमां घालतां पन्नर थाय; पन्नरने छमां नाखतां एकवीश थाय, तेने सातमां नाखतां अठ्ठावीश थायः तेने आठमां नाखतां छत्रीश थाय. तेनेनवमां नाखतां पिस्तालीश थाय,तेने दशमां ना खतां पंचावन्न थाय, तेने अग्यारमां नाखतां छासठ थाय. हवे उपरे बार छेहडे आ व्या ते तेमज राखिये. जेकारणे कह्युं के एकेकहाणि एवा वचनथकी ए गुणका रक राशीनी स्थापनाछे.

वली प्रकारांतरे करी देखाडेछे. उभयमुहंरासिडुगं एनुं वखाण करेछे. इहां य द्यपि बारमी देवकुलिका कहेवा मांडी तो पण संक्षेपने अर्थे पंच अणुव्रत आश्री भावना एम छे उभयमुहंके० बेहुए करी बे राशी मांडिये, ते आवीरीते. एक

१२३४५ बीजी ५४३२१ इहां करण गाथानो व्यापार न करवो; परंतु द्विकसंयोगे दश ते आम जे, नीचेछे एकडो, तेना आगल बगडो, ते बगडा साथे उपरछे चो गडो, तेना धुरे छे पांचडो, ते पांचे वेंहेचिंये तेवारे अढी अढी आवे, तेने उपरला चोगडासाथे गुणाकार करिए तेवारे चार अढीए दश. ए द्विक संयोगी थया.

ते हवे दशने बगडा आगल त्रगडोछे तेनी साथे वेंचिए तेवारे सत्रिया त्रण नाग थाय, तेनी साथे उपरलो त्रगडो गुणिये तेवारे त्रिक संयोगे पण दश थया. ते त्रगडा पछी चोगडो छे तेनी साथे दशने वेंचिये तेवारे अढी आव्या, ते उपरना बगडा साथे गुणिये तेवारे अढी दू पांच थया. ए पांच नंग चतुसंयोगे थया. ते वली चोगडा पछी पांचडो छे तेनी साथे वेंचतां एकज आवे तेने उपरला एकमा साथे गुणतां एकेकुं एक आवे, एटले पंच संयोगे एकज नंग थाय. ॥३४८॥

वली प्रकांतरे करी कहेछे. मूलः—अहवा पयाणि ठिविउं, अक्के घेत्तूण चारणं कुज्जा॥ एक्कगडुगाइजोगा, नंगाणं संखकायव्वा ॥३४ए॥ अर्थः—अथवा शब्द प्रकारांतरे छे. पयाणिके० विवक्षित व्रत लक्षण ते स्थापिने पछी अक्केघेत्तूणके० अक्षत ले इने अनुक्रमे एक द्विकादिक व्रतनेविषे उच्चारणके० मेलवो करिए, तेवारे एक द्विका दिकना योग थकी नंगनी संख्या करवी. इहां नावना एमछे; पांच पदोने एकेक संयोगे पांच नांगा, तेनी स्थापना ११११११ द्विक संयोगे दश; ते आवीरीते. एक चारणाए चार नंग, द्विक चारणाए त्रण नंग, त्रिक चारणाए बे नंग, चतुष्क चा रणाए एक. ए पहेली स्थापना एम. हवे त्रिक संयोगे दश. तेमां एक चारणाये छ, द्वितीय चारणाए त्रण, तृतीय चारणाए एक. ए बीजी स्थापना. हवे चतुष्क संयोगे एक चारणाए चार द्वितीय चारणाए एक एम पांच थाय. एनी त्रीजी स्था पना, अने पांचने संयोगे चारणानो अनाव छे माटे एकज नंग होयछे. कोइ प हेलुं व्रत आदेदेइने अंगीकार करे ते ज्यां पांचमो व्रत त्यांसुधी ए चोथी स्थापना. हवे बारमी देवकुलिका तेनी गुणकारकराशी देखाडेछे. ॥३४ए॥

मूलः—बारसछवचीविय, वीसहिया दोय पंच नव चउरो ॥ दोनव सत्तय चउदोन्नि नवय दोनवय सत्तेव ॥ ३५० ॥ बार, छाशठ, बशेंने वीश, तथा पांच, नव, चार, ते. ४ए५ तथा बे, नव, सात, जोपण सूत्रमां एमछे तो पण आंकनी वांकी ब्रति थायछे तेथी ७ए२ समजवा. ए गाथार्थ ए देवकुलिका पाछलछे त्यांथकी जोइ परीक्षा करजो.

मूलः—पण नव चउरो वीसाय दोन्निछवट्ठि बारसेक्कोय ॥ सावयनंगाणमिसे, सवाणवि हुंति गुणकारा ॥३५१॥ अर्थः ए पण एमज क्रमे करी जाणवुं. एम आ

गल पण श्रावकना भंग जे छ पहेला अने पछी छत्रीश, एम बशेने सोल इत्यादिक बारमी देवकुलिकाने अनुक्रमे करीने गुणाकारक राशी जाणवी ॥ ३५१ ॥

हवे गुण्यराशि कहेछे. मूलः—छच्चेवय छत्तीसा, सोल दुगं चेव छ नव दुगमिक्कं॥छ सत्त सत्तसत्तय, छप्पन्न छसहि चउछठे॥३५२॥छत्तीसा नवनउई,सत्तावीसाय सोलछन्नउई॥ सत्तय सोलस भंगा, अठमगणे वियाणाहि ॥३५३॥ छाणउई छाहत्तरि, सत्तदुसुन्नि क हुंति नवमंमि ॥ छाहत्तरि इगसही, छायालासुन्न छ च्चेव ॥३५४॥ छप्पन्न सुन्न सत्तय, नवसत्तावीस तहय छत्तीसा ॥ छत्तीसा तेवीसा, अडहत्तरि छहत्तरिगवीसा ॥३५५॥ अर्थः—ए चार गाथाए करी कहिये ते आवीरीतेः—पहेला छ, बीजा छत्रीस त्रीजा बशोने शोल, चोथा बारशें छनुं, पांचमा सातहजार सातशो ने छहोत्तेर, छठा छेतालीश हजार छशें ने छपन्न, सातमा बे लाख उंगणाएंशीहजार नवशें ने छत्रीश, आठमा शोललाख उंगणाएंशिहजार छशो ने शोल, नवमा एकक्रोड सित्तोतेर हजार छशेने छन्नु, दशमो छक्रोड चार लाख बासठहजार एकशोने छहोत्तेर, अग्यारमा छत्रीशक्रोड सत्तावीशलाख सत्ताणुहजार ने छपन्न, बारमा बे अब्ज सत्तर क्रोड सडसठलाख ब्याशी हजार त्रणशोने छत्रीश. ॥ ३५२ ॥ ३५३ ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥

हवे ए राशिने आणवानो उपाय देखाडेछे. उक्तंच पढमवएछब्भंगा, छहिंगुणि याय बारसवेगाणा ॥ संजोगेहिय गुणिया, सावयवयभंगया हुंति ॥ १ ॥ अर्थः—पहेला व्रतनेविषे छ भंग तेने छ गुणा करिये तेवारे छत्रीश थायछे; वली छत्रीशने छ गुणा करिए तेवारे बशोने शोल थाय. एम वारंवार ज्यांसुधी बारगुण्य राशि संपूर्ण थाय, त्यांसुधी करिये. ते हवे छ ने छत्रीश प्रमुख गुण्यराशि अनुक्रमे बार छास छ प्रमुख बारसवेगाणा एटले बारे स्थानक गुणाकारक राशिसाथे गुणतां छतां ७२,१,१२३७६,२४४५२०,३,२६४१०९५२०,४,६१५०५९२५,४३११०१४०६,२२१७०९३१२,७,८३१४०९९२०,८,२२१७५९३१२०,९,३९९०७६७६१६,१०,४३५३५६४६६७२,११,२१७६८२३२६,१२, एरीते श्रावकने व्रतना भंग थायपण विस्तारना भयथकी सूत्रकारे कह्या नथी. अने व्रतिनो करनार शिष्यना अनुग्रहने अर्थे चार गाथाये देखाडे छे. बाहत्तरी १ छसत्तरि, २ तेवीसा २ सुन्नदुपणसीयाला ३ वीसा पनरसचउसठि ४ दुनवपणसीइपन्नरछय ५ ॥ १ ॥ चोयालसयंदसइकतीसचउ ६ बारतिनवसयराय ॥ इगडुड ७ वीसानवनव, चालीसा एगतेयासी ८ ॥२ ॥ वीसइगवीसनवसयरि एगबावीस ए सोलछगसत्त ॥ छसन्नसुन्ननवनव, तिन्निअदसम म्मि ठाणम्मि १० ॥३॥ बाहत्तरिछायाला, छप्पन्नतिपन्नतिचउ ११ छत्तीसा॥तेवीसाअ

उद्दत्तरि, छद्दत्तरीएगवीसाय ॥१३॥४॥ एम एकवीश भंगी प्रमुखमां भांगाने नाखवे प्रत्येके बार बार देवकुलिका जाणवी. सर्वमली सात देवकुलिका थाय.

हवे डुविह् तिविहाइणछाहाहुंति एवुं जे प्रथम कह्युं हतुं ते वखाणिये छैये. मूलः–डुविह्तिविहेण पढमो, डुविह्डुविहेण बीयउ होइ ॥डुविहं एगविहेणं, एगविहं चेव तिविहेणं ॥३५६॥ एगविहं डुविहेणं, एक्केकविहेण छठ्ठउ होइ ॥ उत्तरगुणसत्त मउ, अविरयउ अछमो होइ ॥३५७॥ अर्थः–द्विविध त्रिविधे पहेलो भंग, द्विविध द्विविधे बीजो भंग, द्विविध एकविधे त्रीजो भंग, एकविध त्रिविधे चोथो भंग, एकविध द्विविधे पांचमो भंग, एकविध एकविधे छठो भंग अने जेणे उत्तरगुण पडिवज्यो ते सातमो भंग अने अविरतिनो आठमो भंग होय. ए बे गाथा प्रथम वखाणी छे; माटे इहां शब्दार्थमात्र स्थानकने अशून्य राखवासारु लख्योछे. ॥३५६॥३५७॥

हवे पांच अणुव्रतनी देवकुलिका कहेवासारु पहेली एकादिक संयोगना परिमाणनी कहेनार गुणाकारक राशि कहेछे. मूलः–पंचण्हमणुवयाणं, एक्कगडुगतिगच उक्कपणगेहिं ॥ पंचगदसदसपणए कगोयसंजोय नायव्वो ॥३५८॥ अर्थः–पांच अणुव्रतने अनुक्रमे एक संयोगे, द्विक संयोगे, त्रिक संयोगे, चतुःसंयोगे, पंचक संयोगे पंचकादिक एटले पांच दश दश पांचने एक संयोगे. ए गुणाकारक राशि जाणवी.

हवे पंचम देवकुलिकानी गुण्य राशि कहेछे. मूलः–छच्चेवय छत्तीसा, सोलडुगं चेव छनवडुगएक्कं ॥ छस्सत्तसत्तसत्तय, पंचण्हवयाणगुणणपयं ॥३५९॥ अर्थः–पहेला छ पछी नीचे छत्रीश, बसोने सोल, बारशोने छन्नु, सातहजार सातशोने छोतेर पांच व्रतना ए गुणवाना पद गुण्यराशि जाणवी. ॥३५९॥

हवे त्रण गाथाए करी पांचमी देवकुलिकानी आगतराशि कहेछे. मूलः–वयए क्कगसंजोगा एहुंति पंचण्हतीसई भंगा ॥ डुगसंजोगदसण्हंपि तिन्निसछासया हुंति॥ ॥३६०॥अर्थः–पांच व्रतने एक एक संयोग द्विविध त्रिविधादिक छ भंग थाय अने छ ने पांचगुणा करिये तेवारे त्रीश थाय; एकेक संयोगे पांच अणुव्रतना त्रीश भंग. यथा एम एक व्रतनेविषे द्विकसंयोगे दश भंग होयछे, तेना उत्तरभंग त्रणशो ने साठ होय. ॥ ३६० ॥

मूलः–तिगसंजोग दसण्हं, भंगसयाएक्कवीसईसछा ॥ चउसंजोगप्पणगे, चउस द्विसयाणिअसीयाणि ॥३६१॥ अर्थः–त्रिकसंयोगे दश भंग होय तेना वली उत्तर भंग एकवीशशें ने साठ थाय अने चतुःसंयोगे पांच भंग तेना विषे उत्तरभंग छ हजार चारशो ने एंशी थायछे. ॥३६१॥

मूलः—सत्तत्तरीसयाइं बहत्तरीइंतु पंचगे हुंति ॥ उत्तरगुणअविरयमे लिआण जाणाहि सव्वग्गं ॥३६१॥ अर्थः—सातहजार सातशोने बोतेर. एटला पंचकसंयोगे एक भंग तेना उत्तर भंग थाय. अने उत्तरगुण तथा अविरतिना बे भेद मळ्या ते वारे अनंतरोक्त त्रीश प्रमुख भंग तेनी सर्व संख्या जाण.

हवे ए त्रण गाथानी भावना एमछेकेः—कोइएक पांच अणुव्रत पडिवजे ते पांच एकेक संयोगे थाय. अने एक एक संयोगे द्विविध त्रिविधादिक छ भंग थाय; तेने छ गुणा करतां छत्रीश थाय. एक संयोगे एटला थया, एकनेविषे द्विकसंयोगे छत्री श तेवारे थुरलाव्रत संबंधी एक थुरलो भंग छेज अने मृषावादना छ भंग.॥३६१॥

हवे सर्वाग्रे सर्व संख्याये जे थाय ते कहेछे. मूलः—सोलसचेव सहस्सा, अट्ठस याचेव हुंति अट्ठहिआ ॥ एसो वयपिंडओ, दंसणमाईउ पडिमाउ ॥ ३६३ ॥ अर्थः— सोलहजार आठशोने आठ ए तेने पूर्वोक्त पांच व्रतनो समुदाय अर्थ जाणवो. अ ने दर्शनादिक प्रतिमाना अभिग्रहनो विशेष छे पण ते व्रत कहिये नही. ॥३६३॥

हवे बारव्रतना सर्व मळी जेटला भंग थाय ते कहेछे. मूलः—तेरसकोडिसयाइं, चुल सीइजुआइं बारसयलक्खा॥सत्तासीइ सहस्सा,दोयसया तह दुरग्गाय॥३६४॥अर्थः— तेरसो कोडी ते चोराशी कोडिए करी सहित वळी बारलाख सत्ताशीहजार ब सोने बे अधिका एटले संक्षेपेकरी गाथानो अर्थ लख्योछे के जे विस्तारथी थाय. तेणे बृहद्वृत्ति थकी जोवुं. अने नष्टउद्दिष्टादिक जे जाणवानी वांछा करे तेणे गुरु सेवा करवी एटले गुरु एनो भावार्थ शीखवशे. ॥३६४॥ इतिगाथा पंचत्रिंशिकार्थ॥

अवतरणः—अट्ठारस्सपावठाणाइंति एटले अढार पापस्थानकनुं बशो ने साडत्री शमुं द्वार कहेछे. मूलः—सव्वं पाणाइवायं, अलियमदत्तं च मेहुणंसव्वं ॥ सव्वं परिग्गहं तह, राईभत्तं च वोसिरिमो ॥३६५॥ अर्थः—सर्व प्राणातिपात ते एकेंद्रिय आदे दे इने पंचेंद्रिय पर्यंत जे जीव ते प्राणीउनो अतिपात एटले विनाश ते प्राणातिपा त जाणवुं, बीजुं क्रोधादिके करी अलिक जे जूठुं बोलवुं ते मृषावाद जाणवुं, त्रीजुं ज्यां अण दीधी पारकी वस्तुनुं लेवुं ते अदत्तादान, चोथुं स्त्री पुरुष लक्षण तेनुं जे क र्म ते मैथुन नर देव अने तिर्यंच संबंधी जाणवुं, पांचमुं परिके० समस्त प्रकारे ग्रहिए तेने परिग्रह कहिए. ते समस्त धन धान्यादिकजे छे ते अपरिमाणपणे राखिए. ते अमे वोसरिये छे. तहके० तेमज छठुं रात्री संबंधीजे भक्त अशनादिक ते रात्रीभक्त जाणवुं. तेने पण अमे वोसरिये छे. ॥ ३६५ ॥

मूलः—सव्वं कोहं माणं, मायं लोहं च रागदोसेय॥कलहंअब्भक्खाणं, पेसुन्नं परपरी

वार्यं ॥ ३६६ ॥ अर्थः—सातमो समस्त क्रोध, आठमो मान, नवमी माया,दशमो लोज ए चार प्रसिद्धछे, अग्यारमो राग ते अनिष्वंग लक्षण, बारमो द्वेष ते अप्रीति लक्षण, तेरमुं कलह वचन ते कलहादिक अनेक प्रकारे छे, चउदमुं अन्याख्यान ते अनेरातणे कारणे अणछुंता दूषणनुं आपवुं, पन्नरमुं पैशुन्यपणु तेने कहिये जे चाडि चुगलीनु करवुं, सोलमुं परपरिवाद ते बीजानां दूषण जे बीजाने पठवाडे कहीयें.

मूलः—माया मोसं मिछा, दंसणसल्लं तहेव वोसरिमो॥अंतिमऊसासम्मि, देहंपि जिणाइपच्चरकं ॥ ३६७ ॥ अर्थः—सत्तरमुं मायामोस एटले स्थापणमोसो अथवा मायायेंकरी सहित जे मृषावाद, जे बीजाने ठगवाने अर्थे करिए ते मायामृषा कहिये, अढारमुं मिथ्यादर्शन जे कुगुरु कुदेवने कुधर्म लक्षण ते रूप शल्य ते मिथ्यादर्शन शल्य कहिए, ए अढार पापस्थानक कर्म बंधनां कारण जाणी एथी अमे वोसरिये छइये. तेमज वली अंतिमके० छेहेला श्वासोश्वासने विषे ए अमारो देह पण जिनादि एटले जिनशब्दे श्रीअरिहंत आदिशब्दथकी सिद्ध केवली तेने प्रत्यक्षे एवो देह पण वोसराविये छैये. ॥ ३६७ ॥इतिगाथा त्रयार्थ ॥

अवतरणः—मुणिगुण सत्तावीसंति एटले मुनि जे साधु तेना सत्तावीशगुणनुं बशेने आडत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—छव्वय छकायरस्का,पंचिंदिय लोहनिग्गहो खंती॥ जावविसुद्धी पडिलेहणाइ करणे विसुद्धीय ॥ ३६८ ॥ अर्थः—प्रथम छ व्रत तेमां पांचतो प्राणातिपात विरमणादिक ने छठुं रात्रीजोजन विरमण जाणवुं, अने छ काय ते पृथ्वीकायादिक पांच तथा छठुं त्रसकाय, एरीते छकायना रक्षक तथा स्पर्शादिक पांच इंद्रियो,ने छठो लोज तेनो निग्रह एटले रुंधवुं, ए अढार थया, ओगणीशमुं क्षमानुं करवुं, वीशमुं जावनी विशुद्धि, एकवीशमुं प्रतिलेखनादिक जे साधुनुं करण कर्त्तव्य तेनेविषे विशुद्धि निर्मायपणु. ॥ ३६८ ॥

मूलः—संजम जोएजुत्तय,अकुसल मण वयण काय संरोहो॥ सीयाइपीडसहणं, मरणं उवसग्गसहणं च ॥३६९॥ अर्थः—बावीशमुं संयमना जे योगके०व्यापार तेणे करी सहितपणु अने अकुशल एटले माठा जे मन वचन अने कायाना व्यापार तेनुं संरोहके० रुंधन करवुं, ए मनादिक त्रणछे, माटे त्रण जेद थया; तेथी सर्व मली पच्चीश गुण थया. छवीशमुं वली शितादिक पीडानुं सहन करवुं, सत्तावीशमुं मरणांत जे देवादिकना करेला उपसर्ग उत्पन्न थाय तेनुंसहन करवुं, इति गाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—एगवीसं सावयगुणाणंति एटले श्रावकना एकवीश गुणोनुं बतोने उंगणचालीशमो द्वार कहेछे. मूलः—धम्मरयणस्स जुग्गो,अरकुद्दो रूववं पगइसोमो॥

लोयप्पियउअक्रूरो,निरू असढो सदक्खिन्नो ॥२४०॥ अर्थः—परतीर्थीकना प्रणीत जे अनेरा धर्म ते धर्मोमांहे प्रधानपणाथकी जे रत्ननीपरे रत्न तेने धर्मरत्न कहिये; ते श्रीजिनेंद्रनो प्रणीत देशविरति प्रमुख जे धर्म तेने योग्य एवा लक्षणे सहित जे थाय तेहिज देखाडेछेः—एक अखुद्दो तेमां क्षुद्र शब्दे दुष्टस्वनाव कहिए; ते जेमां न होय ते अक्षुद्र. गंजीर होय तेनी सूक्ष्ममति होय. तेणेकरीने ते सुखे धर्मनो प्रति बोध पामे, बीजुं रूववं ते संपूर्ण अंगोपांगपणायेकरीने मनोहर आकारनो धरनार ते रूडे आचारे प्रवर्त्ते; तेरीते प्रवर्त्ततो थको नव्यजीवोने धर्मनेविषे गौरव उपजावतो प्रनावक थाय. इहां कोइ कहेशे के नंदिषेण हरिकेशीबल प्रमुख ने कुरूप छतां पण धर्मनी प्रतिपत्ति सांजलियेछइये; तो केम तमे रूपवंतनेज अधिकारी कहोछो? तेनो उत्तर कहेछे. इहां रूपवंत बे प्रकारेछे. एक सामान्य रूपवंत ने बीजो अतिशय रूपवंत; तेमां जे संपूर्ण अंगोपांग पांचेइंद्रिये परवर्गो होय ते सामान्य रूपवंत कहिए, तेवुं नंदिषेणादिकने विषे पण हतुं तेथी अविरोधछे, तथा वली शेष गुण होय तो मात्र एक कुरूपपणानो दोष न जाणवो. अतिशयरूपना धरनार तो श्री तीर्थंकरज होय, यतः॥सव्वसुराजेरूवं, अंगुठपमाणयंविउविज्जा॥ जिणपायंगुठपइ. नसोहए जह तहिंगालो ॥ १ ॥ एवा वचन थकी यद्यपि श्रीनगवंत समस्त रूपनिधान थाय तोपण जे रूपे देशकाल वयने विषे वर्त्तमान छताने जेने लोक रूपवंत कहे ते इहां लेवो,त्रीजुं पगइसोमोके० प्रकृति एटले स्वनावेज सौम्य अ निषण आकारनो धरनार होय, जेने देखवाथी लोकोने विश्वास उपजे, प्रवाहे एवाने विषे पाप व्यापार संजवे नही अने तेवा प्राणीनो सुखेथी बीजा पण आश्रय करे. चोथुं लोगप्पियउ एटले इहलोक अने परलोकनेविषे जे विरुद्धाचरण तेना वर्जवा थकी दानादिक गुणेकरीने लोकने प्रिय होय ते धर्मनेविषे बहु मान उपजावे, पांचमुं अक्रूरो एटले त्यां जे माठा अध्यवसायनो धरनार होय ते पारकां छिद्र जोय ते पुरुषनुं सपाप चित्त होय अने तेना करेला अनुष्टान पण सफल नथाय, माटे ते अक्रूरज होय. छठुं नीरू एटले इहलोक तथा परलोकना अपायथकी बीहितो रहे एवो जे होय ते कारण छते पण निःशंकपणे पापनेविषे प्रवर्त्ते नही, सातमुं अशठ एटले कपटे करी रहित छतो अनुष्ठाननो करनार होय, केमके जे प्राणी कपटे करी सहित होय ते परने वंचवानेविषे चतुरपणाने लीधे सर्व लोकोने अविश्वासनुं स्थानक थाय, आठमुं सदक्खिन्नो एटले पोताना कार्यने परिहारे पारकां कार्य करवाने विषे रसिक चित्त होय ते समस्त लोकने अनुवर्त्तनीय थाय. ॥ २४० ॥

मूलः—लज्जालुउ दयालू, मझ्झो सोमदिठ्ठि गुणरागी॥सक्कहसपरकजुत्तो, सुदीहदंसी विसेसन्नू ॥ ३७१ ॥ अर्थः—नवमो लज्जानो धणी ते अकार्य करवानी वातमां लज्जा पामे, पोतेजे व्रत नियम अंगीकार कर्यांछे ते छांमे नही, दशमो दयालु एटले दयावंत होय. दुःखी प्राणियोने देखी तेनां दुःख नांगवाने विषे अनिलाप करे. केमके जे दयाछे ते धर्मनुं मूलछे. यतः दीनहीनं जनं दृष्ट्वा, दया यस्य न जायते॥ सर्वज्ञनाषितोधर्म्म स्तस्य चित्ते न विद्यते ॥१॥ अग्यारमो मझ्झो एटले मध्यस्थ होय, राग द्वेषे करी रहित छे जेनी बुद्धि, एवो जे होय ते अरक्तअद्विष्टपणा थकी सर्वने वल्लन होय,बारमो सोमदिठ्ठि एटले कोइने पण उद्वेगनो करनार न होय एवो जे होय ते प्राणीउने दर्शनमात्रे करी प्रीति उपजावे, तेरमो गुणरागी एटले गुण जे गांनीर्यपणुं, थिरतापणुं, धैर्यपणुं, औदार्यपणुं इत्यादिकनेविषे राग करे एवोजे होय ते गुणना पक्षपातपणाने लीधे जे ज्ञानादिक गुणे सहित गुणवंत होय तेनेविषे रागकरे, निर्गुणनी अपेक्षा करे; चउदमो सक्कहसुपरकजुत्तो एटले सदाचारीपणाये करी नलीज वात करे पण नूंमी वात मात्र नज करे ते सक्कह एवा जे मित्र तेणे सहित अथवा धर्मबाधानो परिहरणहार जे परिवार तेणे करी युक्त होय. एवाने कोइ उन्मार्गे पमाडी शके नही. एक वली नली कथानो करनार ए जुदो गुण कहेछे अने सुपक्खयुक्त एटले नला विनयादिक गुणे सहित एवा परिवारे युक्त ए जूदो गुण मानेछे; अने तेने बदले मध्यस्थ अने सोम्यदृष्टि ए बेने एक गुणकरी मानेछे, पन्नरमो सुदीहदंसी एटले घणा विचारकरी जे कार्य परिणामे रुडुं होय तेवा कार्यनो करनार परिणामिकी बुद्धिये सहित थको इह लोक संबंधी जे कार्यकरे ते पण विचारीने करे, सोलमो विसेसन्नु एटले सारा ने मालाना विनागनो जाण होय पण जे गुण दोषना विनागनो जाण न थाय. ते दोपने गुणपणे करे, अने गुणने दोष पण करे. ॥ ३७१ ॥

मूलः—वुड्ढाणुगो विणीउ, कयन्नुउ परिहियछकारीय॥तहचेव लद्धलरको, इगवीस गुणो हवइ सड्ढो ॥३७२॥ अर्थः—सत्तरमो वृद्धानुग एटले वृद्धते जेनी गुण उपार्जवाने अर्थे परिणत मतिछे तेनो अनुग एटले सेवनार एटले वडेरानो सेवनार तेनो कथनकारी जे होय तेने आपदा न आवे; यतः यदेकः स्थविरो धत्ते, नतत्तरुणकोटयः॥नृपं यो लत्तया हंति, वृद्धवाक्यात्सपूजितः ॥१॥ ए दृष्टांत जाणवुं. अढारमो विणीउ एटले विनीत गुरुजनने गौरवना करनार एवा विनीतने सर्व समीहित संप्राप्ति होय ते दुर्विनीतने नथाय. यतः वीणीउ आवहइसिरि लहइ विणीउ जसंच किंचिंच ॥ न

कयाइ डविणोर्ड सकज्ज सिद्धिं समाणेइ ॥१॥ उगणीशमो कयन्नुउ एटले कृतज्ञगुण नो जाण. एटले कोइके थोमो पण इहलोक संबंधी अथवा परलोक संबंधी उप कार कीधो होय तो तेनो करेलो उपकार उलवे नही अने जे कृतघ्नी होय ते इहां सर्वत्र निंदा पामे. वीशमुं परिहियबकारिय एटले परने कारणे हितार्थनां कामनो कर नार होय अने पहेलुं जे सदाक्षण कह्युं ते अनेराना कह्याथी काम करे अने इहांतो परने हीतार्थकारी ते पोतेज बीजाना हितने अर्थे प्रवर्त्ते. एटलो ए बे ने मांहोमांहे नेदबे. जे स्वन्नावेज परना कह्याविना परहितार्थकारी थाय ते निरीह पणाये करीने अन्यने धर्मने विषे स्थापे; एकवीशमुं तहेवके० तेमज वली लद्धल क्खोके० लब्ध, लक्ष्य एटले लाध्योबे लक्ष्य जेणे एटले शिखवाने योग्यजे अर्थ अनु ष्ठान विशेष ते लब्ध लक्ष्य. एतावता पूर्वाभ्यस्तनी परें सर्व धर्मकृत्य तत्काल आ दरे एवो जे होय ते एवाने वांदणो पमिकमणो पमिलेहण प्रमुख शिखावी शकिये. एवा ए एकवीशगुणेकरी सहित श्रावक थाय. ॥२४२॥ इतिगाथात्रयार्थ ॥

अवतरण—तेरिछीणुक्किठगप्नवियत्ति एटले तिर्यंचने उत्कृष्टे गर्नस्थितिनुं बसोने चालीशमुं द्वार अने माणुस्सीणुक्किठागप्नठिइत्ति एटले मनुष्यनीस्त्रीनी उत्कृष्टीगर्नस्थि तिनुं बसोने एकतालीशमुं द्वार तथा तग्गप्नस्सकायठिइत्ति एटले ते मनुष्यनीस्त्रीना गर्ननी कायस्थितिनुं बशोने बेतालीशमुं द्वार ए त्रण द्वार दोढगाथायेकहेबे. मूलः— उक्किठागप्नठिई, तिरियाणं होइ अठवरिसाइं॥गप्नठिई मणुस्सीणु क्किठा होइ वरिसबा रसगं॥२४३॥ गप्नस्सयकायठिई,नराण चउवीसवरिसाइं॥२४४॥अर्थः—तिर्यंचने उ त्कृष्टथी गर्ननी स्थिति आठ वर्ष थाय अने आठ वर्ष उपरांतपबी खरी पडे अथ वा प्रसव थाय, अने मनुष्यनी स्त्रीने गर्न संनव थाय;तेकोइक जीवनेघणीजपापनी राशिने उदये एवा वात पित्तादिकने दोषे अथवा देवताए मंत्रादिके थंन्यो थको गर्न मांहे बार वर्ष उत्कृष्टे स्थिति होय; जेम सिद्धराय जेसिंघदेने बार वर्ष गर्नमांहे सावकि माताये मंत्रे करी बांधी राख्यो सांनलिये बैये, पबी एक योगिये उपाय करीने बोडाव्योबे तेथी नामने आदे सिद्धि ए बे अक्षर नाखीने सिद्धराज जे सिंघदे नाम दीधुं. ए नवस्थिति जाणवी.

अने कायस्थिति ते गर्नमांहे मनुष्यमां कोइ जीव आवी उपन्यो ते पूर्वोक्त प्रकारे बार वर्ष जीवीने त्यांज मरण पामि वली कर्मना वशथकी तेज कले वरमांहे गर्नावासे ते जीव उपन्यो. वली पण त्यां बार वर्ष जीवतुं रहे ए काय स्थिति उत्कृष्टे चोवीश वर्षनी नावना जाणवी. इति सार्द्धगाथार्थ.॥२४३॥२४४॥

अवतरणः—गप्नरिय जीव आहारोत्ति एटले गर्भने विषे रह्यो थको जीव जे आहारनुं ग्रहण करे तेनु बशोने तेतालीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—पढमे समए जीवा, उप्पन्ना गप्नवासमझंमि ॥ उयं आहारंती, सव्वप्पणयाइअ पूयव ॥२७५॥ अर्थः—पहेले समये जीव गर्भावासमां उपन्या छतां जे मातानुं शोणित अने पितानुं वीर्य ए उंज आहारनुं ग्रहणकरे ए वात दृष्टांत पूर्वक देखाडेछे, सर्वात्मनाके० समस्त आत्माना प्रदेश तेणेकरीने पूयवके० पुडानीपरे जेम पुडाने तेलेनरी कढाइमां नाखिये पछी ते पुंडो समस्त प्रदेशे तेलनुं ग्रहण करे तेम जीव पण आहार लिये.

मूलः—उयाहारा जीवा, सव्वे अपज्जत्तगा मुणेयव्वा ॥ पज्जत्ताउण लोमे, पक्खे बे हुंति नई यव्वा ॥२७६॥ अर्थः—उजाआहारी जीव ते सर्व अपर्याप्ता छता जाणवा. अने पर्याप्ता थया पछी लोमाहारी होय अने प्रक्षेपाहारनी नजना जाणवी. इति गाथार्थ॥

अवतरणः—रिउरुहिरसुक्कजोए जत्तियकालेण गप्नसंजूईति एटले स्त्रीनुं रुधिर ऋतु संबंधी अने पितानुं शुक्र वीर्य तेने योगे जेटले काले गर्भनो संजव थाय तेनुं बशोने चुमालीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—रिउसमयएहायनारी, नरोवनोगेण गप्नसंजूई॥बारसमुहुत्तमझे, जायइ उवरिं पुणो नेय ॥२७७॥ अर्थः—महिनामहिनाने प्रांते त्रण दिवस सुधी निरंतरपणे स्त्रीने योनिद्वारे लोही श्रवेछे, तेने ऋतु कहिये; ते त्रण दिवस ऋतु समय कहिए: ते थकी उपरांत शुद्धिने अर्थे स्त्री स्नान करे तेवार पछी पुरुषनी साथे संयोग मलवाथी गर्भनी संजूति एटले उपजवुं थाय; ते बार मुहूर्त एटले चोवीश घडी सुधी होय, केमके बार मुहूर्त्त सुधी शुक्र ने शोणित बेहु अविध्वस्त पणे थाय. पछी विध्वंस पामे तेथी उपरांत न संजवे. इति गाथार्थ॥

अवतरणः—जित्तियपुत्तागप्नेति जेत्तियपुत्तोयपियरोय पुत्तस्सति एटले जेटला पुत्र गर्भने विषे थाय तेनु बशोने पिस्तालीशमुं द्वार अने जेटला पिता पुत्रने थाय तेनुं बशोने छेतालीशमुं द्वार एवा अर्थ जणावतो एक गाथाये करी बे द्वार कहेछे. मूलः—सुय लरकपुहुत्त होइ, एगनरभुत्तनारिगप्नंमि ॥ उक्कोसेणं नवसय, नरभुत्तबीइ एगसुउ ॥२७८॥ अर्थः—सुतके० बेटा ते लाख पृथक्त्व थाय पण ते क्यां थाय के एके नरे नोगवी जे नारी तेनागर्भनेविषे थाय. तेमां एकबे अथवात्रण जीवता रहे. बीजा थोडासा कालमां विनाश पामे. उक्कोसेणंति एटले कोइएक दृढ संघयणनी धरनारी महा कामातुर स्त्री होय अने ते बार मुहूर्त्तमां नवशें पुरुष नोगवे तो ते स्त्रीनेविषे जे पुत्र थाय तेना नवशें पिता जाणवा; एटले ते नवशें पितानो एक पुत्र जाणवो.

अवतरणः—महिला गप्नअनवण कालोत्ति पुरिस अबीयकालोत्ति एटले

महिला जे स्त्री तेने गर्न न होवानो काल अने पुरुषने अबीजपणाना काल संबंधी बशो ने सडतालीशमुं द्वारकहेछे मूलः—पणपन्नाइ परेणं,जोणीपमिलाइएमहिलियाणं ॥ पणहत्तरीयपरउ,होइ अबीउ नरोपायं ॥ ३७९ ॥ वाससयाउयमेयं,परेण जा होइ पुव्वकोडीउ॥तस्सद्धे अमिलाया,सव्वाउयवीसजागोय ॥३८०॥ अर्थः—पंचावन्न वर्ष उपरांत स्त्रीनी योनी पमिलाए एटले संकोच पामे, त्यां घणी स्त्रीने योनि संकोच पामता पहेलां पण ऋतु बंध थई जायछे; तथापि कोइने बंध थइ न जाय, तोपण पंचावन्नमे वर्षेतो अवश्य बंध थायछे. ऋतु आवे तोपण तेथी गर्नोत्पत्ति न थाय अने पंचावन्नमा वर्षथी उपरांत तो ऋतु पण न आवे ने गर्न पण नथाय. तेमज पणहत्तरिके० पंचोत्तेर वर्ष उपरांते प्राय अबीज नर थाय ॥ ३७९ ॥

हवे ए केटला वर्षना प्रमाणना आउषावालाने थाय? ते बीजी गाथाए देखाडेछे. एकशो वर्षना आयुष्यना धणी हमणांना कालना जे मनुष्यछे तेने ए कालमान गर्नसंजवनुं कह्युं; अने जे सो वर्षना आयुष्यथी उपरांत बसो अथवा चारसोथी मांम्मी ज्यांसुधी उत्कृष्टे पूर्वकोडी सुधी जो आयुष्य होय तो तेने अर्थे अर्धा आयुष्यसुधी अम्लान एटले स्त्रीनी योनी गर्नधारण करवाने समर्थ होय, पछी गर्न धरवाने समर्थ न होय. अने जेने एकवार प्रसव छे, एवी युगलियानी स्त्री तेने सदासर्वदा अवस्थितयोवनपणुज होय. सव्वाउयके० सर्व पुरुषोने एटले पूर्वकोडी आयुष्यना धणी अथवा तेथी उंग आयुष्यना धणी जे होय; एवा पुरुषोने जेने जेटलुं आयुष्य तेने ते आयुष्यनो वीशमो नाग टाली बाकीना कालमां सबीजपणु जाणवुं. अने वीशमे नागे अबीजपणु होय ॥ ३८० ॥ इति गाथाद्वयार्थ ॥

अवतरणः—सुक्काइण पमाणंति एटले शुक्रादिकना माननुं बसोने अडतालीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—बीयंसुसुक्कंतहसो णियंचगाणंतुजणणिगब्नंमि ॥ उयंतुउवट्ठंनस्स कारणंतस्सरूवंतु ॥३८१॥ अर्थः—बीज कहिये कारण, ते शरीर ते संबंधी पितानुं शुक्र तेमज शोणित एटले मातानुं लोही ए बेउ; तेमज स्थानक ते क्षेत्र नूमिकानी परे माताने गर्ने उदरमांहे, त्यां जे शुक्रने शोणितनो समुदाय ते उज कहिये. एवो उज ते शरीर उपष्टंननो हेतुके० कारण जाणवुं. तस्सरूवंतुके० ते शरीरनुं स्वरूप ते आगली गाथाए देखाडेछे. ॥ ३८१ ॥

मूलः—अट्ठारसपिट्ठकरंमयस्स संधीउहुंतिदेहम्मि ॥ बारसयं सुलियकरंमया इह तहडपंसुलिए ॥३८२॥ होइकडाएसत्तंगुलाइं जीहापलाइ पुण चउरो॥अच्छीउदोपलाइ, सिरंतु नणियं चउकवालं ॥३८३॥ अर्थः—मनुष्यना शरीरनेविषे पृष्ठ करंमक

एटले वंशपृष्ठ्यादिक गंठी रूपते अढार थायछे, अनेसांधा पण अढार थायछे, ए जेम वांशनी गांठ थाय तेम जाणवा. हवे जे अढार सांधाछे तेथकी बार पांशली नीकली ते बन्ने पासे आवरी हैयाने मध्ये लागी ने पालाने आकारे परिणमे, एज कारणे कहेछे. तहबपंसुलीए जेम बार पांसलीरूप करंमके० वांसो थाय तेम वली छए पांसुलीए होइकडाहोके० कमाहो ते शेष छ सांधाथकी थाय, तेज बे पसवाडा आवरी बेउ पसवाडे हैयाथकी नीची ढली कूखथकी उपर मांहोमांहे अणमल ती होय ते कडाह कहिये.

हवे जीन जे छे ते लांबपणे आत्मांगुले सात अंगुल प्रमाण थाय, अने तो लिये तेवारे मगधदेश प्रसिद्ध पल तेवा पलने माने चार पल थाय; अने अच्छि के०आंख ते बे पल्य प्रमाण थाय अने सिरके०मस्तक ते नणिअंके०श्री अरिहंत देवे कह्युं. चउकवालंके०चार कपाले हाम्रने खंभे करी निपजे. ॥३०२॥ ॥३०३॥

मूलः—अदुठ पलंहिययं, बत्तीसं दसणअछिखंमाइ॥कालिज्जयंतु समए, पणवीस पलाइनिहिट्ठं॥ ३०४ ॥ अर्थः—अतुठके० साडात्रण पलप्रमाण हैयुं होय अने बत्तीसके० बत्रीश दसनके० दांतना अस्थिके० हाडकांना कटका होय. एम कालि ज्जंके० कालजु ते समयपएके० सिद्धांतमांहे पच्चीश पलने माने कह्युंछे. ॥३०४॥

मूलः—अंताइ दोन्नि इहइं ॥ पत्तेयं पंचपंचवामाउ ॥ सद्विसयंसंधीणं, मम्मा णसयंतु सत्तहियं ॥ ३०५ ॥ अर्थः—आंत्र ते दोन्नीके० बेज इहइंके० शरीर नेविषे पण प्रत्येके पांच पांच वाम कहिए पुरीस प्रमाण. अने एकसोने सा ठ सांधा ते आंगुली प्रमुखना मेलापक स्थान जाणवां, मम्मं ते शाखाप्रमुख एकसोने साते अधिक होय. ॥ ३०५ ॥

मूलः—सद्विसयंतु सिराणं, नाभिप्पभवाण सिरमुवगयाणं॥रसहरणनामधेज्जाण जाणणुग्गहविघाएसुं ॥३०६॥ अर्थः—पुरुषना शरीनेविषे सातशें नसोछे तेमां सि रा भणिये नसा ते एकसोने साठ नाभिथकी प्रभवके० उत्पति छे जेनी. अने मस्त कप्रत्ये उपगत एटले जे प्राप्त थइछे ते रसहरीए, एटला माटे रसहरणी एवुं नामधेयके० नामछे जेनु, जाणके० जेने अनुग्रह अने विघाते भलुं अने मातुं जे कांइ थाय ते कहेछे. ॥ ३०६ ॥

मूलः—सुइ चक्कुघाण जीहा, णणुगहो होइ तहविघाउंय ॥ सद्विसयं अन्नाणवि, सिराण होगामिणीण तहा ॥३०७॥ अर्थः—श्रोत ते कान, चक्कुते नेत्र, घ्राण ते ना सिका, जीहा ते जीन इत्यादिक इंद्रियोने एने अनुग्रहे भलुं होय, अने एनेज विघाते

मातुं होय. जेम ए उर्ध्वगामिनी कही तेमज सठिसयंके० एकसोने सात अनेरी पण नसो ते अधोगामिनी जाणवी. ॥ ३७७ ॥

मूलः—पायतलमुवगयाणं, जंघाबलकारिणीणणुवघाए ॥ उवघाएसिरिवियणं, कुणंतिअंधत्तणंच तहा ॥ ३७८ ॥ अर्थः—जे पादतलप्रत्ये नीची गइछे तेउने अनुपघाते विनाश अणहुंते जंघानुं बल थाय. पीडा प्रमुखने बलनी करनार थाय अने तेनेज उपघाते शिरपीडा, अनेचक्षुने अंधपणु प्रमुखनी करनार थाय.॥३७८॥

मूलः—अवराणगुदपइठाण होइ सठिसयंतहसिराण ॥ जाणबलेण पवत्तइ, वा ऊमुत्तं पुरीसंच ॥ ३७९ ॥ अर्थः—अपरके० बीजी वली गुदनेविषे जे रहीछे तेपण एकसोने सात होयछे, जेना बलेकरी वायु, मूत्र अने पुरीषके० वडिनीति प्रवर्त्तेछे.

मूलः—अरिसाउ पंडुरोगो वेगनिरोहोय ताणयविघाए ॥ तिरियगमाणसिराणं, सठिसयं होइ अवराणं ॥३८०॥ अर्थः—एने उपघाते हरस थाय, पांडूरोग, वेगके० मूत्र वडिनीतिनुं रुंधन थाय.तेम तिर्यगामिनी नस ते वली एकसो ने सात थाय.

मूलः—बाहुबलकारिणीउं, उवघाए कुछिउयरवियणाउ ॥ कुवंति तहन्नाउं, पण वीसं सिंभधरणीउं ॥ ३८१ ॥ अर्थः—ते बाहुने बलनी करनार अने एनाज उपघाते कुक्षी उदर तथा पेटनी वेदना थाय, तेम बीजी पच्चीश नसो ते सिंभके० श्लेष्मनी धरनार छे अने तेनेज उपघाते श्लेष्म थाय. ॥ ३८१ ॥

मूलः—तह पित्तधारिणीउं, पणवीस दसय सुक्कधरणीउं ॥ इयसत्तसिरसयाइं, नाभिप्पभवाइं पुरिसस्स ॥३८२॥ अर्थः—तेमज पित्तनी धरनार पच्चीश नस थाय छे. वली दश नसो ते शुक्र एटले वीर्यनी धरनार. एरीते सातसो सिराके० नसो ते नाभीथकी प्रभवके०उपजवुंछे जेउनुं, ते पुरुषने जाणवी.ए पुरुष आश्री नसो कहीछे.

हवे स्त्री तथा नपुंसकना शरीरमांहे पुरुष जेटलीज होय किंवा विशेष होय? ते कहेछे. मूलः—तीसूणाइं इत्थीण वीसऊणाइ हुंति संढस्स ॥ नवण्हारूणसयाइ, नवधमणीउंय देहंमि ॥ ३८३ ॥ अर्थः—त्रीशे ऊणी सातशे नसो ते स्त्रीना शरीरनेविषे होय, अने वीशे हीन सातसो नसो नपुंसकना शरीरे थाय छे; वली नवसो स्नायुके० न्हानी नसो जेनी साथे अस्थि बांध्यांछे ते जाणवीयो. अने नवधमणी के० रसवह नाडी एटले जेना प्रभावथकी रस ठामो ठामे परिणमे एवीछे. ३८३

मूलः—तहचेव सबदेहे, नवनउईलक्ख रोमकूवाणं ॥ अद्धुट्ठकोडीउं, समंपुणो केसमंसूहिं ॥ ३८४ ॥ अर्थः—तेम वली सर्वमली देहनेविषे नव्वाणुलाख रोमकूपछे अने साडात्रण क्रोड, नव्वाणु लाख, केश मस्तकना निमाला, तेणे सहित

एटले वंशपृष्टादिक गंठी रूपते अढार थायछे, अनेसांधा पण अढार थायछे, ए जेम वांशनी गांठ थाय तेम जाणवा. हवे जे अढार सांधाछे तेथकी बार पांशली नीकली ते बन्ने पासे आवरी हैयाने मध्ये लागी ने पालाने आकारे परिणमे, एज कारणे कहेछे. तहबारपंसुलीए जेम बार पांसलीरूप करंमके० वांसो थाय तेम वली छए पांसुलीए होइकडाहोके० कमाहो ते शेष छ सांधाथकी थाय, तेज बे पसवाडा आवरी बेउ पसवाडे हैयाथकी नीची ढली कूखथकी उपर मांहोमांहे अणमल ती होय ते कडाह कहिये.

हवे जीन जे छे ते लांबपणे आत्मांगुले सात अंगुल प्रमाण थाय, अने तो लिये तेवारे मगधदेश प्रसिद्ध पल तेवा पलने माने चार पल थाय; अने अच्छि के०आंख ते बे पल्य प्रमाण थाय अने सिरके०मस्तक ते चणिअंके०श्री अरिहंत देवे कह्युं. चउकवालंके०चार कपाले हाडने खंडे करी निपजे. ॥३०२॥ ॥३०३॥

मूलः–अद्धुट्ठ पलंहिययं, बत्तीसं दसणअच्छिखंडाइ॥कालिज्जयंतु समए, पणवीस पलाइनिद्दिठ्ठं॥ ३०४ ॥ अर्थः–अद्धुठ्ठके० साडात्रण पलप्रमाण हैयुं होय अने बत्तीसके० बत्रीश दसनके० दांतना अस्थिके० हाडकांना कटका होय. एम कालि ज्जंके० कालजु ते समयपणके० सिद्धांतमांहे पच्चीश पलने माने कह्युंछे. ॥३०४॥

मूलः–अंताइ दोन्नि इहइं॥ पत्तेयं पंचपंचवामाउ॥ सट्ठिसयंसंधीणं, मम्मा णसयंतु सत्तहियं ॥ ३०५ ॥ अर्थः–आंत्र ते दोन्नीके० बेज इहइंके० शरीर नेविषे पण प्रत्येके पांच पांच वाम कहिए पुरीस प्रमाण. अने एकसोने सा ठ सांधा ते आंगुली प्रमुखना मेलापक स्थान जाणवां, मम्मे ते शाखाप्रमुख एकसोने साते अधिक होय. ॥ ३०५ ॥

मूलः–सट्ठिसयंतु सिराणं, नाभिप्पभवाण सिरमुवगयाणं॥रसहरणनामधेज्जाण जाणणुग्गहविघाएसुं ॥३०६॥ अर्थः–पुरुषना शरीनेविषे सातशें नसोछे तेमां सि रा जणिये नसा ते एकसोने साठ नाभिथकी प्रभवके० उत्पत्ति छे जेनी. अने मस्त कप्रत्ये उपगत एटले जे प्राप्त थइछे ते रसहरीए, एटला माटे रसहरणी एवुं नामधेयके० नामछे जेनु, जाणके० जेने अनुग्रह अने विघाते नवुं अने माठुं जे कांइ थाय ते कहेछे. ॥ ३०६ ॥

मूल.–सुइ चक्खुघाण जीहा, णणुग्गहो होइ तहविघाउय॥ सट्ठिसयं अन्नाणवि, सिराण होगामिणीण तहा ॥३०७॥ अर्थः–श्रोत ते कान, चक्षुते नेत्र, घ्राण ते ना सिका, जीहा ते जीन इत्यादिक इंद्रियोने एने अनुग्रहे नवुं होय, अने एनेज विघाते

मातुं होय. जेम ए ऊर्ध्वगामिनी कही तेमज सठिसयंके० एकसोने साठ अनेरी पण नसो ते अधोगामिनी जाणवी. ॥ ३८७ ॥

मूलः—पायतलमुवगयाणं, जंघाबलकारिणीणणुवघाए ॥ उवघाएसिरिवियणं, कुणंतिअंधत्तणंच तहा ॥ ३८८ ॥ अर्थः—जे पादतलप्रत्ये नीची गइछे तेउने अनुपघाते विनाश अणहुंते जंघानुं बल थाय. पीडा प्रमुखने बलनी करनार थाय अने तेनेज उपघाते शिरपीडा, अनेचक्षुने अंधपणु प्रमुखनी करनार थाय.॥३८८॥

मूलः—अवराणगुदपइठाण होइ सठिसयंतहसिराण ॥ जाणबलेण पवत्तइ, वा ऊमुत्तं पुरीसंच ॥ ३८९ ॥ अर्थः—अपरके० बीजी वली गुदनेविषे जे रहीछे तेपण एकसोने साठ होयछे, जेना बलेकरी वायु, मूत्र अने पुरीषके० वडिनीति प्रवर्त्तेछे.

मूलः—अरिसाउ पंडुरोगो वेगनिरोहोय ताणयविघाए ॥ तिरियगमाणसिराणं, सठिसयं होइ अवराणं ॥३९०॥ अर्थः—एने उपघाते हरस थाय, पांडूरोग, वेगके० मूत्र वडिनीतिनुं रुंधन थाय.तेम तिर्यगामिनी नस ते वली एकसो ने साठ थाय.

मूलः—बाहुबलकारिणीउ, उवघाए कुछिउयरवियणाउ ॥ कुव्वंति तहन्नाउ, पणवीसं सिंभधरणीउ ॥ ३९१ ॥ अर्थः—ते बाहुने बलनी करनार अने एनाज उपघाते कुक्षी उदर तथा पेटनी वेदना थाय, तेम बीजी पच्चीश नसो ते सिंभके० श्लेष्मनी धरनार छे अने तेनेज उपघाते श्लेष्म थाय. ॥ ३९१ ॥

मूलः—तह पित्तधारिणीउ, पणवीस दसय सुक्कधरणीउ ॥ इयसत्तसिरसयाइं, नाभिप्पभवाइं पुरिसस्स ॥३९२॥ अर्थः—तेमज पित्तनी धरनार पच्चीश नस थाय छे. वली दश नसो ते शुक्र एटले वीर्यनी धरनार. एरीते सातसो सिराके० नसो ते नाभीथकी प्रभवके०उपजवुंछे जेउनुं, ते पुरुषनेजाणवी.ए पुरुष आश्री नसो कहीछे.

हवे स्त्री तथा नपुंसकना शरीरमांहे पुरुष जेटलीज होय किंवा विशेष होय? ते कहेछे. मूलः—तीसूणाइं इत्थीए वीसऊणाइ हुंति संढस्स ॥ नवण्हारूणसयाइ, नवधमणीउंय देहंमि ॥ ३९३ ॥ अर्थः—त्रीशे ऊणी सातशे नसो ते स्त्रीना शरीरनेविषे होय, अने वीशे हीन सातसो नसो नपुंसकना शरीरे थाय छे; वली नवसो स्नायुके० न्हानी नसो जेनी साथे अस्थि बांध्यांछे ते जाणवीयो. अने नवधमणी के० रसवह नाडी एटले जेना प्रभावथकी रस ठामो ठामे परिणमे एवीछे. ३९३

मूलः—तहचेव सव्वदेहे, नवनउईलरक रोमकूवाणं ॥ अद्धुट्ठाकोडीउं, समंपुणो केसमंसूहि ॥ ३९४ ॥ अर्थः—तेम वली सर्वमली देहनेविषे नवाणुलाख रोमकूपछे अने साडात्रण क्रोड, नवाणु लाख, केश मस्तकना निमाला, तेणे सहित

जाण. अने स्मश्रुके० दाढी तथा मुछना निमाला तेणे पण सहित जाणवा.॥२९४॥

मूलः—मुत्तस्स सोणियस्सय, पत्तेयं आढयंवसाएउ ॥ अद्धाढयंभणिंतिय, पत्थंमच्छु लयवत्थस्स ॥ २९५ ॥ अर्थः—मूत्र अने शोणित ते लोहीनुं मागध देश प्रसिद्ध मान विशेषरूप आढो थाय, ते आवीरीतेः—समो हाथ धान थकी नखो तेने असइ कहीए, एवी बे असइए एक पसइ थाय, तेवी चार पसइए एक सेइ थायछे, तेवी चार सइए एक कुलव थाय, अने चार कुलवे एक पाथो थायछे, अने चार पाथे आढो थाय, चार आढे डोण थाय, इत्यादिक एवो आढो वशानो ते श्रुतना जाण कहेछे, पत्थंके० एक पाथा प्रमाणे मस्तुलक नाम माथानुं भेजुं जाणवुं, अने एक वली एम कहेछे के मेद फेफसादिने मस्तुलक कहिये. ॥ २९५ ॥

मूलः—असुइ मलपत्थ छक्कं, कुलउं कुलउंय पित्त सिंभाणं ॥ सुक्कस अद्ध कुलउं, डुठं हीणा हियं होज्जा ॥२९६॥ अर्थः—अशुचि जे मल तेना छ पाथा जाणवा. तथा पित्त अने श्लेष्मनुं प्रत्येके कुलव कुलव जाणवुं, वली शुक्र जे सातमी धातु तेनो अर्द्धो कुलव जाणवो. इहां आढ प्रस्थादि मान जे कह्युं ते बाल कुमार युवान ते आश्री दोअसईउ इत्यादिक क्रमे पोत पोताने हाथ प्रमाणे जाणवुं. हवे उक्त मान थकी शुक्र शोणितादिक ज्यां ओछां अधिकां थाय त्यां ते वातादिके दूषित जाणवां.

हवे स्त्री पुरुषना शरीरने विषे श्रोत्र संख्या कहीने उपसंहार कहेछे. मूलः—एक्कारसइत्थीए, नवसोयाइं हवंति पुरिसस्स ॥ इयकिं सुइत्तणं अट्ठिमंस मलरुहिर संघाए ॥२९७॥ अर्थः—बे कान, बे आंख, बे नाकना द्वार, एकमुख, बे स्तन, एक पायु एटले गुदस्थान अने उपस्थ ते योनि, ए अग्यार स्त्रीने मनुष्यगति आश्रयी श्रोत संख्या जाणवी; अने तिर्यंचणीमां जे छालीप्रमुख बे थान वाली होय तेने अग्यार होय, तथा गाय प्रमुख चार थान वालीने तेर होय, शूकरी प्रमुख आठ थान वालीने सत्तर श्रोत होय. ए निर्व्याघाते एक थानवाली छालीने दश होय. त्रण थान वली गायने बार होय. बे स्तन टालीने नव पुरुषने होय. शेष पूर्वोक्तज जाणवुं. एवो अस्थिके० हाड मांस लोहीनो संघातके० समूहछे जेनेविषे; एवा शरीरने विषे शुं शुचिपणु कहेवाय? अपितु कांइज नही; ए अपवित्रज छे. इति गाथसप्तदशकार्थः.

अवतरणः—समत्ताइ उत्तम गुणाण लाहंतरंतु उक्कोसं एटले सम्यक्त्वादिक उत्तमगुणांतरनो लाभांतर उत्कृष्टे केटले काले थाय, तेनुं बसोने ओगणपच्चाशमुं द्वार कहेछे. मूलः—सम्मत्तंमिउलद्धे, पलियपुहुत्तेण सावउ होइ ॥ चरणो वसमखयाणं, सायरसंखंतरा हुंति ॥ २९८ ॥ अर्थः—सम्यक्त्व लाध्या पछी पल्योपम पृ

थक्त्वे श्रावक थाय. इहां ए जाव के जेटली कर्मनी स्थिति उतिये सम्यक्त्व लच्य मान थयुं होय,तेवार पछी अप्रतिपत्ति सम्यक्त्वे देवता ने मनुष्यमांहे उत्पत्ति थाय ते कहेछे. यतः—एवंअप्परिवडिए,सम्मत्तेदेव मणुअजम्मेसु॥ अनयरसेढिं वज्जं, एग जवेणंच सवाइं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व सहित नव पल्योपम स्थितिक, देवतामांहे उप न्यो जीव जेटली स्थिति खपावे तेटली वली बीजीकर्मनी स्थिति नवी बांधे; तेमाटे देशविरतिपणु देवतामां न पामे, अने पल्योपम पृथक्त्व लक्षण कर्मनी स्थिति ख पावी छते, देशविरति पामे. अथवा तीव्र शुज परिणामना वशथकी जेणे कर्मनी घणी कर्मनी स्थिति खपावीछे एवा जीवने एक जवनेविषे पण अन्यतर श्रेणीवर्जी शेष सर्व थाय, इहां श्रेणी वर्जी कह्युं ते सिद्धांतने मते एक जवनेविषे बे श्रेणी न था य. कोइ उपशमश्रेणी कोइ क्षपकश्रेणी पडिवजे. ए जावार्थ छे.

हवे चरण शब्दे सर्व विरतिरूप ते देशविरति पाम्या पछी संख्याता सागरोपम पूर्वकर्मस्थितिमांथी क्षय जाय तेवारे सर्वविरतिपणु पामे. एम चारित्र पाम्या पछी संख्याता सागरोपम पूर्वली कर्म स्थितिमांथी क्षय थए छते उपशमश्रेणी करे, तेवारपछी संख्याता सागरोपम कर्मस्थिति खपावे थके क्षपकश्रेणी पडिवजे,ते कारणे कह्युं जे चारित्र, उपशमश्रेणी ने क्षपकश्रेणी ए सर्व प्रत्येके संख्याता संख्याता सागरोपम कर्मस्थिति खपाव्याने आंतरे थाय. ॥ ३९८ ॥ इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः—नलहंतिमाणुसुत्तं सत्ताजेणतवुवट्टत्ति एटले ज्यांथकी निकल्याथका जीव मनुष्यपणु न लहेके० नपामे तेनुं बसोने पच्चाशमुं द्वार कहेछे. मूलः—सत्तमि महि नेरईया, तेऊवाऊ अणंतरुवट्टा ॥ नलहंति माणुसुत्तं, तहा असंखाउ आ सवे ॥ ३९९ ॥ अर्थः—सातमी नरकपृथ्वीना नारकी त्यांथकी उद्दर्त्या छतां मनु ष्यपणुं पामे नही, एमज तेऊकाय अने वाउकाय थकी निकल्याछता अनंतर मनु ष्यपणुं न पामे, तेमज असंख्याताबर्षना आउखावाला मनुष्य तथा तिर्यंच जेटला छे ते सर्व अनंतर जवे मनुष्यपणु न पामे. ॥ ३९९ ॥ इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः—पुव्वंग परिमाणंति एटले पूर्वांगना परिमाणनुं बशोने एकावन्नमुं द्वा र कहेछे. मूलः—वरिसाणं लक्खेहिं, चुलसी संखेहिं होइ पुव्वंगं ॥ एयंचिय एयगुणं, जायइ पुव्वं तयंतु इमं ॥ ४०० ॥ अर्थः—चोराशीलाख वर्षे एक पूर्वांग थाय. तथा एज चोराशीलाखने एज चोराशी लाख गुणा करिये तेवारे एक पूर्व थाय. तयं तुइमंके० ते ए आगलि गाथाए देखाडेछे. ॥ ४०० ॥

अवतरणः—माणं पुव्वस्सत्ति एटले पूर्वना माननुं बशोने बावनमुं द्वार कहेछेः

मूलः—पुव्वसउ परिमाणं,सयरं खलुवासकोडि लरकाउ ॥ उप्पन्नं च सहस्सा,बोधव्वा वास कोडीणं ॥ ॥ ४०१ ॥ अर्थः—पूर्वनुं परिमाण खलु इति निश्चे साथे सित्तेरला ख कोडी उपन्नहजार कोडी. एटली वर्षनी कोडी जाणवी. ॥ ४०१ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—लवण सिहमाणंति एटले लवणशिखाना परिमाणनुं बशेने त्रेप नमुं द्वार कहेछे. मूलः— दस जोयणाण सहसा, लवणसिहा चक्कवालउ रुंदा ॥ सोलस सस्हस उच्चा, सहस्समेगं तु उगाढा ॥४०२ ॥ अर्थः—लवणसमुद्रनी शिखा ते लवणसमुद्रनो बे लाख योजन पट पहोळाइए छे, त्यां पंचाणुं हजार योजन जंबु द्वीपनी जगती थकी परहां जइये अने लवणसमुद्रनी जगतिथकी पंचाणु हजार योजन उरहां आवीए. वचमां दशहजार योजन प्रमाण लांबी ए शिखाछे. ते जेम स्फटिकनो पाटो होय, तेम चक्रवालनी परे एटले पइडाने आकारे रुंदके० विस्ता रे छे. अने उंचपणे सोलहजार योजनछे तथा अवगाढके० उंन्डपणे एकहजार योजन धरतिमांहेछे. ॥४०२॥ इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः—उस्सेहंगुल मायंगुल पमाणंगुल पमाणंति एटले उत्सेधांगुल, आ त्मांगुल ने प्रमाणांगुलना प्रमाणनुं बसोने चोपन्नमुं द्वार कहेछे. मूलः—उस्सेहंगुलमा यं, गुलंच तइयं पमाणनामंच ॥ इयतिन्निअंगुलाइंवा वारिज्जंति समयंमि ॥४०३ ॥ अर्थः—उत्सेध शब्दे करी देवादिकना शरीरनुं उंचपणुं तेनो निर्णय करवासारुं प्र सिद्ध जे अंगुल तेने उत्सेधांगुल कहिये, अथवा उत्सेध शब्दे अणंताणं सुहुम प रमाणुं पोग्गलाणं, समुदय समिइ समागामण एगेववहार परमाणू इत्यादिक क्रमे करी जे उछ्रयके० वृद्धि ते थकी थयोजे अंगुल ते उत्सेधांगुल जाणवुं अने वक्ष्माण लक्षणे सहित पुरुषनुं पोतानुं जे अंगुल ते बीजुं आत्मांगुल जाणवुं, त्रीजुं पमाणके० प्रमाणांगुल ते आवीरीतेः—परम प्रकर्षरूप जे प्रमाण प्राप्त अंगुल ते प्रमाणांगुल जाणवुं.ए थकी बीजुं कोइ आंगुल महोटुं नथी अथवा लो कने व्यवहारे राज्यादिकनी स्थिति प्रमाण तेनुं प्ररूपणहार प्रमाणभूत आ अवसर्प्पिणी काले श्री आदिदेव भरत चक्रवर्त्ति एवा प्रमाणभूत पुरुष तेनुं जे अंगुल ते प्रमाणांगुल जाणवुं. भरतने, आत्मांगुलने अने प्रमाणांगुलने सरखापणुं जाणवुं. ए रीते त्रणे अंगुल सिद्धांतनेविषे वापरिये. हवे समस्त प्रमाणनी आ दि कहेछे; जेणे अंगुल जाणतां सुलभ थाय, ते रीत आगल कहेछे. ॥ ४०३ ॥

मूलः—सत्थेण सुति रकेणवि, छेत्तुंभत्तुं च जं किरनसक्का ॥ तं परमाणुं सिध्धा, वयंति आइं पमाणाणं॥४०४॥ अर्थः—अत्यंत तीक्ष्ण शस्त्रेकरी पण जे कोइ रीते

छेदाय नही, कटको पण त्रोडीने जूदो करी शकाय नही, नेदाय नही, तेनेमांहे नेदी बीजे पासे कोइ काढी शके नही. एवाने सिद्धपुरुष जे ज्ञानना धणी ते परमाणु कहेछे. ते केहेवुं छे समस्त जेटलां प्रमाण छे तेनी आइके० आदि एटले धुरे जाणवुं.

हवे आगल प्रमाणनां विशेष देखाडेछे. मूलः—परमाणू तसरेणू, रहरेणू, अग्गयंचवा लस्स॥लिरकाजूयाय जवो, अठ्ठगुण विवढ्ढिआ कमसो ॥४०५॥ अर्थः—एवा अनंते सूक्ष्म परमाणुए एक बादर परमाणु जाणवुं. तेवा आठ बादर परमाणुए एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणुए एक रथरेणु, आठ रथरेणुए एक वालाग्र, आठ वालाग्रे एक लीख, आठ लिखे एक युका, आठ युकाए एक यव. एम अनुक्रमे आठगुणा परमाणुआ थकी करिये, एटले एम सातवार आठगुणा करतां जेटला बादर परमाणुआ थाय ते कहेछे.

मूलः—वीस परमाणु लरका, सत्ताणउई नवे सहस्साइं ॥ सयमेगं बावन्नं, एग मिउ अंगुले हुंति ॥४०६॥ अर्थः—वीशलाख सत्ताणुहजार, एकशोने बावन, एटला परमाणु एक आंगुलनेविषे होय. अर्थात आठयवे एक उत्सेधांगुल थायछे. ४०६

मूलः—परमाणुं इच्चाइं, कमेण उस्सेह अंगुलं नणिअं॥ जं पुण आयंगुलमे रि सेणतं नासिअं विहिणा ॥ ४०७॥ अर्थः—धुरापरमाणु इत्यादिक अनुक्रमे करी उ त्सेधांगुलनु मान श्रीतीर्थंकर देवे कह्युं, अने बीजुं वली जे आत्मांगुल कह्युंछे ते आम थाय. तेज विधि देखाडतो गाथा कहेछे. ॥ ४०७ ॥

मूलः—जे जम्मि जुगे पुरिसा, अठ्ठसयंगुल समूसियाहुंति ॥ तेसिं जं त्तियमंगुल, मायंगुलमेत्तं होइ ॥४०८॥ अर्थः—जे युगनेविषे जे पुरुष पोताना आंगुले करी एकसोने आठ आंगुल उंचो होय ते पुरुषना पोताना अंगुल ते इहां आत्मांगुल थाय.

हवे जे अधिका उंछा थाय तेनी केवीरीते वातछे ? ते कहेछे. मूलः—जेपुणएय पमाणा, ऊणा अहियाय तेसिमेयंतु ॥ आयंगुलं नन्नइ, किंतुतदा नास मेवत्ति ॥ ४०९ ॥ अर्थः—जेकोइ पुनःके० वली ए प्रमाणथकी उछुं अथवा अधिकुं हो य; तेनुं जे अंगुल ते आत्मांगुल न कहेवाय; किंतु ते आत्मांगुल आनास जाण वुं. इहां व्याकरणमां आनास प्रत्यय कुत्साहने एटले निंदाने अर्थे छे. एतावता ए अंगुल कांइ गणनामांहे न होय. ॥ ४०९ ॥

ए रीते आत्मांगुल कहीने हवे प्रमाणांगुलनुं स्वरूप जणावतो गाथा कहेछे मूलः—उस्सेहंगुलमेगं, हवइपमाणंगुलंसहस्सगुणं ॥ उस्सेहंगुलदुगुणं, वीरस्सा यंगुलंनणियं ॥ ४१० ॥ अर्थः—उत्सेधांगुल एक थकी नवइके० होय, प्रमाणांगु ल सहस्रगुणो थायछे. ते आवीरीतेः—चउसयगुणं पमाणं एवा वचनथकी चारसे

गुणो विस्तारे थाय, अने अढी गुणो जाडपणे होय. ते चारसे अढी गुणा करिये तेवारे सहस्रगुणंके० हजार गुणु प्रमाणांगुल थाय, अने उत्सेधांगुलथी बमणुं श्री वर्द्धमान स्वामिनुं अंगुल कह्युंछे,ए गाथानो अर्थ मात्र देखाड्यो.इहां उत्सेधांगुल ने प्रमाणांगुलनी वक्तव्यता टीकामां घणीछे, परंतु ग्रंथ वधे माटे नावना मात्र देखाडियेछैये.अढी उत्सेधांगुले जेनु विष्कंन एवा प्रमाणांगुलने विषे त्रण श्रेणि कल्पिए, तेमां पहेली उत्सेधांगुले एक अंगुल विष्कंन, ने चारसे आंगुल दीर्घ एटले लांबी करिये.एवीज बीजी पण पंक्ति एटलाज प्रमाणनी करिये अने त्रीजी श्रेणी दीर्घपणे चारसो अंगुल प्रमाण अने विष्कंने अर्द्धअंगुल प्रमाण करिये,एना दीर्घपणाथकी बे नाग करी तेने परस्पर मलविये तेवारे एक अंगुल प्रमाण विष्कंन थाय, अने बशें अंगुल दीर्घ एवी त्रीजी श्रेणी थइ.तेवारपछी ए त्रणे राशीने लंबाइ ए मेलवी छता एक हजार उत्सेधांगुले दीर्घपणे थाय अने एक उत्सेधांगुल विष्कंन थाय ए प्रमाणांगुलनी शुद्ध सूची जाणवी. ए सूचि आश्रयी उत्सेधांगुलथकी प्रमाणांगुल हजार गणुं जाणवुं, अने तत्ववृत्तेचारशे गुणुंज थाय ॥ ४१० ॥

मूलः—आयंगुलेण वत्थु, उस्सेहपमाणउमिणसुदेहं ॥ नगपुढविविमाणाइं, मिणसुपमाणंगुलेणं तु ॥ ४११ ॥ अर्थः—जे आंगुलेकरी जेनुं प्रमाण करायछे ते कहेछे. आत्मांगुलेकरी वस्तुनुं प्रमाण करायछे. ते वस्तु त्रण प्रकारनीछे. एक खात, बीजी उछ्रित एटले उंची करेली अने त्रीजी उनय तेमां खात ते कूप नूमि, गृहना तलावादिक ते टांका जाणवां. उछ्रित ते धवलगृहादिक अनेउनय एटले नूमि अने गृहादिके युक्त धवलगृहादिक मपायछे अने उत्सेधांगुलेकरी देवादिकोना शरीरनुं माप थायछे, अने नग एटले मेरु इत्यादिक पर्वत अने पृथ्वी तथा देवादिकोनां विमान जे सौधर्मावतंसकादिक आदि शब्द थकी जुवन नरकावासा द्वीप समुद्रादिक तेनुं प्रमाणांगुलेकरी परिमाण थायछे ॥ ४११ ॥ इतिगाथा नवकार्थ. ॥

अवतरणः—तमसकाय सरूवंति एटले तमस्कायना स्वरूपनुं बसोने पंचावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—जंबुदीवाउ असंखेज्ज इमा अरुणवर समुद्दाउ ॥ बायालीस सहस्से जगईउजलं विलंघेउ ॥ ४१२ ॥ अर्थः—ए जंबुद्वीपथकी तिरछा असंख्याता द्वीप समुद्र अतिक्रमि जातां त्यां अरुणवर समुद्र छे तेनी जगतीथकी बेतालीस हजार योजन अवगाहिये तेणे प्रदेशे अरुणवर समुद्रनां पाणी उपर थकी महा अंधकाररूप अपकायमय तमस्काय निकल्योछे. ॥ ४१२ ॥

मूलः—समसेणीएसत्तरस एकवीसाइजोयणसयाइं ॥ उड्ढंसिउंतमरूवो, वल

यागारोअउक्काउ ॥ ४१३ ॥ अर्थः–ते तमस्काय समश्रेणीये सरखी, भींतने आकारे सत्तरशेने एकवीश योजन प्रमाण उच्चस्योके० विस्तर्यो छे. अंधकाररूप वलयाकारे अपकाय विस्तर्योछे. ॥ ४१३ ॥

मूलः–तिरियं विछरमाणो, आवरयंतो सुरालय चउक्कं ॥ पंचमकप्पे रिट्ठंमि पछडे चउदिसिं मिलिउ ॥ ४१४ ॥ अर्थः–ते तमस्काय तिर्छो विस्तरतो अने वली सौधर्मादिक चार देवलोक आवरतो उंचो निकल्यो, ते पांचमा ब्रह्मनामा देवलोकना रिष्ठनामा त्रीजा पाथडासुधी जइ त्यां चारे दिशाए मल्यो आवरी रह्योछे.

हवे ते तमस्काय केवा आकारेछे? ते कहेछे. मूलः–हेट्ठामल्लय मूलट्ठिइ उिउ उवरि बंभलोयंजा ॥ कुक्कड पंजरगागार संठिउसो तमक्काउ ॥ ४१५ ॥ अर्थः–हेट्ठाके० हेठे मल्लकके० सरावलुं जेवुं थाय.तेने आकारे नीचे सांकडो अने उपर ब्रह्मदेवलोक सुधी कूकडाना पांजराने आकारे रह्योछे, ते तमस्काय एटले तम शब्दे अंधकार, ते संबंधी पुद्गल जे काय कहिये राशि समूह तेने तमस्काय कहिये.

हवे एनो विष्कंभ ने परिधनुं प्रमाण कहेछे.मूलः–डुविहो सेविरकंभो, संखिज्जो अबितह असंखिज्जो ॥ पढमंमिय विरकंभो, संखेज्जा जोयण सहस्सा ॥४१६॥ परिहिए ते असंखा, बीए विरकंभ परिहि जोएहिं ॥ हुंति असंख सहस्सा, नवरंमि होइ विछारो॥ ॥४१७॥ अर्थ–ःडुविहोके०बे प्रकारे तेनो विष्कंभ,संख्यातोछे तेमज असंख्यातो पण छे;त्यां पहेलो विष्कंभ ते संख्याता सहस्र योजन प्रमाण छे,अने उपरे यावत् असंख्याता सहस्र योजन प्रमाण छे अने परिहिएके०परिधिए मूलथकी आरंभी सर्वत्र ते संख्याता सहस्र योजन प्रमाण छे.इहां संख्यातपणु ते त्यांसुधी जाणवुं; ज्यांसुधी वलयनेआकारे छे. अने बीजो विष्कंभ अने परिधीनो योग वलयाकारथकी उंचो ए तमस्काय विस्तरेछे. तेवारे नवरंके० केवल असंख्याता सहस्र योजन एनो विस्तार होयछे.

हवे टीकाकार एनुं महत्व आगमार्थवेदीना मुखथकी एवीरीते जणावेछे के, जे देवता त्रण चपटी वगाडतां जेटली वार थाय तेटली वारमां जंबुद्वीपने एकवीश वखत प्रदक्षणा देतो फरे तेवो देवता छ महीने संख्याता योजन विस्तारसुधी जाय, परंतु ते आगल जइ शके नही तो बीजानी शी वात? जेवारे परदेविना सेवणहार अथवा रत्नादिकनी चोरी प्रमुख अपराध करे तेवारे ते देवता बीजा बलवंत देवताथकी बीहीता थका नाशीने त्यां पेशे. ते त्यां गया पछी बीजा देवता त्यां बीकनेलीधे जइ शके नही; केमके त्यां जतां तेने गतिनो विघात थाय ॥ ४१७ ॥ इतिगाथा षट्कार्थ ॥

अवतरणः–अणंत छक्कि एटले छ अनंतानुं वर्णने उपन्नमुं द्वारकहेछे. मूलः

सिद्धा निगोय जीवा, वणस्सई काल पोग्गलाचेव ॥ सव्वमलोगागासं, छप्पेएणं तया नेया ॥ ४१८ ॥ अर्थः—एकतो सिद्धना जीवो जे पूर्वे अनंते काले अनंता सिद्ध थया अने अनंते आगामिक काले अनंता सिद्ध थशे ते जाणवा. तेमज बीजा निगोदना जीव. ते पण अनंता छे. त्रीजा वनस्पति ते निगोद अने साधारण वनस्पतिकायिक जीवो ते पण अनंताछे. चोथो काल जे छे ते पण अनंति उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणिरूप थइ गयो अने अनागत काले पण अनंतो थशे. तेमज पांचमा पुद्गल परमाणुआ पण अनंताछे. एम छठुं सर्व अलोकाकास तेपण अनंतुछे. ए छ वानां अनंतां जाणवां. ॥ ४१८ ॥ इतिगाथार्थः

अवतरणः—अठ्ठंगनिमित्ता एंति एटले आठ प्रकारना निमित्तनुं बशेंने सत्तावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—अंगं सिविणं च सरं, उप्पायं अंतरिक्ख नोमं च ॥ वंजण लक्खणमेवय, अठ्ठपयारंइहनिमित्तं ॥४१९॥ अर्थः—एक अंग, बीजुं स्वप्न, त्रीजुं स्वर, चोथुं उत्पात, पांचमुं अंतरिक्ष, छठुं नौम, सातमुं व्यंजन, अने आठमुं लक्षण; ए आठ प्रकारनां निमित्त जाणवां. इहां निमित्त जे अतीत अनागत ने वर्त्तमान भाव तेने जाणपणानां कारण तेने निमित्त कहिए. एरीते ए आठे निमित्तनां नाम कही हवे सूत्रकार अंगादिक आठ बोल गाथाये करी वखाणेछे. ॥ ४१९ ॥

मूलः—अंगप्फुरणा एहिं, सुहासुहं जमिह नज्जइ तमंगं ॥ तह सुसिविणयदुसिविणएहिं जंसिविण यंतितयं ॥ ४२० ॥ अर्थः—अंगने ग्रहणे इहां अंगना अवयव पण लेवा. ते अंगना अवयवने फरकवे करी शुनाशुन अतीतादिक विषयिक निमित्त जाणे; ते जाणीने बीजाने कहे के मस्तक फरकेतो पृथ्वीनो लाभ थाय, अने निल्लाड फरकेतो स्थानकनी प्राप्ति थाय. इत्यादिक शरीरनो जे जे अवयव फरके ते उपर विचारणा करे. ते पुरुषने जमणे पसवाडे अने स्त्रीने मावे पसवाडे फरकेतो नलो कहिये; नही तो मागो कहिये. तो ए पहेलुं अंगनिमित्त जाणवुं. हवे बीजुं स्वप्ननिमित्त ते आवीरीते के, देव, गुरु, नाइ, बेटो, उत्सव, कमलनुं छत्र ए स्वप्नमां देखे तेमज कोट ते गढ, हाथी, वृक्ष, मेघ, पर्वत, प्रासादादिक उपर पोते चडयोछे; एम स्वप्नमां देखे तेमज समुद्रनुं तरवुं, मदिरा, अमृत, दहि, दुधनुं पान स्वप्नमां करे अने चंद्रमा सूर्यनां ग्रहण देखीने जागृत थाय तो एम जाणवुं के, ए स्वप्नने प्रमाणे तुरत मुक्ति थशे. इत्यादिक ए सर्व स्वप्ने करी कहिये. ए बीजुं स्वप्ननिमित्त कह्युं. ॥४२०॥

हवे त्रीजुं स्वरनिमित्त कहेछे. मूलः—इठ्ठमणिठ्ठं जंसर, विसेसर्ज तंसरंति विन्नेयं रुहिरवरिसाइ जम्मिं, जायइ नज्जइ तमुप्पायं ॥ ४२१ ॥ अर्थः—इहां इष्ट ते नलुं

अने अनिष्ट जे मातुं इत्यादि जे स्वरना विशेषथकी जाणिए ते स्वर, एक षड्ज बीजो ऋषभ, त्रीजो गांधार, चोथो मध्यम, पांचमो धैवत, छठो पंचम, सातमो निषाद ए नेदो थकी साते प्रकारे छे. ते सांजली विचारणा करे. जेम षड्जना सांजलवा थकी सुखे निर्वाह थाय. जे कार्य करीए ते विनाश न पामे. गाय प्रमुख चतुःपद मित्र, पुत्र, स्त्री प्रमुखने वल्लन होय. इत्यादिक जाणी करी कहे अथवा जे शकुन जूए छे ते ना स्वर उपर सारु मातुं कहे ते त्रीजुं स्वरनामे निमित्त जाणवुं. हवे चोथुं उत्पा तनिमित्त कहेछे. रुधिर शब्दे लोहि वसो आदि शब्द थकी हाम, मांस, मज्जा, धा न्य, अंगार प्रमुखनी वृष्टि ज्यां थाय, ते देखी कहेके इहां नय प्राप्त थशे. इत्यादिक बीजापण उत्पात देखीने निमित्त कहे ते चोथुं उत्पातनिमित्त जाणवुं. ॥ ४२१ ॥

मूलः—गहवेधनूअअट्टहासपमुहं जमंतरिक्खंतं ॥ नोमं च नूमिकंपा, इएहिनक्का इ वियारेहिं ॥४२२॥ अर्थः—ग्रहनो वेध जेवारे थाय, चंद्रमानुं मांमलुं बृहस्प ति प्रमुख नेदे, एमज नूतनुं हास्य अकस्मात् आकाशे कलकलाट शब्द उठे; एमज प्र मुखना ग्रहण थकी गांधर्व नगरादिक देखाय त्यां जो कालोवर्ण देखाय तो दुः काल थाय, लाल देखाय तो गायने कष्ट थाय, अव्यक्तवर्ण होय तो कटकनो नं ग थाय, अने महा स्निग्ध सप्राकार सतोरण उत्तर दिशि आभ्री थाय तो गाम त था राजाने जयकारी थाय.. इत्यादिक अंतरीक्ष एटले आकाश ते संबंधी कोइ लक्ष ण देखीने सारु मातुं कहे ते पांचमुं अंतरीक्षनिमित्त जाणवुं. छठुं नौम ते नूमि कंपादिके करी. ते आवीरीते. नूमिकामांहेथी अत्यंत महोटो शब्द निकले, निर्घात पडे, नूमिकंप थाय. इत्यादिक देखाय त्यां जाणवुंके ते देशना राजा प्रधान सेना पति अने देशने नय थशे. ते छठुं नौमनिमित्त जाणवुं. ॥ ४२२ ॥

मूलः—इह वंजणं मसाई, लंछणपमुहं तु लक्खणं नणियं ॥ सुहअसुहसूयगाइं, अं गाइआइअछावि ॥४२३॥ अर्थः—इहके० आ शास्त्रनेविषे व्यंजन शब्दे मसा प्रमुख ते देखीने एम कहेके एने अमुक स्थानके मसो अथवा तल पड्योछे, माटे अमु क शुनाशुन थशे. तेमज लांछन ते लसण प्रमुख लक्षण कह्युंछे ते आवीरीते. लां छन ते कंकुना पाणी सरखुं डूटीथकी नीचे लक्षण होय तो अथवा मसो होय तो ते घणुज सारु. एवा नाव देखी शास्त्रने प्रमाणे कहे ते व्यंजननामा सातमुं निमित्त अने लक्षण नामा आठमुं निमित्त जाणवुं. इहां व्यंजन ते मसा तिला प्रमुख अने स्वस्तिक प्रमुख ते लक्षण कहिए. एम ए शुनाशुनना कर नार अंग आदेदेइने आठ प्रकारनां निमित्त होय. ॥ ४२३ ॥

निसीथमां कह्युं छे के जे मानादिक ते लक्षण जाणवुं, अने मसादिकने व्यंजन कहिए अथवा शरीरनी साथे उपन्यां ते लक्षण जाणवां, अने पछी उपजे ते व्यंजन कहिए. तथा वली निसीथमां पुरुष विशेष लक्षणनो विनाग एम कह्योछे. प्राकृत मनुष्यने बत्रीश लक्षण कह्यांछे, बलदेव तथा वासुदेवने एकशोने आठ लक्षण कह्यांछे, चक्रवर्त्तिने तथा तीर्थंकरने एक हजार ने आठ लक्षण कह्यांछे, ते जे हाथ, पग, मुख, नख, नेत्र अने गात्रनेविषे थायछे अने प्रगटपणे देखायछे, ए बाह्य जाणवां अने सत्व स्वनावादिक अन्यंतर घणां होय. ॥४२३॥इतिगाथा॥

अवतरणः—माणुम्माण पमाणंति एटले मान ने उन्माननां प्रमाणनुं बशेने अ गावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—जलदोणमद्धनारं, समुहाइसमूसिउज्जो नवउ ॥ माणुम्माणपमाणं, तिविहं खलु लरकणं योयं ॥४२४॥ अर्थः—जे पुरुषना प्रमाणथकी लगारेक महोटी होय एवी कुंडीमां पाणी नरीने तेमां पुरुषने नाख्योथको जल के० पाणीनुं डोण के० मानविशेष ते सवाघडाने डोण एवुं कहेवायछे. तो एट लुं पाणी बाहेर निकले अथवा डोणे उंणी कुंमी मांहे पुरुषने बेसाडीए, ते कुंमी पूराये ते पुरुषमानोपेत जाणवुं. ए माननुं मान; अने उन्मान ते आवीरीतेः—

अर्द्धनार जे सार पुजलेकरी नीपन्योछे तेणे कारणे तुलाए चड्यो थको जे अर्द्धना होय ते पुरुषउन्मानोपेत जाणवुं. हवे ते नारनुं मान इहां आमछे; षट्सर्षपैर्यव स्त्वेको, गुंजैकाच यवैस्त्रिनिः॥ गुंजाद्वयेन वल्लःस्यात् गयाणोतेच षोडश ॥१॥ पलेच्च दश गद्याणा, स्तेषांसा र्द्धशतमेणः॥मणैर्दशनिरेकाच, घटिका कथिता बुधैः॥२॥ घवैट निर्दशनिस्तानि, रेकोनारः प्रकीर्त्तितः॥तदर्द्धयो तुलेन्मर्त्यः सउन्मानयुतो मतः ॥ ॥३॥ हवे प्रमाण ते कहेछे. आठपरमाणूए एक तसरेणू इत्यादि क्रमे नीपन्यो जे आंगुल, ते आपणे आंगुले करी जेनुं मुख बार आंगुल होय ते प्रमाणयुक्त मुख कहेवाय. ते आपणा प्रमाणोपेत मुखथकी समूसिउके० उंचपणे नवगुणु जेनु शरीर होय एटले बार नवां आठोत्तरशो. एम एकशो आठ अंगुल प्रमाण होय तेने उत्तम पुरुष जाणवा. अने श्री तीर्थंकरने मस्तके बार अंगुलनुं उष्णीष थाय. तेमाटे नगवंत पोताने अंगुले एकशोने वीश अंगुल होय. एमज मध्यम पुरुष ते छन्नु अंगुल प्रमाण होय, जघन्य पुरुष ते चोराशी अंगुल प्रमाण होय. ए प्रस्तावथकी वात कही. मान उन्मान प्रमाण तेना तिविहंके० त्रण प्रकारे खलु इति निश्चे सहित लक्षण ए जाणवां. इतिगाथार्थ ॥ ४२४ ॥

अवतरणः—अढारस नरकनोज्जाइंति एटले अढार प्रकारना नक्ष्य नोजननुं व

इने ओगणसाठमुं द्वार कहेछे. मूलः—सूउंदणो जवन्नं,तिन्निय मंसाइ गोरसो जूसो ॥ नरकागुलजावणिया, मूलफला हरियगं माणो ॥४२५॥ अर्थः—एक सूप शब्दे दाल, बीजो उंदन शब्दे कूर, त्रीजो जवन्न शब्दे यवनी खीर अने तिन्नियके० त्रण प्रकारनु मांस, ए छ थयां, अने सातमुं गोरस शब्दे दुध तथा दही प्रमुख, तथा जूसादि चार ते आठ नव दश ने अग्यार थया, अने बारमुं हरिअंग, तेरमुं माणो. ४२५

मूलः—होइरसालूय तहा, पाणं पाणीय पाणगं चेव ॥ अट्ठारसमोसागो, निरुवहउ लोइउ पिंडो ॥४२६॥ अर्थः—चउदमुं रसालुं, तेमज पन्नरमुं, सोलमुं सतरमुं ने अढारमुं ए सूत्रकार सूत्रमांहेज वखाणशे; तेथी नाम इहां लख्यां नथी. निरुपहतके० निर्दोष, लोइयोके० जे निर्विवेकी लोकोछे तेउमां ए प्रसिद्ध पिंडके० आहार जाणवो.

हवे मांसादिक वखाणेछे. मूलः—जल थल खयहरमंसाइ तिन्निजूसो उजीरयाइ जुउ ॥ मुग्गरसोजरकाणिय,खंडीखज्जयपमुक्काणि ॥४२७॥ अर्थः—जलचर ते माछलां प्रमुख, अने थलचर ते हरणादिक, खेचर ते तेतर प्रमुख. ए त्रण जातनां मांस अने जूशब्दे जीरुं प्रमुख कटुकद्रव्य, तेणे करी सहित. मगनो रस ते जूष जाणवुं. अने नरकाणिके० नक्कु ते खाजाविक दहीथरां प्रमुख, जे उपर पांत खांमनी देखाय ते जाणवी. ॥ ४२७ ॥

मूलः—गुलजावणिया गुलपप्पलडीउ गुलहाणियाउवा नणिया ॥ मूल फलंएक्कपयं, हरिय मिह जीरयाईयं ॥ ४२८ ॥ अर्थः—गुलजावणी शब्दे जे पूर्वदेशने विषे प्रधान गोलेकरी नीपनी एवी गोलपापडी, अथवा गोले मिश्रपणे कीधी जे धाणी ते गोलधाणी जाणवी. वली मूल अने फलनो एकज जेद ए अग्यारमो जाणवो. तेमां मूल शब्दे अश्वगंधा प्रमुख,फल ते आंबा प्रमुख,तथा हरित शब्दे इहां जीरादिकनां पान तेणे करी नीपजाव्युं ते जीरकादिक.आदि शब्द थकी एवा बीजा पदार्थो पणलेवा

मूलः—माउवबुल राईण,नज्जियाहिंगु जीरयाइ जुआ ॥ सायर सालू जामज्जियत्ति तल्लरकणं चेयं ॥४२९॥ अर्थः—माक शब्दे, मांना, वस्तुल राजिकाके० राजगरा प्रमुखनी नाजीते हींग अने जीरा प्रमुखे करीने जे नलीपरे संस्कारी होय,साके० ते नाजी रसाला कहिए;अने लोकनेविषे मार्जिता एवी प्रसिद्धछे. तेनुं लक्षण आगल देखाडेछे.

मूलः—दो घयपला महुपलं, दहिय स्सद्धाढयं मिरिय वीसा ॥ दसखंम गुलपलाई, एसरसालू निवइ जोगो ॥ ४३० ॥ अर्थः—बे पल घृतना, मधनुं एक पल, दहीनुं अर्धो आढो, वीश मरी वाटेला, दश खांम अथवा गोलनां पल जाणवां. एटला पदार्थो मलेथके रसालु कहेवायछे, पण ते केवो होय ? निवइके० नृपति

एटले राजा तेने योग्य. एना उपलक्षणथकी मोहोटा ईश्वरने पण उचित होय.

मूलः—पाणंसुराइयं, पाणियं जलं पाणगं पुणोइछ ॥ दरका वाणिय पमुहं, सागो सोतक सिद्धंजं ॥४३१॥ अर्थः—पान ते सुरा मदिरा आदे देइने बीजा पण सर्व मद जाणवा. पानक ते इहां द्राखवाणी, साकरनां पाणी, एलची वासित गाढा सुरन्नि सीतल, कपुरवासित एवा स्वादवंत जाणवां. अने सागोके० शाक, सालणो ते जे तक्रके० छासथी नीपन्यां वडां प्रमुख जाणवां. ॥४३१॥ इतिगाथा सप्तकार्थः ॥

अवतरणः—ढठाणवुड्डिहाणत्ति एटले ढ स्थानकनी वृद्धि तथा हाणीनुं बशे ने सावमुं द्वार कहेढे. मूलः—वुड्डी वा हाणीवा, अणंत असंख संख जागेहिं ॥ व बूणसंख असंख अणंतगुणणेण पविहेया ॥४३२॥ अर्थः—वृद्धि अथवा हाणि ते षट् स्थानकमांहे त्रण स्थानक जागाकारे वृद्धि अने हानी होय, तथा त्रण स्थानक गुणा कारे वृद्धि अने हानी होय. अणंतके० त्यांपहेला जागाकारे एम छे के अनंतजाग वृद्धि, असंख्यातजागवृद्धि, संख्यातजागवृद्धि. अने गुणाकारे पण वस्तुनुं एम. संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, अनंतगुणवृद्धि. जेम वृद्धि तेम हानी पण केहेवी. इहां सर्वोत्कृष्ट देशविरतीनी विशुद्धि स्थानकथकी सर्व जघन्य सर्व विरतिनुं विशुद्धिनुं पहेलुं स्थानक अनंत गुणे अधिक जाणवुं. एम अनंतगुणे वृद्धि करवी एनुं विस्तरार्थ कर्म प्रकृति प्रमुख ग्रंथना पटथकी जाणवुं. इतिगाथार्थ ॥ ४३२ ॥

अवतरणः—अवहरिउंजाइ नेवतीरंतित्ति एटले जेने कोइ अपहरि न शके तेनुं बशेने एकशवमुं द्वार कहेढे. मूलः—समणी मवगयवेयं, परिहार पुलाय मप्पमत्तं च ॥ चउदसपूर्विं आहारगंच नकयाइ संहरइ ॥ ४३३ ॥ अर्थः—एक साध्वीउं जे निरतिचार चारित्रनी धरनारीउं होय ते, बीजो अपगतवेद, एटले जेणे वेद खपाव्यो होय एवा केवली; त्रीजा परिहारविशुद्धि चारित्रना धरनार, चोथा पुलाकलब्धी ना धणी, पांचमा अप्रमत्त संयतगुणगणानेविषे जे वर्त्तता होय ते, ढठा संपूर्ण चउदपूर्वना जाण, अनेसातमा आहारक शरीरना धरनार.ए सातने कोइ संहरेनही.

अवतरणः—अंतरदीवत्ति एटले अंतर द्वीपनी वक्तव्यतानुं बशेने बाशवमुं द्वा र कहेढे. मूलः—चुल्लहिमवंत पुव्वा, वरेण विदिसासु सायरं तिसए ॥ गंतूणं तर दीवा, तिन्निसए हुंति विच्छिन्ना ॥ ४३४ ॥ अर्थः—महा हिमवंत पर्वतनी अपेक्षाए न्हानो तेथी चूल जे हिमवंत नाम पर्वत ने अपरे जंबु द्वीपनी जगति अने लवण समुद्रना पाणीनो ज्यां स्पर्श थायढे; तेपाणीनां स्पर्शथकी विदिशिए त्रणशे यो

जन समुद्रमां जइए, त्यां बे बे गजदंताने आकारे दाढ निकलीछे, ते उपर चार अंतरद्वीप त्रणशे योजनने विस्तारेछे. ॥ ४३४ ॥

द्वीपनी परिधीनुं प्रमाण अने नाम कहेछे. मूलः—अउणावन्ननवसए, किंचूणे परिहि तेसिमे नामा॥एगो रुअ आजासिअ,वेसाणी चेवनंगूली॥४३५॥ अर्थः—नवशे उंगणपच्चाश योजन कांइक मातेरा एटली परिधीनुं प्रमाण छे. अने तेसिके० तेनां नाम आवीरीतेछे. एक रुचक, बीजो आजाषिक. त्रीजो वेशाणिक, चोथो लांगुलिक.

मूलः—एएसिं दीवाणं, परउ चत्तारि जोयणसयाइं॥ उंगाहिकण लवणं, सपडिदी संचउसयपमाणो ॥ ४३६॥ अर्थः—ए जे पूर्वे चार द्वीप कह्या तेथकी आगल चारशे योजन लवण समुद्र अवगाहिये, त्यारे सपडिदिसंके० तेनीउपरे प्रत्येके पूर्वादि विदिशिनेविषे चारसे योजनने प्रमाण. ॥ ४३६ ॥

मूलः—चत्तारंतरदीवा, हयगयगोकन्नसंकुलीकन्ना॥ एवं पंचसयाइं,छसयसत्तछन वचेव ॥४३७॥ अर्थः—चार अंतर द्वीपछे तेनां नाम,हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने संकुलीकर्ण एटले बे चतुष्क थया. हवे त्रीजा आदेदेइ पांच अंतर द्वीपना चतुष्क जगती थकी जेटलो लवणसमुद्र अवगाहि रह्याछे ते कहेछे. एवंके० एमज लवणसमुद्रमां पांचशे योजन जगतीथकी आगल जइये त्यां त्रीजुं चतुष्क जाणवुं, एम छशे योजन जइए त्यां चोथुं चतुष्क छे, अने सातसें योजन अवगाहिये त्यां पांचमुं चतुष्क छे, तथा आठशे योजन अवगाहिये त्यां छठुं चतुष्क छे; अने नवशे योजन अवगाहिये त्यां सातमुं चतुष्क छे. ॥ ४३७ ॥

मूलः—उंगाहिकणलवणं, विरकंजो गाहसरिसया जणिया॥ चउरो चउरो दीवा,इमे हि नामेहि नायव्वा ॥ ४३८ ॥ आयंसमिंढगमुहा, अयोमुहागोमुहायचउरेए॥ अस्समुहा हत्थिमुहा,सीहमुहा चेव वग्घमुहा॥४३९॥ अर्थः—अनुक्रमे पांचशे प्रमुख योजन लवणसमुद्र अवगाहीए त्यां विष्कंन, तेनो जेटलो समुद्र अवगाहिये तेटलोज तेनो विस्तार पण जाणवो.एवा चार चार द्वीपो ते एवानामे करी जाणवा. एकआयंसते आदर्शमुख, बीजो मेंढमुख, त्रीजो अयोमुख, चोथो गोमुख. ए त्रीजा चतुष्कनां चारनाम कह्यां, एटले बार द्वीप थयाः तथा एक अश्वमुख,बीजो गजमुख, त्रीजो सिंहमुख चोथो व्याघ्रमुखः ए चोथा चतुष्कनां नाम जाणवां. एटले सोल थया.

मूलः—तत्तोयआसकन्ना, हरिकन्नअकन्नकन्नपावरणा ॥ उक्कमुहामेहमुहा, विज्जुहाविज्जुदंताय ॥४४०॥ तेवार पछी एक अश्वकर्ण, बीजो हरिकर्ण, त्रीजो अकर्ण चोथो कर्णप्रावरण; एवानामे पांचमुं चतुष्कछे एटले वीश थया. तेवार पछी उल्का

मुख, मेघमुख, विद्युन्मुख ने विद्युद्दंत एवानामे छठुं चतुष्क छे एटले चोवीश थया.

मूलः—घणदंतलठदंताय गूढदंतायसुद्धदंताय॥वासहरेसिहरंमिय, एवंचिअठ्ठावीसावि ॥४४१॥ अर्थः—एक घनदंत, बीजो निगूढदंत, त्रीजो लष्टदंत, चोथो शुद्धदंत एवे नामे सातमुं चतुष्क जाणवुं एटले अठ्ठावीश थया. जेम एअठ्ठावीश चूल हिमवंते कह्या; एवंके० एमज वर्षधर सिखरिनाम पर्वत तेने विषे पण बीजा अठ्ठावीश छे; त्यां पण तेटलुंज लवणसमुद्रनुं अवगाहवुंछे. ॥ ४४१ ॥

इत्यादिक अर्थ सूत्रकार देखाडेछे. मूलः—तिन्नेव हुंति आई, एगुत्तरवट्टियाउनवसयाउ ॥ उगाहिकणलवणं, तावइयंचेव विछिन्ना ॥४४२॥ अर्थः—जेम हिमवंतने विषे जगतीथकी त्रणसे योजन लवण समुद्रनुं अवगाहवुं कह्युं; तेम इहांपण जगतीथकी त्रणशे योजन जइये त्यां त्रणसे योजन प्रमाण द्वीप होय, एम पहेलुं चतुष्क आदेदेइने ज्यांसुधी एकोत्तर वृद्धे चारशे, पांचशे, छशे, सातशे आठशें, नवशे योजनसुधी लवणसमुद्र अवगाहीये त्यांसुधी जाणवुं. अने विस्तार पण तेनो तेटलोज जाणवो. अने जेटलो समुद्र अवगाहिये त्यां तेटलाज शैकडा योजनना द्वीपना चतुष्क जाणवा. ए रीते ए पण एवेज नामे अठ्ठावीश द्वीप थाय. बेहु मली छपन्न अंतर द्वीप थायछे.

हवे एनेविषे जे युगलिया वसेछे तेनी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—संति इमेसुनराव ज्ज रिसहनारायसंहणणजुत्ता ॥ समचउरंससंठाणा संठियादेवसमरूवा ॥ ४४३ ॥ अर्थः—एनेविषे जे नरके० मनुष्य संतिके० छे ते केवाछे? तो के वज्र रुषभनाराच संघयण तेणेकरी सहित छे. वली समचतुरस्र संस्थाने संस्थितछे, वली देवता समान रूपना धरनार छेः ॥ ४४३ ॥

मूलः—अठधणुस्सयदेहा, किंचूणाउ नराणइत्थीउ ॥ पलिअअसंखेज्जइभाग आउ आलरकणोवेया ॥ ४४४ ॥ अर्थः—आठशे धनुष्यनुं उंचपणुं जेमना शरीरनुं छे, उपलक्षण थकी चोशठ पृष्टीकरंडक होय, एकांतरे आहारनो अभिलाष थाय, उगणाएंसी दिवस अपत्यपालना होय. इत्यादि. उक्तंच जोयणदसमंसंतणु, पिठ्ठकरंडाणमेसिचउसठ्ठी ॥ असणंचउत्थीउ, गुणसीदिणवञ्चपालणया ॥ १ ॥ वली शरीर प्रमाण जे पुरुषने कह्युं तेथकी कांइक कणु स्त्रीने थाय. एवुं जीवितव्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण आयुष्यछे. ते समस्त लक्षणेकरी उपेत एटले सहित होय.

मूलः—दसविहकप्पदुम पत्तवंछिया तहनतेसु दीवेसु ॥ ससिसूरगहणमंकुण, जूआमसगाइयाहुंति ॥ ४४५ ॥ ॥ अर्थः—दशप्रकारनां पूर्वोक्त जे कल्पद्रुम तेथकी पाम्युंछे वांछित जेणेः वली ते छपन्न अंतर द्वीपनेविषे चंद्रमा अने सूर्यना ग्रहणनो

उत्पातरूप न थाय. तेमज मांकण जू मसा, आदि शब्दथकी मनुष्यने क्लेशना करनार एवा दुष्ट वृश्चिक सर्प्प मांस प्रमुख पण न होय. इतिगाथा द्वादशकार्थ. ॥

अवतरणः—जीवाजीवाणअप्पबहुअंति एटले जीव अने अजीवनुं अल्प बहुत्व ते संबंधी बशेने त्रेसठमुं द्वार कहेछे. मूलः—नरनेरइयादेवा, सिद्धा तिरिया कमेण इह हुंति ॥ थोवअसंखअसंखा, अणंतगुणिया अणंतगुणा ॥४४६॥ अर्थः—नर ते सर्वस्तोक. एम पांचे बोल अनुक्रमे कहेवा; एटले नरथकी नारकी असंख्यातगुणा छे, अने नारकीथकी देवता असंख्यातगुणा छे; तथा देवताथकी सिद्ध अनंतगुणा जाणवा. सिद्धथकी तिर्यंच अनंतगुणा जाणवा. ॥ ४४६ ॥

मूलः—नारीनरनेरइया, तिरिञ्चसुरदेविसिद्धतिरिआय ॥ थोव असंखगुणा चउ, संखगुणाणंतगुण दोन्नि ॥४४७॥ अर्थ.—नारीके० मनुष्यनी स्त्री सर्वस्तोक, ते नारीथकी नर जे मनुष्य ते असंख्यातगुणा, एमां संमूर्छिम मनुष्य पण लेवा. नरथकी नारकी असंख्यातगुणा, नारकीथकी तिर्यंचनी स्त्री असंख्यातगुणी, तिर्यंचनी स्त्रीथकी देवता असंख्यातगुणा, ते देवोथकी देविउं संख्यातगुणीउं बत्रीसगुणीछे माटे. हवे बे अनंतगुणा ते आवीरीते, देविथकी सिद्ध अनंतगुणा, सिद्धथकी तिर्यंच अनंतगुणा.

मूलः—तसतेउपुढविजल,वाउकायअकायवणसइसकाय॥थोवअसंखगुणा हिय, तिन्नि दोणंतु गुण अहिया ॥४४८॥ अर्थः—त्रस कायिक बे इंद्रियादिक थोडाछे तेथकी तेउकाय असंख्यातगुणा छे. हवे त्रण एकबीजाथी विशेषाधिक छे ते कहेछे. तेजकायथी पृथ्वीकाय विशेषाधिक, पृथ्वीकायथकी अपकायिक विशेषाधिक, तेथकी वायुकायिक विशेषाधिक, हवे बीजा अनंतगुणा छे ते देखाडे छे. वायुकायिकथकी अकायिक जे सिद्धते अनंतगुणा जाणवा, सिद्धथकी वनस्पतिकायिक अनंतगुणा ते थकी सकायिक विशेषाधिक छे. ॥ ४४८ ॥

मूलः—पण चउ ति दुअ अणिंदिअ,एगिंदिअ सइंदिया कमा हुंति॥थोवा तिन्नि यअहिया,-दोणंतगुणा विसेसहिया ॥४४९॥ अर्थः—पंचेंद्रियादिक ते अनुक्रमे स्तोकादिक होय ते आवीरीते. पंचेंद्रियस्तोक तेथी आगल त्रण अधिक तेमां पंचेंद्रियथकी चउरेंद्रिय अधिक, चउरेंद्रियथकी तेंद्रिय अधिक, तेंद्रियथकी बेंद्रिय अधिक, ते थकी वलीअनेंद्रिय जे सिद्धतेअनंतगुणाछे.अनेंद्रियसिद्धथकीएकेंद्रिय अनंतगुणाछे.केमके वनस्पतिकाय सिद्धथकीअनंतगुणीछे माटे.एथकी सइंद्रिय नवस्थित विशेषाधिक जाणवा. ४४९ एम जीवनुं अल्प बहुत्व कहीने हवे जीव अजीवनुं अल्प बहुत्व कहेछे.

मूलः—जीवा पोग्गल समया, दव्वपएसाय पज्जवाचेव ॥ थोवाणंताणंता, विसेस

अहिआ डुवेणंता ॥ ४५० ॥ अर्थः–प्रथम सर्वथकी जीव थोडा, तेथकी त्रण प्रकारना पुद्गल जे प्रयोगपरिणतिरूप तथा मिश्रपरिणति अने विश्रसापरिणत ए त्रणे जीव द्रव्यथकी अनुक्रमे अनंतगुणे अधिक जाणवा, ते पुद्गलथकी वली कालना समय अनंतगुणा छे. ते समयथकी द्रव्यधर्मास्तिकायादिक ते विशेषाधिक छे. हवे डुवेणंता एटले बे वली अनंता छे ते आवीरीते, द्रव्योथकी द्रव्योना प्रदेश जे निर्विजाग जाग लक्षण, ते अनंतगुणा छे. केमके एक अलोकाकाश द्रव्यना प्रदेश ते सर्व द्रव्योना प्रदेशथकी अनंतगुणाछे. तेथकी सर्व पर्याय अनंतगुणाछे. केमके प्रदेश प्रदेशनेविषे अनंत अगुरुलघुपर्यायना सद्भावथकी जाणवा. इतिगाथा पंचकार्थ

अवतरणः–युगप्रधान सूरिसंखत्ति एटले युग प्रधान आचार्यनी संख्यानुं बशे ने चोसठमुं द्वार कहेछे. मूलः–जो डुप्पसहोसूरी, होहिंति जुगप्पहाण आयरिया ॥ अज्जसुहम्मप्पनिई, चउरहिआ डुन्निअसहस्सा ॥ ४५१ ॥ अर्थः–आ अवसर्पिणिए पांचमा डुषमानामा आराने छेहेडे बे हाथ प्रमाण शरीर, चोवीश वर्षनुं आयु अने जेना तपेकरीने घणां कर्मों खप्यांछे तेणेकरीने अणाहाररूप मुक्ति जेने ढूंकडी थइछे, अने मात्र दशवैकालिक सूत्रनो धरनार छतो पण चउद पूर्वधरनी पेरे शक्रने पण पूजनीक एवो समस्त आचार्योने प्रांते थशे; एवा जे श्री डुप्पसहनामा सूरि ते ज्यांलगे थशे, अने पहेला श्री सुधर्मस्वामि आदेदेइ समस्त प्रवचनना जाण थया, तेने आदेलेइने ए जरत क्षेत्रनेविषे युग प्रधान आचार्य बे हजार ने चारे करी अधिक एटला थशे. एक आचार्य वली एम केहेछेके बे हजार ते चारे करी, रहित करिये एटले एक हजार नवसेंने छन्नु थशे. अने उक्तंच ॥ इत्थंआयरियाणं, पणपन्ना हुंति कोडिलरकाउं ॥ कोडिसहस्से कोडी, सएय तह इत्तिया चेव ॥ १ ॥ एवुं श्री महानिशीथमांहे पंचावन कोडीप्रमुख कह्याछे, ते सामान्य आचार्य आश्री जाणवा. त्यांज वली एम कह्युंछे के एमां केटलाक गुरु श्री तीर्थंकर सरखा गुणगणसहित थशे. ॥ ४५१ ॥ इति गाथार्थ.

अवतरणः–उसप्पिणीअंतिमजिण तित्थपमाणंति एटले उत्सर्पिणी काले चरम जिनना तीर्थना प्रमाणनुं बशेने पांसठमुं द्वार कहेछे. मूलः–उस्सप्पिणिअंतिमजिण, तित्थंसिरिरिसहनाणपज्जाया ॥ संखेज्जाजावइया, तावयमाणं धुवं जविही ॥ ४५२ ॥ अर्थः–उत्सर्पिणीकालनेविषे अंतिमजिण श्रीजइकृत तेनो तीर्थ ते श्रीऋषज देव पहेलो तीर्थनाथ समजवो. तेनो ज्ञानपर्याय एक हजारवर्षे उणो पूर्वलाख एवा ज्ञानपर्याय ते जेटला संख्याता थाय, तेप्रमाण उत्सर्पिणीकाले चोवीशमो श्री जइकृत

एवेनामे तीर्थंकर थशे तेनो तीर्थ तेटलेज प्रमाणे संख्यात पूर्व लक्षरूप ध्रुवके० निश्चेथी थशे ॥ ४५२ ॥ इति गाथार्थ.

अवतरणः—देवाणप्पवियारोत्ति एटले देवोने मैथुनना स्वरूपनुं बशेने ठासठमुं द्वार कहेछे. मूलः—दोकायप्पवियारो,कप्पाफरिसेणदोनिदोरूवे ॥ सद्देदो चउरमणे नत्थि वियारो उवरि अत्थि ॥४५३॥ अर्थः—सौधर्म ने ईशानरूप बे देवलोक तिहां कायायेकरीने देवताने मैथुननी सेवाछे; तथा सनत्कुमार ने माहेंद्र नामा बे देव लोकनेविषे कामाभिलाष उत्पन्न थयाथी देवांगनानी साथे स्पर्श करेछे; एम ब्रह्म अने लांतक नामा बे देवलोकनेविषे देवांगनानुं रूप देखवाथकीज कामाभिलाष पूरण थायछे. अने शुक्र तथा सहस्रारवासी देवताउने देवांगनाना शब्द सांभलवाथीज मैथुननी इच्छा पूरण थायछे. अने आनंत, प्राणत, आरण्य ने अच्युत लक्षण ए चारे देवलोकनेविषे रहेनारा देवो मात्र मने करीनेज विषय सेवा करे; पण त्यां स्त्रीनो विचारके० गमन ते त्यां संभवे नही. ॥ ४५३ ॥

हवे ग्रैवेयकादिकनी वात कहेछे. मूलः—गेविज्जणुत्तरेसुं,अप्पवियारा हवंति सव्व सुरा ॥ सप्पवियारविईणं, अणंतगुणसोरकसंजुत्ता ॥ ४५४ ॥ अर्थः—ग्रैवेयक अने अनुत्तरविमानवासी देवोनेविषे अप्रविचार मैथुनरहित सर्व सुरके० देवता छे, ते सप्रविहार स्थिति कामसहित स्थितिना धरणहार जे समस्त देवोछे ते देवो तथा देवी थकी एदेवता अनंतगुणु अधिक जे सुख, तेणे करी संयुक्त होय छे. इतिगाथा द्वयार्थ

अवतरणः—कण्हराइण सरूवंति एटले कृष्णराजीना स्वरूपनुं बशेने सडसठमुं द्वार कहेछे. मूलः—पंचमकप्पेरिट्ठंमि पत्थडेअट्ठकण्हराईउ ॥ समचउरंसक्खाडिय ठिईउ दोदो दिसि चउक्के ॥४५५॥ अर्थः—कृष्ण शब्दे सचित्त अचित्त पृथ्वी परिणामरूप राजीकाके० शाश्वत आकारे रही जे पंक्ति तेने कृष्णराजी कहिये. ते पांचमा देवलोकनेविषे अरिष्टनामे त्रीजो पाथडो तेने विषे पूर्वोक्त शब्दार्थ एवी आठ कृष्णराजीछे; परंतु समचउरंस आषाढाने आकारे स्थितिके० रहेलुंछे जेहनुं, एवी दोदोके० प्रत्येके चार दिशिने विषे बे बे कृष्णराजी रहीछे. ॥ ४५५ ॥

मूलः—पुव्वावरउत्तरदाहिणाहिं मज्झिल्लयाहिपुट्ठाउ ॥ दाहिणउत्तरपुव्वा, अवरा उ वहि कण्हराईउ ॥४५६॥ अर्थः—पूर्वदिशि अने अपरके०बीजी पश्चिमदिशिए जे कृष्णराजीछे ते उत्तर अने दक्षिणे आयतके० लांबी जाणवी.एमज उत्तरनी बे कृष्णराजी छे ते पूर्व अने पश्चिमे लांबी अने दक्षिणनी बे कृष्णराजी पण पूर्व पश्चिमने लांबी छे; अने मज्झिल्लयाके० पूर्वदिशिनी मांहेली अने दक्षिणनी बाहिरली ते मांहोमांहे सं

लग्नछे. एमज दक्षिणनी मांहेली अने पश्चिमनी बाहेरली मांहोमांहे संलग्नछे. तथा पश्चिमनी मांहेली अने उत्तरनी बाहिरली माहोमांहे संलग्नछे. तथा उत्तरनी मांहेली ने पूर्वनी बाहेरली मांहोमांहे संलग्नछे. एम सर्व कृष्णराजीउ मांहोमांहे संलग्नछे; ते स्थापनाथकी परीक्षा करवी. पण इहां ते स्थापना करी नथी. ॥ ४५६ ॥

हवे वली एना कुणाना विजागनुं स्वरूप देखाडेछे. मूलः—पुवावरांछलंसा, तंसापुण दाहिणुत्तराबज्झा ॥ अप्तिंतरचउरंसा, सवाविय कण्हराईउ ॥ ४५७ ॥ अर्थः—पूर्व दिशिनी अने अपराके० पश्चिम दिशिनी ए बेउ छलंसके० छ हांस होय. तथा दक्षिण ने उत्तरनी कृष्णराजी त्र्यंसपणे बाहेरली अने अभ्यंतर चउरंस छे. ते सर्व पूर्वादिक चारे दिशीनी कृष्णराजी चउरंसछे. ॥ ४५७ ॥

हवे एनुं प्रमाण कहेछे. मूलः—आयामपरिक्खेवेहिं, ताणविअसंखजोयणसहस्सा ॥ संखेज्जसहस्सा पुण, विक्खंने कण्हराईणं ॥ ४५८ ॥ अर्थः—आयाम शब्दे दीर्घपणुं अने परिक्षेप शब्दे परिधि कहिए. तेणेकरी ते कृष्णराजी सर्वस्थानके असंख्यात सहस्र योजन प्रमाणछे. इहां एम केहेवुं जे कोइक देवता त्रण चपटी वगाडतां जेटलो वखत थाय तेटला वखत मांहे ए जंबुद्वीपने फरतो एकवीश वार प्रदक्षणा करे; एवी शक्ति वालो देवता छ महिनासुधी फरे तो पण पार पामे नही; तो अनेरो बीजो शीरीते पार पामे? एटली दीर्घके० लांबी छे. अने संखेज्जके० संख्याता सहस्र योजन पुनःके० वली विष्कंने एटले विस्तारे पहोलाइए कृष्णराजी थाय.

हवे ईशानादिक विदिशि तथा दिशिनेविषे विमाननुं विशेष कहेछे. मूलः—ईसाणदिसाईसुं, एयाणं अंतरेसु अछसुवि ॥ अछविमाणाइ तहा, तम्मज्झेएक्कगविमाणं ॥ ४५९ ॥ अर्थः—ईशानकुण आदेदेइ पूर्वादिदिशिने अनुक्रमे चार विदिशिछे, अने चारदिशि एम आठेने विषे आठ विमान छे. तहाके० तेमज आठ विमानोने मध्यजागे एक विमान छे

हवे ते विमानोनां नाम कहेछे. मूलः—अच्चिंतहच्चिमालिं, वइरोयण पभंकरय चंदानं ॥ सूरानं सुक्कानं, सुपइठ्ठानंच रिठ्ठानं ॥ ४६० ॥ अर्थः—ईशानकूणे अर्चिनामे विमानछे; अने पूर्वदिशिए अर्चिमाली विमान छे ने अग्निकूणे वैरोचन विमानछे; दक्षिणदिशिए प्रभंकर विमानछे, नैऋतकूणे चंद्राभ विमानछे, पश्चिमदिशिए सूर्याभ विमानछे, वायव्यकूणे शुक्राभ विमानछे, उत्तरदिशिए सुप्रतिष्ठाभनामा विमानछे अने वचमां मध्यनुं नवमुं रिष्टाभनामा विमान छे. ए विमानोनां नाम कह्यां.

हवे ए विमानोनेविषे जे देवता वसेछे तेमनी स्थिति, तेमना नव अने नाम कहेछे. मूलः—अछायरछिईया, वसंतिलोगंतियासुरा तेसु ॥ सत्तछनवनवंन्ना. गिज्जंति

इमेहिनामेहिं ॥४६१॥ सारस्सय माइचा, वन्नी वरुणाय गद्दतोयाय ॥ तुसिआ अ व्वाबाहा, अग्गिवाचेव रिठ्ठय ॥ ४६२ ॥ अर्थः—जेमनी आठ सागरोपम आयुष्यनी स्थितिछे एवा लोकांतिक देवो ते विमानोनेविषे वसंतिके० वसेछे. वली सात अ थवा आठभवे संसारनो अंतकरीने जेमने मोक्षे जवुंछे एवा देवो वसेछे तेमनां नाम कहेछे. एक सारस्वत, बीजो, आदित्य, त्रीजो वन्हि, चोथो वरुण,वली पांचमो गर्द तोय,छठो तुषित,सातमो अव्याबाध,आठमो अग्नेय अने नवमो अरिष्ट नामे जाणवो.

हवे ए देवोना परिवारनी संख्या कहेछे. मूलः—पढमजुअलंमि सत्तठ, सया णि बीयंमि चउदससहस्सा ॥ तइए सत्तसहस्सा, नवचेव सयाणि सेसेसु ॥४६३॥ अर्थः—पहेलो सारस्वत ने आदित्य ए युगल एटले बन्नेनो एकठो सातसे देवोनो प रिवार जाणवो. एम वन्हि ने वरुण ए बीजा युगलने चउदहजारनो परिवार जाण वो. त्रीजो युगल जे गर्दतोय अने तुषित एने सात हजारनो परिवार जाणवो. अ ने शेष जे त्रण विमान रह्यां, तेमने नवसेनो परिवार छे. ४६३ इतिगाथानवकार्थः॥

अवतरणः—सच्चायस्सअकरणंति एटले सझाय न करवो अर्थात् असझाइनुं बशेने अडशठमुं द्वार कहेछे. मूलः—संजमघा उप्पा ए सा दिव्वे वुग्गहेय सारीरे ॥ म हियासच्चित्तरउ, वासंमिय संजमे तिविहं ॥४६४॥ अर्थः—इहां प्रथम अस्वाध्यायि कनो शब्दार्थ वखाणेछे; ते आमछे. आ शब्दे मर्यादायेकरी सिद्धांतोक्त न्याये करी अध्याय एटले भणवुं अने सुष्टु शब्दे भलो जे अध्याय ते स्वाध्याय कहिये. अने ते स्वाध्यायिक ज्यां नथीते अस्वाध्यायिक कहिये. ते रुधिरधूली प्रमुख, मूल बे प्र कारेछे. तेमां एक आत्मसमुत्थ. अने बीजो परसमुत्थ त्यां आत्मसमुत्थ ते जे सझायनो करनार. तेना शरीरथकी उठके० प्रगटपणे जे थयो ते आत्मसमुत्थ जा णवो; अने पर ते आत्माथी अनेरो तेथकी समुत्थके० उपन्यो ते परसमुत्थ.

त्यां बहु वक्तव्यपणाने लीधे पेहेलो परसमुत्थ पांचप्रकारेदेखाडेछे. एक संयम शब्दे चारित्र तेनो ज्यां घात एटले विनाश थाय ते जाणवो, बीजो उत्पातनेविषे थयो ते उत्पातिक, त्रीजो सादिव्व जे देवतानो प्रयूंजवो, चोथो वुग्गह एटले व्युद्ग्रह शब्दे संग्राम कहिये, पांचमो शरीरथकी नीपन्यो ते शारीर. ए पांच प्रकारना अस्वाध्या यिकनेविषे सझाय करतां यतिने आज्ञाभंगादिक दोष थाय.

हवे ए संयमघातादिक पांचे विवरीने वखाणेछे. तेमां प्रथम संयमघाती अस्वा ध्यायिक ते त्रण प्रकारेछे. तेज देखाडेछे. एक महिका, बीजी सचित्तरज अने त्री जी वर्षा. ए त्रण संयमोपघाती अपस्वाध्यायिकछे. ॥ ४६४ ॥

हवे एज महिकादिक त्रण वखाणवाने अर्थे सूत्रकार गाथा कहेछे. मूलः—महिया उगप्नमासे, सच्चित्तरउय ईसिआयंबे ॥ वासे तिन्निपगारा, बुब्बुय तव्वज्झफुसिएय ॥४६५॥ अर्थः—प्रथम महियाके० धूहरि ते प्रसिद्धछे. ते क्यां थाय? तोके गर्भ मासेके० कार्त्तिकमासथी मांमीने माहा महिनासुधी ए गर्नमासमांहे धूहरि पड ती सघळो समकाळे अपकाय नावित करे. बीजो सचित्तरज ते कहिये जे वायरा नी उराडी सूक्ष्म धूळ ते सचित्तरज पडतीथकी त्रणदिवस उपरांत समस्त पृथ्वी कायिक नावित करे, ते जेवारे पडे तेवारे दिशिइषत् लगारेक ताम्रके० राती थाय. हवे त्रीजी वर्षा, इहां वास एटले वरसवुं. तेने विषे त्रण प्रकार होय ते कहेछे. ए क बुब्बुदके० ज्यां वर्षादपडे ते थकी परपोटा थाय ते वर्षा बुब्बुद कहिये. बीजो मेह वरसे अने परपोटा न थाय एवो जे मेह ते तद्वर्षक कहिये. त्रीजो फुसीआ शब्दे न्हाना न्हाना वर्षादना छांटा ज्यां पडे ते फुसीआ कहिये.

ए त्रण प्रकारनी वृष्टि छते जेमां जेटलो काळ असझाइ होय ते कहेछे. जे व र्षादमां परपोटा थाय तेवो वर्षाद आठ पहोर सुधी निरंतर वरसे तो उपरांत अ सझाइ थाय. वळी एक आचार्य एम कहेछे के त्रण दिवस उपरांत असझाइ था य छे. अने जेवारे परपोटे रहित वर्षाद वरसे तेवारे पांच दिवस उपरांत असझाइ थायछे. तथा जे वारे फुसीआ पडे तेवारे सात अहोरात्र उपरांत असझाइ जाणवी.

ए संयमोपघातिक जे नेद ते सर्वने इव्यादिक चार प्रकारे परहरवुं कहेछे. मूलः— दव्वे तंचिअदव्वं, खेत्ते जहिपडइजच्चिरंकालं ॥ ठाणाइनासनावि, मोत्तुंउस्सास उम्मेसे ॥ ४६६ अर्थः—इव्येतो तेज इव्य जे सचित्तरज वर्षादिकनुं वरसवुं. बीजुं खेत्रे तो जेटला खेत्रनेविषे धूहरी प्रमुख पडे तेटले खेत्रे, त्रीजुं काळथी तो जेटला काळसुधी धूहरी पडे. चोथुं नावे तो एक श्वासोश्वास ने मेषोन्मेषवार्जि शेषअनेरु ठाणाइके० स्थानादिकवर्जे.इहां आदि शब्दथकी गमनआगमन पडिलेहण प्रमुख अने वळी नासके० नाषानुं बोलवुं; उपलक्षणथीतो सर्व कायानी चेष्टाने परिहरे, ए निःकारणे वर्जे; परंतु जे ग्लानादि संबंधी कार्य उपजे तो जयणाये करी हाथनी संज्ञाये,आंखनी संज्ञाये,चक्षुनी संज्ञाये, आंगुलीनी संज्ञाये कहे अथवा मुखे वस्त्र आपी बोले, वर्षाकल्प उढीने जाय एटले संयमोपघात असझाइ वखाण्यो.

हवे उत्पातिक वखाणेछे. मूलः—पंसूअमंसरुहिरे, केससिलावुट्ठि तहरउग्घाए॥ मंसरुहिरे अहोरत्तं अवसेसेजच्चिरं सुत्तं ॥ ४६७ ॥ अर्थः—इहां वृष्टि शब्दे पांशु वृष्टि,मांसवृष्टि, एम रुहिरेके० रुधिरवृष्टि,केशवृष्टि,शिलावृष्टि, इहां वृष्टि शब्द सर्वत्र

जोडिये. तेमां प्रथम पांशुवृष्टि ते जे अचित्तरज पडे, तेमज मांसना खंम पडे ते मांसवृष्टि जाणवी. रुहिरके० लोहिना बिंदु पमे ते रुधिरवृष्टि जाणवी. केश निमाला जे उपरथी पमे ते केशवृष्टि जाणवी. शिला शब्दे पाखाणनी वृष्टि अथवा शिलारूप करा पडे ते शिलावृष्टि जाणवी. तेम रजोद्घात ते ज्यां दिशि रजस्वला सर्वत्र धूंधला अंधकार सरखुं दशे दिशाए थाय. हवे त्यां असवाइ थाय ते कहेछे.

मांस रुधिरनी वृष्टि एक अहोरात्र थाय तो ते थया पछी एक अहोरात्र वर्जिने सवाय करिये. अने अवशेषके० बीजी जे पांशुवृष्टि प्रमुख छेते जच्चिरंके० ज्यां लगे ते थाय त्यांलगण नंदिप्रमुख सूत्र गुणिये नही. शेष समस्त क्रिया करिये.

सांप्रत पांशु ने रउग्घाय ए बे पद वखाणतो छतो तेनेविषे अस्वाध्यायिपणु पण कहेछे. मूलः—पंसूअच्चित्तरउ, रयस्सलाउ दिसा रउग्घाउ ॥ तछसवाएनिव्वाए यसुत्तं परिहरंति ॥४६७॥ अर्थः—पांशु शब्दे धूमाडा सरखी लगारेक धोली ते पांशु अचित्तरज कहिए. अने रउग्घायके० रजस्वला तेने कहिये के ज्यां सर्व दिशिउने विषे समस्त प्रकारे अंधकार देखाय तेने रजोघ्घात कहिये. तछके० त्यां हवे सवात एटले वायरे सहित अथवा निर्वात एटले वायरे रहित तो पण ज्यां लगी ते रज पडे त्यां सुधी सूत्र परिहरे एटले सिद्धांतनो सवाय करे नही. एटले उत्पातिक द्वार वखाण्युं. ॥ ४६७ ॥

हवे सादिव्व ए वखाणेछे. मूलः—गंधव्वदिसाविज्जुक्कुग गज्जिएजूवजरकआलित्ते ॥ एक्केकपोरसिंगज्जियंतुदोपोरसीहणइ ॥ ४६७ ॥ अर्थः—गंधर्वनगर ते संध्यासमय नेविषे चक्रवर्त्ति प्रमुखना नगरने उपरे उत्पातनो करणहार नगर अट्टाल प्राकारादिक रह्युं देखाय ते गंधर्व कहिये. बीजुं दिशा शब्दे दिग्दाह ए आगल वखाणशे. तेमज अकाले वीजली तथा उल्कापात अने प्रकाश सहित आकाशनेविषे रेखा देखाय; वली गज्जिए ते मेघनी गर्जनानीपरे अव्यक्त ध्वनि थाय ते जाणवी. अने जूवए आगल कहेशे. तथा जरकआलि ते जे एक दिशिये वचाले वचाले वीजलीना उबुका सरखो प्रकाश देखाय ए गंधर्व नगर आदेदेइ जे कह्या तेमां एक एक पहोरसुधी सवा करिये नही. अने गर्जितमां बे पहोर हणे. इहां ए विशेष छे जे गंधर्वनगर ते देवकृतज थाय अने शेष दिग्दाह प्रमुखजे छे तेनी भजना जाणवी एटले कोइकवारे देवकृतज थाय, अने कोइवारे स्वभावेज थाय, तेमां जे स्वभावे थाय त्यां सवाय परिहरवो नही पण ए देवकृतजछे एवुं जाणी न शकाए ते माटे सवाय करिये नही. ॥ ४६९ ॥

हवे दिग्दाह वखाणियेछैए. मूलः—दिसिदाहुछिन्नमूलो, उक्कसरेहापगाससंजुत्तो ॥ संझाछेयावरणो, उजूवउंसुक्कदिणतिन्नि ॥ ४३० ॥ अर्थः— पूर्वादिक एक दिशिने विषे छिन्नमूलके० नीचो न होय अने उंचो बलता नगरनीपरे प्रकाश देखाय ते दिग्दाह कहिये. अने उल्कापात ते कहीए ज्यां रेखा एटले लीटी प्रकाशेकरीसहित जेम ताराउं पडते देखाय. हवे जूहउं वखाणेछे. संझाछेयावरणोके० संध्याने छेदनुं आवरण ते चंद्रमाछे ते आवीरीतेः—सांझ समये संध्या कहिये तेना विजागनो छेद जेणे करिये ते काल कहिये. तेहनो आवरणहार चंद्रमा ते चांदरणा पखवाडामां ज्यांसुधी चंद्रमा रहे त्यांसुधी जाणवुं. एटले बीज त्रीज चोथ त्यांसुधी जुहउं कहिये. इहां संध्याछेदने अणजाणवे करी कालवेलानुं जाणपणु न होय तेथी ते दिवसनी संध्याए प्रादोषिककाल कल्पे नही, सूत्रपौरसी करिये नही.

हवे जेम ए देवकृतछे तेम बीजा पण देवकृत देखाडेछे. मूलः—चंदिम, सूर, वरागे, निग्घाए गुंजिए अहोरत्तं ॥ संझाचउपाडिवए, जंजहिंसुगिम्हए नियमा ॥ ॥ ४३१ ॥ चंदिमके० चंद्रमानुं अने सूरके० सूर्यनुं उपरागके० ग्रहण ते जे दिवसे थइने निवर्त्युं एटलुं बाहेर थकी लहिये. वली अभ्रे सहित अथवा अभ्रे रहित एवा आकाशनेविषे निर्घात एटले गाज समान ध्वनि निकले अने गुंजित ते पण गाजवुं तेनोज विकार जाणवो. ए बन्ने जेवारे थाय तेवारे ते वेला ए आरंभीने अहोरात्र एटले आठ पहोर सुधी असज्झाय ग्रहण करिये तथा निर्घात गाजवानी असज्झा कही. हवे चउके० चार संध्या ते सूर्यना अस्त वखते अने उदयनी वखते तथा मध्यरात्रिये अने दिवसना मध्यान्हे ए चार वखते प्रत्येके बे बे घडीसुधी सज्झाय करवी नही. ए अन्य शासननेविषे पण निषेध्युंछे. यतः संध्याकाले च संप्राप्ते, कर्म्मचत्वारिवर्जयेत् ॥ आहारंमैथुनं निद्रा, स्वाध्यायंच चतुर्थकं ॥ १ ॥ हवे एनुं फल कहेछे. यतः आहाराज्जायतेव्याधि, मैथुनाच कुलक्षयः ॥ दरिद्रताच निद्रायां, स्वाध्यायान्मरणं जवेत् ॥ २ ॥ एरीते अन्यदर्शणीउंमां पण सज्झायनो निषेधछे, परंतु बीजी क्रियानो निषेध नथी.

हवे पडिवाए इहां पडवाना ग्रहण थकी पडवाने अंतना चार महामह जणाव्या ते आगली गाथाए कहेशे. हवे जंजहिंके० जे गाम नगरादिकनेविषे अनेरो पण पशुवधादिक उछव थाय तेपण नियमके० निश्चेसुं लहिये. एतावता ज्यां जेटला कालसुधी पशुवधादिक प्रवर्त्ते त्यां जगे त्यां सज्झाय करवो नही. ॥ ४३१ ॥

हवे चार महामह कहेछे. मूलः—आसाढी इंदमहो; कत्तियसुगिम्हएय बोधव्वे॥

एए महामहा खलु एएसिं जाव पाडिवया ॥४३२॥ अर्थः—आषाढ महीनानी पूर्णिमा, वली इंदमहो शब्दे इंद्रोत्सव ते आसो महीनानी पूर्णिमा अने कार्तिकी पूर्णिमा तथा ग्रीष्म शब्दे चैत्रनी पूर्णिमा ए चार पूर्णिमा, ते बोधवेके० जाणवी. एनाज चार पडवा तथा महामहोत्सव जेहनेविषे थाय ते महामह समस्तमांहे एअतिशयवंत छे. जे देशमां जे दिवसथकी जेटला काल सुधी महामहोत्सव प्रवर्त्ते, ते देशमां ते दिवसथी आरंजीने तेटला कालसुधी असज्झाइ जाणवो. यद्यपि समस्त महामह पूर्णिमा लगीज थाय एवी प्रसिद्धिछे, तथापि पडवानेविषे पण उत्सव प्रवर्त्ते, तेथी पडवो पण वर्जीये. ए कारणेज कह्युं के एएसिंजावपाडिवयाके० ए पूर्वोक्त चारना ज्यां लगे पडवा थाय त्यांसुधी जाणवुं. ॥ ४३२ ॥

हवे चंद्र तथा सूर्यनुं ग्रहण आश्रयी जघन्य अने उत्कृष्टे सज्झायनो विघात काल कहेछे. मूलः—उक्कोसेण डुवालस, चंदोजहन्नेण पोरिसीअठ ॥ सूरो जहन्न बारस, पोरसिउक्कोस दोअठा ॥४३३॥ संगहनिबुड्ड एवं, सूराइजेण हुंति होरत्ता ॥ आयं नंदिणमुक्को, सो च्चिय दिव सोय राईय ॥४३४॥ अर्थः—उत्कृष्टचंद्रमा बारपहोर हणे अने जघन्ये आठ पहोर हणे ते आवीरीतेः—उगतो चंद्रमा जो राहुए ग्रह्यो उगे तो चार पहोर रात्री अने चार पहोर दिवसना एम आठ पहोर थाय; अने जो चंद्रमा ग्रह्योज आथमे तो चार पहोर दिवसना अने चार पहोर रात्रिना तथा चार पहोर वली बीजा दिवसना एम बार पहोर थाय. अथवा उत्पाते सघली रात्रिनुं ग्रहण होय अने ग्रह्योज आथम्यो त्यां ग्रहणनी रात्रीना चार पहोर अने अहोरात्र ते वली बीजो दिवश तेना आठ पहोर एम बार पहोर थाय. अथवा वादलाए आकाश छायुं होय तेणे करी जाण्युं नही जे कई वेलाये ग्रहण थयुं? अने ग्रह्यो आथमतो देखी प्रजात समये जाण्युं; तेवारे ते आखीरात्र अने बीजा आठ पहोर थाय. एम पण बार पहोर चंद्रमाने ग्रहण थाय.

हवे सूर्यने ग्रहणे एम जाणवुं ते कहेछे. सूरोजहन्नके० सूर्यने ग्रहणे जघन्ये बार पहोर अने उत्कृष्टे दोअठा एटले सोल पहोर थायछे ते आवीरीते. सूर्य ग्रह्यो थकोज आथम्यो तेवारे चार पहोर रात्रिना अने वली अहोरात्रि बीजो एम मली बार पहोर थाय. हवे सोल पहोर ते आवीरीते, सूर्य राहुए ग्रह्योज उदय पाम्यो अने उत्पातना वशथकी ग्रह्योज आथम्यो, तेवारे बे अहोरात्र असज्झाय जाणवो ए ग्रह्यो उगे अने ग्रह्यो आथमे तेना ए सोल पहोर देखाड्या.

अन्यथा सूराई जेणहुंतिहोरत्तं एटले सूर्य अने चंद्रमाने अहोरात्रेज होय, तेवारे

दिवसे ग्रहण थयुं अने दिवसेज मूकाणु तेवारे तेटलो दिवस अने आगली सामी रात्रीआवे तेटलीज अहोरात्र चंद्रमानेग्रहणे पण जाणवां.चंद्रमा नउगेतो असझाइ.

अनेरा वली एम कहेछे के आइन्नंतिके० ए आचीर्णछे. दिणमुक्कोके० जे वेला ए ग्रहण थयुं तेवारे मूकाणा पछी ते दिवस ने ते रात्री अने नवो सूर्यउगे त्यारे अहो रात्र पूरण थयो. तथा चंद्रमानेपण एम रात्रेज ग्रह्यो रात्रेज मूकाणो तेवारे ते शेष रात्री वर्जीये. तेमाटेज कह्युं के साविथदिवसोयके० तेज दिवस अने रात्रे पण तेज रात्रिये असझाइ थाय. ॥ ४७४ ॥

हवे वुग्गह वखाणेछे. मूलः–वुगाह दंमियमाई, संखोन्ने दंमिएव कालगए ॥ अणरायएय सजए, जच्चिर नंदोच्चहोरत्तं ॥ ४७५ ॥ अर्थः–विग्रह ते वढवाड अने दंमी ते गामादिकना धणी ते संग्रामने अर्थे उद्युक्त थयाछे तेनां कटक ज्यांलगे उपशमेनही;आदिशब्द थकी सेनापति प्रमुखने विरोध छे त्यांसुधी असझाइ जाणवी.

एम प्रसिद्धजे बे स्त्रीओ ते पोतामां वढवाड करती होय अथवा मल्लयुद्ध थ तुं होय, वली बे गामना तरुण पुरुषो घणा मल्या छता पाखाण प्रमुखे वढवा ड करेछे, अथवा बाहुए करी ढिंक पाटु अरस परस एक बीजाने मारता वढेछे अथवा होलिए प्रसिद्ध कलह थायछे, ते ज्यांलगे उपशमे नही त्यांलगे असझाइ.

केमके दंमी सेनापत्यादिकने कलहे अनेक कौतिक थाय ते माटे व्यंतर देवो एक ठा थाय ते पोतपोताना पक्ष करे तेवारे सझाय करतां छल नाखे अने लोकने प ण अप्रीति उपजे अने कहे के अमे इहां बीहीता रह्याछइये, शुं जाणिये जे कांइ आपदा आवी प्राप्त थशे, ते ए श्रमण कांइ दुःख जाणता नथी. वेग जणेछे. एवो लोकापवाद थाय एम संक्षोभ विग्रहसंबंधी कह्यो.

हवे दंमी एवकालगएके० दंमीक जे राजा ते कालगत एटले मरण पामे छते अणरायएके० अनेरो राजा ज्यांसुधी नथाय त्यांसुधी प्रजाने महा संक्षोभ होय, संकोच अने चलचित्त थाय, तेथी सझाय करवो नही. वली सजएके० जेवारे म्ले च्छादिकनो जय थाय तेवारे पण सझाय न करवो.

हवे ए विग्रहादिकनेविषे असझाइनो विधि कहेछे. जच्चिरंके० ज्यांसुधी अनि दोच्चके० अनिर्भयपणु थाय, अस्वस्थपणु होय त्यांसुधी असझाइ जाणवो. अने पछी स्वस्थता थइ छतां पण एक अहोरात्र सझाय न करवो. ॥ ४७५ ॥

हवे संक्षोभ दंमि कालगए. एणे अनेरु पण सूचव्युं छे तेज कहेणहार छ तो गाथा कहेछे. मूलः–तद्दिवसन्नोइआइ, अंतोसत्तण्हजावसझाउ ॥ अणहस्सय

हुग्विसयं, दिहिविचित्तम्मि सुद्धंतु ॥४७६॥ अर्थः—जोइय शब्दे गामनो स्वामि मर ण पामे. आदिशब्दथकी आगल जे महत्तरकादिक कहेशे तेनो परिग्रह एनाव जाणवो. सात घरोमांहे जो कोइ कालगत थयो तोते दिवसके० अहोरात्रसुधी असझाइ जाणवो.

वली इहां प्रसंगे अनेरा पण असझाइ कहेछे. अणहस्सके० कोइ अनाथ शो हाथमांहे मरण पामे त्यां साधुने यतना कहेछे. सझातर जे उपाश्रयनो धणी तेने कहे अथवा अनेरो बीजो कोइ तथाविध श्रावक होय तेने वात कहे जे अमने अनाथमृतके सझायनो अंतराय कस्यो छे. ते एम कह्या उतां पण जो ते श्रावक परठवे नही तो बीजी कोइ वस्तिए जतो रहे, अने कदाचित् बीजुं कोइ उपाश्रय न होय तो रात्रे कोइनदेखे तेवारे ते अनाथ मृतकने वृषभ अन्यत्र परठवे. वली ते कले वर कुतरा सृगालादिके फाडी फाडी चुंथी नाख्यो होय तो ते जोइने समस्त प्रकारे परठवे.एम यत्नकरख थके अशठ सुद्ध ते सझाय करे तो प्रायश्चित्तनो विजागी न थाय.

हवे तद्दिवसन्नोइआइ ए गाथामां आदि शब्दथकी जे कह्या हता ते वखाणेछे.

मूलः—मयहर पगए बहु पक्खिएयसत्तघरअंतरमयंमि ॥ निदुक्कत्तियगरिहा, नपढं ति सणीयगंवावि ॥ ४७७ ॥ अर्थ.—महत्तर शब्दे जे गाममांहे प्रधान, प्राकृतके० जे गामनो अधिकारी होय तथा बहुके०घणा जेने स्वजनादिक पक्षछे, ते बहु पाक्षिक जाणवो. तथा च शब्दथकी सझातरे अथवा बीजे कोइ सामान्य आपणी वस्ति आ श्री सात घरमांहे मृतक थयेथके ते दिवस अहोरात्रीसुधी असझाइ थाय. इहां का रण कहेछे. निडुक्कत्ति आए एटले निर्डुक्की एवी गर्हानो संजवछे ते कारणे सझाय क रे नही; अने जो करे तो सणीयगंके० तेम करे जेम कोइ सांजले नही. वली ज्यांसुधी स्त्रीनुं रुदन सांजलिए त्यांसुधी पण सझा वर्जवो कह्योछे. एटले विग्रह द्वार वखाण्यो,

हवे शारीरिकनो अवसर तेना बे जेदछे. एक मनुष्यसंबंधी बीजो तिर्यंचसंबंधी. तेमां तिर्यंचसंबंधी ते वली जलजादिकना जेदथकी त्रण प्रकारेछे. ते वली एक एक द्रव्यादिकना जेद थकी चार चार प्रकारेछे. ते सूत्रनो करनार पोतेज देखाडेछे.

मूलः—तिरिपंचेदियदवे, खेत्ते सहिहत्त पोग्गलाइन्नं ॥ तिकुरुत्तमहंतेगा, नगरेवाहं तु गामस्स ॥४७८॥ अर्थः—विकलेंद्रियने लोही नथाय, माटे तिर्यंच पंचेंद्रिय तेनो रुधिर प्रमुख पडे तेज द्रव्यथी वर्जवुं अने खेत्रे तो ज्यां पडथो त्यांथी साठ हा थसुधी असझाइ करे. ए खेत्रे अने ज्यां यति रहेछे त्यां तिर्यंचसंबंधि पुजलके० मांस तेणेकरी आकीर्णके०व्याप्त थयोछे. कुतरा प्रमुखे गामो गमे गाममां नाख्युंछे तो ते तिकुरत्तके० त्रण कुरथ्या ते त्रण नानी शेरी ते ज्यां आंतरो होय ते स्थानके

सबाय करिये. अने महंतेगाके० महंत महोटी शेरी होय तो एकज वर्जवी. प्रवाहे नगरनी शेरी महोटी थाय; केमके ज्यां थइने राजा चतुरंग सेना सहित जाय. एवी एक शेरीने अंतरे सबाय करवो. अने जो ते गाम सर्वत्र मांसे व्याप्त थयुं होय, अने शेरी त्रण पण न लाभे तेवारे गामस्सबाहिंतुके० गामने बाहेर जइ सबाय करे एटले द्रव्य अने खेत्रनी वात कही. ॥ ४३८ ॥

हवे काल अने भावनी वात कहेछे. मूलः—कालेति पोरिसिछव, भावे सुत्तं तु नंदिमाईयं ॥ सोणियमंसं चम्मं, अठीविय अहव चत्तारि ॥ ४३९ ॥ अर्थः— कालथकीतो लोही प्रमुख दीठा थका त्रण पहोर सुधी असबाइ कह्योछे, ए अल्प लोही प्रमुखे जाणवुं. अने उंदर प्रमुख बिल्लाडीए मार्यो होय त्यां आठ पहोर असबाइ थायछे. तथा भावथी तो नंदिप्रमुख सूत्र गुणिये नही. एम द्रव्यादिकना भेद थकी चार प्रकारनो असबाइ कह्यो अथवा एम पण चार प्रकारेछे ते देखाडेछे. सोणिय एटले एक शोणित शब्दे लोही, बीजुं मांस त्रीजुं चर्म्म ए प्रसिद्धछे चोथुं अस्थि ते हाड. एवा भेदथकी पण चार प्रकारछे. एटले लोही, मांस चर्म्म ने हाड ए चारे पूर्वोक्त असबाइमां लेवां, मात्र एक लोहीज लेवुं बीजां न लेवां एम समजवुंनही. ॥ ४३९ ॥

हवे विशेष देखाडेछे. मूलः—अंतोबहिंचधोयं, सठीहत्थाउ पोरिसी तिन्नि ॥ महकाइअहोरत्तं, रत्ते वूढेयसुद्धंतु ॥ ४४० ॥ अर्थः—जे अंतोके० साठहाथमांहे कोइ पण स्थानके मांस धोयुं होय अने धोइने बाहेर नाख्युं पण तेना कोइएक अवयव पड्या होय तो त्रण पहोर सबायनेविषे परहरवा. एम मांस पकवे त्यां पण असबाइछे; पण साठ हाथ थकी बाहेर मांस धोयुं रांध्युं पकव्युं होय तो असबाइ न थाय. हवे आठ पहोर कह्या हता तेनी भावना देखाडियेछैये. महकाइअहोरत्तं एनो अर्थ प्रथम कह्योछे. इहां एक आचार्य वली एम कहेछे के मार्जारे उंदर लीधो अने फाडया विनाज तेने मात्र मारीनाखीने अन्य स्थानके लइगयो अथवा त्यांज गलि गयो तो असबाइ न थाय.

अनेरा वली ए वात मनमाने कहेछे के कोणजाणे कांइ फाडयो अथवा न फाडयो लइगयो. एक वली एम कहेछेके, ज्यां मांजारादिक विना पोतानी मेलेज मरण पाम्यो अथवा कोइएके मार्यो परंतु अभिन्न रह्यो; ज्यांसुधी ते भेदाय नही अने तेनुं रुधिरादिक पृथ्वीउपर पडेनही त्यांसुधी असबाइ नहोय एम कहेछे. परंतु ते पक्ष

नजो नथी. केमके सोणियमंसं इत्यादिक चार प्रकारनी असद्याइ कही तेथी अभिन्न तोपण कलेवर पडे सद्याय करवो नही.

रत्तवूढेयके० ज्यां सात हाथमांहे लोही पड्युं होय ते स्थानक उपर पाणी नो प्रवाह वह्यो होय तेणे करी ते लोही धोवाइ जाय पछी तो त्यां त्रण पहोरमां पण भूमिका शुद्धथई; माटे सद्याय करिए. ॥ ४८० ॥

इहां तिर्यंचनी असद्याइनो प्रस्तावछे तेथी बीजीपण असद्याइ देखाडेछे. मूलः— अंडगमुज्भियकप्पे, नयभूमि खणंति इयरहा तिन्नी ॥ असद्याइयप्पमाणं, मछियपाया जहिंबुडे ॥ ४८१ ॥ अर्थः—सात हाथमांहे इंडुं पडे ते इंडुं हजी फुट्युं नथी तो उपाडी परठवीने सद्याय करिये. अने ते इंडुं जो पडतांवारज फुट्युं अने तेनुं कलल भूमिकाये पड्युं ने भूमिका खणी नही तो सद्याय न करिये. अने इयरहा तिन्निके० अन्यथा प्रकारे भूमि खणी जे लाग्युंहतुं ते दूर कर्युं तो पछी त्रण पहोर सीम असद्याइ जाणवो.

हवे कप्पे ए बोल वखाणेछे. कल्पके० वस्त्र ते उपर पड्युं जे इंडुं ते पडतांने फुटी पड्युं. तेनुं कललके० बिंडु ते वस्त्रने लाग्युं ते सात हाथ बाहेरे जइ धोइये तो असद्याइ नथाय, अने सात हाथनी मांहेली कोरे धोइये तो असद्याइ जाणवो.

इंडाने बिंडुनुं लोही केटलुं पडेतो असद्याइ थाय? एवुं प्रमाण कहेछे. मछियके० माखीना पग ज्यां बुडे एटले पण असद्याइ जाणवो. ॥ ४८१ ॥

वली असद्याइनो भेद देखाडेछे. मूलः—अजराउतिन्निपोरिसि, जराउआणंजरे पडिएतिन्नि ॥ रायपहबिंडुपडिए, कप्पेवूढेपुणोनत्रि ॥ ४८२ ॥ अर्थः—अजरायुके० हाथणी प्रमुख तेने प्रसवे जरा पडे नही त्यां त्रण पहोर असद्याइ जाणवो, अने जरायुनी जरा पडी ए पण त्रण पहोरज जाणवा. अने वली जो लागी रहेतो अहो रात्र छेही पछी त्रण पहोरसुधी असद्याइ जाणवो.

रायपहके० राजमार्गनेविषे रक्तनुं बिंडु पडे तो पण सद्याय करवो कल्पे छे. इहां कारण एछे जे आवता जता मनुष्यादिक तेने पगेकरी तत्काल उपडीजाय अने इहां भगवंतनी आज्ञाये पण प्रमाण छे तेथी दोष नथी अने राजमार्गविना सात हाथमां बिंडु पडे तो उपर वर्षादिकना योगेकरी धोवाइजाय. अथवा उपलक्षण थकी अग्निनायोगेकरी बले एटले सद्यायने माटे शुद्ध थाय. एटले तिर्यंचसंबंधी असद्याइ वखाण्यो.

हवे मनुष्य संबंधी असद्याइ वखाणेछे. मूलः—माणुस्सयं चउद्धा, अट्ठिमुत्तूण सयमहोरत्ति ॥ परियावन्नविवन्ने, सेसे तिय सत्तअट्ठेव ॥ ४८३ ॥ अर्थः—मनुष्य

संबंधी असझाइ ते द्रव्य थकी तो पूर्वोक्त मांस चर्म लोही अने हाडना भेद थकी चार प्रकारेछे. त्यां अट्ठिमोत्तूणके० अस्थि जे हाड ते मूकीने शेष त्रणने खे त्रथकी एकशोहाथ सुधीमां अने काल थकी एक अहोरात्रसीम सझाय करवो नही.

अने जो मनुष्य अथवा तिर्यंच संबंधी असझाइनुं कोइ कारण जो क्यां पडयुं होय ते परियावन्नके० परिणामांतर प्राप्तपणे करीने स्वजावेज विवरणचूत खेरना कांटानी परे वर्णांतरने प्राप्त थयो तो त्यां असझाइ न थाय. अने ए परियावन्नमूकी शेष त्रण दिवस सात दिवस आठ दिवस असझाइछे. ॥ ४८३ ॥

एहज वात सूत्रकार देखाडेछे. मूलः—रत्तुक्कडाउ इछी, अठदिणे तेण सत्तसुक्क हिए ॥ तिन्निदिणा नपरेणं, अणुउगंतं महारत्तं ॥ ४८४ ॥ अर्थः—गर्जना आधा नना कालनेविषे जो कदाचित् स्त्री रक्तोत्कट थाय तो ते स्त्रीये पुत्रिका प्रसवे छते आठदिवस असझाइ जाणवी; पण नवमे दिवसे सझाय करवो अने दारक जे स्त्री ते शुक्रादिकपणे होय ने ते पुत्र प्रसव करे तेवारे त्यां सात दिवस असझाइ जाण वो अने आठमे दिवसे सझाय करिए.

स्त्रीने महीने महीने ऋतुआवे ते संबंधी लोही दीठा पछी त्रण दिवससुधी अ सझाइ जाणवो अने त्रणदिवस उपरांत लोही न रहे तो त्यां असझाइ न थाय. जे कारणे ते अणउगके० ऋतुनुं लोही केवाय नही. किंतु ते महारक्त कहिये. त्रण दिवस जेवुं लोही थाय तेवुं लोही पछी न थाय. ते पोताने स्वजावेज परियाव न्नविवन्न होय ते माटे सझाय कालने न हणे. ॥ ४८४ ॥

हवे प्रथम जे अट्ठिमुत्तूण एटले हाड मूक्युं होय एम कह्युं हतुं तेनी वात कहेछे. मूलः—दंतेदिठिविगिंचण, सेसठीवारिसेववरिसाइं ॥ दड्ढठीसुनचेवइ, कीरइ सझायपरिहारो ॥ ४८५ ॥ अर्थः—दांतदीठे एटले बालकादिकने दांतपडे ते दांत सो हाथथकी बाहेर विगिंचणके० परठववो अथवा दांत पडयो अने दीठोनही तो ए स्थानक रुडीरीते जोइए तेम जोता थकां दांत लाजे नही तो, ए स्थानक शुद्ध छे एवी कल्पनाए करी सझाय करिये. अन्य वली एम कहेछे के तेनो काउसग्ग करीने पछी सझाय करवो. हवे दांत टालीने शेष अस्थिनी वात कहेछे. शेष बी जां हाड शो हाथमां पडयां थकां त्यां बार वर्षनो असझाइ जाणवो अने ते हाड जो बल्यां होय तो त्यां असझाइ थाय नही. ॥ ४८५ ॥ इति गाथार्थ ॥

अवतरणः—नंदीसर दीवठिइत्ति एटले नंदीश्वर द्वीपनी स्थितिनुं बशेने उंगणो तेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—विरकंजेकोडिसयं, तिसठकोडीव लरकचुलसीइ ॥ नंदीसरो

पमाणं, गुलेणइयजोयणपमाणं ॥ ४७६ ॥ अर्थः—नंदि शब्दे समृद्धि ते उदार जिनमंदिर उद्यान पुष्करणी पर्वत प्रमुख जे घणा पदार्थ तेना सार्थेने अद्भुतप णेकरी ईश्वर तेने नंदीश्वर कहिए. ते नंदीश्वर द्वीप आ जंबुद्वीपथकी आठमो द्वी पछे. ते वलयने आकारेछे. विष्कंभे एनुं प्रमाण एकशो त्रेसठ कोडी चोराशी ला ख योजन एटला योजन प्रमाणांगुले करी एनुं प्रमाण छे. ॥ ४७६ ॥

हवे इहां अंजनगिरि प्रमुखनी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—एयंतोअंजणरयण सामकरपसरपूरिअवंता ॥ बालतमालवणामलि, जुयवघणपमलकलियव. ॥४७७॥ अर्थः—एयंके० ए नंदीश्वरद्वीपमांहे जे अंजनगिरि छे ते केवाछे? तो के श्या मवर्णे जे रत्नना विशेष तेनांजे करपसरके० किरणना समुह तेणेकरी पू रिअके० पूरयाछे उपांतके० छेहेडा जेना. वली बालके० नवां एवां जे तमाल ना मा वृक्ष तेना वननी आवलीके० श्रेणी तेणेकरीने सहित. वली घनके० मेघ ते नां पटल तेणे करी कलितके० सहितनीपरे सहितछे. ॥ ४७७ ॥

मूलः—चउरो अंजणगिरिणो, पुव्वाइदिसासु ताणमेक्कोके॥चुलसीसहस्सउच्चो, उ गाढोजोयण सहस्सं ॥४७८॥ अर्थः—पूर्वली गाथाए जे विशेषण कह्यां ते विशेष णेकरीने विशेषित एवा चार अंजनगिरि एवे नामे पर्वतछे. ते पूर्वादिक चारदिशि नेविषेछे. ताणंके० ते अंजनपर्वतोनुं एकेकनेविषे प्रमाण चोराशीहजार योजन उंचपणे छे अने अवगाढ भूमिकाने विषे एक हजार योजनछे ॥ ४७८ ॥

मूलः—मूलेसहस्सदसगं, विरकंभेतस्सउवरिसयदसगं ॥ तेसु घणमणिमयाइं, सिद्धाययणा इंचत्तारि ॥४७९॥ अर्थः—मूलमां दश हजार योजन प्रमाण विष्कंभ छे अने तेना उपर दश सय जोजन छे. वली त्यां अंजनगिरिने विषे घणमणिके० घणां नाना प्रकारनां रत्न तेणे करी नीपजाव्याएवा सिद्धायतन चार प्रासाद छे.

हवे ए सिद्धायतननुं प्रमाण कहेछे. मूलः—जोयण सयदीहाइं, बावत्तरि क सियाइ रम्माइं ॥ पन्नास विछडाइं, चउडवाराइं सधयाइं ॥ ४८० ॥ अर्थः—ते प्रासाद एकशो योजन दीर्घके० लांबपणे अने बहोत्तेर योजन ऊसियके० उंचपणे वली रम्मके० महा मनोहर अने पन्नासके० पचाश योजन विस्तारेछे. वली जेनेविषे चार बारणांछे तथा सधयाइके० ते प्रासादो ध्वजाएकरी सहित छे. ४८०

मूलः—पइदारं मणि तोरण, पेछा मंडव चिराय माणाइं ॥ पंचधणुस्सय ते लिअ, अठोत्तर सयजिण जुआइं ॥४८१॥ अर्थः—ते एकेका प्रासादनां चार चार बार णांजे ते एकेकुं बारणुं सोल योजन उंचुछे, अने आठ योजन पहोलुंछे. ते प्रति द्वार एट

ले बारणा बारणाप्रत्ये मणीचंद्रकांत प्रमुख तेनां तोरणछे अने प्रेक्षामंम्प नाटक करवाने अर्थे जे मंम्प तेणेकरी बिराजमान एटले शोननिक, एवां प्रासाद वली जेनुं पांचसे धनुष्य उंचपणुं देहमाननुंछे, एवा एकशोने आठ जिन तेणेकरी युक्तछे. इहां जिन अने जिनप्रतिमाने नेद समजवो नही. तेमाटेज सूत्रकारे मूल पाठमां जिनयुक्त कह्याछे. ॥ ४९१ ॥

मूलः—मणिपेढिया महिंदक्ष थायपुस्करिणि थायपासेसु ॥ कंकेल्लि सत्तवन्नय, चंपय चुअवन्नजुत्ताउ ॥ ४९२ ॥ अर्थः— वली ते सिद्धायतन मणिपेढियाके० रत्नमय वेदिका तेणेकरी मांहेलीकोरे सहित छे, अने प्रासाद उपर महाइंद्रध्वजो छे तेणे करी सहित छे. वली पुष्करणी वापि ते पसवाडानेविषे कंकल्लिके०अशोक सप्तपर्ण, सहकारनी जाति,चांपो प्रसिद्धछे, तथा च्यूत ते आंबा तेनां वन तेणेकरी प्रयुक्तके० सहित एवी वापिओछे तेनां नाम कहेछे. ॥ ४९२॥

मूलः—नंडत्तरायनंदा, आणंदानंदिवद्धणानामा ॥ पुस्करिणीउ चउरो, पुव्वंजण चउदिसीसंति ॥ ४९३ ॥ अर्थ—हवे चारदिशिने विषे चार वापिछे तेमनां नाम कहेछे. पूर्वदिशिये नंदोत्तरानामे वापीछे, तेमज दक्षिणे नंदा, पश्चिमे आनंदा अने उत्तरदिशिए नंदिवर्द्धना. ए चार पुष्करणी ते इहां पूर्वदिशिनो जे अंजनगिरिछे तेनी चारे दिशाए जाणवी. वली ए वापिनुं विशेष कहेछे. ॥ ४९३ ॥

मूलः—विस्कंजायामेहिं, जोयणलस्कपमाणजुत्ताउ ॥ दस जोयणू सियाउ, चउदिसि तोरण वणजुयाउ॥ ४९४ ॥ अर्थः—विष्कंजे अने आयामे लाख योजन प्रमाण युक्तछे अने दश योजन उंम्रपणेछे. चार दिशिए तोरण अने वन तेणेकरी सहितछे.

हवे वापिमांहे दधिमुखछे तेनी वात कहेछे. मूलः— तासिंमझे दहिमुह, मही हरा डद्द दहि असियवन्ना ॥ पुस्करिणी कल्लोला, हणणुब्भवफेण पिंडुव ॥ ॥ ४९५ ॥ अर्थः—ते वापिनीमांहे दधिमुख एवे नामे करी पर्वतछे ते स्फटिकना छे. तेणे कारणेज कहेछे,डद्द अने दहीनीपरे सितके०धवले वर्णे छे, इहां उपमा देखाडे छे. ए पुष्करणी वापि संबंधी जे पाणीना कल्लोल तेना आहणवा थकी उपन्यां जे फीण तेना पिंम्नीपरे. ॥ ४९५ ॥

मूलः—चउसहि सहस्सुच्चा, दसजोयण सहसविछम्हा सव्वे ॥ सहस्स महोउगाढा, उवरि अहो पल्लया गारो ॥ ४९६ ॥ अर्थः—चोसठ हजार योजन उंचा अने दश सहस्र योजन प्रमाण विस्तारे सघला दधिमुख एक हजार योजन पृथ्वीमां

हे उवगाढके० रह्याछे. तथा उपर अने नीचे सरखा, तेणे कारणे पल्लगके०पालो जे धान्य नाखवानुं ठाम विशेष, तेने आकारेछे. ॥ ४७६ ॥

हवे प्रासादनी वक्तव्यता अने रतिकरनी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—अंजणगिरि सिहरेसुय, ते सुविजिण मंदिराइ रुंदाइ ॥ वावीणमंतरालेसु पवयडुगं डुगं अ त्थि ॥४७७॥ अर्थः—प्रथम कह्या जे अंजनगिरि पर्वतो, तेमना शिखरोनेविषे अने ते सुविके० दधिप्रमुख पर्वतोनेविषे जिणके०श्रीवीतरागनां मंदिरके० प्रासाद ते रुंद के० विस्तीर्ण; ते आम जे. एकशो योजन लांबां अने पच्चाश योजन पहोलां,तथा बहोत्तेर योजन उंचां. वली तेनां चार बारणांछे,ते एकेक बारणुं सोल सोल योजन ऊंचुं अने आठ आठ योजन पहोलुं,एनुं घणुं कथन शास्त्रांतरथकीजाणवुं.॥४७७॥

हवे वापि वापिना आंतरानेविषे बे बे पर्वतोछे तेमनां नाम अने स्वरूप कहेछे. मूलः—ते रइकराभिहाणा, विदिसिविआ अठ पउमरायाभा ॥ उवरि छियजिणं दसिणाण घुसिण रस संगपिंगव्व॥ ४७८ ॥ तेरतिकर एवेनामे पर्वतो वापिने आंतरे दिशि विदिशिनेविषे रह्या एकेक दिशि आश्रयी बे बे करतां आठनी संख्या थाय छे. पण ते केवाछे? तोके पद्मरागशब्दे राते वर्णे जे मणी तेनीपरे छे आभाके० कांति जेमनी. इहां उपमा कहेछे. उवरिछिअके० ते रतिकरनामा बत्रीश पर्वतो नी उपर रह्याछे जे शाश्वत जिनेंद्र, तेनुं जे स्नान, तेणेकरी कुंकुम जल तेने संगे करी जाणे गुलाबी रंगना थयाछे. ॥ ४७८ ॥

वली ते केहेवाछे? मूलः—अच्चंतमसिणफासा, अमरेसरविंदविहियआवासा ॥ दसजोयणसहस्सुच्चा, उव्विठागाउअसहस्सं ॥ ४७९ ॥ अर्थः—अत्यंत मसृणके० सुकुमालछे स्पर्श जेनो अने अमरेसरके० देवोना ईश्वर एवा जे इंद्र तेने विहित के० कर्युंछे आवासके० रहेवापणु ज्यां, एटले अनेक इंद्र ते देवना समुदाये पर वस्याथका त्यां आवी प्रासादनी वंदनाकरी क्रीडा करेछे. तेनुं प्रमाण ते दश ह जार योजन उंचा अने एक हजार गाऊ भूमिमांहे उद्विद्ध. ॥ ४७९ ॥

हवे तेनु संस्थान कहेछे. मूलः—झल्लरिसंठाणठिआ, उच्चत्तसमाणविछडासवे॥ते सुवि जिणभवणाई, नेयाई जहुत्तमाणाइ ॥५००॥ अर्थः—झालरने संस्थाने ठिआ के० रह्याछे. ते सर्वेनो विस्तार उंचपणें करी सरखोछे अने तेनेविषे पण श्री वीतरागनां भुवनछे तेनुं यथोक्त जेवुं पूर्वे मान कह्युं तेहज मान इहां पण जाणवुं.

हवे जेम पूर्वदिशिना अंजनगिरिनी वाव्य नंदोत्तरादिक नामे कही, तेम शेष त्रणदिशिना अंजनगिरिनी वापिनां नाम पण कहेनार थको दक्षिणनी चार वा

व्यनां नाम कहेछे. मूलः—दाहिण दिसाइ नद्दा, विसालवावीश्र कुमुयपुरकरणी ॥ तह पुंमरीगणीमणि, तोरणश्रारामरमणीश्रा ॥ ५०१ ॥ अर्थः—दक्षिणदिशिए पूर्वनी बाजुए नडानामे वाव्यछे, एम अनुक्रमे दक्षिणनी दक्षिणे विसाल नामे वाव्यछे, अने दक्षिणनी पश्चिमे कुमुदानामे वाव्यछे, अने दक्षिणनी उत्तरदिशिए पुंमरिगणी नामे वाव्यछे. परंतु ए समस्त वाव्य मणिमय, तोरण, आराम, वन—तेणे करी रमणीय महामनोहर छे. ॥ ५०१ ॥

पश्चिमदिशिना अंजनगिरिनी वाविनां नाम पूर्वादिक चार दिशिना क्रमे करी देखाडेछे. मूलः—पुरकरिणिनंदिसेणा, तहाश्रमोहायवाविगोथूना ॥ तहयसुदंसणवावी, पछिमश्रंजणचउदिसासु ॥ ५०२ ॥ अर्थः—पश्चिमदिशिनो जे अंजनगिरिछे तेनी पूर्वदिशिए नंदिसेना नामे पुष्करणी वाव्यछे, दक्षिणे अमोघानामे वाव्यछे, पश्चिमे गोथूनानामे वाव्यछे तेमज उत्तरदिशिए सुदर्शना नामे वाव्यछे. ए पश्चिमदिशिनो जे अंजनगिरि—तेनी चारेदिशिने विषे वापिउछे तेमनां नाम कह्यां. ॥५०२॥

हवे उत्तरदिशिना अंजनगिरिनी चारेदिशानी वापिनां नामो कहेछे. मूलः—विजयायवेजयंती, जयंतिश्रपराजिश्राउवावीउ ॥ उत्तरदिसाइपुवत्त वाविमाणाउबारसवि ॥ ५०३ ॥ अर्थः—पूर्वदिशिए विजयानामे वापिछे, दक्षिणदिशिए वैजयंती, पश्चिम दिशिए जयंती अने उत्तर दिशिए अपराजिता. एरीते उत्तरदिशिनो अंजनगिरि—तेनेविषे ए पूर्वोक्त वापिने प्रमाणे ए सर्वमली बार थइ. ॥ ५०३ ॥

हवे समस्त वापिउनुं सरखुं विशेषण कहेछे. मूलः—सवाउवावीउं, दहिमुहसेलाणठाणनूयाउ अंजणपमुहंगिरिते, रसगंविक्काइचउदिसंपि ॥ ५०४ ॥ अर्थः—सर्व वापिउ ते दधिमुख प्रमुख जे पर्वतो तेमने स्थानकनूत छे. ए एकेक दिशिए एक एक अंजनगिरि, चार चार दधिमुख अने आठ आठ रतिकर मली तेर छे. अंजनपर्वत प्रमुख विक्काइके० वर्त्तेछे; ते सुर्वां तेर तेर पर्वतो चारेदिशाए छे. ॥५०४

हवे सर्व उपसंहार देखाडेछे. मूलः—इय बावन्नगिरीसर, सिहरहिश्रवीयरायबिंबाण ॥ पूयएकएचउविह, देवनिकाउ समेइसया ॥५०५॥ अर्थः—एम तेरने चार दिशिएकरी चार गुणा करिए तेवारे बावन्न पर्वतो थाय. तेमनां जे शिखर—त्यां स्थिर रह्यांछे जे श्री वीतरागनां बिंब तेनी पूजाने अर्थे जुवनपति प्रमुख चतुर्विध देवनिकायना देवो ते समेइके०आवेछे, सयाके० सदा सर्वदा आवेछे एम जाणवुं.

इहां जीवाभिगम दीवसागरपन्नत्ति अने संघयण प्रमुख ग्रंथ साथे अन्यथा पण देखायछे. ते मतांतर जाणवुं. यडुक्तं ॥ अंजणगिरीसुदोसुं, सोलससुंदहिमुहेसु

लेसेसु ॥ बत्तीसरइकरेसु, नंदीसरदीवमझंमि ॥ १ ॥ जोयणसयदीहाइं, पन्नासंवि ब्डाइंसवाइं ॥ बावन्नरूसियाइं, बावन्नोहोंतिजिणजवणा ॥ २ ए बे गाथा शास्त्रो क्त सोपयोग जणी लखीछे. ॥ ५०५ ॥ इति गाथा विंशतिकार्थ.

अवतरणः—लद्धीउत्ति एटले अठावीश लब्धीनुं बशेने सीतेरमुं द्वार वखाणेछे मूलः—आमोसहिविप्पोसहि, खेलोसहिजल्लओसहीचेव॥ सबोसहि संजिन्ने उही रि उविउलमइलद्धी॥५०६॥ चारणआसीविसकेवलीयगणधारिणोयपुवधरा ॥ अरहंत चक्कवट्टी, बलदेवावासुदेवाय॥५०७॥ खीरमहुसप्पिआसव, कोठयबुद्धी पयाणुसारी य ॥ तह बीयबुद्धितेयग, आहारगसीयलेसाय ॥५०८॥ वेउविदेहलद्धी, अरकीणम हाणसीपुलायाय ॥ परिणामतवविसेसं, एमाइ हुंति लद्धीउ ॥ ५०९ ॥ इत्यादिक ए चारे गाथा सुगम छे, नवरं एटलुं विशेष जे, एमाइके० इत्यादिक शब्द थकी अने री पण शुन, शुनतर, शुनतम परिणामना विशेष थकी अने तपना प्रनावे करी ल ब्धीउ थायछे. एनां नाम मात्र गाथाए करी कहीने हवे एनुं स्वरूप वखाणनार छतो

प्रथम पांच लब्धीनुं स्वरूप बे गाथाये करी कहेछे. ॥५०९॥ मूलः—संफरिसणमा मोसु. मुत्तपुरीसाणविप्पुसोवावि ॥अन्नेविडित्तिविठा, नासंतिपइतिपासवणं॥५१०॥ एएअन्नेअबहू जेसिं सवेवि सुरहिणोवयवा ॥ रोगोवसमसमबा, ते हुंति तउसहिपत्ता ॥५११॥अर्थः—संस्पर्शना शब्दे करी आमर्ष हाथ प्रमुखनुं स्पर्शवुं तेहज उसह,ते आम र्षौपधि एहज लब्धि जाणवी. इहां लब्धि अने लब्धिवंतने मांहो मांहे नेद जाणवो नही. अनेलब्धिशब्द प्रत्येके जोडिए. ए आमर्षौषधि ए संपदा यतिनीछे, एम सर्वत्र जाणवुं. इहां ए नाव छे के ज्यां यतिने हाथने स्पर्शवे करीने अनेक प्रकारना रोग उपशमे. एम मूत्रने पुरीस ते वडीनीति कहिये,तेना विप्पुसोके० अवयव,ते पण रोग हरवाने समर्थ होय, ते वप्पौपधि नामा बीजी लब्धि जाणवी. हवे आगला बे पद ते पांगतरछे, तेनो ए अर्थ जे अन्नेके० अनेरा वली एम कहेछे. विडत्तिके० विष्टा कहेछे अने पइत्तिके० प्रश्रवण ते मूत्र कहेछे. एएके० जेम ए बे कह्यां तेम त्रीजी अनेरा पण खेल शब्दे श्लेष्म तेहज छे जेनुं औषध ते त्रीजी खेलौषधि लब्धि जाणवी. चोथी जलशब्दे मल ते दांत, कान, नासिका, नेत्र,जीन तथा शरीरनो मल ते सुरनीयुक्त होइने रोग उपशमावेछे.ए जेनुं औषध ते चोथीजलौषधिलब्धि जाणवी. एमज पांचमी नख केश प्रमुख शरीरना कहेला अणकहेला जे अवयव ते पण जेना उसहके० औषध समानछे, ते पांचमी सर्वौषधि नामा लब्धि जाणवी. एम ते तदौषधि प्राप्त कहिये. वली एनुं ए विशेषछे जे वरसादनुं पाणी तथा जेना अंग

ना संग थकी नदीनुं पाणी पण समस्त रोग हरण करे, तेमज विषेकरी मूर्छागत थयां एवां जे प्राणी तेना अंग ते पण तेना वायरे करी निर्विष थाय, तथा विष संयुक्त अन्न पण तेमना मुखमां पेठुं थकुं विषरहित थाय, वली विषम व्याधिए पीड्या एवा जे प्राणी तेवा प्राणी पण जेना वचनने सांभळवे करी अथवा दर्शन एटले देखवे करी व्याधिरहित थइ जाय. ए सर्व सर्वौषधि लब्धिनो प्रभाव जाणवो.

हवे छठी लब्धि कहेछे. मूलः—जोसुणइसवओसुण, इसव्वविसए ऊसव्वसो एहि ॥ सुणइबहुएविसद्दे ,भिन्नेसंभिन्नसोएसो ॥ ५१२ ॥ अर्थः—छठी जेकोइ सर्व इंद्रिए सांभळे, सर्व इंद्रिओनो विषय गमेते एक इंद्रिए करी जाणे, सांभळे. चक्रवर्त्तिना कटकनो कोलाहल छतां पण शंख भेरी, पणव पटहादि एकठा करी वजाव्यां छतां पण ते सर्वना जूदा जूदा शब्द ने जाणे; ए छठी संभिन्नश्रोतलब्धि जाणवी. अने सातमी अवधिज्ञानी लब्धि ते मुहूर्त्त द्रव्य विषयिक ज्यां ज्ञान ते अवधिज्ञानलब्धि सूत्रकारे सुगम अने प्रसिद्धपणाने लीधे कही नथी. ॥ ५१२ ॥

आठमी मनःपर्यवलब्धि कहेछे. मूलः—रिउसामन्नंतम्मत्त गाहिणीरिउमईम णोनाणं ॥ पायं विसेसविमुहं, घडमेत्तं चित्तियं मुणइ ॥५१३॥ अर्थः—अढी आंगुले हीन जे मनुष्यक्षेत्र—तेने विषे रह्या जे संज्ञीपंचेंद्रियजीवो—तेमना मनमां चिंतवेली वातने सामान्यपणे जाणे ते ऋजुमतिनुं ज्ञान कहिए. पण ते ज्ञान केवुंछे ? तोके पायंके०प्रवाहे विशेषथकी विमुखके० ऊपरांठुंछे. केमके जेवारे कोइ घडो चिंतवे तेवारे एवुं कहेके एणे घडो चिंतव्योछे;एटलुं जाणे. पण तेना देश कालादिकना कह्या जे विशेष ते नजाणे. एटले आ घट अमुकदेशनो करेलोछे. इत्यादिक विशेष नजाणे.

हवे मनपर्यवना बीजा भेदनी नवमी लब्धि कहेछे. मूलः—वउलं वत्थुविसेसण, नाणंतग्गाहिणीमईविउला॥ चिंतअमणुसरइघडं, पसंगउपज्जवलएहिं ॥५१४॥अर्थः—विपुलके० विस्तीर्ण संपूर्ण मनुष्यक्षेत्रमांहे वस्तु जे घटादिक तेनुं विशेष ज्ञान जे देश कालना प्रमाण संख्यानुं स्वरूप तग्राहिणीके० तेनी ग्रहण करनार मति, ते विपुलमति कहिये. एनुं ए विशेषछे जे विशुद्धतरपणाये करीने चिंतव्यो जे घट तेने अनुसरे, जाणे अने प्रसंगथको ते घट संबंधी पर्यायना सइकडा तेणेकरी सहित एटले अमुक घट द्रव्यथकी सोनानो रूपानो अथवा त्राबानो माटीनो, एम कालथकी उष्णकालादिकनो, क्षेत्रथकी पाटलीपुरादिकनो अने भाव थकी नवपूराणादिक पर्याय ते सर्व जाणे. एरीते आठमी ऋजुमतिलब्धि अने नवमी विपुलमतिलब्धि

कही अने दशमी चारणलब्धि छे तेनुं स्वरूप प्रथम जंघाचारण ने विद्याचारणना द्वारमां वखाण्युंछे माटे इहां वखाणता नथी. ए दशमी जंघाचारणलब्धि थई. ५१४॥

हवे अग्यारमी आसीविष लब्धि कहेछे. मूलः—असीदाढातग्गय, महाविसासीविसाडुविहनेया ॥ ते कम्मजाइनेएण णेगहाचउविहविगप्पा ॥ ५१५ ॥ अर्थः—आसी शब्दे दाढ कहिये, तग्गयके० ते दाढने विषे जेने गतके० रह्युंछे विष ते आसीविष, ते कर्म अने जातिना नेदेकरी बे प्रकारेछे. त्यां पेहेलुं कर्मेकरी ते पंचेंद्रिय, तिर्यंच, मनुष्य अने सहस्रार देवलोकसुधीना देवता तेमने ए तपश्चर्यादिक अनुष्ठाने करीने अथवा अनेरे गुणे करीने आसीविषादिक साध्य क्रिया करे, शापे करी मारे, देवता अपर्याप्तावस्थाये ते लब्धिए सहित होय. केमके पहेला मनुष्यना नवनेविषे आसीविषलब्धिवंत होय, पछी तेना संस्कार लगीने ते लब्धिमंतज कहिए; परंतु पर्याप्तावस्थाए तेने ते लब्धि न कहिए. यद्यपि देवता शापेकरी, बीजानेमारे छे तो पण ते लब्धि न कहेवय. ए तो स्वनावे नवप्रत्येक समर्थाइ समस्त देवोने छेज, परंतु गुणप्रत्येक समर्थाइ थाय ते विशेष जाणवी. तेनेज शास्त्रमां लब्धि कहिये.

हवे बीजो जातिना नेद थकी कहियेछे छैए. ते अनेक प्रकारेछे, पण तेना चउविहंके० चार प्रकारना विकल्प नेद होय ते आवीरीते. एक वृश्चिक, बीजो मेडुक त्रीजो सर्प ने चोथुं मनुष्य एना नेद थकी ते बहु,बहुतर,बहुतम अने अतिबहुतम तेनुं वली विशेष आमछे. वींछीनुं विष अर्द्ध नरत खेत्र प्रमाण शरीर व्यापे, बीजुं मेडुकनुं विष संपूर्ण नरतखेत्र प्रमाण व्यापे, सापनुं विष जंबुद्वीप प्रमाण व्यापे अने मनुष्यनुं विष सर्व मनुष्यखेत्रसुधी व्यापे. ए अग्यारमी लब्धी कही॥५१५

हवे बारमी केवलीनी लब्धि, तेरमी गणधरनी लब्धि, चउदमी पूर्वधरनी लब्धि, पन्नरमी अरिहंतनी लब्धि, सोलमी चक्रवर्त्तिनी लब्धि, सत्तरमी बलदेवनी लब्धि, अने अढारमी वासुदेवनी लब्धि. एटली लब्धिउं प्रसिद्धछे.

हवे खीराश्रवादिक लब्धि कहियेछैए. मूलः—खीरमहुसप्पिसाउ, वमाणवयणा तयासवा हुंति ॥ कोठ्यधन्नसुनिग्गल, सुत्तछाकोठ्बुद्धीया ॥ ५१६ ॥ अर्थः—खीर शब्दे दूध ते इहां चक्रवर्त्तिनी लाख गायने अर्द्धे अर्द्धे अनुक्रमे जे एक गाय संबंधी दूध ते सर्कराने चतुर्जातक साथे मिश्रित ते जेम जमतां थका मनने अने शरीरने सुख उपजावे,तेम ए खीराश्रवलब्धिवंतनुं वचन पण खीरनीपरे आके०समस्त प्रकारे श्रवे ते खीराश्रवलब्धि कहिए. एमजे मधुके०साकर प्रमुख मधुर द्रव्यनीपरे श्रवे ते मध्वाश्रवलब्धि जाणवी; तथा जे चक्रवर्त्तिनी गाय तेनु घृत तेनीपरे व

चन श्रवे ते सर्पिराश्रव, उपलक्षणथी इक्षुरस जेवुं वचन श्रवे ते इक्षुरसाश्रव. एमज अमृताश्रव एवीरीते जेना शब्दने पूर्वोक्त खीरादिकनी उपमा छे; ते तदाश्रव साधु होय. ए उंगणीशमी लब्धि कही. कोठयके० जेम कोठाने विषे सुनिर्गलके० घणा धान्य नलीपरे थका रहेछे; तेम जेनेविषे सूत्र अने अर्थ परोपदेशादिके अवधारयाछे तेनुं जेने विषे अविसारवेकरी रहेवुंछे ते कोष्ठबुद्धिलब्धि कहिए. ए वीशमी लब्धि जाणवी. ॥ ५१६ ॥

हवे एकवीशमी पदानुसारिणी लब्धि कहेछे. मूलः—जो सुत्तपएणं बहु, सुयमणुधावइपयाणुसारीसो॥जोअबपएणबं,अणुसरइसबीयबुद्धीउ॥५१७॥ अर्थः—इहां पदानुसारिणीलब्धि त्रण प्रकारेछे, एक अनुश्रोतपदानुसारिणी, बीजी प्रतिश्रोतपदानुसारिणी अने त्रीजी उनयपदानुसारिणी. त्यांजे धुरापदनो अर्थ अथवा पद सांनलीने अनेराथकी छेहेला पदने अर्थनी विचारणानेविषे जेमनी महा महोटी बुद्धि होयछे ते अनुश्रोतपदानुसारिणीलब्धि कहिये. एमज जे छेलापदना अर्थने सांनलवे करी प्रतिकूलपदे करी धुरलापदसुधी विचारणाए चतुर होयछे ते प्रतिश्रोतपदानुसारिणी लब्धिजाणवी. एमज जे मध्यपद तेविचाले एक पद सांनले पछी पहेलाने छेहेलासुधी सर्व पद पदार्थनुं परिज्ञान जेने थाय ते उनयपदानुसारिणीलब्धि कहिये. हवे सूत्रार्थ एमछे जे कोइ सूत्रना एक पदे करी घणा श्रुत प्रत्ये अनुधावे प्रवर्त्ते ते पदानुसारणीनामा एकवीशमी लब्धि जाणवी,

हवे बीजबुद्धि कहेछे. जेम नलो कर्षणी घणीज रुडीरीते कमायली नूमिनेविषे समस्त नूमिना गुण पाणिए सहित एवा खेत्रनेविषे बीज वावे, पछी ते बीज अनेक बीजनुं आपनार थाय, तेम ज्ञानावरणियादिक क्षयोपशमना अतिशयथकी एक अर्थ रूप बीजने सांनलवे करी अनेक अर्थरूपीआ बीजोनो पडिवजणहार थाय; ते बावीशमी बीजबुद्धिनामा लब्धि जाणवी. जेम नगवंतना गणधर ते उत्पाद, व्यय ने ध्रुवलक्षणत्रिपदानुसारी त्रिपदि पामीने द्वादशांगीरूप प्रवचन रचनामां चतुर होयछे; तेम इहां एक पदने जाणपणे अनेरा पदांतरनुं जाणपणु होय ते पदानुसारिणीलब्धि कहेवाय. अने एक पदार्थने जाणपणे अनेक अर्थ जाणे ते बीजबुद्धिलब्धि कहेवाय. एनुं मांहोमांहे एटलुं विशेषछे ते कह्युं.

हवे तेजोलेश्यादिक चार लब्धि सुगमपणा थकी सूत्र कारे कही नथी; तो पण एनुं कांइक स्वरूप लखिये छैए. त्यां तेजोलेश्यालब्धि ते क्रोधना अधिकपणाथकी पोताना शत्रुने सुखे बालवाने समर्थ एवी अग्निनी जाल मूकवानी जे श

क्ति, अनेक योजनने आश्रीत वस्तुविशिष्टने बाले ए षष्ठ तपे करी पारणे वसनख कुल्मासना बाकुलानी एक मुठी अने चलूजर पाणीने लीए तेने ठ महीनामां तेजो लेश्या लब्धि उपजे, ते त्रेवीशमी तेजोलेश्यालब्धि कहिए.

चोवीशमी आहारकलब्धि ते आहारक शरीर करवानी शक्ति, एक हाथ प्रमाण शरीर तीर्थंकरनी ऋद्धि देखवासारु चउद पूर्वधर करे ते आहारकलब्धि जाणवी

पच्चीशमी शीतलेश्यालब्धि ते पुण्यना वशथकी जे प्रसादनुं स्थानक ते प्रत्ये शीत एवुंजे तेजनुं विशेष ते तेजोलेश्याने हणवाने अर्थे मूकवानी शक्ति.

छव्वीशमी वैक्रियलब्धि ते वैक्रिय शरीर करवानी शक्ति, ते अनेकप्रकारेछे. एक अणुत्व, बीजुं महत्व, त्रीजुं लघुत्व, चोथुंगुरुत्व, पांचमी प्राप्ति, छठी प्रकाम्य, सातमी ईशित्व, आठमी वशित्व, नवमीअप्रतिघातित्व, दशमी अंतरधान, अग्यारमी कामरूपत्वादिकना भेदथकी अनेक प्रकारेछे. तेमां अणुत्व ते न्हानुं शरीर करे जेणेकरी कमलना तंतुछना छिद्रमांहे प्रवेशकरी त्यां चक्रवर्त्तिनाभोग पण भोगवे, एवी शक्ति ते अणुत्वशक्ति कहिए, बीजी मेरुपर्वतथकी पण महोटुं शरीर करवानी समर्थाइ ते महत्व जाणवी. त्रीजी वायुथकी पण अत्यंत न्हाना शरीरनुं करवुं ते लघुत्व जाणवी. चोथी वज्रादिकथकी पण भारी शरीरने करवे करीने इंद्रादिक जे प्रकृष्ट बलवान तेने पण दुस्सह ते गुरुत्व. पांचमी भूमिकाए बेठाथकां पण मेरुपर्वतना अग्रने सूर्यना मांडलाने स्पर्शवानी शक्ति ते प्राप्ति जाणवी. छठी ज्यां पाणीने विषे भूमिकानी परे जे गमनकरवानी शक्ति अने भूमिकाने विषे पाणीनी परे उन्मज्जन निमज्जन करे ते प्राकाम्य जाणवी. सातमी त्रण लोकनुं प्रभुतापणु श्रीतीर्थंकर चक्रवर्त्ति इंद्रादिकनी ऋद्धिनुं विस्तारवुं ते ईशित्व जाणवी. आठमी समस्त जीवोने वश करवानी जे शक्ति ते वशित्व जाणवी. नवमी पर्वतनेविषे निःसंग पणे जवुं ते अप्रतिघातित्व जाणवी. दशमी पोताना रूपना अदृश्यपणानुं करवुं ते अंतर्धान जाणवी. अग्यारमी समकाले अनेक प्रकारनां रूप करवानी जे समर्थाइ ते कामरूपत्व शक्ति जाणवी. ॥ ५१७ ॥

हवे सत्तावीशमी अखीणमहाणसी लब्धि कहेछे. मूलः—अक्खीण महाणसिया, भिक्खं जेणाणियं पुणो तेण ॥ परिभुत्तंचिय खिज्जइ, बहुएहिंविन उण अन्नेहिं ॥ ५१८ ॥ अर्थः—महान शब्देकरी ज्यां अन्न रांधीए ते रसोडुं तेहने विषे आश्रीतपणाए करीने अन्नने पण महानश कहिए. हवे जेणे अंतराय कर्मना क्षयोपशमथकी थोडुं पण अन्न कोइए भिक्षाए करी आण्युं छता ते पोते जमे तो खू

टीपडे पण अन्य घणा जणो जो ते अन्न जमवा बेसे तोपण खूटे नही ते अखी णमहाणसिकालब्धि कहिए. ए श्रीगौतमादिकने प्रसिद्धपणे हती.

हवे अठावीशमी पुलाकलब्धि तेणे करी युक्त जे यति होय, ते यति संघ प्र मुखनुं कार्य उपन्ये थके चक्रवर्त्तिने पण चूर्णकरे ते पुलाकलब्धि कहिए.

एमाईके० इत्यादि ए अठावीश लब्धि कही, अने आदिशब्दथकी मन वचन अने कायने बलेकरी प्राणीने शुन, शुनतर अने शुनतम परिणामना वशथकी अने असाधारण तपना प्रनावथकी बीजी पण अनेकप्रकारनी लब्धि थायछे. त्यां प्रकृष्ट ज्ञानावरण वीर्यांतरायना क्षयोपशमने विशेषे करीने समस्त श्रुत समुद्र एक अंतरमुहूर्त्तमांहे अवगाहवो, तेनेविषे जेनुं मन होय ते मनोबलीलब्धि कहि ए. तेमज अंतरमुहूर्त्तमां सर्व श्रुतने उच्चार करवानी जे शक्ति तेणेकरी जे सहित होय, वली पद वचन अलंकारे सहित वचनने उंचेस्वरे निरंतर बोलतांथकां पण तेनो घांटो रहीजाय नही ते बीजी वाग्बली लब्धि कहिए. तेमज त्रीजी वीर्यांतरायना क्षयोपशमथकी प्रगटपणे थयुं जे असमान काय बलेकरीने बाहुबलनी पेरे जे काउसग्गे रहेतां वर्षाकाले पण श्रमे रहित होय ते त्रीजी कायबली लब्धिजाणवी. तेमज घणा कर्मना क्षयोपशमथकी प्रगटथयो जे प्रज्ञानो प्रकर्ष तेणेकरी द्वादशां गी चउदपूर्वादिक श्रुत तेने नण्याविनाज एटले अणनण्योथको पण जेरीते च उदपूर्वना धारक मुनिउ अर्थनी प्ररूपणा करे तेनीपरे महा कठिण विचारोनेविषे पण जेनी अति निपुण प्रज्ञाके० बुद्धि होय, ते प्राज्ञश्रमण कहिए. एकवली दशपूर्व श्रुत नण्याले अने रोहणी प्रज्ञप्ति इत्यादिक महाविद्यायेकरी आरीसामां हे अंगुठिए नींते षड्गमांहे देवोने अवतारी पछी तेने पूछी समस्त कालनो निर्णय करे. धणी ऋद्धिना अवशवर्त्ती विद्याने वेगना धरणहार ते विद्याधरश्रमण क हिए. इत्यादि योगशास्त्रांतरनी वृत्तिमांहे आदि शब्दथकी लब्धिना विशेष कह्यां छे. एटले ए लब्धिउ कही. ॥ ५१० ॥

हवे नव्यपुरुषने अने स्त्रीने ए पूर्वोक्त लब्धिउ मांहेली जेटली लब्धिउ होय ते कहेछे. मूलः—नवसिद्धि अपुरिसाणं, एयाउ हुंति नणिय लद्धीउ ॥ नवसिद्धिय महिलाणवि, जत्तिय जायंति तंवोछं ॥५११॥ अर्थः—नवके० सिद्धपणुं जेने थवानुं छे ते नवसिद्धिक जाणवा. ते नवसिद्धिक पुरुषोने ए पूर्वोक्त समस्त लब्धिउ होय.

हवे नव सिद्धिक स्त्रीने जेटली लब्धिउ होय तेटली कहेछे. मूलः—अरहंत च क्कि केसव, बलसंनिन्नेय चारणे पुवा ॥ गणहर पुलाय आहारगं च नहु नविय

महिलाणं ॥ ५२० ॥ अर्थः—एक अरिहंत, बीजी चक्रवर्त्ती, त्रीजी वासुदेव, चोथी बलदेव, पांचमी संभिन्नश्रोता, छठी विद्याचारणादिक, सातमी पूर्वना धरणहार, आठमी गणधर, नवमी पुलाक, दशमी आहारक शरीर करवानी लब्धि. ए दश लब्धि नव्य स्त्रीने नथाय. शेष अढार लब्धि थाय. अने श्रीमल्लिनाथने स्त्रीपणे तीर्थंकरपणुं जेप्राप्त थयुं. ते तो अछेरु जाणवुं. ॥ ५२० ॥

हवे अनव्य पुरुष तथा स्त्रीने जे लब्धि थाय ते बे गाथाए करी कहेछे. मूलः—अन्नविय पुरिसाणं पुण, दसपुव्विल्लिउकेवलित्तंच ॥ उज्जुमई विउलमई, तेरस एआउ न हु हुंति॥५२१॥ अन्नविय महिलाणं पुण, एयाउ न हुंति नणीय लद्धीउ॥महुखीरासवलद्धी, विनेय सेसाउ अविरुद्धा॥५२२॥अर्थः—अनव्य पुरुषोने दश तो पूर्वोक्त अरिहंतादिक जे कही ते, अने अग्यारमी केवली लब्धि, बारमी रुजुमतिलब्धि तेरमी विपुलमति लब्धि. ए तेर लब्धि नथाय. ॥५२१॥ अने अनव्य स्त्रीने पण, एहज तेर लब्धि नथाय; तथा मधुआश्रव अने खीराश्रव ए पण नथाय. अने शेष लब्धिउ ते अविरुद्धछे. थायतो थाय. ॥ ५२२ ॥ इति गाथा सप्तदशकार्थ ॥

अवतरणः—तवत्ति एटले तपनुं बशेने एकोतेरमुं द्वार कहेछे. मूल.—पुरिमड्ढेकासण.निव्विगइय आयंबिलोववासेहिं॥ एगलया इय पंचाहिं, होइ तवो इंदियजउत्ति ॥ ५२३ ॥ अर्थः—तपावेके० अशुनकर्मने बाले तेने तप कहीए. ते अनेक प्रकारे छे; तथापि तेमां मूल इंद्रियजय नामा तपछे. केमके श्रीवीतरागनो धर्म पण एवेज नामेछे; तेथी ए तप पण एज नामे जाणवुं. ते कहेछे. पेहेला दिवसे पुरिमड्ढ, बीजे दिवसे एकासणु, त्रीजेदिवसे नीवी, चोथेदिवसे आंबिल अने पांचमेदिवसे उपवास. ए पांचे पच्चख्काणे करी एकलता श्रेणी परिपाटी. ए सर्व शब्दो एकार्थिकछे. एवी पांचेलताए पांच इंद्रियोने दमन करवुं माटे इंद्रियजय नामा तप थाय. इहां ए नाव जे पांच दिवसे एक इंद्रियनो जय करनार होय, तेमाटे एम पच्चीश दिवसे पांच इंद्रियोनो जय थाय. इहां श्री जिनशासननेविषे जे तप करीए ते सर्व इंद्रियना जयनुं करनार थाय छे, परंतु पूर्वाचार्ये एने एज नामे कह्युं छे. ॥ ५२३ ॥

हवे इंद्रियजय कर्या उपरांते योगशुद्धि करवी जोइए तेज तप कहेछे. मूलः—निव्विगइयमायामं, उपवासो इय लयाइ तिहिं नणिउ॥ नामेण जोगसुद्धी.नवदिणमाणो तवो एसो ॥ ५२४ ॥ अर्थः—पेहेले दिवसे नीवी, बीजे दिवसे आंबिल, त्रीजे दिवसे उपवास, ए एकलता एवी त्रण लताए योग शुद्धिनामा तप नणिउके० कह्युंछे. त्यां

योग ते मनोयोगादिक त्रण तेनो व्यापार विशेष, तेनी जे शुद्धि निरवद्यपणुं जे थकी थाय ते योगशुद्धि जाणवी. एनुं तप नव दिवस मान होय छे. ॥ ५१४ ॥

हवे योगशुद्धि थइ छतां ज्ञानादिक त्रणनी प्राप्ति थाय तो नली जाणवी. तेथी ते ज्ञानादिक त्रणनुं तप कहेछे. मूलः—नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमिअ तिन्नि तिन्निपत्तेयं ॥ उववासातप्पूआ, पुव्वंतन्नामग तवंमि ॥ ५१५ ॥ अर्थः—ज्ञाननेविषे, दर्शननेविषे अने चारित्रनेविषे प्रत्येके त्रण त्रण उपवास करवा; अने तेनी पूजा पूर्वक करतां तेवेज नामे तप थाय छे. ते आवी रीते. पेहेलुं ए त्रणमां मुख्य ज्ञानछे, तेने आराधवाने अर्थे त्रण उपवास अने तेनी पूजा पूर्वक करतां ज्ञान नामे तप थाय. तेमां सिद्धांतनी पूजा. पुस्तकने पहेरामणी वीटणा प्रमुख ज्ञान साधनोपाय चडाविए अने ज्ञानवंत पुरुषने एषणीय वस्त्र, पात्र, अन्न, पानादिके पूजा करवी, एमज दर्शन आराधवाने अर्थे त्रण उपवास करवा. त्यां दर्शन प्रनावक जे संमत्यादिक ग्रंथ अने सद्गुरुनी पूजा करवी. एमज चारित्रनेविषे पण चारित्रवंतनी पूजा करीए. एरीते करतां ज्ञानतप, दर्शनतप ने चारित्रतप थाय. ॥ ५१५ ॥

ज्ञानादिक त्रिकनो धणी कषाय जय करे तो नलुं. तेमाटे कषायजय नामा तप कहेछे. मूलः—एक्कासणगं तह, निव्विगइयमायंबिलं अनत्तहो ॥ इय होइ लयचउक्कं, कषायविजये तवे चरणे ॥ ५१६ ॥ अर्थः—एकासणु, नीवी, आंबिल ने उपवास, ए चार एकलताए थाय. एम क्रोधादिक चार कषायना जयनेअर्थे चार लता एकरी चार चोक सोल दिवस पर्यंत कषायविजयनामा तपश्चरण करीए. हवे ज्ञानादिकना धणी कषायनो जय करी पछी विविध प्रकारनां तप करे, तेथी तेना प्रकार देखाडतो थको ग्रंथकार प्रथम चार गाथाये करी कर्मसूदन नामा तप कहेछे. ॥ ५१६॥

मूलः—खमणं एक्कासणगं, एक्कगसित्थंच एगठाणंच॥एक्कगदत्तिं निव्विअ, मायंबिल मट्ठकवलंच ॥ ५१७ ॥ एसा एगालहिआ, अट्ठहिंलईयाहिं दिवसचउसट्ठी ॥ इय अट्ठकम्मसूडण, तवंमि नणिया जिणिंदेहिं ॥५१८॥ अर्थः—पहेले दिवसे उपवास, बीजे दिवसे एकासणुं, त्रीजे दिवसे एकलसित्थो, चोथे दिवसे एकठाणुं, पांचमे दिवसे एकदात्ति, छठेदिवसे नीवी, सातमे दिवसे आंबिल, आठमे दिवसे आठ कवल. ए आठ पच्चखाणे एकलता थइ. एवी आठे लताए एटले आठो अठियुं चोसठ दिवसे थाय एम आठ पच्चखाण कर्मसूदन नामा तपनेविषे श्रीजिनवरेंद्रे कह्या. एरीते ए तपकरी छेहेले स्नात्रपूजा श्रीजिनवरेंद्रने पहेरामणी प्रमुख आपीए. आगले

वली विशिष्ट वलीमांहे सुवर्णमय कुहाडी ते. कर्मरूपीयां तरुवर छेदवाने अर्थे ढोइवो एरीते कर्मनुं सूदनके० विनाश थायछे. ॥ ५२७ ॥ ५२८ ॥

हवे न्हानु सिंहनिःक्रीडितनामा तप कहेछे. मूलः–इगडुगइगतिगडुगचउ, तिग पणचउछक्कपंचसत्तछगं ॥ अठगसत्तगनवगं, अठगनवसत्तअठेव ॥ ५२९ ॥ छगस त्तगपणछक्कं, चउपणतिगचउरडुगतिगंएगं ॥ डुगएक्कगउववासा, लहुसीहनिकीलिय तवम्मि ॥ ५३० ॥ अर्थः–एक उपवास करी पारणु करे, एम बे उपवास करी पारणु करे, एम सर्व उपवासे आगल पारणु जाणवुं. पछी एक उपवास, त्रण, बे, चार, त्रण, पांच, चार, छ, पांच, सात, छ, आठ, सात, नव, आठ, नव, सात, आठ, छ, सात, पांच, छ, चार, पांच, त्रण, चार, बे, त्रण, एक, बे, एक, उपवास, ए आगले जे कहेछे तेनी अपेक्षाए न्हानुं, अने सिंहना निःक्रीडितके० गमननी परे ए होय, तेथी ए तपपण सिंहनिःक्रीडित जाणवुं, जेम सिंह जतो थको दूर जइने वली पाछो ते प्रदेशे जुएछे, तेनी पेरे जे तपने विषे पच्चखाण कर्यो तेहज वली पण करीने पारणुं करी वली आगला तपनुं आसेवन करे तेथी ए न्हानुं सिंहनिः क्रीडिततप–तेने विषे हवे उपवासना दिवसो अने पारणाना दिवसोनी संख्या कहेछे,

मूलः–चउपन्नं खमणसयं, दिणाणि तह पारणाणि तेत्तीसं ॥ इहपरिवाडिचउक्के, वरिसडुगं दिवसअडवीसा ॥ ५३१ ॥ अर्थः–एकशोनेचोपन्न उपवासना दिवस अ ने तेत्रीश पारणां, एम ए एक परिपाटी एटले श्रेणी थइ, एवी जेवारे चार परि पाटी थाय तेवारे तेनेविषे बे वर्ष अने अठावीश दिवस थायछे. ॥ ५३१ ॥

हवे ए चार परिपाटीने विषे पारणानुं स्वरूप कहेछे. मूलः–विगईउ निव्विगइ यं तहा अलेवाडयंच आयामं ॥ परिवाडिचउक्कमिथ, पारणएसुं विहेयव्वं ॥ ५३२ ॥ अर्थः–पहेली श्रेणीए विगइ जमे ते दिवशे सर्व कामगुणित रसोपेत जमे. बीजी श्रेणीएनीवी अने त्रीजी श्रेणीए अलेपकारी वाल चणादिक जे जमतां थकां हस्त पात्र प्रमुखने लेप लागे नही. चोथी श्रेणीए आंबिल करे. एम चारे श्रेणीनेविषे पारणाने दिवसे करवुं एटले लघुसिंहनिःक्रीडित तप कह्युं. ॥ ५३२ ॥

हवे महासिंहनिःक्रीडितनुं स्वरूप कहेछे. मूलः–इगडुगइगतिगडुगचउ, तिगप णचउछक्कपंचसत्तछगं ॥ अट्ठसत्तनवडदसनव, एक्कारसदसयबारसगं ॥ ५३३ ॥ अर्थः–इहां पण एकादिक उपवासनी संख्या कहेछे. एक उपवास, बेउपवास, एक उपवास, त्रण उपवास, बे उपवास, चार उपवास, त्रण उपवास, पांच उपवास, चार उपवास, छ उपवास, पांच उपवास, सात उपवास, छ उपवास, आठ उप

वास, सात उपवास, नव उपवास, आठ उपवास, दश उपवास, नव उपवास, अग्यार उपवास, दश उपवास अने बार उपवास. ॥ ५३३ ॥

मूलः—एक्कार तेर बारस, चउदस तेरसय पनर चउदसगं ॥ सोलस पन्नर सोला, होइ विवरीयमिक्कत्तं ॥५३४॥ अर्थः—अग्यार उपवास, तेर उपवास, बार उपवास, चउद उपवास, तेर उपवास, पन्नर उपवास, चउद उपवास, सोल उपवास, पन्नर उपवास, सोल उपवास, एनेज वली विपरीत करवा एटले जेम चडता कस्था तेम वली पूर्वेली रीते पाछा वलता करवा, एम करतां छेहेडे एक उपवास थायछे. ॥ ५३४ ॥ इहां एकथी चडता तथा सोलथी वलता करतां बधा आंक चार चार वखत आवे छे, पण मात्र शोलना आंक बे वखत तथा पन्नरना आंक त्रण वखत आवे छे; ते बधा मली बशे बहोतेर दिवस उपवासना थाय तथा एकसठ दिवस पारणा नाथाय तेवारे एक परिपाटी थायछे. ॥ ५३४ ॥

मूलः—एएउ अनत्तछा, इगसठीपारणाए मिह होइ ॥ एसा एगा लइया, चउग्गुणा ए पुण इमाए ॥ ५३५ ॥ अर्थः—एटला ए पूर्वोक्त अनकार्थके० उपवास जाणवा, अने इहां एकशठ पारणां थाय ते जाणवां, एटले एक लता एक ठली थइ, अने एवी चार लताउ करिए माटे एनेचारगुणी करतां जे दिवसोनी संख्या थाय ते कहेछे.

मूलः—वरिसछगंमासदुगं, दिवसाइ तहेव बारस हवंति ॥ एछमहासीहनिकी, लि यंमि तिव्वे तवच्चरणे ॥५३६॥ अर्थः—छ वर्ष बे महीना ने बार दिवस थाय. इहां महा सिंहनिःक्रीमितनामे तीव्र जे आसेवतां डुर्लन एवा तपश्चरणनेविषे एटला दिवसोनी संख्या छे ते जाणवी. एटले महासिंहनिःक्रीडित नामा तप कह्युं.॥५३६॥

हवे बे गाथाये करी मुक्तावलीनामे तप कहेछे. मूलः—एगो डुगाइ एक्कग, अंतरिया जाव सोलस हवंति ॥ पुण सोलस एगंता, एगंतरिआ अप्पत्तछा ॥५३७॥ पारणयाणं सछी, परिवाडिचउक्कगंमि चत्तारि ॥ वरिसाण हुंति मुत्ता, वली तवे दिवससंखाए ॥ ५३८ ॥ अर्थः—एक उपवास करी वली पारणु करीए, बे उपवास करी पारणु करीए, वली एक उपवास करी पारणु करीए. पछी त्रण उपवास करी पारणु करीए, वली एक उपवास करी पारणु करीए एम चढतां चढतां एकेकने आंतरे यावत् सोल उपवास सुधी करीए. एरीते छेला सोल उपवासनुं पारणु करी वली पाछा फरीए, ते आवीरीते के सोल उपवास करी पारणु करीए, फरी एक उपवासने पारणु करीए, तेमज, पन्नर उपवास करी पारणु करीए, फरी एक उपवास करी पारणु करीए वली चउद उपवास करी पारणु करीए, पछी एक उपवासने पार

णु :एम पाछा आवतां छेहेडे एक उपवास ने उपर पारणु करीए, एम एक उप वासने आंतरे वधता उतरता उपवास थाय ते सोळ सुधी चडतां अर्द्ध मुक्काव ळी थाय; अने प्रतिलोमे पूरण मुक्तावळी थाय त्यारे सर्वे मळी त्रणशे उपवास थायछे. ॥ ५३७ ॥ हवे बीजी गाथाए पारणाना दिवसोनी संख्या अने सर्वे दिव सोनी संख्या कहेछे. पारणयाणंसठीके० साठ पारणां एक परिपाटीनेविषे थायछे, एरीते चार परिपाटीनेविषे चार वर्ष संपूर्ण थाय. एटले ए मोतीना हारनी परे मुक्तावळी तप छे ते कह्युं. ॥ ५३८ ॥

हवे रत्नावळी तप कहेछे. मूळः—इग डु तिकाहलियासुं, दाडिमपुप्फेसु हुंति अठ्ठ तिगा ॥ एगाइसोळसंता, सरिआजुअलंमि उववासा ॥ ५३९ ॥ अंतम्मि तस्स पय गं, तत्रं कहा णमिक्क महपंच ॥ सत्तयसत्तयपणपण, तिन्निकं तेसुतिगरयणा ॥५४०॥ पारणय दिणछासी, परिवाडिचउक्कगे वरिसपणगं ॥ नवमासा अठ्ठारस, दिणाण रय णावलितवम्मि ॥५४१॥ अर्थः—जेम रत्नावलिने आभरण विशेष कहेछे, तेम रत्ननी पंक्ति सरखुं जे तप ते रत्नावळीतप कहीये. जेवी रत्ननीपंक्ति ते बंने भणीनी बाजूए प्रथम सूक्ष्म अनेपछी स्थूल एवा विभागे करी काहलिका नामे सुवर्णना बे अवयवे क री युक्त होयछे, तेमज ते दाडमनां पुष्पोए करी बंने बाजुए शोभित. त्यारपछी सरळ बंने तरफनी बाजुनी जे सेरो तेणेकरी शोभनारी अने नीचेना भागनेविषे स्थापन करे ला पदके करी अत्यंत अलंकृत होयछे एवुं जे तप, पट्टादिकनेविषे बतावेला आकारने धारण करेछे, तेने रत्नावळी कहेछे. त्यां एक, बे, त्रण एनीमध्ये अधो भागना अनुक्रमे काहलिका स्थापन थायछे. त्यारपछी बंने दाडिम पुष्पना भणी नी बाजुए प्रत्येके आठ त्रिक अने ते बंने भणीनी बाजुए रेखा चतुष्टे करी नव नव कोष्ठक करवा, मध्ये शून्य करी नीचे नीचे अंक स्थापन करेछे. त्यारपछी पंक्तिनेविषे सरिकायुगलने विषे एक छे आदिजेमां, अने सोळ जेमां छेवटे छे एवां स्थान कर वां, ते सरिकायुगलनेनीचे पदक ते आठ पंक्तिए चोतरीश अंकना स्थान एवुं कोष्ठक थायछे. तेमां पहेली पंक्तिनेविषे एक अंकस्थान, बीजी पंक्तिनेविषे पांच अंकस्था नो, त्रीजी पंक्तिनेविषे सातअंकस्थानो, चोथी पंक्तिनेविषे पण सात अंकस्थानो, पांचमी पंक्तिनेविषे पांच अंकस्थानो, छठी पंक्तिनेविषे पांच अंकस्थानो, सातमी पंक्तिनेविषे त्रण अंकस्थानो, आठमी पंक्तिनेविषे एकज अंकस्थान, एवां ए चोतरी शे कोष्ठकनेविषे त्रण त्रण अंक स्थापन करवा. हवे स्थापन कहेछे.

अहीयां आ भावार्थछे के रत्नावळी तपनेविषे प्रथम एक उपवास करेछे. त्यारप

छी बे उपवास करेछे, त्यारपछी त्रण उपवास करेछे. ए एक काह्लिका ए मध्ये स र्व ठेकाणे पारणां जाणवां. त्यारपछी आठ ठेकाणे बंने तरफनी बाजुए त्रण त्रण उपवास करेछे, एणे करी काह्लिकानी नीचे दाडिमपुष्प उत्पन्न थायछे. त्यार पछी एक उपवास करेछे. त्यार पछी बे उपवास करेछे, त्यारपछी त्रण उपवास करेछे, त्यारपछी चार उपवास करेछे, त्यारपछी पांच उपवास करेछे, त्यारपछी छ, सात, आठ, नव; दश, अग्यार, बार, तेर, चौद, पंदर, सोल उपवास करेछे. एवी दाडमनापुष्पनी नीचे एक सरिका थायछे, त्यारपछी चोतरीश अष्टम करेछे. ए णेकरी पदकउत्पन्न थाय छे. त्यारपछी सोल उपवास करेछे. त्यारपछी पंदर, चौद, तेर, बार, अगीआर, दश, नव, आठ, सात, छ, पांच, चार, त्रण, बे अने एक पर्यंत उपवास करेछे. ए बीजी सरिका (सेर) थायछे. त्यारपछी वली आठ अष्टम थायछे. एणेकरीने पण बीजा दाडमनां पुष्प उत्पन्न थायछे. त्यारपछी त्र ण उपवास करेछे, त्यारपछी बे उपवास करेछे अने त्यारपछी एक उपवास क रेछे, एणेकरी बीजी काह्लिका उत्पन्न थायछे. एवुं थयुं छतां परिपूर्ण रत्नावली सिद्ध थायछे. आ रत्नावलीतपनेविषे काह्लिकाना तपना दिवसो बार अने दा डमना पुष्पना बंने नणीनी बाजुना मली अडतालीश दिवस तथा बंने सेरने विषे बे बाजुना सोलनी संकलनाए दिवस बसें बोतेर अने पदकनेविषे चोतरीश अष्ट मोना दिवस एकसोने बे थायछे. ए सर्व एकत्रकस्या छतां चारसे चोतरीश दिवस था यछे. अने अठ्ठासी पारणाना दिवस थायछे. बंनेने एकत्र कस्या छतां पांचसें बावी स दिवस थायछे. एनी वर्षसंख्या करीए तो एक वर्ष पांच मास बार दिवस था यछे. ए तप पण पूर्व सरखा चोपट्टे करी युक्त थायछे. ते चारे गुण्या छतां पांच वर्ष नव मास अने अढार दिवस थायछे. ॥ ५३९ ॥ ५४० ॥ ५४१ ॥

हवे कनकावली तप देखाडेछे. मूलः—रयणावलीकमेणं,कीरइ कणगावलीतवो नवरं ॥ कज्जा डुगाइ तिगपए दाडिमपुप्फेसु पयगेय ॥५४२॥ अर्थः—कनकावली एट ले सुवर्णमय मणीउथी उत्पन्न थएलुं नूषण ते कनकावली, तेना आकारनी स्था पनाए करी जे तप तेने कनकावली एवुं कहेछे. ए कनकावली तप, रत्नावली तपना क्र मेकरीने करेछे; परंतु केवल दाडमपुष्पना अने पदकनेविषे त्रिकोनी स्थापनाने विषे बे उपवासनी सूचना करनारा द्विक करवा. बाकी संपूर्ण रत्नावली सरखुंज जाणवुं.

हवे पारणा संबंधी विधि कहेछे. मूलः—परिवाडिचउक्के वरि,सपंचगंदिणडुगूणमास तिगं॥ पढमतिवुत्तो कज्जो,पारणयविहीतवप्पणगे ॥५४३॥ अर्थः—परिवाडिके० श्रेणी

तेना चोकडाने विषे पांच वरस अने उपर बे दिवसेकरी उणा त्रण महीना थाय ते, प
ढमके० प्रथम कह्युं जे लघुसिंहनिःक्रिडित तथा महासिंहनिःक्रीडित नामा तप तेने
विषे कह्योछे जे पारणानो विधि, तेमज मुक्तावली, रत्नावली कनकावली एने विषे पण
जाणवी. ए पांचेने ए सरखोज पारणानो विधि जाणवो. ए रत्नावली कनकावली कही

हवे नद्रादिक तप कहेछे. मूलः—नद्दाइतवेसु तहा, इयालया इगडुगतिन्निचउपं
च ॥ तह तिचउपंचइगदो, तह पणइगदोन्निितिचउक्कं ॥५४४॥ अर्थः—नद्रा आदेदेइ
ने तपनेविषे लतादिक एमज थाय. प्रथम एक उपवास एमज बे, त्रण, चार, पांच,
एटले एकलता थइ. ते थकी बीजी लता ते त्रण, चार, पांच, एक, बे. ए बीजी उ
ली थइ, वली पांच, एक, बे, त्रण, चार, ए त्रीजी उली जाणवी. ॥ ५४४ ॥

मूलः—तह डुतिचउपणगेगं, तह चउपणगेगडुन्निितिन्नेव ॥ पणहुत्तरिउववासा,
पारणयाणंतु पणवीसा ॥५४५॥ अर्थः—तहके० तेथकी वली चोथी पंक्ति बे, त्रण,
चार, पांच ने एक, वली ते थकी पांचमी पंक्ति ते चार, पांच, एक, बे ने त्रण, ए
पांच उली कही. ते एकेकी उलीनेविषे पन्नर पन्नर उपवास थायछे. एम पंचोतेर उ
पवास अने एक ओलीए पांच पारणां करतां पच्चीश पारणाना दिवसो थायछे.॥५४५॥

हवे महानद्रप्रतिमा कहेछे. मूलः—पन्नणामि महानंदं, इगडुगतिगचउपण छ
सत्तेव ॥ तह चउपणछगसत्तय, इगडुति तह सत्तइकंदो ॥ ५४६ ॥ तिन्निचउपंचछ
क्कं, तह तिगचउपणछसत्तगेगंदो ॥ तह छगसत्तगइगदो, तिगिचउपणतहडुगंतिचक्क
॥ ५४७ ॥ पणछगसत्तिक्कंतह, पणछगसत्तिक्कदोन्निितियचउरो ॥ पारणयाणिगुव
न्ना, छन्नउअसयंचउह्वाणं ॥५४८॥ अर्थः—एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ ने सात,
तथा शब्द थकी इहां पण उलीनुं धुर जाणवुं. ए प्रथम उली. चार, पांच, छ,
सात, एक बे, त्रण. ए बीजी उली. सात, एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ, ए त्रीजीउ
ली. त्रण, चार, पांच, छ, सात एक, बे, ए चोथी उली. छ, सात, एक, बे, त्रण, चार
ने पांच ए पांचमी उली. बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात ने एक ए छठी उली. तेम
ज पांच, छ, सात, एक, बे, त्रण ने चार ए सातमी उली थइ. एरीते सात उली त
पनी करीए. ते साते उलीमां उगणपच्चाश पारणांना दिवसो थायछे. अने एके
की उलीमां अघावीश अगवीश उपवास थाय छे. साते उलिमां एकशोने छनुं चउ
छके० उपवास थाय छे. ॥ ५४६ ॥ ५४७ ॥ ५४८ ॥

हवे नद्रोत्तर प्रतिमा कहेछे. मूलः—नद्दोत्तरपडिमाए, पणछगसत्त छनव तहा सत्त॥
अडनवपंचछ तहा, नवपणछगसत्तअठेव ॥५४९॥ तह छगसत्तडनव पण, तह छन

वपणछसत्तभत्तठा ॥ पणहत्तरिसयसंखा, पारणगाणंतु पणवीसा ॥५५०॥ अर्थः— पांच, छ, सात, आठ ने नव; एटला उपवासे प्रथम ओळी जाणवी. इहां पण तथा शब्दथकी ओळीनो प्रारंभ जाणवो. सात, आठ, नव, पांच ने छ; ए बीजी ओळी जाणवी. तथा नव, पांच, छ, सात ने आठ; ए त्रीजी ओळी जाणवी. छ सात आठ नवने पांच; ए चोथी ओळी जाणवी. आठ, नव, पांच, छ ने सात ए; पांचमी ओळी थायछे. इहां एकेकी ओळीए पांत्रीश उपवास थायछे, तेवी पांच ओळी करवी; तेवारे अभ क्षार्थीके० उपवास ते एकशोने पंचोतेरनी संख्या थायछे. तथा एकेकी ओळीए पांच पांच पारणां करतां पांचे ओळीए पच्चीश पारणांनी संख्या थायछे.॥५४९॥५५०॥

हवे सर्वतोभद्र प्रतिमा कहेछे. मूलः—पडिमाइसव्वभद्दाए पणछसत्तट्ठनवदसिक्कारा ॥ तहअट्ठनवदसइक्कारस पणछसत्तयतहिक्कारा ॥ ५५१ ॥ पणछगसत्तगअट्ठनव, दस तह सत्तट्ठनवदसेक्कारा ॥ पणछ तहा दसइक्कार पणछसत्तट्ठनवयतहा ॥ ॥५५२॥ छगसत्तट्ठनवदसगं, इक्कारसपंचतहनवगदसगं ॥ इक्कारसपणछक्कं, सत्तट्ठय

भद्र तपनुं यंत्र.

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

भद्रोत्तर प्रतिमानुं यंत्र.

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

महाभद्रप्रतिमा स्थापना.

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

सर्वतोभद्रप्रतिमानुं यंत्र.

५	६	७	८	९	१०	११
८	९	१०	११	५	६	७
११	५	६	७	८	९	१०
७	८	९	१०	११	५	६
१०	११	५	६	७	८	९
६	७	८	९	१०	११	५
९	१०	११	५	६	७	८

रत्नावली नामा तपनुं यंत्र.

काहलिका. दाडिमपुष्प. सरिका.

१	२	३	३	३	३	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

३	०	३
३	३	३
३	३	३
३	०	३

ए रत्नावली तपनी स्थापना; एम कनकावली तपनेविषे पदके त्रणने ठेकाणे बगडा करवा. अने अंतगडदशामाहे रत्नावलीनुं पदक बगडे अने कनकावलीनुं त्रगडे कह्युंछे. ए रत्नावलीनी स्थापनाछे.

१	२	३	३	३	३	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

काहलिका. दाडिमपुष्प. सरिका.

पदक.

३ ३
३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३
३ ३

इह तवे होंति ॥५५३॥ तिन्निसया बाणउआ, इन्नुववासाण होंति संखाए॥ पारण याणुणवन्नाए नद्दाइतवा इमे नणिया ॥५५४॥ अर्थः–सर्वतोनद्रनामा प्रतिमाने विषे पण पांच, ठ, सात, आठ, नव, दश ने अग्यार ए एक पंक्ति, इहां सर्वत्र तह शब्दथकी पंक्तिनुं धुर जाणवुं. तथा आठ, नव, दश, अग्यार, पांच, ठ, सात ए बीजी पंक्ति जाणवी. तथा अग्यार, पांच, ठ, सात, आठ, नव, दश, ए त्रीजी पंक्ति जाणवी. तथा सात, आठ, नव, दश, अग्यार, पांच ने ठ ए चोथी पंक्ति जाणवी, तथा दश, अग्यार, पांच, ठ, सात, आठ ने नव ए पांचमी पंक्ति जाणवी. तथा ठ, सात, आठ, नव, दश, अग्यार ने पांच ए ठही पंक्ति जाणवी. तथा नव, दश, अग्या र, पांच, ठ, सात ने आठ ए सातमी श्रेणी जाणवी. इहां एकेकी श्रेणीए ठपन्न ठपन्न उपवास करतां सात श्रेणीमां त्रणसेने बाणु उपवासनी संख्या थाय ठे. अने एकेकी श्रेणीए सात सात पारणां करतां ठंगणपच्चाश पारणां थायठे. ए नद्रादिकतप श्रीतीर्थंकरदेवे नणियाके० कह्यांठे. परंतु ए नद्रादिकतपनेविषे पार णां पूर्वोक्त पांचे तपनी परे प्रत्येके जाणवां; अने चतुर्विधपणु पण प्रत्येके जाणवुं.

हवे जेथकी समस्त सुखनी संपदाउ थाय अथवा ए तपना आसेववाथकी एवी वस्तु कोइपण नथी के जे एनुं सेवन कस्याथी न संपजे. अर्थात् सर्व वस्तुनी सं पत्ति थाय, ते कारणे एनुं नाम पण सर्वसंपत्तिसुख नामा तप ठे. तेज कहेठे. मूलः– पडिवइयाएकविय, डुगं डुइज्जाए जाव पन्नरस ॥ खमणेहमावसाउ, होइ तवो सव्वसं पत्ती ॥ ५५५ ॥ अर्थः–ए तप पमवाथकी आरंनीने पडवानो एक उपवास करीए. बीजना दिवसथी बे उपवास करीए, बीजा पक्षना त्रीजना दिवसथी त्रण उपवा स करीए; ते ज्यां सुधी ठेहेला पुनेमना अथवा अमावास्याना दिवसथी पन्नर उ पवास करीए त्यांसुधी पन्नर पक्ष थायठे अने एकशोने वीश उपवास थाय. ए त प कृष्णपक्षमां अथवा शुक्लपक्षमां करायठे. एमकरतां सर्वसंपत्तिनामा तप थायठे.

हवे रोहिणीतप कहेठे. मूलः–रोहिणिरिस्कदिणेरो, हिणीतवे सत्तमासवरिसा इं॥ सिरिवासुपुज्जपूआ, पुव्वं कीरइ अनत्तठो ॥५५६॥ अर्थः–सत्तावीश नक्षत्रठे तेमां प्रथम अश्विनीनक्षत्रथकी रोहिणी नामा नक्षत्र चोथुंठे; ते नक्षत्र जे दिवसे आवे ते दिवसे रोहिणीनामक देवताविशेष, तेना आराधवाने अर्थे सात वं र्ष ने सात महिना सुधी श्रीवासुपूज्यजिनेश्वरनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्रना दिवसे उपवास करीने ए तप करीए. ॥ ५५६ ॥

हवे मौनएकादशीतप कहेठे. मूलः–एक्कारससुअदेवी, तवम्मि इक्कारसीइ मोणे

णं ॥ कीरंति चउत्थेहिं सुअदेवीपूअणापुव्वं ॥५५७ ॥ अर्थः—अग्यार एकादशीसुधी श्रुतदेवीनी पूजापूर्वक मौनपणु धारण करी चउत्थ तपे करी श्रुतदेवी आराधवाने अर्थे शुक्ल एकादशीए निरंतर ए तप करीए. उजमणे रुपाना घंट अगीयार तथा जातजातनां फल आपीए. ॥ ५५७ ॥

हवे सर्वांगसुंदर नामा तप कहेछे. मूलः—सव्वंगसुंदरतवे, कुणंति जिणपूअखंतिनियमपरा ॥ अट्ठुववासे एगंतरं बिलेधवलपक्खंमि ॥५५८॥ अर्थः—ए तपना करवाथकी समस्त अंगनेविषे प्रधान सुंदरपणु होय, ते कारणे एनुं नाम पण सर्वांगसुंदरनामा तप छे; अने एनेविषे आठ उपवास अने एकांतरे आंबिल ते धवलके० चांदरणापक्षनेविषे श्रीवीतरागनी पूजापूर्वक करे, अने क्षांतिके० क्षमा मार्दव आर्జ్ఞవాదిక नियमनेविषे पण परिचय करे. ॥ ५५८ ॥

हवे निरुजसिख तप कहेछे. मूलः—एवं निरुजसिहोविहु, नवरं सो होइ सामले पक्खे ॥ तम्मिय अहिअंकीरइ, गिलाणपडिजागरणनियमा ॥५५९॥ अर्थः—एम निरुजसिह एटले निरोगपणानेविषे शिखा समान, एटले ज्यां ए तप होय त्यां रोग नहोय; अथवा निरुज एटले निरोगपणु तेहज छे प्रधान फलनी विवक्षाए शिखा के० चोटलीनी परे ज्यां, ते निरुजशिख एवे नामे तप जाणवुं. ए तपनेविषे पण पूर्वोक्त सर्वांगसुंदर नामा तपनी परे आंबिल अने उपवास एकांतरे करीए. नवरंके० एटलुं विशेषजे ए तप सामलेके० अंधारे पखवाडीए थाय,अने वली एने विषे ग्लाननी प्रतिजागरणा वैयावच्च लक्षण, तेनुं अभिग्रह होय एटलुं अधिक जाणवुं. ॥ ५५९ ॥

हवे परमभूषणतप कहेछे. मूलः—सो परमभूसणो होइ जस्स आयंबिलाणि बत्तीसं ॥ अंतरपारणयाइं,भूसणदाणंच देवस्स ॥५६०॥ अर्थः—ए तपना करवाथकी शक्र चक्रवर्त्ति आदिकनेविषे योग्य जे भूषण एवा हार कुंडल केयूरादिक अनेक आभरण पामीए, तेथी ए तपनुं नाम पण परमभूषणछे. एनेविषे बत्रीश आंबिल करवा, ते जो लागट करवानी समर्थाइ नथाय तो एकांतरितपणे पारणा करीए. एम संपूर्ण तप करी पोतानी शक्तिने अनुसारे श्रीवीतरागदेवने योग्य मुगट तिलकादिक भूषण चढावीए. ॥ ५६० ॥

हवे आयतिजनकतप कहेछे. मूलः—आयइजणगो चेवं, नवरंसव्वासु धम्मकिरियासु ॥ अणिगूहियबलवीरिय, पवित्तिजुत्तेहि सो कज्जो॥ ५६१ ॥ अर्थः—आयति शब्दे करी परभव जाणवो. त्यां जे विशिष्टफलनो जनकके० उपजावणहार तेथी एनुं नाम आयतिजनक कहीए. एमां पण पूर्वोक्त रीते बत्रीश आंबिल लागट की

री शके नही तो एक दिवस आंबिल करी पारणु करीए. नवरंके० एटलुं विशेष जे समस्त जे वंदनक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, साधु साध्वीनुं वैयावच्च, ते धर्मक्रिया नेविषे बल अने वीर्यनी प्रवृत्तिने जेणे अणिगूहियके० गोपवी नथी, पण तेणे करी सहितछे. एरीते ए तप करवुं. ॥ ५६१ ॥

हवे सौभाग्यकल्पवृक्ष नामा तप कहेछे. मूलः—एगंतरोववासा, सव्वरसं पारणंच चित्तंमि ॥ सोहग्गकप्परुक्को, होइ तहादिज्जए दाणं ॥५६२॥ अर्थः—कल्पवृक्षनीपरे कल्पवृक्ष सौभाग्य फलनादानने विषे कल्पवृक्ष समान ते सौभाग्यकल्पवृक्ष कहीए.ए कांतर उपवास, एकाशणाने दिवसे सर्व रस पारणु कामगुणित जमवुं. ए चैत्र महि नानेविषे सौभाग्यकल्पवृक्ष एवे नामे तप होय छे. त्यां साधु साध्वीने दान आपवुं.

वली कहेछे. मूलः—तवचरणसमत्तीए, कप्पतरू जिणपरोससत्तीए ॥ कायव्वो नाणाविह, फलविलसिरसाहियासहिउं ॥ ५६३ ॥ अर्थः—ए तपनुं चरणके० आसेववुं तेने समाप्ते एटले ए तप पूर्ण थये थके पोतानी शक्तिने अनुसारे एक थाल मां चोखानुं कल्पवृक्ष करीने श्रीवीतराग आगल मूकीए, पण ते केहेवुं के नाणाविहके० नानाप्रकारनां फल तेणेकरीने विलसति जे शाखा तेणे युक्त होय॥५६३॥

हवे तीर्थंकर मातृतपनीविधि कहेछे. मूलः—तित्थयरजणणिपूआ,पुव्वं इक्कासणाइ सत्तेव॥तित्थयरजणणिनामग,तवंमि कीरंति नद्दवए॥५६४॥अर्थः—तीर्थंकरनी माता-तेनी पूजापूर्वक भाद्रवाशुद सातमथकी मांडीने तेरश सुधी सात एकाशणां करवां ते सात वरस सुधी,कोइक कहेछे के त्रण वरस लागट सात सात एकाशणांकरवां, पछी उजमणु करवुं; तेमां प्रधान चोवीश पकवानना थाल आपवा; सपुत्र एटले जे पुत्र सहित होए तेवी चोवीश श्रावकाने जमाडवुं; पीलां वस्त्र करी आपीए, उच्छव करीए ए जिनमातानामा तप ते भाद्रवा महीनामां करीए. ॥५६४॥

हवे समवसरण तप कहेछे. द्वारकाइति प्रसिद्धनाम छे मूलः—एक्कासणाइएहिं, नद्दवयचउक्कगंमिसोलसहिं ॥ होइ समोसरणतवो, तप्पूआपुव्वविहिएहिं ॥ ५६५॥ अर्थः—ए तप एकाशणादिके करीने एटले चार एकाशणां, चारनिवी, चार आंबिल, चार उपवास अने त्यां एक उलीए एक एकाशणुं, उपर निवी, उपर आंबिल, पछी उपवास करवो. एम एक श्रेणी थाय. एवी चार उली करीए तेवारे सोल दिवस थाय. तेमां छेल्लो उपवास पर्यूषणाने दिवसे आवे तेवीरीते ए तप करवुं. एवीरीते समवसरण तप होयछे. तप्पूआके० ते समवसरणनी पूजापूर्वक चारवर्षपर्यंत कीधे छते ए तपनेविषे सर्व मली चोशठ दिवस थाय. ए तप ते समवसरणना

एकेका द्वारनो आश्रय करीने प्रत्येक द्वारने स्थानके चारचार दिवसनुं तप करे छे, तेथी द्वारका एवी एनी प्रसिद्धि छे ॥ ५६५ ॥

हवे नंदीश्वरतप कहेछे. मूलः—नंदीसरपडपूआ, नियसामत्थसरिसतवचरणा होइ अमावस्सतवो, अमावसावासरुद्दिट्ठो ॥५६६॥ अर्थः—नंदीश्वरद्वीपसंबंधी जे प्रासाद ते पट उपर लखीने नंदीश्वरना पटनी पूजापूर्वक निययके० पोतानी समर्थाइ सरखुं तप करवुं; अने दीवालीनी अमावास्याथकी आरंभी उपवास करीए; ए अमावास्याए तप उपवास लक्षण करवुं; तेथी ए अमावासी लक्षण तप कहेवाय छे. ए तप सातवर्षपर्यंत थायछे. अमावास्यानो वासरके० दिवस तेनेविषे उद्दिष्टके० कह्युंछे. एनेविषे बावन उपवास, उजमणे बावन वस्तु फल देवां, नंदीश्वरद्वीपनी पूजा करवी. ॥ ५६६ ॥

हवे पुंमरीकतप कहेछे. मूलः—सिरिपुंमरीयनामग, तवंमि एकासणाइ कायव्वं॥ चित्तस्स पुन्निमाए, पूएअव्वातप्पडिमा ॥ ५६७ ॥ अर्थः—श्री पुंमरीक नामे जे तप तेनेविषे एकाशणादिक तप करीए. ते चैत्री पूनेमना दिवसे करीए. एम एकाशणु आदेदेइने उपवासपर्यंत बारवर्ष लगण लागट करीए. एक कहे छे के सात वरस करीए; ते वरसो वरस बार उपवास अने तिहां पुंमरीकने केवलज्ञान उपन्युं, ते कारणे तेनी प्रतिमा पूजवी. ॥५६७॥

हवे अक्षयनिधितप कहेछे. मूलः—देवग्गठविअकलसो, जो पुन्नो अक्खयाणमु ट्ठीए ॥ जो तव्वसत्तसरिखो, तवो तमक्खयनिहिंबिंति ॥ ५६८ ॥ अर्थः—श्रीजिनदेव आगले शुन मुहूर्त्ते कलश थापी दर दिवसे मूठीनर चोखा नाखतां जे दिवसे कलश पूराणो, ते दिवसे पोतानी शक्तिने अनुसारे एकाशणु ब्याशणु करीए. ए तपने अक्षयनिधितप, एवुं गीतार्थ कहेछे. इहां ए आम्नायछे के पर्यूषणाथकी पन्नर दिवस आगल ए तप मांमीए; पछी अथवा अधिके दिवसे मुहूर्त्त जोइने पारणां करवां, पछी वासक्षेपादिक विधिपूर्वक अविछिन्नधाराए संपूर्ण कलश करी उपाडीए, अने जिन आगल धरीए. ॥५६८॥

हवे चंद्रायणतप ते यवमध्य वज्रमध्यना नेदे करी बे प्रकारे कहेछे. मूलः—वड्ढइ जहाकलाए, एक्काक्का एणुवासरं चंदो॥ संपुस्रोसंपुन्नाइ, जासयलकलाइ पव्वंमि ५६९ अर्थः—जेम चंद्रमा एकेक कलाए करीने वृद्धि पामेछे, पडवाए बीजे, त्रीजे, एम कलाए वधतो जाय, ते ज्यांसुधी समस्त कलाए करी पूर्ण पूनेमने दिवसे थाय.

मूलः—तह पडिवयाय इक्को, कवलो बिइआइसुसिमा जाव॥ इक्किककवलवुड्ढी, जा

तेसिं होइ पन्नरसगं ॥५३०॥ अर्थः—पूर्वोक्त चंद्रमानी वृद्धि पामती कलानी पेरे पडवा ए एक कवल, बीजना दिवसे बे कवल, एम वधारतां पूनेमना दिवसे पन्नर कवल, एरीते चांदणे पखवाडीए एकेका कवलनी वृद्धि करतां ज्यांसुधी पन्नर कवल थाय.

मूलः—एकेक्कंकिएहंमिय, पक्खंमि कलं जहा ससी मुयइ ॥ कवलंवि तहा मुचइ, जामावस्साइसोएक्को ॥ ५३१ ॥ अर्थः—अंधारा पखवाडीआनेविषे चंद्रमा एकेक कलाए दररोज हीन थतो जाय छे, तेम अंधारा पक्षमांहे पडवाना दिवसे पन्नर कवल लेइ बीजनादिवसे चउद कवल लीए, एम त्रीजे तेर कवल, एरीते दररोज एकेक कवल मूकतां अमावास्याए एक कवलनो आहार करे. ॥५३१॥

मूलः—एसा चंदप्पडिमा, जवमज्झा मासमित्तपरिमाणा ॥ एत्तिंहतु वज्जमज्झं, मास प्पमिमं पवक्खामि ॥ ५३२ ॥ ए चंद्रनामे प्रतिमा जे यवमध्य, ते मात्र एक मास प्रमाण कही. एत्तिंहके० हवे वज्रमध्य मास प्रतिमा कहीशुं. यवमध्य चंद्रायणने उजमणे रूपानो चंद्रमा अने सोनाना बत्रीश यव आपीए. ॥५३२॥

हवे वज्रमध्य चंद्रायण ते आवी रीते. मूलः—पन्नरसपक्खियाए, एकगहाणीइ जावमावस्सा॥एकेणं कवलेणं, जाया तह पडिवयावि सिआ॥५३३॥ अर्थः—अंधारे पखवाडे पडवाना दिवसे पन्नर कवल, पछी बीजना दिवसे चउद कवल, त्रीजना तेर कवल. एम एकेकनी हाणी करतां ज्यां अमावास्या थाय त्यां एक कवल होय. तेम आगल चांदरणे पखवाडे पडवाने दिवसे एक कवल होय. ॥ ५३३ ॥

मूलः—बीयाइयासु इक्कग, वुड्ढी जा पुंन्निमाइपन्नरस ॥ जवमज्झवमज्झाउ, दोविपडिमाउजणियाउ ॥ ५३४ ॥ अर्थः—पछी बीज आदेदेइने जे तिथीउ आवे त्यां एकेक कवलनी वृद्धि करतां जवुं, ते जेवारे पूनेमनो दिवस आवे तेवारे पन्नर कवलनो आहार थाय. एटले यवमध्य ने वज्रमध्य ए बेउ प्रतिमा जणियाके० कही. ए वज्रमध्यने उजमणे रूपानो चंद्रमा अने वज्र आपवां. ॥५३४॥

हवे दाति संख्या प्रतिमा त्रण गाथाए करी कहेछे. मूलः—दिवसे दिवसे एगा दत्ती पढमंमि सत्तगे गिक्षा ॥ वड्ढइ दत्तीसहस त्तगेण जा सत्तसत्तमए॥५३५॥ अर्थः—दिवस दिवसनेविषे एकेक दाती ते पढमके० पहेला सातकाने विषे गिक्षाके० लेवी. एम अन्नना ग्रहणथकी पाणीनी दाती पण एकेकज सात दिवस सुधी लेवी, पछी सातका सातकासाथे दातीनी पण वड्ढइके० वृद्धि करवी. एटले बीजे सातके दिवसे दिवसे बे बे दाती लेवी. एम त्रीजे सात के सातदिवससुधी त्रण त्रण दा

ती लेवी, ते ज्यांसुधी सातमे सातके सात सात दाती दिवसे दिवसे लेवाय, त्यांसुधी जाणवी. ॥ ५७५ ॥

मूलः—इगुवन्नवासरेहिं, होइ इमा सत्तसत्तमीपडिमा ॥ अठ्ठमियानवनव मि यायदसदसमिया चेव ॥ ५७६ ॥ अर्थः—सातो सत्तीयुं उंगणपचाश दिवसे सप्त मी प्रतिमा होय. हवे आगल अठमअठमिआ, नवमनवमिया अने दसमदसमिया एवेनामे त्रण प्रतिमानेविषे जे होय ते कहेछे. ॥५७६॥

मूलः—नवरं वड्ढइ दत्ती, सहुअठ्ठगनवगदसगवुड्ढीहिं ॥ चउसठीइकासी, सयंचदि वसाणिमासुकमा ॥ ५७७ ॥ अर्थः—नवरंके० एटलुं विशेष जे इहां दाती ते वड्ढइ के० वधे ते आवीरीते के सहुअठ्ठगके० आठका नवका ने दशका साथे जेम एनी वृद्धि तेम दातीनी पण वृद्धि थाय, तेमां आठमी प्रतिमाए छेला आठे दिवसे आ ठ आठ दाती लेवी, एम नवमनवमिकाए छेला नवे दिवस सुधी नव नव दाती लेवी तथा दसमदसमिकाए छेला दश दिवससुधी दश दश दाती लेवी. ॥५७७॥

हवे एनेविषे दिवसनी संख्या केटली थाय? ते कहेछे. आठो अठ्ठुं चोसठ दिव स अठअठमी प्रतिमानेविषे थाय. एम नवे नवे एक्याशी दिवस नवम नवमिका प्रतिमानेविषे थाय,अने दशम दशमिकाना एकशो दिवस पूर्णअनुक्रमे थाय. ए दाती नी संख्या सूत्रकारे अंतगमदशांगने अभिप्राये कहीछे. त्यां पण एमज कह्युंछे, अने व्यवहार नाष्यना न्यायथी तो सित्तेर प्रमुख दिवस थायछे; अने दातीनी संख्या वृत्तिकारे एम कहीछे. सत्तसत्तमिआ ए पहेली प्रतिमाए एकशोने छन्नु दाती थाय, एम बीजीए बशोने अठ्ठाशी थाय, त्रीजीए चारशेने पांच थाय, चोथीए पांचशेने पच्चाश थायछे. अने ए चारे प्रतिमाना मली नवमास ने चोवीश दिवसनी संख्या था यछे, अने चउदशेने उंगणचालीश दातीनी संख्या थायछे. यडुक्तं॥चउवीसदिवस अ हिआ, नवमासासवइछदिवसाणि॥चउदसयागुण याला, दत्तीणं हवइ इहसंखा॥१

हवे वर्द्धमानआंबिल नामा तप बे गाथाए करी कहेछे. मूलः—एगाइयाणिआ यंबिलाणि इक्किकवुड्ढिमंताणि ॥ पवंतअन्नत्तठ्ठाणि जाव पुन्नं सयं तेसिं ॥५७८॥ एयं आयंबिलवद्धमाण नामं महा तवच्चरणं ॥ वरिसाणि इछ चउदस, मासतिगं वीसदि वसाणि ॥ ५७ए ॥ अर्थः—एक आदेदेइने आंबिल एकेक वृद्धिमंतके० वधता हो य. इहां ए नावछे जे प्रथम एक आंबिल, पछी एक उपवास, पछी बे आंबिल वली एक उपवास, पछी त्रण आंबिल वली एक उपवास; एम वधतां छेहेले एकसो आंबिल करीने तेने पारणे एक उपवास करे; एम सर्वमली एकशो उपवास थाय

अने पांच हजार ने पच्चाश आंबिल थाय. ए वर्द्धमानआंबिल नामा महातपनुं आसेवन करवुं; ते चउदवर्ष त्रण मास ने उपर वीश दिवसे पूर्ण थायछे.॥५७०॥

हवे गुणरत्नसंवत्सरनामा तप ते सात गाथाए करी कहेछे. मूलः—गुणरयण वछरंमि सोलसमासा हवंति तवचरणे ॥ एगंतरोववासा, पढमे मासंमि का यवा ॥ ५८० अर्थः—गुणरत्नसंवत्सर नामा तप ते सोल माससुधी आसेववुं, त्यां पहेला महीनानेविषे एकांतरे उपवास करवा. ॥५८०॥

मूलः—ठायवं उक्कडआसणेण दिवसे निसाइ पुण निच्चं॥ वीरासणिएण तहा,होअव मवावडेणंच॥५८१॥ अर्थः—ठायवंके०रहेवुं, उकडू आसणे दिवसनेविषे अने वली रात्रीने विषे तो सदाइ वीरासणिके०वीरासने रहेवुं अने अप्रावृतके०वस्त्रेरहित थवुं.

मूलः—बीयाइसुमासेसुं, कुज्जाएगुत्तराइवुड्डीए ॥ जा सोलसमेसोलस, उपवासा हुं ति मासम्मि ॥ ५८२ ॥ अर्थः—हवे बीजा महीना प्रमुखनेविषे जे करवुं ते कहे छे. एकोत्तरादिकनी वृद्धिए उपवास करवा ते ज्यांसुधी सोलमे महीने सोल उप वास थाय त्यांसुधी करवा. इहां ए नावार्थ छे के पहेलामासे एक एक उपवास करीने उपर पारणु करीए, बीजा मासे बे बे उपवास ने पारणु, त्रीजा मासे त्रण त्रण उपवास ने पारणु करीए, चोथा मासे चार चार उपवासने पारणु करीए. तेवारे चोथा आखा महीनामां चोवीश उपवास ने छ दिवस पारणांना थायछे, एम मासेमासे चढताचढता उपवासने उपपारणु ते यावत् सोल मासपर्यंत करवा.

हवे उपवासनी संख्या अने दिवसनी संख्या ते अन्य कर्तृकी गाथाये देखाडे छे. उक्तंच ॥ पन्नरस वीस चउवीस चेव चउवीसपन्नवीसाय ॥ चउवीसएगवीसा, चउवीसासत्तवीसाय ॥ १ ॥ अर्थः—पन्नर, वीश, चोवीश, चोवीश, पचीश चोवी श, एकवीश चोवीश, सत्तावीश, ॥ १ ॥ उक्तंच ॥ तीसातित्तीसावय, चउवीसछव्वी सअछवीसाय ॥ तीसाबत्तीसाविय, सोल समासेसु तवदिवसा ॥ २ ॥ अर्थः—त्रीश, तेत्रीश, चउवीश, छवीश, अठावीश, त्रीश, ने बत्रीश. ए अनुक्रमे सोल महीना नेविषे एटला तपना दिवसो थायछे. ॥२॥ हवे पारणाना दिवसो महीना महीना आश्री कहेछे. उक्तंच ॥ पन्नरसदसछप्पं चचउरपंचसुयतिन्निन्नित्ति ॥ पंचसु दो दोय तहा, सोलसमासेसुं पारणगा ॥३॥ अर्थः—पन्नर, दश, आठ, छ, पांच; चा र, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, बे, बे, बे, बे, बे, ए सोल महीनानां पारणां जाणवां. जे महिने अष्टमादिक तपना दिवस पूराय नही तेवारे आगला मही नाना दिवसो लेवा. ॥ ३ ॥

हवे अनुष्ठान प्रकारे सर्व दिनमान कहेछे. मूलः–जं पढमगंमि मासे, तमणुट्ठा णं समग्गमासेसु ॥ पंचसयाइदिणाणं, वीसूणाईमम्मि तवे ॥५७३॥ अर्थः–जे प्रथ ममासनेविषे अनुष्ठान कह्युं तेहज अनुष्ठान समग्रमासनेविषे थाय. पांचशे दि वस वीशें ऊणा, तेवारे चारशे एंसी दिवस ए गुणरयणसंवत्सरतपनेविषे थायछे. इहां गुणरत्न एवुं नामसार्थकज छे परंतु निरर्थक नथी, केमके निर्जरादिक जे गुण–तद्रूप जे रत्न–ते जेनेविषेछे; माटे गुणरत्नसंवत्सर ते सत्रिहाइ संवत्सरे एट ले एक संवत्सरने तेना उपर वली एक संवत्सरनो त्रीजो भाग एटले बधा मली सोल महीने पूर्ण थाय. तेथी गुणरयणसंवत्सर कहीए. ॥ ५७३ ॥

हवे प्रवचनरूप समुद्र ते अपारछे, त्यां जे तप कह्यांछे तेपण घणां कह्यांछे, अने तेना आसेवनार पण खंदक प्रमुख पुरुष विशेष घणा सांभलीए छइए, ते जूदा जूदा केटला कहिए? परंतु दिशि मात्र देखाडीने हवे शेष तपो विशेषनुं अतिदेश कहीएछैए.

मूलः–तह अंगोवंगाणं, चिइवंदणपंचमंगलाईणं ॥ उवहाणाइ जहाविहि, ह वंति नेयाणि तह समया ॥५७४॥ अर्थः–तथा शब्द समुच्चयने अर्थेछे, अंग जे आ चारांगादिक अने उपांग जे उववाई प्रमुख, चैत्यवंदना, इरियाविहि, शक्रस्तव, स्था पना, अरिहंतनी स्तवना, नामार्हतनी स्तवना, श्रुतस्तव, सिद्धस्तव रूप पंचमंगला दिकना उपधानादिक, आदि शब्द थकी अनेरा पण तपना विशेष जे छे ते जे वि धिए होय ते सर्व सिद्धांत थकी जाणवा. एम त्रेसठ गाथाए करी तपना भेद वखाण्या, तथा विधिप्रपाते योगविधि तपोरत्नमालिका, इत्यादिक शास्त्रांतरथकी अनेरां तपो जाणवां. ॥ ५७४ ॥ इति गाथा त्रिषष्टिकार्थ ॥

अवतरणः–पायालकलसत्ति एटले पाताल कलशनी वक्तव्यतानुं बशेने बहोते रमुं द्वार कहेछे. मूलः–पण नउइ सहस्साइं, उगाहित्ताचउद्दिसिं लवणं ॥ चउरो लिंजरसंगाण संठिया हुंति पायाला ॥ ५७५ ॥ अर्थः–लवणसमुद्र बे लाख योज न विस्तारेछे, ते लवणसमुद्रनी चारेदिशाए जंबुद्वीपनी जगतिथकी पंचाणु हजार योजन अवगाहिए, त्यां बहु मध्यदेशे चार आलिंजरके० महोटुं मटकुं–तेना संस्थाने संस्थितके० रह्यांछे, एवा चार पातालकलश होयछे. ॥ ५७५ ॥

हवे ए चारेनां नाम ने ठीकरी एनुं जाडपणु कहेछे. मूलः–वलयामुहकेयूरे जुयगे तह ईसरेय बोधव्वे ॥ सव्ववईरायाणं, कुड्डाएएसिंदससइया ॥५७६॥ जोयण सहस्सदसगं, मूले उवरिंच होइ विच्छिन्ना ॥ मज्झेयसयसहस्सं, तित्तियमित्तंच उगाढा ॥५७७॥ अर्थः–एक वलयमुख अथवा वडवामुख, बीजुं केयूर, त्रीजुं युतक, तेम

चोथुं इश्वर एवे नामे चार कलशछे. ते बोधवा के० जाणवा. सर्वे वज्ररत्नमय एवी एनी ठींकरी ते हजार योजन जाडी छे; एवुं प्रमाण कहेछे. एक प्रदेशनी श्रेणीथकी विष्कंने वधतां वधतां मूलमां अने उपरे दश हजार योजन, एम वधतां वधतां मध्यविचाले शतसहस्र एटले लाख योजन प्रमाण, अने तित्तियमित्तंके० तेटली मात्राए लाख योजन प्रमाण नूमिकामांहे उगाढके० खूत्याछे. उपरे पण दश ह जार योजनने विस्तारे छे. ॥५७६॥५७७॥

हवे एने आश्रित देवो जे छे तेमनी स्थिति अने तेमनां नाम कहेछे. मूलः—पलि उवमठिईआ, एएसिं अ हवईसुराइणमो ॥ कालेयमहाकाले, वेलंबपनंजणेचेव ॥ ॥५७७॥ अर्थः—एक पल्योपमनी स्थितिना धरनार एना अधिपति ते इणमोके० हवे कहीए छैए. तेमां पूर्वदिशाए काल, दक्षिणदिशाए महाकाल, पश्चिमे वेलंब, अने उत्तरे प्रनंजन. ए पाताल कलशाना धणी जे चार देवता छे तेमनां नाम कह्यां

हवे लघुपाताल कलशानी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—अन्ने विय पायाला, खुड्डालिं. जरगसंतिआ लवणे ॥ अठसया चुलसीआ, सत्तसहस्साय सव्वेसिं ॥५७९॥ अर्थः—अ नेरा पण पाताल कलशछे ते खुड्डके० न्हाना आलिंजरके० मटका तेना संस्थाने लव ण समुद्रनेविषे छे. इहां ए नावजे जेम पंचाणुहजार योजन जंबुद्वीपनी जगती थकी आघा जइये तेम लवणसमुद्रनी जगतिथकी पण पंचाणुहजार योजन उ रहां आवीए; त्यां वचमां दशहजार योजन विस्तारे चक्रवाल प्रदेशे महोटा क लश कह्या. ते बेहुने आंतरे वली न्हाना कलशछे एटले ए चारे कलशाए जेटली नूमिका रुंधी छे ते मूकीने वचमां सर्वे सातहजार आठशोने चोराशी कलशा छे. हवे एनी नव पंक्ति महोटा कलशाना मुखथकी बीजा मुखसुधी छे, तेमां पहे ली पंक्तिए बशेने पन्नर, बीजी पंक्तिए बशेने शोल. एम परिधि जेम जेम वधे ते म तेम एकेक कलश पण पंक्तिए वधे; ते ज्यांसुधी नवमी पंक्ति त्यांसुधी बसेंने त्रे वीश थया. ए नवे पंक्तिनो सरवालो करतां एकेक महोटा कलशनेविषे उंगणीशे ने एकोत्तर कलश थायछे. ए चार कलशे करी चउगुणा कर्याथी पूर्वोक्त सात ह जार आठसेने चोराशी थाय. ए न्हाना कलशोना अधिपति जे देवता, तेमनी आयु स्थिति अर्द्ध पल्योपम होयछे. ॥ ५७९ ॥

हवे एना विस्तारनुं प्रमाण कहेछे. मूलः—जोयणसयविच्छिन्ना, मूलुवरिं दसस याणिमज्झंमि ॥ उगाढायसहस्सं, दसजोयणियायसिंकुड्डो ॥५८०॥ अर्थः—महोटा जे चार कलशा कह्या तेथकी ए न्हाना कलशा शोमा अंशे होय, तेवारे शो योजन

ने विस्तारे मूले अने उपरे छे, तथा एक हजार योजन विचाले; एम भूमिमांहे ह जार योजन अवगाढ छे, अने दश योजननी कुड्डोके० ठींकरी जाणीछे. ॥५९०॥

हवे समस्त कलशनेविषे वायुप्रमुखनी स्थिति कहेछे. मूलः—पायालाणविभागा, सव्वाणवि तिन्नितिन्नि बोधव्वा ॥ हिठिमभागे वाऊ मझेवाऊअउदगंच ॥५९१॥ उव रिं उदगं भणिअं, पढमगबीएसु वाउसंखुभिउ ॥ उड्ढंवामे उदगं, परिवड्ढइ जलनि ही खुभिउ ॥५९२॥ अर्थः— सर्वे पाताल कलशाना त्रण त्रण विभाग बोधवाके० जाणवा. त्यां महोटा पाताल कलशा तेने एकने भागे तेत्रीश हजार त्रणसे ते त्रीश योजन अने एक योजननो त्रीजो भाग उपर, अने न्हाना कलशने त्रणसे तेत्रीश योजन अने उपर एक योजननो त्रीजो भाग, एटली जग्यामां समस्त कल शोनेविषे अनेक प्रकारना वायु संमूर्छाएछे, अने क्षोभ पण पामेछे. जेम मनुष्या दिकना उदरमां श्वास वात संमूर्छेछे अने क्षोभ पण पामेछे, तेम त्यांपण जे वारे महोटा कलशानेविषे वायु क्षोभ पामे तेवारे जगना स्वभावथकी न्हाना कल शानेविषे पण वायु क्षोभ पामे, अने ते वारे वेली, गाउ गाउ ऊंची वधे. एम समस्त कलशानेविषे पूर्वोक्त त्रण भागमांहेला हेठला भागनेविषे वायु होय अने मझे के० विचला भागमां पूर्वोक्त योजनना प्रमाणनेविषे वायु अने जल होय; तथा उ परला त्रीजा भागनेविषे केवल पाणी भणियंके० कह्युं छे. पहेला भाग अने बीजा भागनो वायु जेवारे खोभ्यो एटले उछल्यो थको उड्ढंके० ऊंचो चाले तेवारे पाणीने वमेके० नाखे तेथी जलनिधिके० समुद्र पण क्षोभ्यो थको समुद्रनुं जल पण वधे.५९२

हवे उपशमे वाये जे थाय ते कहेछे. मूलः—परिसंठिअंमि पवणे, पुणरवि उदगं तमेव संठाणं ॥ वड्ढेइ तेण उदही, परिहा यणु कमेणंवा ॥५९३॥ अर्थः—परिसंस्थि तके० वली समस्त प्रकारे वायु उपशमे तेवारे वली तेहीज उदक तेज संस्थाने ते फरी कलशामांहे पाछुं प्रवेश करे; ते कारण माटे अनुक्रमे करी हियमान तथा वधे त्यारे जल क्षोभ पामे ते अहोरात्रे नियत काले बे वखत अने पक्षमांहे चतुर्दशी प्रमुख तिथीनेविषे पण अनुक्रमेकरीने वृद्धि हानी थाय. ॥५९३॥ इति गाथा सप्तकार्थ.

अवतरणः—आहारगसरूवंति एटले आहारक शरीर करे तेना स्वरूपनुं बशो ने तहोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—समउ जहन्नमंतर, मुक्कोसेणं तु जावछम्मासा ॥ आहारसरीराणं, उक्कोसेणं नवसहस्सा ॥५९४॥ अर्थः—आहारक शरीर एकवार की धुं अने वली कार्यना वशथकी करे तो जघन्यथी एक समयनो आंतरो पडे, अ ने उत्कृष्ट तो ज्यां लगे छमहीना अने जीवसमासमांहे वरस पृथक्त्व कह्युं

छे ते मतांतर जाणवुं. आहारक शरीरवाला करनार उत्कृष्टे सम काळें नव हजा
र लभ्यमान थाय. अने जघन्यथी एक बे त्रण होय; ॥ ५९४ ॥

हवे संसारमां वसतो जीव जेटला वखत आहारक शरीर करे ते कहेछे. मूलः
चत्तारिय वाराउ, चउदस पुव्वीकरेइ आहारे ॥ संसारंमि वसंतो, एगनवे दुन्निवाराउ
५९५ अर्थः—चार वखत चउदपूर्वनो धारक मुनिराज आहारक शरीर करे. शेष श्रुत
ना धरनारने ए आहारक शरीर करवानी शक्ति न होय, तेथी चउदपूर्वधरनुं ग्रहण
कर्युं, अने संसारमां वसतो एक नवनेविषे बे वखत आहारक शरीर करे. हवे आ
न्हियतेके० प्रयोजनना वशथकी करीए, नवुं शरीर नीपजावीए ते आहारक कहीए.
तेथी तेज प्रयोजन देखाडेछे. मूलः—तित्थयररिद्धिदंसणछमडोवगहणहेउंवा
संसयवुच्छेयछं, गमणं जिणपायमूलंमि ॥ ५९६ ॥ अर्थः—समस्त लोकने आश्चर्य
नी उपजावणहार अष्ट महाप्रातिहार्य प्रमुख श्री तीर्थंकरनी ऋद्धि ते जोवाने
अर्थे आश्चर्य उपन्याथका अथवा तेवा तेवा नवा अर्थ तेना लेवाने कारणे अ
थवा कोइ एक अति गहनार्थनो संदेह उपन्ये थके तेनो निश्चे करवाने अर्थें को
इएक महाविदेहनो वासी श्री वीतरागना चरणकमलने आगल आहारक शरीर
करी पहोंचे, पछी भगवंतने देखी समस्त पोतानुं कार्य कीधे छते वली ते पूर्वे प्र
देशे जे औदारीक शरीर थापणनीपरे मूक्युं हतुं ते, पोताना प्रदेशनी जालीबद्ध
तेज अवस्थाए थको मागी लीधेला उपकरणनीपरे आहारक शरीर मूकी मूलगा
प्रदेशना समूहनेविषे प्रवेश करे. एना प्रारंभ अने मूकवाना कालसुधी अंतरमुहू
र्त जाणवुं, ॥५९६॥ इति गाथा त्रयार्थ ॥

अवतरणः—देसाअणारियत्ति एटले अनार्यदेशोना नामोनुं बसें ने चुमोत्तेरमुं
द्वार कहेछे. मूलः—सगजवणसबरबब्बर, कायमुरुंडुड्डगोणपक्कणया ॥ अरवागहो
णरोमय, पारसखसखासिआ चेव ॥ ५९७ ॥ डुंबिलयलउसबुकस, भिल्लंधपुलिंद
कुंचभमररूआ ॥ कोपावचीणचंचुअ, मालवदविडाकुलग्घाय ॥५९८॥ केक्कयकिरा
यहयमुह, खरमुहगयतुरयमिंढयमुहाय ॥ हयकन्नागयकन्ना, अन्नेवि अणारिया ब
हवे ॥ ५९९ ॥ पावायचंडकम्मा, अणारियानिग्घिणा निरणुतावि ॥ धम्मुत्तिअरकरा
इ, सुइणेविननज्जएताए ॥ ६०० ॥ अर्थः—शकदेश, यवनदेश, शबरदेश, बाबर
देश, काय, मुरुंड, उड्ड, गोण, आख्यानक,हुण, रोमक, पारस, खस, कौशीक, डु
बिल, लकुश, बुकस, भिल्ल,अंध, पुलिंद, कौंच, भ्रमररुची, कपोत, चीण, चंचु
क, मालव, द्रविड, कुलार्थ, कैकेय, किरात, हयमुख, खरमुख, गजमुख, तुरंगमु

ख, मिंढमुख, हयकर्ण, गजकर्ण, ए सिवाय बीजा पण अनार्य आयातके० एय एटले धर्म थकी जे दूर थया एटले आर्य थकी विपरीत ते अनार्य जाणवा. ए अपेय वस्तुना पान करनार, अनक्ष्यना नक्ष करनार, अगम्य गमनना करनार. शास्त्रमांहे जे निषेध एवी वेष नाषा आचारादिकना करनार एवा अनार्य देश ते बहुवेके० घणाछे, वली ते केवाछे? तोके महा पापना करनार, प्रचंम रौड्कर्मने विषे तत्पर एवा अनार्य निग्घणाके० अत्यंत निर्दय; पाप करीने पछी अनुताप न करे, जेने धर्म एवा अक्षर पण सांनल्यामां आव्या नथी. इतिगाथाचतुष्टयार्थ ॥

अवतरणः—आयरियदेसत्ति एटले आर्य देशोना नामोनुं बसेने पंचोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—रायगिहमगह चंपा, अंगा तह तामलित्तवंगाया॥ कंचणपुरं कलिंगा, बाणारसिचेवकासीआ ॥६०१॥ अर्थः—एक राजगृहनगर ने मगधदेश, बीजी चंपानगरी ने अंगदेश, तेमज त्रीजी तामलिप्तानगरी ने वंगदेश, चोथुं कांचनपुरनगर ने कलिंग देश, पांचमुं बाणारसीनगर ने काशीदेश. ॥६०१॥

मूलः—साकेय कोसलागय, पुरंच कुरुसोरियं कुसट्टाय॥ कंपिल्लं पंचालं, अहिछत्ता जंगला चेव ॥ ६०२ ॥ अर्थः—छठी साकेतनगरी ने कोशलदेश. सातमुं गजपुरनगर ने कुरुदेश, आठमुं सौरीपुरनगर ने कुशावर्त्तदेश, नवमी कंपिलनगरी ने पंचालदेश, दशमी अहिछता नगरी ने जंगलदेश. ॥६०२॥

मूलः—बारवईय सुरठा, महिल विदेहाय वछकोसंबी॥ नंदिपुरं संमिल्ला, नहिलपुरमेव मलयाय ॥ ६०३ ॥ अर्थः—अग्यारमी द्वारावतिनगरी ने सोरठदेश, बारमी मिथुलानगरी विदेहदेश, तेरमी कोसंबीनगरी ने वछदेश. चउदमुं नंदनपुरनगर ने शांमिल्यदेश, पन्नरमुं नहिलपुरनगर ने मलयदेश. ॥ ६०३ ॥

मूलः—वइराड मछ वरुणा, मछा तह मुत्तियावइदसन्ना॥ सुत्तीमईयचेई, वीयनयं सिंधुसोवीरा ॥६०४॥ अर्थः—सोलमुं मछनगर ने वैराटदेश, सत्तरमी वरुणनगरी ने अछदेश, अढारमी मृत्तिकावतीनगरी ने दशार्णदेश, उंगणीशमी शुक्तिमतिनगरी ने चेदिदेश, वीशमुं वीतनयनगर ने सिंधुसौवीरदेश. ॥ ६०४ ॥

मूलः—महुराय सूरसेणा, पावा नंगीयमासपुरिवट्टा॥ सावछी अकुणाला, कोडीवरिसं च लाटाय ॥६०५॥ अर्थः—एकवीशमी मथुरानगरी ने सूरसेनदेश, बावीशमी पापानगरी ने नंगीदेश, त्रेवीशमी मासपुरीनगरी ने वर्त्तदेश, चोवीशमी श्रावस्तिनगरी ने कुणालादेश, पचीशमुं कोटीवर्षनगर ने लाटदेश. ॥ ६०५ ॥

मूलः—सेयंबियाथिनयरी, केइय अर्द्ध च अयरियं नणियं॥ जत्तुप्पत्तिजिणाणं,

चक्कीणं रामकिएह्णं ॥ ६०६ ॥ अर्थः—पछी श्वेतंबिकानगरी ने कैकेयदेश, ए अर्द्धो आर्यदेश कह्योछे, ज्यां जिनके० तीर्थंकर, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव प्रमुख उत्तम पुरुषोनुं उपजवुंछे ते आर्यदेश जाणवा. ते साडीपचीश देशछे तेमनां नाम कह्यां. ए बहुश्रुत संपदाए प्रमाणछे, अने आवश्यकनी चूर्णिमां एवी-व्यवस्था कहीछे के जे जुगलीआना खेत्रे हकारादि नीतिथाय ते आर्य, एटले नरतखेत्रवर्त्ति तेहज आर्य अने उपलक्षणथकी महाविदेहना अंतवर्त्ति विजय मध्य खंडादिकनेविषे छे ते पण आर्य जाणवा. ॥ ६०६ ॥ इति गाथा षट्कार्थ ॥

अवतरणः—सिद्धएगतीसगुणात्ति एटले सिद्धना एकत्रीशगुणोनुं बशेने छोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—नवदरसणंमि चत्तारिआउए पंचआइमे अंते ॥ सेसे दोदो नेया खीणनिलावेणइगतीसं ॥ ६०७ ॥ अर्थः—नवदर्शनावरणीयना नेद, चार प्रकारनुं आयु, पांच प्रकार ज्ञानावरणीयना, पांच प्रकार अंतके० छेल्लुं जे अंतरायकर्मछे तेना जाणवा. शेष थाकता चारकर्म. तेमां वेदनीयना बे नेद, अने मोहनीय ते द र्शन तथा चारित्र मोहनीयरूप बे प्रकारे, अने नामकर्म ते शुन अशुन नाम रूप, तथा गोत्रकर्म ते उंच नीच गोत्ररूप. ए सर्व मली एकत्रीश नेद थाय. ते जेवारे क्षीण अनिलाष ए बधाने क्षीण शब्द धुरे आपीने बोलीए एटले क्षीण चक्षुदर्शना वरणीय, क्षीण अचक्षुदर्शनावरणीय एम सर्वत्र कहेवुं. ते ज्यांसुधी क्षीण नीच गोत्र कहिए त्यांसुधी एकत्रीश गुण सिद्धना थायछे. ॥ ६०७ ॥

अथवा प्रकारांतरे वली बीजा पण सिद्धना एकत्रीश गुण कहेछे. मूलः—पडिसेह णसंठाणे यवन्न गंध रस फास वेएय ॥ पण पण डुपणठतिहा, एगत्तीसमकाय संग रु हा॥६०८॥अर्थः—एटलानो प्रतिषेध करवा थकी एटले तेमां एक लांबो, बीजो वाट लो, त्रीजो पहोलो, चोथुं त्रिखुणु, पांचमु चउखुणु ए पांचतो संस्थान जाणवां अने गंध बे, कृष्णादिक वर्ण पांच, रस पांच, स्पर्श आठ, वेद त्रण, ए अष्टावीशनो निषेध करवाथी अष्टावीश गुण उपन्या. उंगणत्रीशमुं अकाय ते शरीररहितपणु, त्रीशमु असंग ते स्वजनादिके रहितपणु, एकत्रीशमुं अरु के० जन्मेकरी रहित, ए एकत्रीशगुण श्री आचारांगमांहे संस्थानादिक एमज कह्यांछे. यदुक्तं सेनदीहे न वट्टे नतंसे इत्यादिक एटले ए सिद्धना एकत्रीशगुण कह्या.ए सिद्धना एकत्रीश गु णोनुं प्रतिपादक द्वार कहेवा थकी अत्यंत मंगल शिष्य प्रशिष्यादिकने अविछेदादिकनुं कारण कर्युं. ए अंत मंगलिक कहीने बशेने छहोतेरमुं द्वार समाप्त कर्युं. ॥६०८॥

हवे ए प्रकरणनो करनार पोताना वंश प्रकटन पूर्वक पोतानुं नाम देखाडतो वली ए प्रकरणनेविषे कारण अने पोताने अनुद्धतपणुं कहेनार थको, एवुं कहेछे.
मूलः—धम्मधरुद्धरणमहा,वराह जिणचंदसूरिसीलाणं ॥ सिरिअम्म एवसूरीण पाय पंकयपराएहिं ॥६०ए॥ सिरिविजयसेनगणहर; कणिठ जसदेवसूरिजिठेहिं ॥ सिरिने मिचंदसूरिहिं सविणयंसिस्सजणिएहिं ॥६१०॥ अर्थः—धर्म जे श्री वीतराग देवनो जाषित तेज जीवा जीवादिकना धरवाथकी धरा जे पृथ्वी तेनुं उद्धरणके० विना शने परिहारे यथावस्थितपणे राखवुं. त्यां महावराह समान श्री जिनचंदसूरि तेना शिष्य श्री अम्रादेवसूरि तेना चरणकमलना पराग समान ॥ ६०ए ॥ श्री विजयसेन नामा गणधर ने न्हाना श्रीयशोदेवसूरि तेना महोटा गुरुनाइ एवा श्रीनेमिचंद्र सूरि तेणे सविनयपणे पोताना शिष्यना कथन थकी. ॥६१०॥

मूलः—समयरयणायराउ; रयणाणंपिवसमुद्धदाराइ ॥ निउणनिहालणपुव्वं; ग हिउ संजत्तएहिंवा ॥ ६११ ॥ अर्थः—समय जे सिद्धांत तेज अलब्धपारपणा थकी रत्नाकरके० समुद्र कहीए, ते सिद्धांतरूप समुद्र थकी रत्ननीपरे जेम समु द्रमांथी रत्न लइए तेम सिद्धांतरूप समुद्रथकी अर्थे करी सहित बशेने गोत्तेर द्वार निपुणमतिपूर्वक लेइने संयात्रिकके० नाखुदानी परे. ॥ ६११ ॥

मूलः—पवयण सारुद्धारो, रइउ सपरा विबोह कज्जंमि ॥ जं कंचि इह अजुत्तं बहुस्सुआ तं वि सोहंतु ॥ ६१२ ॥ अर्थः—ए प्रवचन सारोद्धार रच्यो सारके० प्रधान पद तेनो उद्धारके० एकठा करीने रचना कीधी. पोताने तथा बीजाने अ वबोधने अर्थे द्वारने अनुक्रमे करी प्रवचनना प्रधान पदने एकठा कस्याछे. इहां जे कांइ अयुक्त कहेवाणु होय ते बहुश्रुत गीतार्थ विसोहंतुके० शोधजो. शो धीने निर्दोष करजो. ॥ ६१२ ॥

हवे जे वात जेम थवानी होय ते तेमज थाय तोपण जला आशयथकी फल छे. तेथी जला अर्थने विषे आशंसा करवी. एवुं देखाडवाने अर्थे आशंसाकहेछे.
मूलः—जावजइ जुवणत्तय, मेयंरवि ससिसुमेरुगिरिजुत्तं ॥ पवयणसारुद्धारो, तानंदउ बहु पढिज्जंतो ॥ ६१३ ॥ अर्थ.—ज्यांलगे स्वर्ग मृत्यु ने पाताल लक्षण ए त्रण जुवन जयवंत वर्ते, एने केवे सूर्य चंद्रमा ने सुमेरु पर्वत समस्त ने मध्यवर्त्ति सुदर्शननामे मेरुपर्वत तेणेकरी सहित ते ज्यांलगे जयवंता वर्त्ते त्यां लगे ए प्रवचन सारोद्धार प्रकरण ते नंदउके० सर्व समृद्धि पामो. बहु घणा एवा

जे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका तेमणे भणतो थको उपलक्षणथकी भणाव तो थको चिंतवतो थको सांजलतो थको समृद्धि पामो. ॥ ६१३ ॥ इतिगाथार्थ.

अथ प्रशस्ति.

अर्हं॥विनिहितदोषः सततं, नव्यव्रजवारिजातकृतबोधः॥ गोनिःसकलपदार्थप्रकट यिता जयति वीररविः ॥ १ ॥ गौतमसुधर्ममुख्याः प्रख्या आसन्गणाधिपा गुरवः ॥ तक्रमवर्ती श्रीजिनचंद्रश्चंद्रइतियुगप्रवरः॥२॥तस्मिन् गणपे विजयिनि विह्नीनाथप्रबो धतपनिष्ठे ॥ श्रीमति जिनसिंहाभिध सूरिवरे जयति युवराज्ये ॥ ३ ॥ श्रीमत्सागर चंद्रसूरयइतिख्याताः क्षितौ धीधनाः पंचानां परमेष्ठिनामिह चये प्राप्तास्तृतीये पदे॥ दत्तं श्रीजिनभद्रसूरिसुगुरोः सूरेः पदं यैरनूत्तेषां शुद्धगुणान्वये विजयिनो व्यक्ता इमेज ज्ञिरे ॥ ४ ॥ श्रीमहिराजःसुदयो दयोदयासागरावराविदुषां ॥ श्रीज्ञानमंदिराव्हास्त्र योप्यमी वाचकवतंसाः ॥ ५ ॥ श्रीदेवदेवतिलकोपाध्यायाश्चक्रवर्तिनोऽज्ञानां ॥ त ब्छिष्यानूचानाः श्रीमंतो विजयराजाव्हाः ॥ ६ ॥ वाचंयमजननिकरे कोटीरसमाः स मागमार्थज्ञाः त–च्छिष्यपद्ममंदिरगणिरर्थप्रदीपमिमं ॥ ७ ॥ बालावबोधमकरोदवि बुधबोधाय निजकवि वृध्यै ॥ यदशुद्धमत्रकिंचित्तज्ज्ञैःशोध्यं घृणावद्भिः ॥ ८ ॥ सुगुण गणिकनकसारोमेहाजलसाधुसाधुरिणमल्लौ ॥ लिखनसुशोधनकर्मण्येते साहाय्यक तारः ॥९॥ विषमपदार्थः पूर्वं साहमीरोपरोधतश्चक्रे ॥ ततएतर्हि समग्रोप्यर्थनया लेखि साध्वीनां ॥ १० ॥ वर्षेशशिबाणरसात्रिहगजमाने सहःसिते पक्षे; लक्ष्मीधस्त्रे वारेगुरौ च पूर्णीकृतोग्रंथः ॥ ११ ॥

इति श्रीप्रवचनसारोद्धार ग्रंथः
बालावबोध सहित समाप्तः